श्री भ० यशकीर्ति दि० जैन सरस्वती भवन ऋषभदेव का प्रथम पुष्प

श्री महावीरजी — पारनागार,

श्री प्राचीन पूजन संग्रह

रचयिता—विविध दिगम्बर जैनाचार्य

सम्पादक -

जैनरत्न धर्मभूषण प्रतिष्ठाचार्य

पं. रामचन्द्र जैन

प्रकाशक -

समस्त दि. जैन नरसिंहपुरा समाज गुजरात प्रान्त

प्रथमावृत्ति	वीर नि० सं० २४८६	मूल्य
५००	कार्तिक शु० १ रविवार	जिन पूजन

आय व्यय का विवरण

७५१)	श्रीमान् समाज दि० जैन [illegible] पंच कलोल
३०१)	श्रीमान् [illegible] दि० जैन मंदिर धानपेटी खाते से हस्ते समाज दि० जैन नरसिंहपुरा पंच जहेर
५०१)	श्रीमान् स्व० सेठ कस्तूरचन्द मुठाभाई हस्ते चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह कलोल
५०१)	श्रीमान् स्व० सेठ उगरचन्द अमथालाल हस्ते मोतीलाल उगरचन्द नरसीपुर
१०१)	श्रीमान् सेठ नगीनलाल जगजीवनदास कलोल
१०१)	श्रीमान सेठ शिवलाल प्रभुदास परीख हस्ते अमृतलाल शिवलाल जहेर
१०१)	श्रीमान् सेठ तापीदास जेठाभाई दलाल आमोद
१०१)	श्रीमान् सेठ वरजलाल अमीचन्द परीख जहेर
५१)	श्रीमती कमला बहिन ध. प० सेठ-चदुलाल हरिलाल कलोल
१०१)	श्रीमान् सेठ जीवनलाल मनसुखलाल हस्ते उदयचन्द जीवनलाल नरोड़ा
२२१०)	

८०३॥)	कागज
[illegible])	आर्ट पेपर फोटो के लिये
११६०)	छपाई
२५०)	बाइन्डींग खर्च
४७॥)	मुतफरिक खर्च
२२१०)	

विषय सूची





प्रस्तुत योजना के प्रमुख संयोजक

जाति भूषण श्रीमान् सेठ चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह

स्व० सेठ कस्तूरचन्द जुठाभाई शाह कलोल की स्व० धर्म पत्नी श्रीमती मोतन बाई की प्रेरणा से उनके सुपुत्र श्रीमान् सेठ चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह ने प्राचीन हस्त लिखित गुटकों (चोपड़ो) से कोपी कराकर संशोधन कराने का सारा खर्चा प्रदान किया था। एवं सर्व प्रथम ५०१) रुपया प्रदान कर इसयोजना को सफल बनाया हैं इसके लिये वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

सम्पादक,

श्रीमती स्व० मोतनबाई



धर्मपत्नी स्व० सेठ कस्तुरचन्द
झूठा भाई कलोल:—

केवल फोटो प्रिन्ट:—श्री वर्द्धमान प्रिं० प्रेस, मन्डी की नाल उदयपुर।

प्रस्तावना



देवाधि देव चरणे, परिचरणं सर्व दुःख निर्हरणम् ।
काम दुहि काम दाहिनी, परिचिनुया दाहतो नित्यम् ॥

जिनेन्द्र भगवान की पूजन करना प्रत्येक श्रावक का दैनिक कर्तव्य है। जैन समाज को यह बताने की आवश्यता नहीं है कि जिनेन्द्र पूजा का क्या महत्व है। पूजन के द्वारा परिणामों की निर्मलता बढ़ती है एवं पाप दूर होते हैं। श्रावक के षटकर्म "देव पूजा गुरुपास्ति" में भी देव पूजा को प्रथम स्थान दिया गया है, अतः जिनेन्द्र भगवान पूजन करना प्रत्येक श्रावक का प्रधान दैनिक कर्तव्य है। पूजन करने का प्रमुख साधन पूजन की पुस्तकें ही हैं। जैन समाज में पूजन की पुस्तकों की कमी नहीं है। परन्तु प्रस्तुत सग्रह का प्रकाशन कुछ विशेष कारणों को लेकर ही किया गया है। गुजरात प्रान्त में विशेष कर नरसिंहपुरा गद्दी के विद्वान् भट्टारकों द्वारा रचित प्राचीन संस्कृत तथा प्राकृत भाषा की पूजाएँ पढ़ाने की परिपाटी है परन्तु अब तक इन पूजाओं का प्रकाशन नहीं हुआ था।

॥१॥

जब पूज्यपाद भट्टारक श्री १०८ श्री यशकीर्तिजी महाराज का चातुर्मास जहेर में था, श्री नाथ नरसिंहपुरा [illegible] समाज के [illegible] के लिये श्रीमान् ज्ञाति भूषण सेठ चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह का आगमन हुआ था मन्दिरजी में [illegible] गुटकों से पूजन पढ़ाई जारही थी। पूजाएं लिखित होने के कारण पठन-पाठन में कठिनाई होना [illegible] हस्तलिखित प्राचीन गुटकों के जीर्ण-शीर्ण हो जाने के कारण श्रीमान् सेठ चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह ने कहा कि यह पूजाएं छप जावें तो इनका पठन-पाठन सर्व सुलभ हो जाय एवं प्राचीन पूजन साहित्य की सुरक्षा [illegible]

पूज्यपाद भट्टारक यशकीर्तिजी महाराज तथा हमारी भी बहुत समय से अभिलाषा थी कि यह संस्कृत पूजन साहित्य जो की हमारे पूर्वज आचार्योंने अपने ध्यानाध्ययन के समय में से समय बचाकर रचा है, संग्रहीत कर प्रकाशित करें ताकि श्रद्धालु भक्तगण भक्ति रस से परिपूर्ण इन रचनाओं से लाभ उठावें। एवं गुजरात प्रांत की समाज की काफी मांग थी। इस लिये हमने खास तौर से प० चन्दनलालजी जैन साहित्य रत्न ऋषभदेव को भेजकर जहेर अहमदाबाद कलोल नरोड़ा आमोद सूरत शास्त्र भंडारों एवं भ० यशकीर्ति सरस्वती भवन ऋषभदेव से पूजाओं की प्रति लिपि करवाई। प्रस्तुत संग्रह के सभी पाठ सोलहवीं सत्रहवीं सदी के विद्वान भट्टारकों तथा ब्रह्मचारियों द्वारा रचित हैं। पुरानी हस्त लिखित प्रतियां बहुत अशुद्ध रुपमें प्राप्त हुई थी। प्रस्तुत पाठक संशोधनमें— श्रीमान् विद्वद्वर्य प० पन्नालालजी पार्श्वनाथजी शास्त्री शोलापुर विद्यालंकार प० इन्द्रलालजी शास्त्री जयपुर, पं० महेन्द्रकुमारजी महेश ऋषभदेव का सहयोग रहा है। साथ ही मेरे अनन्य सहयोगी प० चन्दनलालजी साहित्य रत्न ऋषभदेव का सम्पादन तथा संशोधन में महत्वपूर्ण योग रहा है। एवं प०गुलजारीलालजी चौधरी शास्त्री प्र. शिक्षण संस्था, उदयपुर ने प्रूफ संशोधन में अच्छा सहयोग दिया है। इसके लिये उक्त सभी विद्वानों का अत्यन्त आभारी हूँ। श्रीमान् मान्यवर ज्ञाति भूषण श्रीमंत सेठ चंदुलाल कस्तूरचन्द शाह कलोल ने प्रति लिपि कराई का व्यय प्रदानकर इस कार्य के लिये मुझे उत्साहित किया इसके लिये उनकाभी पूर्ण आभारी हूँ। प्रस्तुत संग्रह से साधारण पढ़ालिया व्यक्ति भी लाभ उठा सके इसके लिये पूजन विधान मे

सहायक आवश्यक पाठ सकली करण, जल यात्रा विधि, लघुहवन आदि सरल स्पष्टी करण के साथ लेलिये हैं जिससे यह सग्रह समाज के लिये उपयोगी होगा ।

मुझ पर अनेक संस्थाओं के उत्तर दायित्वों का भार होने से इस सग्रह के प्रकाशन में विलम्ब हुआ है इसके लिये पाठक मुझे क्षमा करेंगे । श्री जिनेन्द्र पूजन जैसे महत्व पूर्ण कार्य में मेरी छद्मस्थतां के कारण त्रुटिया रह जाना संभव हैं इसके लिये भी विज्ञ पाठकों से क्षमाप्रार्थी हूँ ।

पं रामचन्द्र जैन महामंत्री
श्री भ० यशकीर्ति दि० जैन सरस्वती भवन
ऋषभदेव (राजस्थान)



❀ एक परिचय ❀

स्वर्गीय सेठ कस्तूरचन्द भूठाभाई की धर्मपत्नी मोहन बहिन के स्वर्गवास के उपलक्ष्य मेंउनके सुपुत्रों ने सं० २०१५ आषाढ़ शु० ८ से १५ तक श्री: बृहद् सिद्ध चक्र मण्डल विधान सम्पन्न कराने के लिये मुझे न संगीत शिरोमणि पं० ताराचन्दजी जैन को आमंत्रित किये थे। विधान की पूर्णाहूति के अवसर पर मैंने प्रस्तुत संग्रह के प्रकाशन की योजना प्रदर्शित की थी। उस समय अपनी पूज्य माताजी के स्वर्गवास के अवसर पर निकाले गये दान में से ५०१) रु० इस पुस्तक के प्रकाशन मे प्रदान किये थे।

श्रीमान् स्व० सेठ कस्तुरचन्द भूठाभई कलोल नरसिंहपुरा समाज के उदीयमान रत्न थे। आप बड़े ही निर्भीक स्पष्ट वक्ता एवं सरल स्वभावी होने के साथ साथ गुणानुरागी धर्मात्मा थे। आपका प्लेग की बीमारी से ५३ वर्ष की अवस्था में ही स्वर्गवास होगया था। आपको धर्म पत्नी मोहन बहिन भी बड़ी ही धर्मात्मा और भक्ति परायण थी आपकी धार्मिकता और गुण ग्राहकता आपके पांचो ही पुत्रों को पैतृक संस्कार के रुपमें प्राप्त हुई थी। यही कारण है कि आपके पुत्रो के सेवाकार्य अपने स्व० पिताजी को उज्ज्वलकीर्ति को सुशोभित कर रहे है। आपके ज्येष्ठ पुत्र जगजीवन दास कस्तूरचन्द शाह (B. COM.) बी कॉम बड़े ही धर्मात्मा गुरुभक्त एवं व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आप सदैव धार्मिक कार्यों में भाग लेते रहते है। आपकी गुरु भक्ति और धार्मिक प्रेम के कारण अधिकाश समय साधुओं के संघमें व्यतीत होता है। बम्बई में अनेक धार्मि तथा सामाजिक संस्थाओं के ट्रस्टी तथा मंत्री के रुपमे समाज सेवा कर रहे है। द्वितीय पुत्र श्री केशवलाल कस्तूरचन्द शाह भी बड़े ही विनम्र और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपमें भी धार्मिकता और गुरु भक्ति कूट कूट कर भरी है। तृतीय पुत्र श्री चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह अपनी सामाजिक सेवाओं से समाज में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। बम्बई में आकर आपने अपने सतत परिश्रम तीक्ष्ण बुद्धि और व्यापार दक्षता से व्यापार में आशातीत सफलता प्राप्त कर लाखों रुपये कमाये है। आपकी मधुरवाणी और आकर्षक भाषण शैली से जनता कोमुग्ध

किये बिना नहीं रहती । ऋषभदेव (केशरियाजी) में अ० भा० दि० जैन नरसिंहपुरा समाज का ऐतिहासिक सम्मेलन आपके ही सभापतित्व में हुआ था और उस अवसर पर सारे भारतवर्ष की नरसिंहपुरा समाज ने सन्मान पत्र भेटकर "जाति भूषण, की उपाधि से सम्मानित किये थे । तारंगा पावागढ़ तलोद प्रतापगढ़ आदि की प्रतिष्ठाओं में आपके प्रभाव से बहुत बड़ी धन राशि एकत्रित होगई थी । गुजरात प्रान्त की समाज के सहयोग से श्री संघ नरसिंहपुरा के लक्ष्मी मण्डल एवं श्री कस्तूरचन्द भूठाभाई छात्रालय अहमदाबाद की स्थापन ने आपकी ख्याति में चार चांद लगा दिये हैं । आपने उक्त संस्थाओं को ६०००) रू० का दान दिया है । आप अनेक धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं की अपूर्व सेवा कर रहें । चतुर्थ पुत्र श्री रतीलाल कस्तूरचन्द शाह तथा पचम पुत्र श्री रमणिक लाल कस्तूरचन्द शाह भी अपने बड़े भाइयों के समान धर्मात्मा और सरलस्व भाषी हैं । इस प्रकार आपका सारा परिवार व्यापारिक उन्नति के साथ साथ समाज सेवा के कार्यों में बराबर योग देता रहा है ।



❀ द्वितीय परिचय ❀



पूज्य पाद भट्टारक श्री १०८ श्री यशकीर्तिजी महाराज के विक्रम सं० २०१५ में जहेर चातुर्मास के अवसर पर श्री सेठ भोगीलाल उगरचन्द नरसोपुर के यहां महाराज श्री का आहार हुआथा इस शुभावसर पर आपने ५०१) रु० इस पूजन संग्रह के प्रकाशनार्थ प्रदान किये थे ।

नरसोपुर गुजरात प्रान्त में जहेर के पास छोटासा गाव है यहां पर नरसिंहपुरा समाज के करीब २० घर हैं । करीब २] नरसोपुर की सारी समाज सेठ मुनजी का परिवार है सेठ मुनजी के धरमचन्द, बनारसी और हीराचन्द ये तीन पुत्र थे । हीराचन्द के नारायणजी और देवचन्द नामक दो पुत्र थे । नारायणजी के अमथालाल, अमुलख, हरगोवन, और लल्लुसेठ ये ४ पुत्र थे । अमथालाल के नत्थु सेठ व उगरचन्द दो पुत्र थे स्व० उगरचन्द सेठ बड़े ही प्रतिभाशाली धर्म निष्ठ सज्जन थे । आप बड़े ही मिलन सार और भद्रपरिणामी व्यक्ति थे । समय २ पर साधु संतों का समागम। करना सत्पात्रों को दान देना एवं धर्म ध्यान आदि मे अपना समय व्यतीत करते थे । अपने जीवन काल में सहस्त्रों रुपयों का दान किया अनेक ग्रंथ प्रकाशित कराये एव तीर्थ यात्राए की थी । एजेंसी के समय मे नरसी



श्रीमान् स्व० सेठ उगरचन्द अमथालाल
नरसीपुर

पुर में स्कूल का भवन निर्माण करावा था, और अभी ४०००) रु० व्यय कर एक हॉल और बनवाया है। आप ६० वर्ष की लम्बी उम्र व्यतीत कर अपने पीछे बहुत बड़ा परिवार छोड़कर स्वर्गवासी हुए थे। आपके सुपुत्र सेठ "भोगीलाल उगरचन्द भी आपके ही समान धर्म निष्ठ और व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। आपका जन्म दि० १३ दिसम्बर १८६० को हुआ था। आपने अपने सद्व्यवहार से सारी समाज में अच्छी ख्याति प्राप्त की है। साथ ही व्यापार में भी आपने अपनी योग्यता के द्वारा अच्छी उन्नतिकी है। मिल्स क्लोथ डिपो और पावर लूम फेक्ट्री (न्यू विजय सिविंग वर्क्स) अहमदाबाद में स्थापित की है। आप के चन्दूलाल जीवनलाल, विनोदलाल, दशरथलाल मनुभाई, नटवरलाल, गिरीशचन्द्र चन्द्रकान्त राजेन्द्रकुमार और ज्योतचन्द्र १० पुत्र हुए थे। उनमें से जीवनलाल का स्वर्गवास होगया आपके सभी सुपुत्र सुयोग्य और आज्ञाकारी हैं। श्री चन्दुलाल और विनोदलाल न्यूविजय विविंग वर्क्स का कार्य संभालते है दशरथलाल ने अभी एल. एल. बी. पास की है। नटवरलाल बिजली के कार्य में दक्षता प्राप्त कर रहे हैं। चन्दुलाल के ५ पुत्र तथा ३ पुत्रियां हैं। विनोदलाल के २ पुत्र और ६ पुत्रियां हैं। दशरथलाल के १ पुत्र हैं। इतने विशाल, कुटुम्ब का अभी तक सम्मिलित व्यवसाय चल रहा है यह भी कुटुम्ब के लोगों के सौभाग्य जन्म का सूचक है।



❀ १ ब्रह्मजिनदास ❀

ब्रह्म जिनदास का समय विक्रम की सोलहवीं शताब्दी का अंतिमभाग रहा है। आप मूल संघी भ० सकलकीर्ति के शिष्य भ० भुवनकीर्ति के शिष्य थे। इनकी हिन्दीभाषा की पद्यमय रचनाओं में उद्यापन पुराण, व्रतकथा, तथा पूजाओं की कई कृतियां विद्यमान हैं लेकिन उनमें से मामूली पूजाएं तथा व्रत कथाएं ही प्रकाश में आई हैं। उन्होंने वि० स० १५७५ में हरिवंश पुराण की पद्यमय रचना कीथी आपकी रचनाओं की संख्या करीब ५० से कम नहीं होगी। इस संग्रह में आपकी कृति 'ज्येष्ठ जिनवर पूजा, प्रकाशित की गई है।

॥ २ ब्रह्म कृष्णदास ॥

भट्टारक संस्थान में भट्टारकों के शिष्यों में से सुयोग्य शिष्य अथवा भावी भट्टारक को आचार्य विशेषण से सम्बोधित करने की प्रथाथा एव तत्पश्चात् के शिष्यों को ब्रह्म (ब्रह्मचारी) इस विशेषण से संबोधित किया जाताथा ब्र० कृष्णदासजी काष्ठा संघी दसा नरसिंहपुरा समाज का गद्दी के भ. त्रिभुवन कीर्ति के पट्टस्थ भ. रत्न भूषण के शिष्यों मेंसे एक थे आप लोहारिया के निवासी श्रेष्ठी हर्ष के पुत्र थे आपकी माता का नाम वीरिका देवी था विक्रम सं० १६८१ में मुनि सुव्रत पुराण की रचना की थी, आपका समय विक्रम स० १६४८ से १६८५ के करीब है। आपने प० अभ्रराज (नेघराज) से शिक्षण प्राप्त किया थ ऐसा ज्ञात होता है जैसाकि आपने अपनी ज्येष्ठ जिनवर जयमाला में उल्लेख किया है कि "पडित राज अभ्रवच कलिया,,। ये पडित अभ्रराज भी इन्हीं ब्र० कृष्ण के सथियों में से थे और संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे इनकी रचित एक कथा संग्रह भ० सुरेन्द्र-कीर्तिजी सोजित्रा के सरस्वती भवन में है जोकि सस्कृत में उत्तम रचना है ब्र० कृष्ण की यह जयमाल गुजरात, वागड़, नेवाड़ व मालवा प्रांतमें अत्यधिक प्रसिद्ध है। पूजन के अलावा अभिषेक के समय

में इस जयमाला का बहुत अधिक उपयोग होता है, इसका खास कारण इसकी पांडित्य पूर्ण भाषा एवं सरल राग है ।

॥ ३ भट्टारक राजकीर्ति ॥

आप ईडर की काष्ठासंघी गादी के भट्टारक थे आपका समय विक्रम सं० १६८१ से १६९७ तक का है इनके गुरु भ० चन्द्रकीर्ति थे जिन्होंने संस्कृत में कई ग्रंथ लिखे हैं आपके शिष्य भ० लक्ष्मी सेन थे । भ० राजकीर्ति बहुत अल्प समय में ही स्वर्गवासी हो गये थे अतः वे विशेष कुछ भी नहीं कर पाये थे । आपकी कृति देवशास्त्र गुरु पूजा इस संग्रह में है ।

॥ ४ भट्टारक उदयसेन ॥

आप भी काष्ठा संघी नरसिहपुरा समाज की सूरत की गद्दी के भट्टारक थे आपका समय विक्रम संवत १५९० से १६१५ तक का है आप भ० यशकीर्ति के शिष्य थे जिन्होंने कि कलास तथा ऋषभदेव (केशरियाजी) में प्रतिष्ठाएं कीं थीं । आप भी संस्कृत भाषा के अच्छे ज्ञाता थे । आपने भी कई प्रतिष्ठाएं की थी आपके शिष्य भ० त्रिभुवन कीर्ति थे । इस संग्रह में आपकी शास्त्र पूजा प्रकाशित हुई है ।

॥ ५ कवि जीवनलाल ॥

कवि जीवनलाल के पिता का नाम वासुदेव था, जैसा कि आपने स्वयं गुरु जयमाला में लिखा है "श्री वासुदेव तनयो कवि जीवनोऽहं" आपका समय विक्रम सं० १७७५ से १८०० तक का है आप के जीवन चरित्र का निश्चित हाल मालुम नहीं हो सका है फिरभी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि आप गुजरात प्रान्त के निवासी थे एवं आपकी जाति व्यास (बारोठ) है । आपकी गुरु जयमाला के अलावा और कोई कृति प्राप्त नहीं हुई है ।

॥ ६ भट्टारक विश्वसेन ॥

काष्ठा संघी सूरत की गद्दी के भट्टारक भुवन कीर्ति के शिष्य भ० विश्वसेन हुए हैं आपका समय १७२५ से १७५० तक का है आपके शिष्य भ० महीचन्द्र थे तथा महीचन्द्र के शिष्य भ० सुमतिकीर्ति थे। जो कि अत्यधिक प्रसिद्ध हुए हैं भ० सुमतिकीर्ति उद्भव विद्वान और परमतवादियों का मान मर्दन करने वाले थे। भ० विश्वसेन की सिद्ध जयमाला के अलावा और कोई कृति उपलब्ध नहीं हुई है एक भ० विश्वसेन ईडर की काष्ठा संघी गद्दी पर भी हुवे है जिन का समय विक्रम स० १५६० से ८५ तक का है जिन्होंने पद्मावती क्षेत्र पाल पूजा की रचना की है।

॥ ७ ब्रह्म चन्द्रसागर ॥

काष्ठा संघी सूरत की गद्दी के भ० जयकीर्ति के शिष्य थे। आपका समय १७०० से १७२० तक का है आपने भाषा मे कई पूजाएं तथा रास आदि की रचना की है। आपकी रचित शीतलनाथ पूजा इस संग्रह में छपी है।

॥ ८ भट्टारक चन्द्रकीर्ति ॥

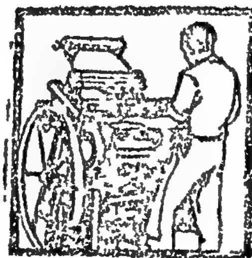
ईडर की काष्ठासंघी गद्दी के सुप्रसिद्ध भ० श्री भूषण के शिष्य भ० चन्द्रकीर्ति थे। आप हिन्दी के साथ २ सस्कृत तथा प्राकृतिक भाषा के भी अच्छे विद्वान थे। आपने संस्कृत में आदिपुराण पार्श्वनाथ पुराण उपासकाध्ययन श्रावकाचार आदि अच्छे २ ग्रथों की रचना की है ये ग्रंथ भ० यशकीर्ति सरस्वती भवन ऋषभदेव मे उपलब्ध हुये हैं इनकी टीका होने की खास आवश्यकता है। बड़े शास्त्रों के अलावा कई बड़ी २ पूजाए उद्यापनादी का भी आपने रचना की है। दुख है कि अभी तक आपकी कोई कृति प्रकाश में नहीं आई है। आपकी रचित पचमेरु पूजा तथा शातिनाथ पूजा इस सग्रह में प्रकाशित की गई है।

॥ ९ ब्रह्म ज्ञान सागर ॥

ईडर की काष्टा संघी गद्दी के भ० श्री भूषण के शिष्य तथा भ० चंद्रकीर्ति के साथी ब्र० ज्ञान सागर थे। इनका समय विक्रम संवत १६६० के आस पास का है। ये संस्कृत हिन्दी तथा प्राकृत भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। इनके बनाये हुवे पूजाएं व्रत कथाएं उद्यापन पुराण तथा स्तवनादि उपलब्ध हैं। दशलक्षण और सोलह कारण की संस्कृत पूजाओं की रचना आपने ही की है आपके भाषा के सवैये भी प्रकाशित हो चुके हैं जो कि प्रसिद्ध हो हैं।

॥ १० भट्टारक इन्द्र भूषण ॥

आपका समय विक्रम संवत १७०८ के आस पास का है आप ईडर की काष्ठासंघी गद्दी के भ० लक्ष्मीसेन के शिष्य थे आपने भी कई प्रतिष्ठाएं करवाई हैं। आपके शिष्य भ० सुरेन्द्रकीर्ति थे जो कि अच्छे विद्वान और उस समय के प्रसिद्ध भट्टारक थे ऋषभदेव (केशरियाजी) में अधिकांश प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा आपने ही कराई है। आपके शिष्य कवि गोविन्द थे जोकि अच्छे विद्वान थे इन्होंने भी पद्मावती पूजा आदि कई पूजाओं की रचना की है।



* भट्टारक हेमचन्द्र *



दिगम्बर सम्प्रदाय के काष्ठासंघ में रामसेनाचार्य की शिष्य परंपरा में अनेकों भट्टारक हुए हैं। जिनमें से १०···वें पट्ट पर भट्टारक हेमचन्द्र हुए हैं। पवित्र तीर्थ भूमि केशरियाजी के पास स्थित टोकर गाम को आपका जन्म स्थान बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप वीसा नरसिंहपुरा जाति मे उत्पन्न हुए थे। वि० सं० १८४५ के करीब भ० नेमीसेन ने आपको शिष्य बनाया था। भट्टारक पद पर आसीन होने के बाद आपने अनेक मदिरों की प्रतिष्ठाएं कराई, तीर्थों की यात्रा की एवं समाज में धर्म प्रचार किया। आपके जीवन में दो महत्वपूर्ण उल्लेखनीय कार्य हुए हैं जो कि भट्टारकीय चमत्कारों को समीचीन मानने के लिये विवश करते हैं। खांधु में मन्दिर के पीछे एक कुआ खुदवाया गया था। जिस का पानी मोरा निकला इससे सब लोग निराश हुए और विचार करने लगे कि कुआ वापस पूर दिया जाय। तब महाराज श्री ने कहा कि हमने तो श्रीजी के पूजन प्रक्षाल व पीने के उपयोग के लिये कुआ खुदवाया था यदि पानी पीने के लिये उपयुक्त नहीं है तो दूसरे काममें तो आयगा ही इस पर किसीने कह दिया कि महाराज ऐसा था तो पहले ही स्थान का परिक्षण कर के कुआ खुदवाना था इस पर महाराज श्री तत्काल अन्न जल का त्याग कर किसी साधना में लग गए। अनंतर मदिर के पुजारी से वहां की पोई नदी का मीठा जल मंगवाकर उसे मंत्रित कर कुए मे डलवा दिया और लोगों से कह दिया कि अब कल से कुए का पानी काम में लाया जाय। दूसरे दिन लोगों ने पानी को देखा तो पानी बढ़िया मीठा और हल्का हो गया था। इस चमत्कार की बात सारे गावमें फैल गई और लोग भट्टारक हेमचन्द्र की प्रशसा करने लगे। इसी प्रकार दूसरा चमत्कार प्रतापगढ़ के पास ब्रह्मोत्तर (शांतिनाथ) में हुआ था वहां वीसा नरसिंहपुरा जाति के १०० घर थे। वहां की प्रतिष्ठा के लिये उनके गच्छ के भट्टारकजी नहीं आ सके अतः

उन्होंने भ० हेमचन्द्र को लिखा कि आप भी मेरे भाई ही हैं मैं नहीं आ सकता हूँ अत: यह प्रतिष्ठा आप करा दें। श्री हेमचन्द्राचार्य ने आमत्रण स्वीकार कर लिया और प्रतिष्ठा के सब कार्य निर्विघ्नतया सम्पन्न कराये और प्रतिमाजी को वेदी मे विराजमान करने का मौका आया तब मालूम हुआ कि प्रतिमाजी बड़ी है और द्वार छोटा है सब लोग विचार मे पड़ गये कि प्रतिमाजी को अन्दर कैसे लेजाया जाय समाज में चिन्ता की लहर छा गई उस समय एक श्रावक ने कह दिया कि प्रतिष्ठाचार्य को प्रतिष्ठा कराने के पहले इसका विचार करना चहिये था इस पर महाराज श्री तीन दिन तक आहार जल का त्याग कर प्रतिमा के समक्ष ध्यानस्थ बैठ गये। तीसरे दिन समाज के मुखियाओं को बुला कर कहा कि उठाओ प्रतिमाजी को अन्दर ले जावे। लोग विचार में पड़ गये कि छोटे द्वार में से प्रतिमाजी को कैसे अन्दर लेजाया जायगा महाराज श्री ने कहा कि आप लोग चिन्ता न करे सब ठीक होगा। लोगों ने प्रतिमाजी को उठाया तो प्रतिमा का वजन बहुत हल्का हो गया था और ज्योंही द्वार के पास पहूँचे कि प्रतिमा छोटी होकर आसानी से अन्दर चली गई और जाने के बाद फिर उतनी ही बड़ी हो गई ईस घटना को जान कर सारी समाज ने हेमचन्द्राचार्य की महती प्रसंशा की आज भी शांतीनाथ में उसी मंदिर में वही प्रतिमाजी विराजमान है सैंकड़ों यात्री वहां की वन्दना करने जाते रहते है। सं १६१८ में खांधु में आपका स्वर्गवास हो गया आपके स्मारक के रुप में खांधु मदिर जिसमें दाहिनी तरफ छतरी बनी हुई है जिसमें आपके चरण प्रतिष्ठापित किये गये है आपके शिष्य पं० दौलतराम पं० पन्नालाल और पं० गिरधारीलाल में से आपके आदेशानुसार आपके आदेशानुसार आपके पट्ट पर पं० गिरधारीलाल को भ० क्षेमकीर्ति के नाम से भट्टारक स्थापित किये थे।

---

* भट्टारक क्षेमकीर्ति *



भ० क्षेमकीर्तिजी को ५ वर्ष की उम्र में वि. सं० १६१० में भ० हेमचन्द्रजी ने शिष्य बनाये थे। आप नयपुर के निवासी खंडेलवाल जाति के पांड्या गोत्री थे आपका बचपन का नाम गिरधारीलाल था। विक्रम सं० १६२३ में नरोडा में सूरत निवासी श्रीमान् सेठ सौभागचन्द्र मेघराज ने बड़ा भारी उत्सव कर बड़े समारोहपूर्वक भ० हेमचन्द्र के पट्टपर स्थापित किये थे। आपने अपनी सच्चरित्रता के कारण सारी समाज में अच्छी ख्याति प्राप्त की थी।

आपको वाणी में कुछ ऐसी सिद्धी थी कि आपने कह दिया वह अमिट होता था। इस प्रकार अपने शुभाशिर्वादों से सैकड़ों लोगों का उपकार किया था। अनेकों बार तीर्थ यात्राएं की और अनेक मन्दिरों की प्रतिष्ठाएं कराई थीं। उन दिनों १६३५ में केशरियाजी क्षेत्र में श्वेताम्बर समाज की ओर से ध्वजादण्ड कलश चढ़ाने के प्रयत्न किये जाने लगे थे। इस बात की जानकारी मिलते ही आपने इसका विरोध किया और इसके लिये भ० गुणचन्द्र, भ० कनककीर्ति, भ० धर्मकीर्ति, भ० राजेन्द्रकिर्ति को सदल बल आमन्त्रित किये। सभी भट्टारक अपने शिष्यों व चपरासी आदि २०० व्यक्तियों को लेकर आये। उधर श्वेताम्बर साधु भी बड़ी संख्या में एकत्रित हुए थे। बाजार में ही भट्टारकों व श्वेताम्बर साधुओं के आपस में विसंवाद हो गया, विवाद बढ़ते बढ़ते मारा मारी तक नौबत आगई। अंत में सब भट्टारक अपने शिष्यों सहित मंदिर के समक्ष पंक्ति बद्ध खड़े हो गये और श्वेताम्बरों को मंदिर में जाने से रोक दिये और ध्वजादण्ड कलश नहीं चढ़ाने दिये।

आपने अनेकों स्थानों पर नरसिंहपुरा समाज के झगड़ों की मध्यस्थता कर उनको मिटाया। वि सं.

१९७४ मार्गशीर्ष शुक्ला ८ शुक्रवार को दिन में २ बजे प्रतापगढ़ में आपका स्वर्गवास हुआ। अपनी मृत्यु के दो घन्टे पूर्व पचों की समक्षता में पं० प्यारेलाल को अपने पट्टपर भ० यशकीर्ति के नाम से स्थापित किये थे। आपका अन्तिम संस्करण बड़े समारोह पूर्वक किया गया था। करीब १०००० दस हजार जनता ने शव यात्रा में भाग लिया था। तालाब के रास्ते पर जहां आपका अन्तिम संस्कार किया गया था आपका स्मारक बना हुआ है। आपने ऋषभदेव (केशरियाजी) में एक मकान खरदा था आज उसी स्थान पर भ० यशकीर्ति भवन बना हुआ है। आपके निम्न सुयोग्य शिष्य थे।

१ पं० किसनलाल, २ पं० चिमनलाल, ३ पं० मन्नालाल, ४ प० हीरालाल,

५ पं० प्यारेलाल, ६ पं. रामचन्द्र, ७ प. किशनलाल

❋ भ० यशकीर्ति ❋

भ० यशकीर्तिजी महाराज का जन्म विक्रम सं० १९५१ में ठाकरड़ा (वागड़) निवासी श्रेष्ठी उदयचन्द की पत्नी सुन्दर बाई के उदर से हुआ था। आप नरसिंहपुरा जाति के पट्नर (खड़नर) नायक गोत्री थे। आपके ५ भाइयों में से ३ बड़े और एक आपसे छोटा था आपके काका पं० किशनलाल जो कि भ० क्षेम कीर्तिजी महाराज के शिष्य थे अंधे हो गये थे अतः उन्होंने अपने भाई उदयचन्द से एक पुत्र की मांग की। उदयचन्द ने कहा आप कहो उसको आपकी सेवा के लिये रखदूं। तब उन्होंने प्यारे-लाल की मांग की सो सं० १९५७ में प्यारेलाल को भेंट कर दिया। प्यारेलाल बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभाशाली थे। आपका अध्ययन भ० क्षेमकीर्तिजी महाराज की संरक्षकता में ही हुआ था आप १५ वर्ष की उम्र में ही शास्त्र सभा में भाषण और भजनोपदेश द्वारा जनता को मुग्ध कर देते थे। आप

लेखन कला में भी आप प्रवीण थे और बड़े सुन्दर अक्षर लिखते थे। साथ ही आप मंत्र तंत्र वैद्यक ज्योतिष आदि में भी सिद्ध हस्त हो गये थे। आपके इन गुणों पर मुग्ध होकर विक्रम सं० १९७४ मार्ग शीर्ष शु० ८ को भ० क्षेमकीर्तिजी महाराज ने अपने पट्टपर भ० यशकीर्ति के नाम से स्थापित किये थे आपने भ० पदग्रहण करने के बाद सर्व प्रथम गुजरात प्रान्त में भ्रमण कर अच्छा प्रभाव स्थापित किया उसके बाद १९८२ में अपने गुरु भ० क्षेमकीर्तिजी के स्मारक (छतरी) की प्रतिष्ठा कराई जिसमें सभी प्रान्तों की नरसिंहपुरा समाज एकत्रित हुई थी। और सब पंचोंने भ० यशकीर्ति महाराज को पछे-वडी समर्पित की धीरे धीरे आपकी त्याग भावना बढ़ती गई। २५ वर्षो से चातुर्मास में एक ही अन्न का आहार करते है। और १५ वर्षो से घृत का त्याग कर दिया है। आप भट्टारक पदस्थ पर होते हुए भी म्याना पालखी गद्दी तकिये छडी चॅवर पशु वाहन की सवारी आदि का सर्व था त्याग कर दिया है। आपका शान्त व गभीर मुद्रा और आपका प्रभावक व्यक्तित्व प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर अपनी गहरी छाप डालता है। आपका उपदेश बड़ा ही प्रभावकारी होता है। साथ ही संगीत और सभी प्रकार के वाद्य बजाने में भी आप बडे निपुण हैं आपने अपने जीवन में इतनी प्रतिष्ठाए की हैं जितनी पहले के किसी भी भट्टारक ने नहीं की होंगी। समाज में अनेकों स्थानों पर आपसी वैमनस्य थे उनको निपटाये। वि. सं० १९९५ मे ऋषभदेव में चौ मंजिला भ० यशकीर्ति भवन के नाम से भवन बनाया है जिसमे औषधालय, चैत्यालय और सरस्वती भवन की स्थापना की है। सर-स्वती भवन मे हस्त लिखित व मुद्रित करीब ३००० ग्रथों का सग्रह है। कई शास्त्र १३ वीं शताब्दी के लिखे हुए तक हैं। यशकीर्ति भवन का उद्घाटन समारोह बड़ो धूम धाम से किया गया था उस अवसर पर १ माह तक इन्द्रध्वज विधान कराया गया था। पूज्य आ. शांति सागरजी म. छाणी व अनेक त्यागी मुनि और श्रावक गण एकत्रित हुए थे। सारे गाव की आम जनता को प्रीतिभोज दिया था देवस्थान विभाग ने केशरियाजी मन्दिर से तमाम लवाजमा उपकरण आदि देकर पूर्ण सहयोग दिया था। आपने शिक्षा प्रचार के क्षेत्र में भी बड़े ही प्रसशनीय कार्य किये हैं। विक्रम सं० २०००

❀ साहित्य सूर्य प्रतिष्ठा चार्य ❀



श्री मद्दिगम्बर जैनाचार्य कवि भूषण सहित्य शिरोमणि
भट्टारक श्री १०८ श्री यशकीर्ति जी महाराज

केवल फोटो प्रिन्टः—श्री वर्द्धमान प्रि० प्रेस, मन्डी की नाल उदयपुर।

लेखन कला में भी आप प्रवीण थे और बड़े सुन्दर अक्षर लिखते थे। साथ ही आप मन्त्र तंत्र ज्योतिष आदि में भी सिद्ध हस्त हो गये थे। आपके इन गुणों पर मुग्ध होकर विक्रम सं० १९९४ मार्ग शीर्ष शु० ८ को भ० क्षेमकीर्तिजी महाराज ने अपने पट्टपर भ० यशकीर्ति के नाम से स्थापित किये थे आपने भ० पदस्थ ग्रहण करने के बाद सर्व प्रथम गुजरात प्रान्त मे भ्रमण कर अच्छा प्रभाव स्थापित किया उसके बाद १९८२ मे अपने गुरु भ० क्षेमकीर्तिजी के स्मारक (छतरी) की प्रतिष्ठा कराई जिसमें सभी प्रान्तों की नरसिंहपुरा समाज एकत्रित हुई थी। और सब पचोंने भ० यशकीर्ति महाराज को पछेवड़ी समर्पित की धीरे धीरे आपकी त्याग भावना बढ़ती गई। २५ वर्षों से चातुर्मास मे एक ही अन्न का आहार करते है। और १५ वर्षों से घृत का त्याग कर दिया है। आप भट्टारक पदस्थ पर होते हुए भी म्याना पालखी गद्दी तकिये छडी चॅवर पशु वाहन की सवारी आदि का सर्व था त्याग कर दिया है। आपका शान्त व गभीर मुद्रा और आपका प्रभावक व्यक्तित्व प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर अपनी गहरी छाप डालता है। आपका उपदेश बड़ा ही प्रभावकारी होता । साथ ही सगीत और सभी प्रकार के वाद्य बजाने मे भी आप बड़े निपुण हैं आपने अपने जीवन मे इतनी प्रतिष्ठाए की है जितनी पहले के किसी भी भट्टारक ने नहीं की होंगी। समाज में अनेकों स्थानों पर आपसी वैमनस्य थे उनको निपटाये। वि. स० १९९५ मे ऋषभदेव में चौ मजिला भ० यशकीर्ति भवन के नाम से भवन बनाया है जिसमे औषधालय, चैत्यालय और सरस्वती भवन की स्थापना की है। सरस्वती भवन मे हस्त लिखित व मुद्रित करीब ३००० ग्रथों का सग्रह है। कई शास्त्र १३ वीं शताब्दी के लिखे हुए तक है। यशकीर्ति भवन का उद्घाटन समारोह बड़ा धूम धाम से किया गया था उस अवसर पर १ माह तक इन्द्रध्वज विधान कराया गया था। पूज्य आ. शाति सागरजी म. आदि ८व अनेक त्यागी मुनि और श्रावक गण एकत्रित हुए थे। सारे गाव की आम जनता को प्रीतिभोज दिया था देवस्थान विभाग ने केशरियाजी मन्दिर से तमाम लवाजमा उपकरण आदि देकर पूर्ण सहयोग दिया था। आपने शिक्षा प्रचार के क्षेत्र में भी बड़े ही प्रसशनीय कार्य किये हैं। विक्रम सं० २०००

❀ साहित्य सूर्य प्रतिष्ठा चार्य ❀



श्री मद्दिगम्बर जैनाचार्य कवि भूषण साहित्य शिरोमणि
भट्टारक श्री १०८ श्री यशकीर्ति जी महाराज

केवल फोटो प्रिन्टः—श्री वर्द्धमान प्रि० प्रेस, मन्डी की नाल उदयपुर।

श्रीमान् संगीत शिरोमणि



पं० डाड़मचन्द जैन

सम्पादकः—



जैनरत्न धर्म भूषण प्रतिष्ठाचार्य
पं० रामचन्द्र जैन

में प्रतापगढ़ में विशाल छात्रालय की स्थापना की है। छात्रालय की आधारशिला अनेक पद विभूषित श्रीमंत सर सेठ हुकमचन्दजी साहबने रक्खी थी वि. सं. २०११ में बड़े भारी समारोह पूर्वक श्री सीमंधर जिनालय की प्रतिष्ठा कराई थी। इसी प्रकार छाणी फलासिया चावण्ड और बासवाड़ा में भी छात्रालय स्थापित कराये एव अनेक पाठशालाएं स्थापित कराई। आपने सारे भारत वर्ष के जैन तिर्थो की कई बार यात्राएँ की है। कुछ वर्षो तक तो प्रति वर्ष तीर्थराज सम्मेद शिखरजी की यात्रा करते थे अपनी सारी सम्पत्ती को संस्थाओं में देदी है। ऋषभदेव का भ० यशकीर्ति भवन भी ट्रस्ट डीड कर समाज को सौंप दिया है। भवन के साथ १००००) रु० नकद एव गद्दी का लवाजमा उपकरण शास्त्र बरतन फर्निचर आदि सब समाज को सौंप कर अपना अधिकार हटालिया है। ज्यों ज्यों आप सम्पति से मोह हटाते जाते हैं समाज आपको अधिक भेंट देने लगी है अब भी जो कुछ भेंट आता है सब संस्थाओं को देदी जाती है। आप के उपदेशों से लाखों लोगों ने आत्म कल्याण का मार्ग अपनाया है सारी दिगम्बर समाज में आपके नाम के अनुरुप यशकीर्ति का विस्तार हुआ है। पूज्यपाद आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की समक्षता में और अन्य प्रसंगो पर अनेक उपाधियां एवं अभिनन्दन पत्र समर्पित किये हैं। आपके ३ सुयोग्य शिष्य १ श्री पं. रामचन्द्रजी २ पं. किशनलालजी ३ पं. डाड़मचदजी हैं। पं. रामचन्द्रजी शिक्षण संस्थाओं की देखभाल करते हैं। पं. डाड़मचन्दजी उपदेश के साथ २ यंत्र मंत्र और ज्योतिष के भी जानकार हैं। और संगीत कला में तो बड़े ही निपुण हैं।

आपकी संगीत कला पर मुग्ध होकर आपको " संगीत शिरोमणी " की उपाधी प्रदान की गई है। पं. किशनलालजी महाराज श्री की सेवामें रहते है वे भी पूजन पाठ एव संगीत आदि के जानकार है। वर्तमान समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए महाराज श्री ने नया शिष्य बनाने का विचार छोड़ दिया है और भट्टारक गद्दी की स्मृति हमेशा स्थायी रखने के लिये सम्पति का ट्रस्ट डीड कर दिया है।

श्रीमद् पंडित रामचन्द्र

खादी की धोती और चादर से ढँका हुआ मुट्ठी भर हड्डियों का ढांचा, छोटा कद और लम्बी चाल गौर वर्ण और उन्नत ललाट, वृद्धत्व के परिचायक पूर्ण श्वेत केश सम्भाषण के पूर्व तक छिपा रहने वाला व्यक्तित्व, आलस्य और निराशा के कट्टर शत्रु जबसे जगे तभी से सुबह मान कर काम में जुट जाने वाले। बाहर से कुछ उग्र दिखाई देने वाला स्वभाव परन्तु भीतर से अत्यन्त कोमल यह है श्रीमद् प. रामचन्द्र का संक्षिप्त परिचय।

आपका जन्म विक्रम सं० १९६२ में नीमच के पास श्रावण भादवा गांव के निवासी गुजरगौड़ ब्राह्मण जगन्नाथ के घर में हुआ था आपकी माता का नाम इगामबाई था आपके पिता जगन्नाथ आपको ६ माह का रखकर ही स्वर्गवासी हो गये थे। इगामबाई आजीविका के लिये एक वर्ष के बालक रामचन्द्र को लेकर प्रतापगढ़ चली गई। विक्रम सं. १९६६ में म० क्षेमकीर्तिजी महाराज का प्रतापगढ़ में चातुर्मास था उनके पास ऋषिमण्डल का पाठ सुनने एक श्वेताम्बर स्थानक वासी धूलजी सेठ आया करते थे एक दिन उन्होंने कहा कि एक ४ वर्ष का ब्राह्मण का लड़का है आप शिष्य रखना चाहें तो मैं उसकी मा को समझा कर दिलवा दूं। महाराज श्री ने कहा कि ब्राह्मण को शिष्य रखने से क्या लाभ होगा परन्तु वहां पर बैठे हुए महराज श्री के शिष्य पं. किशनलाल पं. हीरालाल प. प्यारेलाल और रसोइयां वालजी आदि ने कहा कि ब्राह्मण है तो क्या हर्ज है गौतम गणधर भी तो ब्राह्मण थे अपने यहां एक छोटा बालक होगा तो हम सब का मनोरंजन भी होगा

और पढ़ लिख कर योग्य बनेगा तो शिष्य रहेगा नहीं तो गादी में दूसरा काम करेगा ऐसा कह कर अत्र पंडित बालक को देखने गये बालक को तीव्र बुद्धि और चपल देख कर खुश हो गये और प. हीरालालजी बालक को उठा लाये । विक्रम स. १९६७ दीपावली के दिन से आदिनाथ स्तोत्र से आपका अध्ययन प्रारंभ कराया गया । विक्रम स. १९७४ में भ० देवेन्द्रकीर्तिजी महाराज का स्वर्गवास हो गया तो भ० यश-कीर्तिजी महाराज ने आपके अध्ययन के लिये एक पंडित की व्यवस्था कर दी। परन्तु १९७९ में भ० यशकीर्तिजी महाराज गुजरात में भ्रमण करने पधारें तब से आपका अध्ययन छूट गया और गद्दी के सारे कार्यों का उत्तरदायित्व आपके कंधों पर आपड़ा फिरभी आपने अध्ययन प्रारंभ रक्खा और गद्दी के संपूर्ण कार्यों को योग्यतापूर्वक व्यवस्था करने लगे यद्यपि आपने कोई परिक्षा उत्तीर्ण नहीं की परन्तु सभी विषयों में अच्छी योग्यता रखते है । शास्त्र सभा में जनता को मुग्ध कर देते हैं । यत्र मंत्र ज्योतिष और वैद्यक में भी आपकी अच्छी योग्यता है । वास्तु शास्त्र में तो आपकी गति अत्यन्त प्रसंशनीय है। मन्दिर मूरर्ती ध्वजादण्ड कलश वेदी आदि के प्रमाणिक नाप तत्काल निकाल देते हैं । आपकी देख रेख में कई शिखर बद्ध मन्दिरों और हजारों जिन मूर्तियों का निर्माण हुआ है। इसी प्रकार गृह वास्तु शास्त्र का भी अच्छा ज्ञान है । आपके द्वारा सैकड़ों प्रतिष्ठाएँ और विधान कराये गये हैं।

प्रतिष्ठा पाठ के शास्त्रीय ज्ञान के अलावा प्रखर बुद्धि के कारण तत्सम्बंधी अन्य आयोजन भी बड़े रमणीय और चित्ताकर्षक रहते हैं। प्रतिष्ठा कराने और विधि विधान सम्पन्न कराने की आपकी अपनी निराली ही शैली और विशेषताएं हैं । प्रतिष्ठा में कल्याणक एवं अन्य दृश्य ऐसी सज धज के साथ दिखाये जाते हैं जिनसे जनता बड़ी प्रसन्न होती है । आपकी प्रतिष्ठा कराने की पद्धति की अनेक आचार्यों मुनियों प्रतिष्ठाचार्य विद्वानों और समाज के प्रतिष्ठित नेताओं आदि ने मुक्त कंठ से प्रसंशा की है। जिन दिनों प्रतिष्ठा में कल्याणक की क्रियाएं होती है आप इतने

मर्ग व्यस्त रहते हैं कि गाना पीना और सोना तक छोड़ देते हैं यही कारण है कि समाज आपको हजारो रुपये भेंट करती है। परन्तु आपने अपने पास मात्र १००१) रु० से अधिक नहीं रखने की प्रतिज्ञा करली है तदनुसार भेंट की रकम संस्थाओं में देते रहते हैं। सारे भारत वर्ष की दिगम्बर जैन समाज में आपकी ख्याति है आपने अपना सारा जीवन संस्थाओं की सेवामें लगादिया है।

प्रतापगढ़ में आपके द्वारा सचालित श्री भ० यशकीर्ति दि जैन बोर्डिंग प्रतापगढ़ दिगम्बर जैन समाज की अद्वितीय शिक्षण संस्था है। जिस के अन्तर्गत भ० यशकीर्ति माध्यमिक विद्यालय (राजस्थान सरकार द्वारा प्रमाणित) श्री रमण बहिन दि० जै० कन्याशाला आदि संस्थाएँ चल रही हैं। छात्रालय में श्री सीमन्धर भगवान का भव्य जिनालय बनवाया है जिसकी प्रतिष्ठा बड़े समारोह पूर्वक की गई थी। इस प्रतिष्ठा के पूर्व प्रतिमाजी लाने के दिन से ही आपने अब तक प्रतिष्ठा नहीं होगी तब तक दूध और चावल खाने का त्याग कर दिया था। प्रतिष्ठा होने के बाद प्रतापगढ़ की समाज ने ६ मन दूध की खीर बनाकर आपकी प्रतिज्ञापूर्ति का समारोह किया था नया मन्दरजीमें आमसभा कर आपको मान पत्र समर्पित किया गया था। प्रसिद्ध तीर्थ भूमि केशरियाजी (ऋषभदेव) में भ० यशकीर्ति भवन का निर्माण आपकी देख रेख में ही किया गया था एवं वहाँ पर श्री ऋषभ दि० जैन मण्डल श्री जीवदया संघ श्री ऋषभदेव दि० जैन तीर्थ रक्षा कमेटी आदि संस्थाएं आप ही के द्वारा स्थापित की गई हैं। ऋषभदेव की समाज ने आपकी सेवाओं के उपलक्ष्य में कृतज्ञता स्वरूप आपको "जैनरत्न" की उपाधी प्रदान कर बहुत बड़ा रजत शिल्ड समर्पित किया था। आपका ही साहस था कि ऋषभ देव में अ० भा० दिगम्बर जैन नरसिंह पुरा सभा का एतिहासिक महा सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ था और अ. भा. दि० जैन नरसिंहपुरा महासभा की स्थापना हुई थी।

पण्डितजी के अनन्य स्नेही श्रीमान् जौहरी मोतीलालजी मीण्डा उदयपुर की समाज के प्रमुख व्यक्ति हैं आपने उदयपुरमें बड़े समारोह पूवक सिद्ध चक्र विधान कराया था, उस अवसर पर उदयपुर की दि० जैन समाज ने आपको "धर्मरत्न" की उपधि प्रदान की थी। साथ ही पण्डित रामचन्द्रजा महोदय को भी अभिनन्दन

पत्र समर्पित किया था। इसी प्रकार सरोदा पचकंल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर एकत्रित समाज ने आपको धर्म भूषणकी उपाधि से विभूषित कर अभिनन्दन पत्र अर्पित किया था। फलासिया (झालावाड़) में पद्म प्रभ दि० जैन बोर्डिंग एव बांसवाडा में श्री भ. यशकीर्ति दि जैन छात्रालय की स्थापना आपके ही प्रयत्नों का फल है। वर्तमान मे भी ये सस्थाएँ आपके ही महामंत्रीत्व में चलारही हैं।

अ. भा० दिगम्बर जैन महासभा, मालवा प्रां० दि० जैन महासभा, शांति सागर स्मारक समिति, दिगम्बर जैन मदिर जीर्णोद्धार कमेटी चितौड़ आदि अनेक संस्थाओं के सदस्य रहकर समाज की सेवा कर रहे हैं। आप की इस वृद्धावस्था में कार्य करने की बड़ी स्फूर्ति हैं। आपकी कर्मठता को देख कर पूज्य आचार्य कुंथुसागर जी महाराज आपको लोहे का पुतला" कहा करते थे। और प्रतापगढ़ के कवि श्री देवी चन्दजी तो आपको " करामात का पुतला " कह कर अपनी कविताओं मे गाया करते हैं। इस प्रकार आपका साराजीवन समाज की सेवा कार्यों में लग रहा है। हम श्री जिनेन्द्र देव से आपके दीर्घायुष्य को कामना करते हैं।

पं० चन्दन लाल साहित्यरत्न

ऋषभदेव (राजस्थान)



जल यात्रा विधि



नोट.—जल यात्रा विधि की आवश्यक सामग्री कलश, श्रीफल, आच्छादन, छन्ना, अंग पोंछणा, अष्ट द्रव्य, पान, माला, रोकड़ (रुपा नाणा), दूध, शक्कर (मिश्री) दीपक, दपण, ध्वजा पाटला, सूत, (लच्छा) कुंकुम आदि पहले से तैयार कर साथ में ले लेना चाहिये ।

सर्व प्रथम शुभ मुहूर्त में प्रात काल मन्दिरजी या मण्डप से यन्त्रजी लेकर गाजे बाजे संगीत आदि बड़े समारोहपूर्वक सहधर्मी श्रावक श्राविकाओं के साथ तालाब या वापिका पर जाना चाहिये फिर दो हरे छन्ने को उसके चारों कोने पकड़ कर जल में डूबता हुआ झूले की तरह पकड़ रक्खे उस छन्ने में यन्त्रजी विराजमान करके वरुण देवता का आह्वाहन करके मध्य कर्णिका पूजा (वरुण देवता की) अष्ट द्रव्य से करें। जिसमें १ श्रीफल भी चढ़ावें।

तत्पश्चात क्रम से श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, तुष्टि, पुष्टि, इन आठ देवियों का आह्वानन करके आठों को अलग २ अर्घ चढ़ावें । पश्चात् विसर्जन करके पूजन में चढ़ाया हुआ द्रव्य श्रीफल सहित जलमें क्षेपण करदे तथा यन्त्र का अभिषेक करके चौकी (पाटा) पर विराजमान कर केशर पुष्प चढावें । पश्चात छने हुवे जल से घड़ों को साफ कर यन्त्र की माङ्गलिक कलश भरें । पश्चात् कलशों के तिलक करके सभी कलशों मे दूध, सर्करा, (खड़ी साकर) रजत मुद्रा (चांदी का रुपया, अठन्नी, चवन्नी आदि) क्षेपण कर कलशों पर श्रीफल रख कर शुद्ध वस्त्रों से आच्छादित करे एवं पान रख कर सूत्र (लच्छे) से बांध कर कलशों को पुष्प माला पहिनावें । मुख्य कलश पर पाच या सात ध्वजाए तथा दर्पण विशेष रूप से बांधे । पश्चात् कलश उठाने वाली इन्द्राणियों (श्राविकाओं) के तिलक कर माला पहिनावे । पश्चात् एक अर्घ्य चढा कर श्राविकाओं को कलश दे देवे । समस्त श्रावक गण आगे यन्त्रजी के साथ रहें । उनके पीछे सर्व प्रथम मुख्य कलश वाली श्राविका तथा उसके पीछे बाकी सब कलशो वाली बहिनें रहें । इस प्रकार पूर्ववत समारोहपूर्वक जिनेन्द्र भगवान जय ध्वनि पूवक मण्डप में पहुँच कर प्रतिष्ठाचार्य पुष्प तथा अक्षत से कलशों को वधावे पश्चात वेदी के पास विराजमान करे ।



॥ जल यात्रा विधि ॥

प्रथमं तडागे जल समीपे चतुष्पथे स्नपनं क्रियते पश्चाज्जल मध्ये धौत वस्त्रं द्वाभ्यां पार्श्वे प्रधार्य जल मध्ये निमज्ज्य यंत्रं धौत मध्ये प्रक्षिप्य पूज्यते । प्रथमं यंत्र मध्ये कर्णिका पूजा पश्चाद्देवीनां पूजा कर्तव्या ।

(वरुण देवताह्वाननम्)

वारुणं यंत्र मुद्धृत्य, पूजयेद्विधि पूर्वकं
भोगैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं, जनानां हित काम्यया ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वरुणदेव जलयात्रा महोत्सवे अत्रागच्छागच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् । आह्वानन, स्थापनं, सन्निधिकरणं, ॥ यंत्रस्थापनं ।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

॥ अथ मध्य कर्णिका पूजा ॥

पाशपाणिमपानाथं, पश्चिमाशा पतिं वरम् ।
पूजयामि महा भक्त्या, सर्व कल्याण कारकम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वरुण देव सपरिवारेण जलयात्रा महोत्सवे आगच्छागच्छ बलीं गृहाण २ जलं मुंच२ स्वाहा ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत)

ॐ ह्रीं वरुण देवाय इदं जलमित्यादि ॥ इति मध्य कर्णिका पूजा ॥

॥ अथ प्रत्येक पूजा ॥

हिमाद्रि संस्थितां रम्यां, पद्म द्रह निवासिनीम् ।
पूजयामि महाभक्त्या, श्री देवीं श्री विधायिनीम् ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते श्री देवी आगच्छ २ बलि गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री देव्यै: इदं जलं गंधं इत्यादि ॥

जन्मोत्सवे जिनेन्द्रस्य, मातुर्भवित परायणां

पूजयामि महाभक्त्या, ह्रीं देवीं ह्रीं विधायि नीम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते ही देवी आगच्छागच्छ बलि गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा

ॐ ह्रीं ही देव्यै: इदं जलंगंधमि त्यादि ॥

सुखदां सर्वदा लोके नित्यानंद विधायिनीम्

पूजयामि महा भक्त्या धृति धृति विधायिनीम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते धृति देवी आगच्छागच्छ बलीं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा

ॐ ह्रीं धृति देव्यै जलं गंध मित्यादि ।

शरद् भूचंद्र धवलां, कीति कल्याण कारिणीम्

पूजयामि महा भक्त्या, कीर्तिं कीर्ति विधायिनीम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते कीर्तिं देवी आगच्छागच्छ बलि गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं कीर्ति देव्यैः जलं गंधमित्यादि ॥

पन्च पल्योपमा लत्वा, विमलाभ्रविनीं सदा

पूजयामि महाभक्तया, बुद्धिं बुद्धि विधायिनीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते

बुद्धि देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं बुद्धि देव्यैः इदं जलं गंधमित्यादि ॥

कमलाऽऽगच्छतु गेहे, परमानन्द दायिनी ।

पूजयामि महाभक्तया, लक्ष्मीं लक्ष्मी ॥ करां नृणां ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कलम मुख हस्ते

लक्ष्मी देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं लक्ष्मी देव्यैः जलं गंधमित्यादि ॥

तुष्टिं करोति तुष्टिः स–ततं सर्व शरीरिणां ।

पूजयामि महाभक्तया, तुष्टिं तुष्टि विधायिनीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते

तुष्टि देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं तुष्टि देव्यैः जलं गधमित्यादि ॥

जन्माभिषेक कल्याण, कारिणीं परमेश्वरीम् ॥
पूजयामी महाभक्त्या, पुष्टिं पुष्टि विधायिनीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्ण चतुर्भुजे पुष्प कमल हस्ते
पुष्टि देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं पुष्टि देव्यैः जलं गधमित्यादि ॥

(विसर्जन मंत्रः)

इत्थंच देवताः सर्वाः पूजिताच मयाधुना ।
सर्वाः मम प्रसिदन्तु सर्व कल्याण दायिनः ॥ इति विसर्जन मंत्र ॥

पश्चान्नारिकेलं सहित पूजोपहारं जलमध्ये संत्यज्य, यंत्र संनिधौ धौत मध्यजलेन कुंभान् संभृत्य तिलकं कुर्यात पश्चात् शर्करा दुग्धे प्रक्षिप्येते तदनंतरं अष्ट विधार्चनं क्रियते । पश्चात् महोत्सवेन चैत्यालये समानीया ।

॥ इति जलयात्रा संपूर्णम् ॥

सकलीकरण विधानम्

सर्व प्रथम पूजा या विधान करने वाला स्नान कर शुद्ध होकर श्री जिनेन्द्र भगवान के सन्मुख निम्न मन्त्र का १००८ बार जाप्य करके आत्म शुद्धि करे ।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं,

ॐ ह्रीं णमो आईरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं,
ॐ ह्रीं णमो लोएसव्व साहूणं ।

अष्टोत्तर सहस्र जाप्येनेन्द्रेणात्म शुद्धिः कर्तव्याः ।

पश्चात् निम्न मन्त्र पढ़ते हुवे २१ लोंग अपने दोनों हाथों को तर्जनी (अंगुष्ठ के पास वाली) अंगुली से पकड़ कर अपने सिर पर रखता अपने आपको इन्द्र होने का चितवन करे ।

ॐ वज्राधिपतये आं हां अः ऐं ह्रीं ह्व ह्रूं ह्रें ह्रः इन्द्र संवौषट् एक विंशतिवारानात्मान मधिवासयेत् ॥

(इति इन्द्र आह्वाननं)

पश्चात् मुकुट, कुण्डल; मुद्रिका, कंकण, मेखला, करधनि, आदि आभूषण धारण करे।

❀ वचो निर्मली करण मन्त्र ❀

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी नमः स्वाहाः ॥

यह मन्त्र पढ़ कर दर्भ शलाका से अपनी जीभ पर जल छांट कर वचन शुद्धि करे ।

॥ शिखा बंधन मत्र ॥

ॐ नमो भयवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स चक्क जलंतं गच्छ २ आयासं पायाल लोयाणं भूयाणं जुएवा विवाहो वारायंगणेवा घणेश मोह मेर रक्ष २ स्वाहा । ॐ ह्रीं वषट्

इस मंत्र को पढ़कर चोंटी के गांठ लगावे ।

प्रथम अंगन्यास

दोनों हाथों के अगुष्ठों से हृदय आदि स्थानों को स्पर्श करने की क्रिया को अंगन्यास कहते हैं ।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं स्वाहा । (हृदये)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा । (ललाटे)

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाण स्वाहा (शिरसो दक्षिणे)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा (शिरसः पश्चिमे)

ॐ ह्रः लोए सव्व साहूणं स्वाहा (शिरसो वामे)

द्वितीय अंगन्यास

अनंतर ऊपर के मंत्रों को फिरसे पढ़ते हुवे निम्न प्रकार दूसरा अंगन्यास करे ।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं स्वाहा (शिरसः मध्ये)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा (शिरसः आग्नेय भागे)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं स्वाहा (शिरस नैऋत्य भागे)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा (शिरसः वायव्ये)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा (शिरसः ईशाने)

॥ तीसरा अंगन्यास ॥

ॐ ह्राँ णमो अरहंताणं स्वाहा (दक्षिण भुजे)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा (वाम भुजे)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं स्वाहा (नाभि मंडले)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा (दक्षिण पृष्ठे) दाहिने पछवाड़े

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा (वाम पृष्ठे) बांये पछवाड़े

ॐ अट्ठेवय अट्ठसया, अट्ठ सहस्साइ अट्ठ कोडिउ ।

रक्खंतु मे शरीरं, देवासुर पणमिया सिद्धाय स्वाहा ॥

इत्यंगन्यासः ॥

हस्त निर्मली करण मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताए श्रुतांगदेवी प्रशस्त हस्ते हूँ फट् स्वाहा

इति हस्त निर्मली करणम्

हृदय शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख कमलवासिनी सर्वपाप क्षयंकरी श्रुतज्ञानदेवी हन हन दह दह क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षौं क्षः क्षीर धवले अमृत संभवे वं वं हूँ फट् स्वाहा काय शुद्धिमहे स्वाहा ।

(इति हृदय शुद्धिः)

निम्न मंत्र पढ़कर अपने मुख की शुद्धि करे

ॐ नमो भगवते क्रौं ह्रीं चन्द्र प्रभाय चन्द्रेन्दु महिताय चन्द्र मूर्तिनि सर्व सुख रंजिनि पुनी महे स्वाहा । (इति आत्म मुखाभिमंत्रणम्)

नेत्र पवित्री करण मंत्र

ॐ ह्रीं च्रौं महामुद्रे कपिल शिखे हूं फट् स्वाहा । (लोचनाभिमंत्रणम्)

उपांग पवित्री करण मंत्र

ॐ नमो भगवते ज्ञान मूर्ते सप्तशत क्षुल्लकादि महा विद्याधिपते विश्व रुपाणि क्रौं ह्रां ह्रीं ह्रौं संवौषट् । (उपांग पवित्री करणम्)

हृदय रक्षा मंत्र

ॐ नमो अरहंताणं हृदयं ह्रीं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा (हृदय रक्षा)

शिरो रक्षा मंत्र

ॐ नमो सव्व सिद्धाणं हर हर शिरो रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा (शिरोरक्षा)

ॐ नमो आइरियाणं ह्रीं शिखां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा (शिखा रक्षा)

ॐ नमो उवज्झायाणं एह्येहि भगवती वज्र कवचं वज्रिणि रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

(इति मुख रक्षा)

नीचे का मंत्र पढ़कर वज्र कवच धारण करने का चितवन करें ।

ॐ नमो लोए मव्व साहूणं क्षिप्रं साधय २ वज्र हस्ते शूलिनी दुष्ट रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ।

(इन्द्रस्य कवचम)

ॐ अरिहाय सर्वे रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा

(इति परिवारक रक्षा)

पश्चात इन्द्र दशों दिशाओं में पुष्पाक्षत क्षेपण करता हुआ विघ्नों की शांति के लिये निम्न शांति पाठ पढ़ें ।

विक्षिपन् दिक्षु सिद्धार्थान्, यवाक्षत विमिश्रितान्
इन्द्रो विघ्नोपशान्त्यर्थं शांतिक तदिद पठेत् ॥

ॐ हूँ क्षूं फट् किरिटि घातय २ परविघ्नान् स्फोटय २ सहस्र खंडान् कुरू २ पर मुद्रां छिन्द २ घातय २ पर मंत्रान् भिन्द २ क्षः फट् स्वाहा ॥

सुसिद्धार्थानभि मन्त्र्य सर्वासु दिक्षु विक्षिपेत् ।
सर्व विघ्नोपशान्त्यर्थं सकली करणं भवेत् ॥

कर्माष्टक विनिर्मुक्ता गुणाष्टक समन्विता ।
सिद्धाः सन्निहिता सन्तु भव्य सत्व विमुक्तिदा ॥

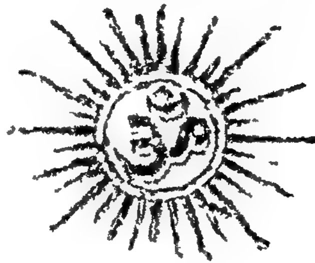
ॐ नमो भगवद्भ्यः सिद्धेभ्यः क्ष्वूं क्ष्वूं क्ष्वूं ह्रीं क्ष्वं ठं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः संवौषट् ।

इस मन्त्र को पढ़ कर सब दिशाओं में पुष्पाक्षत क्षेपण करे ।

यावन्मेरुर्महीं यावद्यावच्चन्द्रार्क तारकाः तावद्भद्राणि पश्यन्तु शांतिक स्नान पाठकाः ॥

॥ इति सकली करणम् ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥



समुच्चय पन्च कल्याणक

[भट्टारक-भुवन कीर्ति कृत]

प्रणमूं जिन चौबीस के पन्च कल्याण जी, गर्भ जन्म तप ज्ञान अरु निर्वाण जी।
बालि समुच्चय मंगल पाठ बखान जी, तजि सर्वार्थ पयान करे त्रय ज्ञानजी॥

त्रय ज्ञान धारी गर्भ आये, मात स्वप्न जु देखिये।
उठि के प्रभातहि पूछि पिउ को फल तीर्थंकर लेखिये॥
लखि इन्द्र अवधि धनद पन्द्रह मास वर्षहु रत्न सों।
छप्पन कुमारी गर्भ शोधन, राखि माता यत्न सों॥ १॥

छह निधि उत्सव धार, इन्द्र मन सुर गये, प्रश्नोत्तर नव मास मात पूरण भये।
जन्म समय तब देव घंट हरि बाजियो, इन्द्र चल्यो सज सैन्य, गगन तब गाजियो।

गाजियो ऐरावत चढ़िय सुर, जन्म नगरी आइया ।
इन्द्राणी माया मयि शिशु रखि, मात से प्रभु लाइया ।
जय जय करत सुर देव नाचत, मेरु गिरि पें ले गये ।
इम सहस आठ सु हेम कलशा, चीर जल ढारत भये ॥२।

करि श्रृंगार सुलाय मात पित, सौंपियाराज तिलक सुरदेय धर्म ध्वज रोपिया ।
करि विवाह शुभ राजनीति सब धारिया, अन्त वैराग्य सुपाय ममत्व निवारिया ॥

ममता निवारी धन्य प्रभु तुम आय लोकान्तिक भने ।
प्रभु बार भावे भावना तहां इन्द्र जो आये घने ॥
आरूढ़ हैं प्रभु पालखी में, स्वजन जन समभाविया ।
नमः सिद्ध कह लोंच करिके तप कल्याणक पाविया ॥३॥

शेल मूल पुनि त्रय ऋतु में प्रभु तप करें, मनः पर्यय शुभ पाय भव्य जड़ता हर ॥
आहार विहार करे सु निहार करे नहीं, कर्म घातिया नाश, ज्ञान केवल लही ॥

लहि ज्ञान केवल इन्द्र जानी समवशरण रचाइया ।
गणधर सुमुनि अरु आर्जिका चउ देव नर पशु आइया ॥
करि धर्म तत्व बखान से बहु भव्य जीव सम्बोधिया ।
थुति करि इन्द्र विहार को, गिरि शिखर योग निरोधिया ॥४॥

एक मास क्रिय ध्यान शुक्ल मन धारिया, प्रकृति सहित जु अघातिय कर्म निवारिया ।
लघु पन्चाक्षर मांहि प्रभु गत शिव लये, रहे केश नख, तन परमाणु खिर गये ॥

खिर गये जब सुर आय कै, मायामयि तनु निमये ।
चन्दन प्रमुख मुकुटाग्नितैं शुभ क्रिया कर सब सुर गये ॥
श्री पन्च कल्याणक महातम, सुनत भवि सुख पाइये ।
कहि भाव सेन सुदेव यश त्रैलोक्य मंगल गाइये ॥५॥

सलिल चन्दन पुष्प शुभाक्षतै-श्चरू सुदीप सुधूप फलार्घ कैः ।
धवल मंगल गान रवाकुले जिन गृहे जिनराज महं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पन्च कल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

❀ श्री लघु अभिषेक पाठ ❀

ॐ श्री मन्मंदर सुन्दरे शुचिजलै धौतैः सदर्भाक्षतैः ॥
पीठे मुक्ति करं निधाय रचितं, त्वत्पाद पद्म स्रजः ॥

(पीठ प्रक्षालनं, श्री कारार्चनं)

इन्द्रोऽहं निज भूषणार्थ ममलं, यज्ञो पवीतं दधे ।
मुद्रा कंकण शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥ १ ॥

(इन्द्रा भरणं यज्ञोपवीत धारणं)

इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत्य, वरूण, वायु, कुबेर, ईशान, धरणेन्द्र, सोम इति दश दिग्पालेभ्योऽर्घं ॥

(क्षेत्र पाल स्थापनं कुर्यात)

इन्द्राग्न्यान्तक नैऋतोदधिमरु–धनेश शेषो ईशान ।
आहूतान्निज वाहनायुधवधून् युक्तांन्सुसंस्थापितान ।

(इति दिग्पाल आह्वानम)

[सिंहासन के चारों तरफ चावल के १० ढेर स्थापित कर दिग्पालों की स्थापना करें]

प्रागत्य देवी जननी प्रपूज्या, नित्याविभूत्या नगराज मूर्ध्नि ।
मृगेन्द्र पीठे वर पांडु कायां, निवेश्य पूर्वाभिमुखं जिनेन्द्रम् ॥
क्षीरोद तोयैरमरोप नित्यैः, प्रियंगुसच्चन्दन चन्द्र मिश्रैः ।
आपूरिताभष्ट सहस्र संख्यान्, प्रगृह्य सत्कंचन रत्न कुंभान् ॥
यः पाडुकामल शिलागत, मादिदेव–मस्नापयन्सुरवराः सुर शैल मूर्ध्नि ।
कल्याण मीप्सु रह मक्षत तोय पुष्पैः सभावयामि पुर एव तदीय बिम्बं ॥

(प्रतिमा स्थापनं)

[निम्न मंगल स्तुति पढ़ते हुए वादित्र के साथ भगवान को लाकर विराजमान करें]

कैलाशे वृषभस्य निर्वृति मही–वीरस्य पावापुरे ।
चम्पायां वसु पूज्य सज्जिनपतेः सम्मेद शैलेर्हताम् ॥
शेषाणामपिचोर्जयंत शिखरे, नेमीश्वर स्यार्हतः ।
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध विभवाः कुर्वन्तुनो मंगलम् ॥
मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणि ।
मंगलं राम सेनाद्याः जैन धर्मोस्तु मंगलम् ॥

(इति मंगल स्तुति)

ॐ आर्हंत्य, स्नपनोसितोपकिरणं, दध्यक्षताद्यर्चितान् ।
संस्थाप्योज्वल वर्ण पूर्ण कलशान्, कोणेषु सूत्राधृतान् ॥
तूर्यान्संस्तुति गीत मंगल रवै, क्षुब्धे जयत्सुध्वनिः ।
सोत्साहं विधिपूर्वकं जिनपतेः स्नानक्रियां प्रस्तुवे ॥

(चतु कलश स्थापनम्)

[चारों कोनों पर ४ कलश स्थापन करें]

हे इन्द्रदेव समाह्वानयामहे स्वाहा । हे इन्द्र देव आगच्छ २ इन्द्राय स्वाहा । इन्द्र परिजनाय स्वाहा । इन्द्रानुचराय स्वाहा । इन्द्रमहतराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा, सोमाय स्वाहा । वरूणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा । स्व स्वाहा । स्वधा स्वाहा (पुष्पांजलि क्षिपेत ,

ॐ इन्द्र देवाय स्वगण परिवृत्ताय इदं जलं गंधं पुष्पं अक्षतं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं अर्घं बस्तिकं यज्ञ भाग्यं यजामहे प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा (अर्घं)

यस्यार्थं क्रियते कर्म, मप्रीतो भव मे सदा ।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्व कार्येषु सिद्धिदः ॥ (इत्याशीर्वादः)

(इसी प्रकार दशों दिग्पालों के अर्घ चढ़ाना चाहिये)

ॐ अर्घं स्वस्तिक यज्ञ भाग चरूकै रोंभूर्भुवः स्व स्वधा ।
स्वाहा चैत्यभिमन्त्रितैः प्रति दिशं संतर्पयामि क्रमात् ॥
सच्चन्दनाद्यक्षत तोयमिश्रैः विकास पुष्पांजलिना सुभक्तया ॥
जैनाभिषेकेन समं समेतान् नव ग्रहान् शान्ति करान्यजामि ॥

आदित्य सोम मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनिश्चर राहु केतु नवग्रह देवताभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(इति दिक्पालानामर्घावतारणम्)

सद्येनाति सुगन्धेन स्वच्छेन बहुलेन च स्नपनं क्षेत्र पालस्य, तैलेन प्रकरोम्यहं ॥
तैल स्नपनम ॥

सिन्दूरैररुणाकारैः पीत वर्णैश्च कुंकुमैः, चर्चनं क्षेत्रपालस्य सिन्दूरेण करोम्यहम् ॥
सिन्दूरार्चनम् ॥

मद्यः पूतैः महास्निग्धैः शुभ्रः गुडार्च पिण्डकैः, क्षेत्रपाल मुखे देयात् गुरु विघ्नः विनाशनम् ।
गुडाचनम् ॥

सुस्वच्छ सौगन्ध्य सुनिर्मलेन सद्यैन तैलेन गुडान्वितेन ।
श्री क्षेत्रपालं बहु विघ्न शान्त्यै, संस्नोमि सिन्दूर कृतानुलेपम् ॥

भो क्षेत्रपाल जिनपः प्रतिमाकपाल दंष्ट्रा कराल जिन शासन रक्षपाल ।
तैलाभिषेक गुड़ चन्दन दीप धूपैः भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले ॥

श्री कुमुद अंजन चामर पुष्पदंत जय विजय अपराजित, मणिभद्रादि अष्ट क्षेत्रपालेभ्यो अर्घं ॥

॥ अथाष्टकं ॥

स्थानान्सुनर्घ्यान् प्रति पत्ति योग्यान्, सद्भावमन्मान जलादिमिश्च ।
जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमि पूजामह दिक्पतीनाम् ॥

ॐ ह्रीं दशदिग्पालेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ।

श्री खंडकपूर सुकुंकुमाढ्यैः गन्धैः सुगन्धीकृत दिग्विभागैः ॥ जैनाभि० ॥ चन्दनं ॥
शाल्यक्षते रक्षत दीर्घगात्रै सुनिर्मलैश्चन्द्र करावदातै ॥ जैनाभिषे० ॥ अक्षतम् ॥
अंभोजनीलोत्पलपारिजातैः कदम्ब कुन्दादिवर प्रसूनैः ॥ जैनाभिषे० ॥ पुष्प० ॥
नैवेद्यकै. कांचन रत्नपात्रैर्न्यस्तैरुदस्तैः हरिणासुहस्तैः ॥ जैनाभिषे० । नैवेद्यम् ।
दीपोत्करैः ध्वस्त तमोभिघातै, रुद्योदिताशेष पदार्थ जातैः ॥ जैनाभि० ॥ दीपम् ॥
तरुत्थकृष्णागरूचन्दनाद्यैः, सच्चूर्णजैरुत्तम धूपवर्गैः ॥ जैनाभि० ॥ धूपम् ॥
लवंग नारंग कपित्थ पूगैः, श्री मोचचोचादि फलैः पवित्रैः । जैनाभि ॥ फलम् ॥
श्री खंडकपूर सुगन्धवार्भिः फलैश्च पुष्पाक्षत धूप नाद्यैः ॥ जैनाभि० । अर्घं ।

(शुद्ध जल से अभिषेक करें)

ॐ श्रीमद्भिः सुरसै निसर्ग विमलैः पुण्याश्रयाभ्यावृतैः ।
शीतैश्चारू घटाश्रितै रवितथैः, सन्ताप विच्छेदकैः ॥
तृष्णोद्रेक हरैः रजः प्रशमनैः, प्राणोपमैः प्राणिनाम् ।
तोयैर्जैनवचो, मृतातिशयिभिः, संस्नापयामोजिनम् ॥
ॐ जय जय अर्हन्त भगवंतं, जलेन स्नापयामीति स्वाहा ।
जे के वि भव्व जीवा, इच्छन्ति मण वयण काय संजुत्ता ।
संवंदे मणुपुव्वं, पच्छेइवन्दामिया सव्वे ॥

॥ ७ ॥

भवणालय चालीसा, विन्तर देवाण होंति बत्तीसा ।
कप्पामर चउवीसा, चन्दो सूरोणरो तिरिओ ।
भगवतः गर्भ जन्म दिक्षा ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ।
जल स्नपनम ॥

पुण्यैः वार्भिः प्रसिद्धैः परिमल बहुलैश्चन्दनै रक्ततोयैः ।
पुष्पैः पुन्नागनागेश्वरकुभि सुरवरैः दीपकैः दीपिताभैः ॥
धूपैः सद्द्रव्य युक्तै रिव सुकृत फलैः मातुलिंगाम्र पूगैः ।
पुष्पांजलि प्रयुक्तै रुपवनमहितैः, संयजे देव देवं ॥ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(घृताभिषेक)

ॐदण्डी भूत तडिद्गुण प्रगुणया, हेमाद्रिवत् स्निग्धया ।
चञ्च च्चंपक मालया रुचिरया, गौरोचना पिंगया ॥
हेमाद्रिस्थल सूक्ष्मरेणु विलसद्, धातुल्यिका लोलया ।
द्राघीयो घृत धारया जिनपतेः, स्नानं करोम्यादरात् ॥

ॐ जय जय अर्हतं............... घृत स्नपनम् । पुण्यैः वार्भि इत्यादिना अर्घं ॥

❀ दुग्धा भिषेक ❀

ॐ माला तीर्थ कृतः स्वयंवर विधौ चिप्रा पवर्ग श्रिया ।
तस्येयं शुभगस्य हार लतिका, प्रेम्णातया प्रेषिता ॥

वत्सन्यस्य समद्धितो विनिद्दिता, दिग्विथि संख्या कृता
कुर्म शर्म समृद्धये भगवतः संस्नापयेभारया ॥

ॐ जय जय अर्हन्त······दुग्ध स्नपनं ॥ पुण्यैः वार्भिः इत्यदिना: अर्घं ॥

(दध्याभिषेक)

ॐ शुक्ल ध्यान मिदं समृद्ध मथवा, तस्यैव भर्तुर्यशो ।
राशीभूत मिदं स्वभाव विशदं, वाग्देवतायाः स्मितं ।
आहोचित्सुर पुष्प वृष्टि रियमि,–त्याकार मातन्वितैः ।
दध्नेन हिम खंड पांडुर रुचा संस्नापयामो जिनम् ॥

ॐ जय जय अर्हन्तं····· दधिस्नपनम् ॥ पुण्यै वार्भिः इत्यादिना अर्घम् ॥

—:ईक्षुरसाभिषेकः—

ॐ देवाने कैरनेकै स्तुति मुखर मुखै वीक्षी ता याति स्पिष्टैः ॥
शक्रेणोच्चैः प्रयुक्तैर्जिन चरण युगैश्चारू चामीकरामा ।
धारां भोजक्षितीक्षु प्रचुर वर रसा श्यामला वो विभूत्या ॥
भूयात्कल्याण काले, सकल कलिमल क्षालने तीवदक्षः ।

ॐ जय जय अर्हन्तं····· इक्षुरस स्नपनम्, पुण्यै वार्भि इत्यादिना अर्घं ॥

॥ सर्वौषधि स्नपनं ॥

ॐ संस्नापितस्य घृत दुग्ध दधीक्षुवाहै सर्वाभिरौषधि भिरर्हत मुज्वलाभि ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेक मेला कालेय कुंकुम रसोत्कट वारिपूरैः ॥

ॐ जय जय अर्हन्तं भग ...सर्वोपधि स्नपनम् ॥ पुण्यै.र्वाभिः इत्यादिना अर्घं ॥

(शांतिधारात्रयम्)

संपूजकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र गामान्य तपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिर्भगवान् जिनेन्द्रः ॥

"एक रकेबी में पुष्प अक्षत दीपक रख कर आरती उतारें'

दध्युज्ज्वलाक्षत मनोहर पुष्प दीपैः पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण ।
त्रैलोक्य मंगल सुखानल कामदाह, मारार्तिकं तवविभोरवतारयामि ॥

(इति मंगलार्तिकावतारणम्)

(चारों कोनों के ४ कलशों से अभिषेक करे)

ॐ हृद्योद्वर्तन कल्क चूर्ण निवहैः, स्नेहापनो दंतिनो-
वर्णाढ्यै विविधैः फलैश्च सलिलैः, कृत्वावतार क्रियां ।
सपूर्णैः सकृदुद्धतै जॅल धरा कारैश्चतुर्भिर्घटैः ।
रंभापूरित दिङ्मुखै रभिषवं कुर्मस्त्रिलोकीपते.

ॐ जय जय अर्हतं ...चतु कलशस्नपनम् ॥ पुण्यैः वाभिः ईत्यादिना अर्घम् ॥

निम्न श्लोक पढ़ते हुए भगवान के शरीर पर चन्दन का विलेपन करेः—

ऋद्धया च वृद्धया परया सुगन्ध्या, कर्पूर सम्मिश्रित चन्दनेन ।
जिनस्य देवासुर पूजितस्य विलेपन चारू करोमि भक्त्या ॥

(चन्दनानु लेपनम)

पुष्प वृष्टि

प्रफुल्ल पद्मोत्पल कंटकारि, कदम्बकै श्चंपक पाटलाभिः ।
अशोक पुष्पै वरपारिजातै जिनस्य पूजां महतीं करोमि ॥

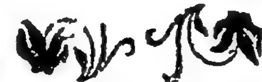
उक्त श्लोक पढ़ते हुए श्रीजीपर पुष्प वृष्टि करना चाहिये

— गंधोदक स्नपनम्:—

ॐ कर्पूरोल्वण सांद्र चन्दनरसा, प्राचूर्य शुभ्रत्विषा ।
सौरभ्याधिक गंधलुब्ध मधुपैः श्रेणी समाश्लिष्टया ॥
सद्यः संगत गांगया मुनिमहा श्रोतो विलःसस्पृहा
सद्गंधोदक धारया जिनपतेः स्नानं करोमि श्रियैः ।
ॐ जय जय अर्हंत...... गंधोदक स्नपनम् ॥

ॐ स्नानानन्तर मर्हतः स्वयमपि स्नानाम्बुषेकाद्रितो-
वार्गंधाक्षत पुष्पदाम चरूकैः दीपैः सुधूपैः फलैः ॥
कामोदाम गजांकुशां जिनपतेः स्वभ्यर्च्य स्वस्तोत्रया
सः स्यादाराधि चंद्रमक्षय सुख प्रख्यात कीर्ति ध्वजः ॥

अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ (पुष्पांजलि क्षिपेत्)



॥ ११ ॥

अभिषेक के बाद निम्न शांति मन्त्र पढ़ते हुवे भगवान पर दूध या जल की अखण्ड धारा करना चाहिये।

—: शांति धारा मन्त्र :—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ॐ श्रीं क्रौं मम पापं खंड, खंड, हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय शीघ्रं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमोऽर्हं झ्ं झ्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्रः पः हः ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः सर्वे पूजकानाम् ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः मम श्रीरस्तु, वृद्धिर पुष्टिरस्तु, शांतिरस्तु, कांतिरस्तु, कल्याणमस्तु, अस्मद्कार्य सिद्धयर्थं सर्व विघ्न निवारणार्थं श्रीमद्भगवते सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्य नाथार्चित पाद पद्म प्रसादात् सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभि- वृद्धिरस्तु स्वस्तिरस्तु धनधान्य समृद्धिरस्तु श्री शांतिनाथो मां प्रसीदतु श्री वीतराग देवो मां प्रसीदतु श्री जिनेन्द्र परम मांगल्य नाम धेयो ममेहामुत्रच सिद्धि तनोतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चिंतामणि पार्श्व तीर्थंकराय रत्नत्रय रूपाय अनंत चतुष्टय सहिताय धरणेन्द्र फणमण्डल मंडिताय समवशरण लक्ष्मी शोभिताय इन्द्र धरणेन्द्र चक्रवर्त्यादि- पूजित पादपद्माय केवल ज्ञान लक्ष्मी शोभिताय जिनराज महादेवाय अष्टादश दोष रहिताय षट्- चत्वारिंशत्गुण संयुक्ताय परम गुरू परमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्य परमेश्वराय देवाधि देवाय

सर्वसत्व हितंकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्व विद्या परमेश्वराय त्रैलोक्य मोहनाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुलबल वीर्य पराक्रमाय अनेक दैत्य दानव कोटि मुकुट घृष्ट पाद पीठाय ब्रह्मा विष्णु रूद्र नारद खेचर पूजिताय सर्वभव्य जनानंद कराय सर्व रोग मृत्यु घोरोप सर्ग विनाशाय सर्व देश ग्राम पुर पट्टन राजा प्रजा शांतिकराय सर्व जीव विघ्न निवारण समर्थाय श्री पार्श्व देवाधि देवाय नमोस्तु । श्री जिनराज पूजन प्रसादात सर्व सेवकानाम् सर्व दोष रोग शोक भयपीड़ा बिनाशनं कुरू कुरू सर्व शांति तुष्टि पुष्टि कुरु कुरू स्वाहा ।

ॐ नमो श्री शांति देवाय सर्वारिष्ट शांति कराय ह्राँ ह्रीं ह्रँ ह्रौं ह्रः असिआउसा मम सर्व विघ्नं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा मम तुष्टिं पुष्टं कुरु कुरु स्वाहा । श्री पार्श्वनाथ पूजन प्रसादात् मम अशुभानि पापानि छिन्द २ भिन्द २, मम पर दुष्ट जनोपकृत मंत्र तंत्र दृष्टि मुष्टि छल छिद्र दोषान् छिन्द २ भिन्द २ मम अग्नि चोर जल सर्प व्याधिं छिन्द २ भिन्द २, मारी कृतोपद्रवान् छिन्द २ भिन्द २, सर्व भैरव देव दानव वीर नरनारसिंह योगिनी कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, डाकिनी शाकिनी भूत प्रेतादि कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी देव देवी कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, अग्निकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, उदधिकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, स्तनितकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, द्वीपकुमार दिक्कुमार भयं छिन्द २ भिन्द २ वातकुमार मेघकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, इन्द्रादि दश दिग्पाल देव कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २ जय विजय अपराजित माणिभद्र पूर्णभद्रादि क्षेत्रपाल कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, राक्षस वैताल दैत्यदानव यक्षादि कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, नवग्रह देवता कृत सर्व ग्राम

नगर पीड़ां छिन्द २ भिन्द २, सर्व अष्ट कुली नाग जनित विष भयान् छिन्द २ भिन्द २, सर्व ग्राम नगर देश मार्गा रोगान् छिन्द २, भिन्द २, सर्व स्थावर जंगम विषजाति वृश्चिक दष्टि विप सर्पादिकृत दोपान् छिन्द २ भिन्द २ सर्व सिंह अष्टापद व्याघ्रव्याल वनचर जीव भयान् छिन्द २ भिन्द, २, पर शत्रु कृत मारणोच्चाटन विद्वेषण मोहन वशी करणादि दोषान् छिन्द २ भिन्द २, सर्व देशपुर मारीम् छिंद २ भिंद २, सर्व राज नरमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व हस्ती घाटक मारीम् छिंद छिंद भिंद भिंद, गोवृषमादि तीर्यंच मारीम् छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व वृत्त पुष्प लता मारीम् छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ भगवती श्री चक्रेश्वरी ज्वाला मालिनी पद्मावती देवी अस्मिन् जिनेन्द्र भवने आगच्छ आगच्छ एहि २ तिष्ठ २ बलि गृहाण २ मम धन धान्य समृद्धिं कुरू कुरू सर्व भव्य जीवानंदनं कुरू २ सर्व देश ग्रामपुर मध्ये क्षुद्रो पद्रव सर्व दोष मृत्यु पीड़ा विनाशनं कुरू २ सर्व परचक्र भय निवारणं कुरू २ स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वृषभादि वर्द्धमानान्ताश्चतुर्विंशति तीर्थंकर परम देवा प्रीयंताम् २, मम पापानि शाम्यन्तु घोरोप सर्गाणि सर्व विघ्नानि शाम्यंतु।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती देवी प्रीयंताम् २।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री रोहिण्यादि महादेवी अत्र आगच्छ २ सर्व देवता प्रीयंताम् २।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्रादि यक्षकुमार देवाः प्रीयंताम् २, सर्वे जिन शासन रक्षक देवाः

प्रीयंताम् २, श्री आदित्य सोम मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनिश्चर राहु केतु सर्वे नवग्रह देवाः प्रीयंताम् २ प्रसीदंतु देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांति भगवान् जिनेन्द्रः ।

यत्सुखं त्रिपु लोकेषु, व्याधि व्यसन वर्जितम् ।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्ति रस्तु सदा मम ॥ १ ॥
यस्यार्थं क्रियते कर्म, सप्रीतो नित्य मस्तु मे ।
शांतिकं पौष्टिकं चैव, सर्व कोर्येषु सिद्धिदः ॥ २ ॥
आह्वानं नैव जा नामि, नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ॥ ३ ॥

॥ इति शांति धारा मंत्रम् ॥

रा.त्रि पत्र के वा अवकाश हो तो उसी प्रकार भगवान पर अखंड धारा करते हुए आगे छपी हुई ज्येष्ठ जिनवर जयमाला पढ़ना चाहिये ।

आरती

आरती सुविशाल रत्न मारे निपाई, सुवर्ण मय धरि पात्र इन्द्र हाथे विहूसाई ॥
प्रज्वलंति कपूर पुष्प माला करि सोहै, अन्धकार फोटंति भविय लोक मन मोहै ॥
जे जिनवर सविव करी आरती करंती, ते अज्ञान हणी करि केवल ज्ञान लहंती ॥
आरतीय कनक वरणी आदि जिनेश्वरतणो भुवन ।

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, चहु दिशि जिन चैत्यालय ।
अतीत अनागत वर्तमान, तीन चौबीसी होय
कल्याण कीजिये,कर जोडि जिये । लिन बहोत्तर होय चंग
प्रणमिजे पुण्या,शिपठ मलाग्रा । नित्य नवा होई रंग ।
आरती हुई चौवीस जिनेश्वर, तणे भुवने हुई निनाद ।
तिहां झालर घण्टा, घोमघोमन्ता, श्री संघह मन आणंद ॥

देवताविसर्जनम्:—

आहूता ये पुरा देवाः लब्धभागा यथाक्रमम् ।
ते जिनाभ्यर्चनं दृष्ट्वा सर्वेयांतु यथास्थितिम् ॥
स्वस्थानं गच्छतु गच्छतु स्वाहा । इति दिक्पाल क्षमापनम् ।

निर्मलं निर्मलाकारं पवित्रं पाप नाशनम् ।
जिन गन्धोदकम् वन्दे अष्ट कर्म बिनाशनम् ॥ गंधोदक वंदनम् ॥

अनतर निम्न श्लोक पढ़कर धूप खेवन करे:—

तरूत्थ काला गुरू चन्दनाद्यं प्रपूरिता शेष दिगन्तरालम् ।
सधूमवृत्या घनवृन्द कांत्या यजामिधूप प्रवरं जिनाय ॥

तत्पश्चात् केशर चढ़ा कर घण्टादि वाजित्र बजाते हुए भगवान को यथास्थान विराजमान करे ।

❀ अथ ज्येष्ठ जिनवर पूजा ❀

(ब्र० जिनदास कृत)

श्री नाभिराय कुल मंडन, मरू देवी उर रयण ।
प्रथम तीर्थंकर गाय सुं, स्वामी आदि जिणंद ॥
ज्येष्ठ जिनंद नवायु, सूरज उगमणे ।
सुवर्ण कलश अणाऊं, क्षीर समुद्र भरणे ॥ १ ॥

युगला धर्म निवारण स्वामी, आदि जिनंद ।
संसार सागर तारण, सेवित सुर गहनं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥

गण धर ऋषिवर यति वर मुनिवर ज्ञान धरं ।
आर्जिका श्रावक भाविका पूजित चरण वरं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥

श्री सकल कीर्ति गुरू प्रणमी ने जिनवर पूज रचूं ।
ब्रह्म भणे जिन दास सु आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ जिनवर स्वामी अत्र अवतर २ संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ जिनवर स्वामी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ जिनवर स्वामी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

॥ अष्टक ॥

निर्मल शीतल सुगन्ध पुज्य रयं,
कर्ममल सव टालिय आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ जलं ॥

चन्दन कुंकुम कर्पूर विलेपन पूज्य रयं ॥
सुगन्ध शरीर लही करी आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ चन्दनम् ॥

मुक्ताफल जिम उज्ज्वल अक्षत पूज्य रयं ।
पूज्य पद लही करी आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ अक्षतम्

जाही जुही मच कुंद सेवत्री पूज्य रयं ।
पूज्यपद लही करी आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ पुष्पम् ॥

उत्तम अन्न बहु आणिय, पक्वान्न पूज्य रयं ।
वेदनीय कर्म विनाशिय आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ नैवेद्यम् ॥

कर्पूर तणी बहु ज्योति सु आरती पूज्यरयं ॥
घातीय कर्म विनाशिय आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ दीपम् ॥

अगर कपूर कृष्णा गुरू धूवह पूज्य रयं ।
घातीय कर्म विनाशिय आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० धूपम् ॥

आम्र नारिंग जंबीर नारीकेल पूज्यरयं ।
मन वांछित फल मांगहुँ आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ फलम् ॥

धवल मंगल गीत महोत्सव अर्घह पूज्य रयं ।
स्तवन करी फल मांगहु आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ अर्घम् ॥

सकल कीर्ति गुरू प्रणमिने जिनवर पूज्य रयं ।
ब्रह्मभणे जिन दास सु आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० । कुसुमांजलिः ।

❀ जयमाला ❀

(ब्र० कृष्णदास कृत)

अमर नयरि सम नयरि अयोध्या, नाभि नरेन्द्र वसैं निजबुध्या ।
सुरपति मेरू शिखर लही चढ़िया कनक कलश छिरोदधि भरिया ॥

तस पटराणी मरू देवी माया, युगपति आदि जिनेश्वर जाया । सुरपति० ।
ज्येष्ठ मास अभिषेक जु करिया, अष्टोत्तर शत कुंभ जुभरिया । सुरपति० ।
भभकत जलधारा संचरिया, ललित कलोल धरणि उत्तरिया । सुरपति० ।
जय जय असुरनि करी उच्चारिया, इंद्र इन्द्राणी सिंहासन धरिया । सुरपति० ।
अंग अनंग विभूषण धरिया, कुण्डल हार हरित मणि जड़िया । सुरपति० ।
ऋषभनाम शत मुख विस्तरिया, कमल नयन कमलापति कहिया । सुरपति० ।
युगला धर्म निवारण वरिया, सुर नर निकर गन्धोदक महिया । सुरपति० ।
रत्न कचोल कुमारिनि भरिया, जिन चरणाम्बुज पूजत हरिया । सुरपति० ।
हिमहिमांशु चंदन घन सरिया, भूरि सुगन्ध गन्ध परि सरिया । सुरपति० ।
अक्षत अक्षतवास लहरिया, रोहिणी कांत किरण सम सरिया । सुरपति० ।
देखत रुचि करि अमरनिकरिया, पंच मुष्ठि जिन आगे धरिया । सुरपति० ।
सुन्दर पारिजात मोगरिया, कमल बकुल पाटल कुमुदरिया । सुरपति० ।
चरूवर दीप लेई अपछरिया, जिनवर आगे उवारि उधरिया । सुरपति० ।

अगर लुवान धूप फल फलिया, फणस रसाल मधुर रस भरिया ॥ सुरपति० ॥

कुसुमांजलि सांजुलि समुजलिया, पंडितराय अभ्र वच कलिया ॥ सुरपति० ॥

त्रिभुवन कीर्ति पद कज वरिया, रत्न भूषण सूरी महापद कहिया ॥ सुरपति० ॥

ब्रह्म कृष्ण जिन राजस्तविया, जय जय कार करि मन हरिया ॥ सुरपति० ॥

कुम्भ कलश भरी जय जिन वरिया, शाश्वत शर्म सदा अनुसरिया ॥ सुरपति० ।

घत्ता— यावंति जिन चैत्यानि, विद्य ते भुवन त्रये ।

तावंति सततं भक्त्या, त्रिः परित्य नमाम्यहं ॥ अर्घं ॥

नोट — ऊपर की जयमाला अभिषेक के समय में भी पढ़ी जाती है एव उस समय इन्द्र जल या दूध की अखंड धारा करे तथा इन्द्राणी एक थाल में अष्ट द्रव्य रख कर भगवान की आरतो उतारे। यह प्रथा खास कर गुजरात प्रांत में प्रचलित है ।

॥ अथ देव पूजा प्रारम्यते ॥

(भ० सुमति कीर्ति के शिष्य यशवन्त सागर कृत)

ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ॥

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगल, साहू मंगलं, केवलिपणत्तो धम्मो मंगलम् ।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लो गुत्तमा, केवलि पण्णतो-

धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरहंते शरणं पव्वजामि, सिद्धे शरणं पव्वजामि, साहू शरणं पव्वजामि, केवलि पएणत्तं धम्मं शरणं पव्वजामि ॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत्

(निम्न मंगल पाठ पढ़ते हुवे पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

अपवित्रः पवित्रोवा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपिवा । ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥१॥
अपवित्रः पवित्रोवा, सर्वावस्थांगतोऽपिवा । यः स्मरेत् परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचि ॥२॥
अपराजित मंत्रोऽयं सर्व विघ्न विनाशनः मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥३॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलम् ॥४॥
अर्हमित्यक्षर ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥५॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं । सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यांति, शाकिनी भूतपन्नगाः विषं निर्विषतां याति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥७॥

युगादि देवं प्रणिपत्य पूर्वं, श्री काष्ठ संघे महिते सुभव्याः
श्री मत्प्रतिष्ठा सुततो जिनस्य श्री यज्ञ कल्पं स्वहिताय वक्ष्ये ॥८॥
आदि देवं जिनं नत्वा केवल ज्ञान भास्करं ।
काष्ठा संघ श्चिरंजीयाद् क्रिया काष्ठादि देशकः ॥९॥
जय जय श्री सदा शांतिः, कल्याणं सर्व मंगलम् ।
तनोतु सर्वदा श्रेयः पूजा प्रारभ्यते जिनैः ॥१०॥

श्री नाभि नंदन जिनं प्रणिपत्य भक्त्या यद्देशनामृत रसेन जगत्प्रपूर्णम् ।
श्री काष्ठ संघ वर मंगल हेतु भूत, यदागमे निगदितं प्रकरोमि पूजा ॥१॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत)

[निम्न स्वस्ति विधान पढ़ते हुवे पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये]

स्वस्ति त्रिलोक गुरवे जिन पुंगवाय, स्वस्ति स्वभावात महिमोदय सुस्थिता ।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्जितदृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्न ललिताद्भुत वैभवाय ॥१॥

स्वस्त्युच्छल द्विमल बोध सुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभाव पर भाव विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोक विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय ॥२॥

द्रव्यस्य शुद्धि मधि गम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धि मधिका मधि गंतु कामः ।
आलम्बनानि विविधान्यवलंब्य वल्पान् भूतार्थ यज्ञ पुरुषस्य करोमि यज्ञं ।३॥

अर्हत्पुराण पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव
अस्मिञ्ज्वलद्विमल केवल बोध वन्हौ, पुण्यं समग्र महमेकमना जुहोमि ॥४॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञे जिन प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिंक्षिपेत् ॥

(आह्वाननम्)

सार्वः सर्वज्ञनाथः सकल तनुभृतां, पाप सन्ताप हर्ता,
त्रैलोक्या क्रान्त कीर्तिः क्षतमदनरिपुर्घाति कर्म प्रणाशः ।

श्री मन्निर्वाण संपद्वर युवति करालीढ कण्ठैः सुकण्ठै–
देवेन्द्रैर्वंद्य पादो जयति जिनपतिः प्राप्त कल्याण पूजा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन ।

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

देवि श्री श्रुत देवते भगवति त्वत्पादपंकेरुह–
द्वन्दे यामिशिलीमुखत्वमपरं भक्तया मया प्राध्यते ।
मातश्चेतसि तिष्ठ में जिन मुखोद्भूते सदा पाहि मां
दृग्दानेन मयि प्रसीद भवतीं सम्पूजयामोऽधुना ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत द्वादशांग श्रुत ज्ञान अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत द्वादशांग श्रुतज्ञान अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत द्वादशाङ्ग श्रुत ज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

इत्युच्चार्य पुस्तकोपरि पुष्पांजलिंक्षिपेत् ।

सम्पूजयामि पूज्यस्य, पाद पद्म युगं गुरोः ।
तपः प्राप्त प्रतिष्ठस्य, गरिष्ठस्य महात्मनः ॥ ३ १

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु समूह अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु समूह अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गुरू पादुका स्थापनम ॥

(समुच्चयाष्टक)

देवेन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्रवन्द्यान् शुम्भत्पदान्शोभितसार वर्णान् ।
दुग्धाब्धि संस्पर्द्धि गुणैर्जलौघैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं परं ब्रह्मणे अनंतानंत ज्ञान शक्तये अष्टादशदोष रहिताय षट् चत्वारिंशद्गुण महिताया-र्हत्परमेष्ठिने, जिनमुखोद्भूत स्याद्वाद नय गर्भित द्वादशांग श्रुतज्ञानाय, सम्यग्दर्शनादि गुण-विराजमानाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यश्च जल निर्वपामीति स्वाहा ॥

ताम्यत् त्रिलोकोदर मध्यवर्त्ति, समस्त सत्वाहितहारिवाक्यान् ।
श्री चन्दनैर्गंध विलुब्ध भृङ्गैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ चंदनं ॥ २ ॥

अपार संसार महासमुद्र प्रोत्तारणे प्राज्यतरीन् सुभक्त्या ।
दीर्घाक्षतांगैर्धवलाक्षतौघैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

विनीत भव्याब्ज विबोध सूर्यान्वर्यान्सुचर्या कथनैक धुर्यान् ।
कुन्दारविन्दप्रमुखैः प्रसूनैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

कुदर्पकंदर्पविसर्प सर्प असह्य निर्णाशन वैनतेयान्
प्राज्याज्य सारैश्चरुभीरसाढ्यैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ नैवेद्यम् ॥५॥

ध्वस्तोद्यमान्धीकृत विश्व विश्व मोहान्धकार प्रतिघाति दीपान् ।
दीपैः कनत्कांचन भाजनस्थैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ दीपम् ॥६॥

दुष्टाष्टकर्मेन्धन पुष्ट जाल संधूपने भासुर धूमकेतून् ।
धूपैर्विधूतान्यसुगन्ध गन्धैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

क्षुभ्यद्विलुभ्यन्मनसामगम्यान् कुवादि वादा स्खलित प्रभावान् ।
फलैरलं मोक्षफलाभिसारैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥फलं ॥ ८ ॥

सद्वारिगन्धाक्षत पुष्प जातैर्नैवेद्य दीपामल धूप धूम्रैः ।
फलैर्विचित्रैर्घन पुण्य योग्यान् जिनेन्द्र सिद्धांत यतीन्यजेऽहम् ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

ये पूजां जिननाथ शास्त्र यमिनां भक्त्या सदा कुर्वते ।
त्रैसन्ध्यं सुविचित्र काव्य रचना मुच्चारयन्तोनराः ॥

पुण्याढ्या मुनिराजकीर्ति सहिता भूत्वा तपो भूषणा-
स्तेभव्याः सकलाव बोध रुचिरांसिद्धिलभंतेपराम् ॥ इत्याशीर्वादः ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

ऋषभोऽजित नामाच, संभवश्चाभिनन्दनः सुमतिः पद्मभासश्च, सुपार्श्वोजिन सत्तमः ॥ १ ॥

चन्द्राभः पुष्पदन्तश्च शीतलो भगवान्मुनिः, श्रेयांश्च वासु पूज्यश्च विमलो विमल द्युतिः ॥२॥

अनंतो धर्म नामान शांतिः कुन्थुर्जिनोत्तमः, अरश्च मल्लिनाथश्च, सुव्रतो नमि तीर्थकृत् ॥३॥

हरिवंश समुद्भूतोऽरिष्टनेमिर्जिनेश्वरः, ध्वस्तोपसर्गदैत्यारि पार्श्वो नागेन्द्र पूजितः ॥४॥

कर्मान्तकृन्महावीरः सिद्धार्थ कुल सम्भवः, एतेसुरा सुरौघेण पूजिता विमलत्विषः ॥५॥

पूजिता भरताद्यैश्च, भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभिः, चतुर्विधस्य संघस्य शांति कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥६॥

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिः सदाऽस्तुमे, सम्यक्त्वमेव संसार वारणं मोक्षकारणम् ॥७॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

❀ देव जयमाला ❀

घत्ताः— चौबीस जिणंदह तिहुयणचंदह, अट्ठय लक्खण भायणहं ।
जयमाल विरामी, गुणगणमरमी, कर्ममहागिरी चूरणयं ॥ १ ॥

जय जय रिसह णमो भव रहिया, जय जय अजिय सुरासुर महिया ।
जय संभव दुक्ख खयकारा, जय अहिणंदण भवभय टारा ॥ २ ॥

जय जय सुमइ कुबुद्धि विणासण, जय पउमप्पह कलिमल णासण ।
जय सुपास जैनेन्द्र भण्डारा, जय चन्दप्पह तिहुयण सारा ॥ ३ ॥

जय जय पुष्फयंत परमेश्वर जय जय सीयल जिण जोगेश्वर ।
जय जय सेय भवोदधि तारा, जय जय वासु पुज्ज गुण धारा ॥ ४ ॥

जय जय विमल सुनिरमल देहा, जयहि अणंत अणंत जिणेशा ।
जय जय धम्म सु धम्म पयासा, जय जय सांति सांति नय भासा ॥५॥

जय जय कुंथु परम सुभ कारण जय अर कर्मारि कलमस दारण
जय जय मल्लि मरणभय भज्जिय, जय मुणिसुव्वय सुर णर पुज्जिय ॥६॥

जय णमि विकल कमल दल कोमल, जयहि अरिट्ठणेमि अतुलीबल ।
जय जय पास फणी मणि भूषण, जय जय वड्ढमाण गय दूषण ॥७॥

घत्ता:-इय णर देवे, णीय सूपसंत्तिए, जिण चौबीसइ पणमिया भत्तिए ।
एजिण वर जो अणुदिणु भावई, सो पुणु अणसुण पच्छई आवई ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

❀ अथ सरस्वती (शास्त्र) पूजा ❀

देवि श्री श्रुतदेवते भगवति, त्वत्पाद पंकेरूह-
द्वन्द्वेयामि शिली मुखत्वमपरं, भक्त्या मया प्रार्थ्यते ।
मातश्चेतसि तिष्ठ मे जिन मुखोद्भूते सदापाहिमां ,
दृग्दानेन मयि प्रसीद भवतीं सम्पूजयामोऽधुना ॥१॥ स्थापनम् ॥
इत्युच्चार्य पुस्तकोपरि पुष्पांजलिंक्षिपेत् ।

वृषभ वक्त्र सरोरुह निर्गता, प्रकटिता वृष सेन गणाधिपैः ।
जगति तत्व विदां हृदयं गता जयतु जैन वचोऽमल भारती ॥१॥

सकल भव्य मनोम्बुज भास्करी, भविक मानस हंस मनोहरी ।
भृतसु पक्षसु चन्द्र करोज्वला, जयतु०······ ॥ २ ॥

अमल बोध चतुष्टय पूरिता, परम केवल लक्षित चिन्मयी ।
त्रिदित त्रिश्व विचेष्ठित वाग्वरं, जयतु० ····· ॥ ३ ॥

दशमाधिक अंग विराद्धिता, नव पदार्थ नवीकृत भूषणा ।
रुचिर वर्ति पदावलि नूपुरा, जयतु०······ ॥ ४ ॥

मनसि जोत्कट कुञ्जर सिंहिका, कलि कराल तमोरवि सत्प्रभा ।
व्यसन वृन्द दवानल वारिणी, जयतु०······ ॥ ५ ॥

वचन जाड्य निवर्हण पण्डिता, हृदय कल्पित कल्पतरूपमा ।
ससुर शक्रशतेन नमस्कृता, जयतु०······ ॥ ६ ॥

अनुक्रमामृत संश्रित निश्चला, शिव सुखेष्ट फलानु प्रदायिनी ।
भवभृतां भववारि तरंतिका, जयतु० ··· ॥ ७ ॥

त्रितय रत्न परार्घ्य निधान भू वितत तथ्य वितर्क पटीयसी ।
जनन मृत्यु जरादि भया पहा, जयतु०······ ॥ ८ ॥

सतत संश्रित कामित कामिगैर्विविध विघ्न विपक्ष विघाटनैः ।
भगवती मम तिष्ठतु मानसे, जयतु०······ ॥ ९ ॥

उदयेनान्त सेनेन कृतेयं भारती स्तुतिः ।
भूयादज्ञान नाशाय, पावनी भव्य देहिनां ॥ १० ॥

इति शारदा स्तुति ॥

॥ अथाष्टकम् ॥

पयः पयोधेस्त्रिदशापगायाः, पयः पयोजात पराग रम्यम् ।
समन्त भद्रश्रुत देवतायै भक्त्या परायै परया ददामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै जलम् ॥

सद्द्रव्य सौरभ्य समाहुतालि कोलाहल स्तोत्र मनोभिरामैः ।
काश्मीर सत्कुंकुमचन्दनाद्यैः गिरं चिरं तीर्थ कृतां यजामि । चन्दनम् ॥ २ ॥

सदावदातैः सरलैर्विचित्रैर्मुनेर्मनः साम्यमुपाश्रयद्भिः ।
सदक्षतैरक्षत शासनानां तीर्थंकराणां गिरमर्चयामि । अक्षतम् ॥ ३ ॥

मन्दार सन्तानक पारिजात जातैः प्रसूनैरलिचुम्बिताग्रैः ।
देवेन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्र वद्यां, गिरं जिनना महमर्चयामि । पुष्पम् ॥ ४ ॥

शाल्योदनैः क्षीर दधीक्षु भक्ष्य, द्राक्षाम्र खर्जूरक चोच पाद्यैः ः
प्रमाण बाधादि विरोध मुक्तां स्याद्वाद वाणीं परिपूजयामि । नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

शिखाधरैः स्नेह दशान्वमोह मलं विमुञ्चद्भिरलं प्रतापैः ।
सदा समस्थैरिव भाजन स्थैः प्रदीपकैः श्री श्रुतमर्चयामि । दीपम् ॥ ६ ॥

सग्रंथ पर्णोरुज संकु एव स्वकंदयद्भिः प्रसरद्भिरूर्ध्वं ।
धूपैर्विधूमानल संशयद्भिः कण्ठोपमैर्गां महमर्चयामि । धूपम् ॥ ७ ॥

जम्बीर नारंग लविंग पूग फलैर्ददामीष्ट फलाभिलापैः ।
अर्चां स्मरोरः श्रुतदेवतायै, जगत्पहं श्री जिन नायकस्य । फलम् । ८ ॥

भिन्नं गुणैर्नेत्र विशाल रम्यं वस्त्रं वर स्त्री वदनोपमानं ।
संशोम कौशेय पटाम्बुकूलं ददामि जैन श्रुत देवतायै ॥ वस्त्राभरणम् ॥ ९ ॥

पाटीर पाथोऽक्षत पुष्प पुन्ज चरु प्रदीपोत्तम धूप धूम्रैः ।
फलैर्जिनेन्द्रास्य पयोज पुत्रीं यजामि जैन श्रुत देवतां ताम् ॥ अर्घं ॥ १० ॥

❀ जयमाला ❀

घन मोह तमः पटलापहरं, यम संयम संजम भावधरं ।
भूत भूरि भवार्णव शोक हरं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं ॥ १ ॥

कृत दुष्कृत कौसिक भाव हरं, मिथ्यात्व निशाचर दूर करं ।
भुवि भव्यपयोज विकास सहं, प्रणमामि सुबोध दिनेशमहं ॥ २ ॥

कलि कर्दम कल्मप शोपमलं, रूदयादवसर्पित कर्ममलं ॥ भुवि० ॥ ३ ॥
निखिलामल वस्तु विकास पदं, धृत दुर्धर दुर्भर श्रेष्ठ पदं ॥ भुवि० ॥ ४ ॥
जडतामपहार विहार समं, सुमनोभव भंग विभंग समं ॥ भुवि० ॥ ५ ॥
रुदयामल लोचन लक्षमितं, जिन भासुर भानु सहस्र युतं ॥ भुवि० ॥ ६ ॥
निजमण्डल मंडित लोक मुखं, निज सत्व समर्पित लोक सुखं ॥ भुवि० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

❀ अथ गुरू पूजा ❀

(शिखरिणी च्छन्द)

सुसंघे काष्ठाख्ये विमल शुभ नंदीतटमिते,
सुगच्छे पुण्येशे प्रविजयति विद्यासु गण के ॥
सुनाम्ना विख्यातः सुमति रिह कीर्त्यंत मतिमान् ।
सरामाशेषोऽभूत् प्रबलतर सेनोन्नतमतिः ॥ गुरू पादुका स्थापनं ॥१॥

श्रीमत् श्री जयकीर्तिवंश विल सत् श्री मन्महीचंद्रजित्,
तत्पट्टे मुनि वृन्द वंद्य महिमा, भट्टारकाणां प्रभु ।
नाम्नायः सुमति परो विजयते यः कीर्तितः सज्जनैः ॥
श्रीमद्वाग्वर देशवंश विलसत् चिन्तामणि सार्थदः ॥ २ ॥

इत्युच्चार्य गुरूपादुकोपरि पुष्पाजलि क्षिपेत ॥

❀ अथ गुरु पादुका स्तुतिः ❀

निज जनान्परि पालयति स्वयं करूणया मलयासु मुनीश्वरः
सुमति कीर्तिरसौ जयतेऽनिशं शशि मुखं कमनीय गुणा करः ॥१॥

विरजता मनसोभवदद्भुतः सकल सज्जनरंजित पंडितः ॥ सुमति० ॥ २ ॥
निखिल लोकसुवंदित सत्पदं प्रबल काव्य कला कुल कोविद ॥ सुमति० ॥ ३ ॥
भुवन जीवदया करूणोद्यमः, कमल कोमल रूढ मुनि गौतमः ॥ सुमति० ॥ ४ ॥

जिन जनार्ति हरो हत पावकः सुनयनः प्रतिनन्दित भक्ततः ॥ सुमति० ॥ ५ ॥

निज गुणो मुनिमान्य गुणोदधि, स्वजमहो कविता गुण वारिधिः ॥ सुमति० । ६ ॥

जिनलयार्जित नागमहा निधिः, सकल तन्त्र समुच्चय तोयधिः । सुमति० ॥ ७ ॥

प्रबल पंच व्रतादि करं परः, प्रथित शास्त्र कलार्थं परं परः ॥ सुमति० ॥ ८ ॥

(मालिनी छंद)

निखिल खलु विकारान् वर्जयन्नैक वस्तु, प्रकटित निगमाब्धिस्त्यक्त संसार संगः ॥

जयति सुमति कीर्तिः सर्व गच्छे हि वंद्यो, विदित गुण गुणौघः सर्व भट्टारकेशः ॥

इति गुरू स्तुति ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत ॥

(अथाष्टकम)

नाना नदी सिन्धु सुताम्रघोपैः श्री मत्कलिंद गिरिजा विधियोद्भवैश्च ।

सम्पूजयामि विधिना विधिना तमादौ भट्टारकः सुमति कीर्ति मुनीश्वरेन्द्रः ॥ जलम् ॥ १ ॥

श्री चन्दनैः सकल चन्द्र करावदातैः पाथोरुहोभ्दव पराग पराग काम्रैः ॥ । चन्दनम् ॥ ॥ २ ॥

रम्याक्षतैः परिमलाक्षत चञ्चरीकै लीला विलोलकमलाकर निर्मितैश्च ॥ सम्पूज ॥ अक्षतं ॥ ४ ॥

शुम्भत्सुरेश्वर तरु प्रभवैः प्रसूनैः पंकेरुहै बकुल जाती सुकेतकैश्च ॥ सम्पूज ॥ पुष्पम् ॥ ३ ॥

स्फूर्जत्प्रभापरितिरस्कृत चंद्रबिम्बैः सुस्वादुभिश्चरुवरैर्विविधैः घृताढ्यैः ॥ सम्पूज ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

उर्जस्वदभ्र कलितस्फुरदंशुभिर्वा दीपैः प्रकाशितदिशैरघपुंजहारैः ॥ सम्पूज ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

हर्म्यावशाकर सुगंध महाप्रधूपैः कर्पूर चन्दन लविंगललात्तयुक्तैः ॥ सम्पूज ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
रम्याफलैः स्फुटफलैः पनसेन कैश्च कंकोरकैः कमल कर्कठिकादिभिश्च ॥ संपूज ॥ फलं ॥ ८ ॥

श्री काष्ठ संघ महीचन्द्र पदाद्रि भानो, तोयादिभिः सुमति कीर्ति गुरुं गरिष्ठं ॥
योवत्यमु स लभतेवर भोगसौख्यं, लक्ष्मीश्वशिष्य यशवंतमुनीश्वरेण ॥ अर्घं ॥

रत्नत्रयस्य नाप्यं देयात् ।
१ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः २ ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ३ ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्राय नमः ॥

॥ जयमाला ॥

श्री मज्जिनेश्वर महं प्रणिपत्य कुर्वे श्रीमद्गुरो गुणगणान्प्रतिबुद्ध बुद्धया ।
श्री वासुदेव तनयो कवि जीवनोऽहं, भट्टारकस्य सुमतेर्जयकारी माला ॥ १ ॥
निखिलादि जिनागमदेह धरं धरणीधरवद्बहु शास्त्र धरं ।
प्रण मामि सुकीर्ति परं सुमतिः मतिदं गतिदं कृतदिव्य नुतिः ॥ २ ॥
निज बोध सुबोधित शिष्य परं वचनामृत तर्पित भव्यभरं ॥ प्रणमामि० ॥ ३ ॥
शुभ नित्य विवेक विचार परं, त्रिजितारिभरं स्वजनेष्ट करं ॥ प्रणमा० ॥ ४ ॥
हत मोह महान्वित सैन्य बलं, बल निर्जित क्रोध मनल्पकलं ॥ प्रणमा ॥ ५ ॥
सुतपोव्रत सत्कृत देहधरं, धृतधर्म परं परमेष्ठी परं ॥ प्रणमा० ॥ ६ ॥
निर्जचित्त निवृत्ति पुरा कलुषं, रजनीपति वर्धित सद्वपुषं ॥ प्रणमा० ॥ ७ ॥
धृत दिव्यदयं विधिपालनकं, कलि पातक संघ निवारणकं ॥ प्रणमा० ॥ ८ ॥

कृत काम महाभट दिव्य जयं, त्रिमलीक विवेक हतारि भयं ॥ प्रणमा० ॥ ९ ॥

वचनैरनुरञ्जितदिव्य सदं, निज शास्त्र बलार्दित वैरी मदं ॥ प्रणमा० ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं गुरु चरण कमलेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

❀ अथ सिद्ध पूजा ❀

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दुमपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं, वर्गापूरित दिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्वान्वितम् ।

अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकार संवेष्टितं देवं ध्यायति यः स मुक्ति सुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥१॥

ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपते, सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपते, सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपते सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सिद्ध चक्र स्तवन

अर्हमित्यक्षर ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥

अकारादि हकारान्तं रेफ व्यञ्जन संयुतं । ह्रींकारस्य स्वरूपाभं, सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ २ ॥

मध्यतो अर्हत. प्रोक्तं, बीज लक्षण लक्षितम् । भावितं सर्वरूपत्वं सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ३ ॥

लकार वर्गश्चापाति, पकार पट् वर्ग कं । लोक मध्य गतो भद्रं, सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ४ ॥

ईकारान्त प्रतीकारं, ललना वर्ग मात्रतिः । मध्य पीठ गतो ध्यान, सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ५ ॥

स्रग्धराच्छन्द.

यो देवेन्द्रै नरेन्द्रैः फणिपति सहितं सर्व सत्वोपकारं ।

संसाराम्भोधिपोतं, कमलदीगदलं मुक्तिशर्म प्रदेयं ।

शान्तै शान्तैकरुपं, वहु विध महितं कर्म संघापनोदं

तच्चक्रं चक्रनाथं जयति गुणवरं सिद्ध चक्राभिधानं ॥ ६ ।

यत्शुद्धं व्योम वीजं अवर परियुतं शांति सिद्धाक्षरेण,

तत्सन्धौतत्व युक्तं परम पद सरैः वेष्टितं कर्म वीज ।

यः श्रीमंतं निरन्तं विगतकलिमलंमायया वेष्टितांगं,

जीयात्सिद्धचक्रं विमलतर गुणं देव नागेन्द्र वंद्यं ॥ ७ ॥

॥ शार्दूल विक्रीडितच्छन्दः ॥

यद्वर्गाष्टक पूरीतं वर दलं सानाहतंनीरजं,

यस्त्वोकार कला सविन्दु सहितं गर्भा स्त्रि मुत्यां वृतं ।

यः सर्वार्थ करं परं गुणभृतां काल त्रये वर्तिनां,

तत्क्लेशौघ विनाशनं भवतु मे श्री सिद्ध चक्रेश्वरं ॥८॥

यद्वश्यादिक कारकं वहुविधं कामाधिक मोहित ।

यल्लक्ष्यादिक जाप्य साध्य महिमा यत्संपदा दायकं ।

यत्कुष्टादिक दर्प दोष दलनं दुःखाभिभूतात्मनां

तद्वाहुत फलप्रदं वर यशः श्री सिद्ध चक्रेश्वरं ॥ ६ ॥

यत्सर्वांगहितं मनुष्यमहिमं, सौख्यालयं धार्मिणां

येद्दोषैः परिवर्जितं हि शिवदं ध्यानादि रूढ़ सतां ।

तन्नः पातु जिनं भवति शमनं मन्त्राधिपं सर्वदा,
यत्कर्म क्षय कारकं सुखबलं श्री सिद्ध चक्रेश्वरं ॥ ०१ ॥

न्यस्तं हस्तेपुरुद्धं, स्वर पर कलितं मण्डलंतोय युग्मं,
भूरि क्लेश प्रणाशंपतदमृत श्रवं श्वेतं हकारान्वितं ।

पश्चादागम्य भर्वां र्व्वीं कृत ममलगुण मासनं मंत्र नाम,
आहूतं ज्ञान रूपं सकल भयहरं अर्चये सिद्ध चक्रं ॥११॥

ॐ जिह्वायां कराग्रे नशित मृतश्रवं श्वेतं हकारान्वितं,
पश्चादुध्यायेत्स्वरूपं विगत कलिमलं दग्ध कर्मेन्ध नौघं ।

क्षिप्रो स्वाहा समेतं निशित सुरमुखे अंगभागे समस्तं ।
एवं कृत्वाभिधानं परम फल प्रदं अर्चये सिद्ध चक्रं ॥१२॥

शब्द ब्रह्मैकलीनं प्रबल बल युतं सर्व सत्व प्रभावं,
सम्मेदं सर्व भद्रं गणधर वलयं दुःख पाप प्रणाशं ।

यन्नैमित्तं वरिष्टं विशद हृदि गतं सज्जनानां च नित्य
यद्वृत्तं यत्स वाद्यं रिपुकुलमघनं सिद्ध चक्रं नमामि ॥१३॥

यन्त्राणां मन्त्र बीजं सकल कलिमलं ध्वंसनं सिद्ध वंद्यं,
भूत्वाभिष्टार्थवंतं निखिल वर गुणालंकृतं दीप्ति वन्तं ।

रोगाणां दुर्नि मित्तं ग्रहगण सकलान्भूतरक्षा करंतं,
श्री चक्रं चक्रनाथं मुनिभिरभिनुतं ध्यान गम्यं नमामि ॥१४॥

पश्यन्समस्त भुवनं युगपन्नितान्त, त्रैकाल्य वस्तु विषये निविड प्रदीपम् ।
सद्द्रव्य गंध घनसार विमिश्रितानां धूपैर्यजेपरिमलैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

सिद्धासुराधिपति यक्ष नरेन्द्र चक्रै, र्ध्येयं शिवं सकल भव्य जनैः सुवन्द्यम् ।
नारिंग पूग कदली फल नारिकेलैः सोऽहंयजेवरफलैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ फलम् ॥ ८ ॥

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत गणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत चयं रम्यं चरूं दीपकं ।
धूपं गन्ध युतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितं ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

ज्ञानोपयोग विमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्म स्वभाव परमं यदनंतवीर्यं ।
कर्मौघ कक्ष दहनं सुख शस्य बीजं, वन्दे सदा निरूपमं वरसिद्ध चक्रं ॥ महार्घ्यं ॥१०॥

॥ जाप्य कुर्याद् ॥

ॐ ह्रीं असिआउसाय नमः ॥ ॐ ह्रीं सम्यक्त्वाय नमः ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानाय नमः ॥
ॐ ह्रीं दर्शनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं वीर्याय नमः ॥ ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः ॥
ॐ ह्रीं अवगाहनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं अगुरू लघवे नमः ॥ ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः ॥

एभिर्मंत्रैर्जाप्य कुर्याद् ॥ अर्घ्यं चापि समुद्धरेत् ॥



❀ जयमाला ❀

(भ० विश्वसेन कृत)

घताः— पणमवि परमेसर गोमि जिणेसर णासिय दुक्खिय कम्ममलो ।
पुर अरकमि भत्तिय, णियमण सत्तिय, सिद्ध चक्क जयमाल फलो ॥१॥

तमाला समा झंपडा सीस केसा, खरा दारूणा लोयणा रत्त भीसा ।
गहा भूय वेयालगं सांति चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥२॥

तणु भीसणा वंक दढ्ढा कराला, चलालोयणा जीह णासा विसाला ।
वसी होंति सिहाय डड्ढेण चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ३ ॥

सरोसा सघोरा महाकाल रूवा, कुरुरा विया सेविसा दुट्ठभावा ।
सकोहाण डंकं तिहोणाय चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ४ ॥

जरा खेय रोगावलि कण्ठमाला, पमेहा विरुठा त्रिणा कुट्ठसूला ।
विणासंति खासाण लावाहि चक्कं वरं भावये॰॰॰ ॥ ५ ॥

सधूमावलि भीसणा संजलंता, फुलिंगाय मेलंति चंडाधिगंता ।
ण डाहोंति देहं सही जाल चक्कं वरं भावये॰॰॰॰॰॰॰ ॥ ६ ॥

सकल्लोल लोला बहुला तरंगा, अपारा सिघोसा वसि सिंधु गंगा ।
अगाधासुतारंति सोणीर चक्कं, वरं भावये॰॰॰॰॰॰॰ ॥ ७ ॥

पश्यन्समस्त भुवनं युगपन्नितान्त, त्रैकाल्य वस्तु विषये निविड प्रदीपम् ।
सद्द्रव्य गंध घनसार विमिश्रितानां धूपैर्यजेपरिमलैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

सिद्धासुराधिपति यच्च नरेन्द्र चक्रै, र्ध्येयं शिवं सकल भव्य जनैः सुवन्द्यम् ।
नारिंग पूग कदली फल नारिकेलैः सोऽहंयजेवरफलैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ फलम् ॥ ८ ॥

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत गणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत चयं रम्यं चरुं दीपकं ।
धूपं गन्ध युतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितं ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

ज्ञानोपयोग विमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्म स्वभाव परमं यदनंतवीर्यं ।
कर्मौघ कक्ष दहनं सुख शस्य बीजं, वन्दे सदा निरूपमं वरसिद्ध चक्रं ॥ महार्घ्यं ॥१०॥

॥ जाप्य कुर्याद् ॥

ॐ ह्रीं असिआउसाय नमः ॥ ॐ ह्रीं सम्यक्त्वाय नमः ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानाय नमः ॥
ॐ ह्रीं दर्शनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं वीर्याय नमः ॥ ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः ॥
ॐ ह्रीं अवगाहनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं अगुरू लघवे नमः ॥ ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः ॥

एभिर्मंत्रैर्जाप्य कुर्याद् ॥ अर्घ्यं चापि समुद्धरेत् ॥



❀ जयमाला ❀

(भ० विश्वसेन कृत)

घताः— पणमवि परमेसर णेमि जिणेसर णासिय दुक्खिय कम्ममलो ।
पुर अरकमि भत्तिय, णियमण सत्तिय, सिद्ध चक्क जयमाल फलो ॥१॥

तमाला समा झंपडा सीस केसा, खरा दारूणा लोयणा रत्त भीसा ।
गहा भूय वेयालणं सांति चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥२॥

तणु भीसणा वंक दब्बा कराला, चलालोयणा जीह णासा विसाला ।
वसी होंति सिहाय डड्ढेण चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ३ ॥

सरोसा सघोरा महाकाल रूवा, कुरुरा विया सेविसा दुट्ठभावा ।
सकोहाण डंकं तिहोणाय चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ४ ॥

जरा खेय रोगावलि कण्ठमाला, पमेहा विरुठा त्रिणा कुट्ठसूला ।
विणासंति खासाण लावाहि चक्कं वरं भावये॰॰॰ ॥ ५ ॥

सधूमावलि भीसणा संजलंता, फुलिंगाय मेल्लंति चंडाविगंता ।
ण डाहोंति देहं सही जाल चक्कं वरं भावये॰॰॰॰॰॰ ॥ ६ ॥

सकल्लोल लोला बहुला तरंगा, अपारा सिघोसा वसि सिंधु गंगा ।
अगाधासुतारंति सोणीर चक्कं, वरं भावये॰॰॰॰॰॰ ॥ ७ ॥

॥३

झगाया महुंता सलिला सपूला, मकोदंडगाणा करे भीड माला,
णमारंति रो संगरे चोर चक्कं, वरं भावये०……॥ ८ ॥

सगाढा निबंधा घणा चोर बंधा, अबेसाण अंगा ऊबंगा विबंधा,
विमुंचंवि सासंखला पास चक्कं, वरं भावये०……॥६॥

सणा सगि झाणेण कम्मठ्ठणासं, ललाटे सुवीयं करेमोक्खवासं ।
फुडं देवकी दिठ्ठी झाणं पयाउ सुछन्दो वियाउ भुजंगप्पयाउ ॥१०॥

उह वर जयमाला, वर सफला विरस सेणेण कहिय सुहं,
जो भणे गणावे णियमण भावे सोणर पावहि रिद्ध सुहं ।। महार्घ्यं ।

॥ इति सिद्धचक्र पूजा समाप्तम् ॥

❀ विद्यमान वीस तीर्थंकर पूजा ❀

पूर्वा पूर्व विदेहेषु, विद्यमान जिनेश्वराः ।
अहं संस्थापयाम्यत्र, शुद्ध सम्पक्त्व हेतवे ॥

ॐ ह्रीं सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहु, सुजात, स्वयं प्रभ, ऋषभानन, अनन्तवीर्य, सौरी प्रभ, विशास, वज्रधर, चंद्रानन, भद्रबाहु, श्री भुजंग, ईश्वर, नेमि प्रभु, वीरसेन, महाभद्र, यशोधर, अजीत वीर्य, विद्यमान विंशति तीर्थंकराअत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करणम् ॥

॥ अथाष्टक ॥

कर्पूर वासित जल भृत हेम भृंगं धारा त्रयं ददति जन्म जरा पहान्यैः ।
तीर्थंकराय जिन विंशति विद्यमान संचर्चयामि पद पंकज शांति हेतु ॥ जलम् ॥
काश्मीर चन्दन विलेपन अग्रभूमि, संसार ताप हर दूर करोति नित्यं । ती० चन्दनम ।
सदक्षतैः खंड विवर्जितैश्च, अक्षय पदस्य सुख सम्पति प्राप्ति हेतु ॥ ती० अक्षतम् ।
अम्भोज चम्पक सुगन्ध केरोमिपूजा मदनस्य मानंच विमर्दनाय ॥ ती० । पुष्पं ॥
नैवेद्यकैः शुचितरैर्घृत पक्व खडैः, क्षुधादिरोगहर दूर करोतिनित्यं । तीर्थंक ॥ नैवेद्यम् ।
दीपैः प्रदीपित जगत्त्रय रश्मिजातैः दूरीकरोति तम मोह विनाशनार्थं । तीर्थंक० ॥ दीपम् ॥
धूपैः सुगंध कृष्णागुरू चंदनाद्यैः गंधैः सुगंधी कृत सार मनोहराणि । तीर्थंक. ॥ धूपम् ॥
नारिंग दाड़िम मनोहर श्री फलाद्यैः फलैरभिष्ट सुख सम्पति प्राप्ति हेतुः । तीर्थंक. ॥ फलम् ॥
वार्गंध पुष्पाक्षत व्यंजनैश्च, सद्दीप धूपफल मीश्रित हेमपात्रे ।
अर्घं करोमि जिन पूजन शांति हेतोः संसारपार करूणात्कुरू सेवकानां ॥ अर्घ्यम् ॥

❀ जयमाला ❀

घत्ता– जय वीस जिणेसुर, णमीत सुरासुर, चक्रीश्वर पूजित चरणा ।
जय ज्ञान दिवाकर, गुणरत्नाकर, पूजत नाशै विघ्न घणा ॥१॥

जय बीस जिनेश्वर विद्यमान, तनु पंच शतक वर धनु प्रमान ।
जय भव्यकमल प्रतिबोध देत,······ ॥२॥

सीमंधर प्रणमुं जिन यरिन्द वन्दु जुगमंधर बहु वलिन्द ।
हूँ वन्दूं बाहु सुबाहू स्वामी, जिन लीन विदेहे मोक्ष ठाम ॥३॥

सुजात स्वयं प्रभ जिन वरिन्द, ऋषभानन धर्म प्रकाशकंद ।
तहां नंत वीर्य सौरी प्रभोय, वन्दु विशाल वज्जर धरोय ॥४॥

चन्दानन आठम दीवसवीर हूँ प्रणमुं जिनसो भवह तीर ।
तिहां पुष्कार्द्ध जिन भद्र बाहु, भुयंगम ईश्वर जगह नाह ॥५॥

नेमि प्रभ वन्दू वीरसेन, महाभद्र भव्य हित मधुर वैन ।
पद नमुं यशोधर शुद्ध भाव, जय अजित वीर्य वर मुक्ति पाय ॥६॥

यह नाम जपंता जाय पाप, नहीं व्यापै भव भव मोह ताप ।
जिन नाम जपंता होय रिद्धि, अनुक्रमे लहेते मोक्ष सिद्धि ॥७॥

घत्ताः—जय बीस जिनेश्वर नमित नरेश्वर विद्यमान जिन सौख्यकराः ।
जे भणे भणावे, अरू मन भावे, पावे अविचल मोक्ष धराः ॥ महार्घ्यं ॥



❀ श्री शीतलनाथ पूजा ❀

(ब्र० चन्द्रसागर कृत)



दोहाः—श्री सजोधपुर मंडनं, शीतल नाथ जिनेश
आह्वानन संनिधि करी, थापुं आवहु ईश ॥

ॐ ह्रीं सजोधपुरतीर्थस्थ शीतल नाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर २ संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ । अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(राग–म्हारी दीन तणी सुनो विनती)

प्राणी गंगोदक शुभ जलभरी, रत्न जड़ित भृंगार सुमारहो ।
जिन चरणाम्बुज धारिये, जन्म जरा मरण निवार हो ॥ श्री शीतल जिन पूजिये

प्राणी सजोधपुर वर मंडणो, सुखकारी भवियण सार हो ।
इन्द्र नरेन्द्र सेवा करे पामे नवनिधि अरथ भंडार हो । श्री शीतल. ॥ जलम्

प्राणी बावन चन्दन घसिकरि मलयागिरि शुभवास हो ॥
जिन चरणाम्बुज चर्चिए, भव आताप करत विनाश हो ॥ श्री शीतल० चन्दनम् ।

प्राणी अखंड अक्षत ऊजला, ज्योतिचन्द्र किरण समजाण हो ।
अक्षतसुं जिन पूजिये, लहे अक्षय पद सुख खाण हो । श्री० अक्षतम् ।

प्राणी जाही जूही चंपो सेवती, और केतकी परम रसाल हो ॥

पुष्पसुं श्री जिन पूजिये, होवत मदन सुबाण विनाश हो । श्री शीतल ॥ पुष्पम्

प्राणी खाजा फेणी लाडुवा, और घेवर बावर सार हो ।

सुवरण थाल भरी करी, क्षुधा रोग न उपजे लगार हो । श्री शी० । चरूम् ।

प्राणी रत्न जड़ित करी आरती, शुभ कपूर ज्योति विशाल हो ।

जगमग जगमग चमकती, मोह तिमिर न रहे लगार हो ॥ श्री . दीपम् ।

प्राणी अगर तगर कृष्णा गुरु, जिन चरणे अग्रेउ खेव हो ।

परिमल दश दिशी निर्मली, अष्ट कर्म न रहे ततखेव हो श्री शी• ॥ धूपम् ।

प्राणी श्रीफल आम्र बिजोरडा और पूग बदामरू ईख हो ।

फल सुं श्री जिन पूजिये, शिव फल पामे बहुलाख हो । श्री शी० फलम् ।

प्राणी जल गंध पुष्पाक्षत चरु, दीप धूप फल लेई हो ।

अर्घ उतारो भाव सुं पामे अर्थ सकल सुख देई हो ॥ श्री शीतल० ॥

प्राणी काष्ठा संघ सोहामणो, गच्छ नंदीतट मनोहार हो ।

सकल कीर्ति गुरु पदनमी, कहे चन्द्र सागर ब्रह्मचार हो ॥ अर्घं० ॥

॥ जय माला ॥

घत्ता- शीतल जिनसार है, दुखनिवार है, सुखकारी जिनवर कहियो ॥

अव पातक हरता, शिव फल करता, परमानन्द पदते लहियो ॥

(राग—मणुयणा इन्द)

शीतलं जिनवरं पूज्य शिव गामिनं, गावए गुण गणा अप्सरा भामिनं ॥

सजोधपुर मंडणं, मदन रिपु खंडणं, वंश इक्ष्वायिकं वंशवर मंडणं ॥

आयु वर पूर्व लच्च हेमवर्णं तनुं, समवशरणं वर, राजितं जिन मनुं ॥ सजो० ॥

सभा बारह प्रवि राजितं जिन वरं, वृच्च अशोक शिर ऊपरं अम्बरं ॥ सजो० ॥

पुष्प वृष्टि करी देव मन निर्मलं, दिव्य ध्वनि गर्जितं पाप नाशि मलं ॥ सजो० ॥

तीन सिंहासनं शोभ प्रविराजितं, चामर द्वात्रिंश, युगल सुवाजितं ॥ सजो० ॥

छत्र त्रयेण, डंडेण ऊपेणतं, रत्नमालावरा, चन्द्र सूरेण तं ॥ सजोधपुर० ॥

कोटि सार्द्ध द्वादशं, दुंदुभि गर्जितं कर्म अष्टक रिपु मदन तेज तर्जितं ॥ सजो० ॥

नाचती किंकरी, देव देवी गणं, तान मानं, महा भाव गान रागणं ॥ सजोध० ॥

राग छत्तीस मुख, गान संगायती, हस्त वीणा लई मधुर सुखायती ॥ सजोध० ॥

देव नर नाग सुर असुर संसेवितं, दुख दावानलं दुरिकृतं देवतं ॥ सजोध० ॥

पंच कल्याण सुरकृत गर्भाविर्क, मुक्ति रमणी वशीकरण सुखावितं ॥ सजोध० ॥

घत्ताः– इति गुण जयमाला, सुरभिरसाला, कोटि पाप दूरी करण ।
शीतल जिन कहियं, गुणगण महियं, ब्रह्म चन्द्र एणि पेरे कहियं । पूर्णार्घ्यम् ।



❀ श्री शांतिनाथ पूजा ❀

(भ० चन्द्रकीर्ति कृत)

राग –भक्तामर स्तोत्र की

श्री मत्सुरेन्द्र मुकुटामल रत्न रोचि, पीयूप पूर परि पूजित पाद पद्म ॥
श्री कैरवान्वय नभस्तल पूर्ण चन्द्रः श्री शांतिनाथ जिनपं भुवनैर्महामि । जलम् ॥

अष्टादशार्द्ध निधि पूरित सव कामं, सप्तर्द्धि कामर सुरार्चित रत्न नाथं ।
श्री विश्वसेन तनुजं मनुजेन्द्र सेव्यं संचर्चयामि हरिचदन केशरौघैः । चन्दनं ॥

षट् खंड भूप परि संस्तुत पाद पीठं, देवेन्द्र दिव्य रमणी परिगीत कीर्तिः ।
संप्राप्त सर्व नयनोत्सव कारी रूपं, शान्तीश्वरं परिचरे कमलाक्षतौघैः । अक्षतम् ॥

प्रस्वेद बिन्दु परिवर्जित दिव्य देहं, निर्वेद भाव विलीकृत मोह गेहं ।
दुर्वार पंचशर कुंजर कुंजरारिं, संपूजयामि कुसुमैर्जिन शांतिनाथं ॥ पुष्पम् ॥

छत्रत्रयोत्तम विभूति धिरायमानं, देवांगना ललित सुस्वर गीयमानं ।

सचामरालि परिवेष्ठित युग्म पत्रं, शांतीशमीश मुनयं चरुभिर्यजेहम् । चरुं ॥

यज्जन्म काल समुपागत देवराज, निर्मापितस्त्रिदश मेरु महाभिषेकः ।

दुग्धाब्धि वारि निव हैः परमोत्सवेन दीपैर्भजामि भगवन्तमुमेशशांतिं । दीपं ॥

दुष्टाष्ट कर्म गिरि भंजन वज्र तीर्थं, मिथ्यान्धकार पटलोज्वल बालसूर्यं ।

गंभीर दिव्य ननदामृत पुष्ट भव्यं शांतिजिनेन्द्र ममलं परिधूपयामि । धूपम् ।

श्री हस्तिनागपुर संभव नाथ मीशं, निर्वाण धामगत रुप मनंत रुपं ।

श्री नारिकेल वर दाड़िम मातु लिंगैरेरोशरीरजमलं परिपूजयामि । फलम् ।

काष्ठा सघ मुनीन्द्र वर्य विबुधैः श्री भूषणैः संस्तुतः ।

संसृत्यार्णवपार लब्धि करणैः श्री कर्ण धारोगितां ।

अम्भश्चन्दन पुष्पतंदुल हवि ः स्नेहप्रियार्घापितो ।

भूयान्मोक्षफलायते जिनवराट् श्री चन्द्र कीर्तीश्वरम् ।

❀ जयमाला ❀



विराग विभाग विरोग वमोग, विकार विरेक विनेन्द्र वियोग ।

प्रसीद सनातन शांति जिनेन्द्र, स्वपाद सरोरूह भव्य शतेन्द्र ॥१॥

निवाद निनाद विषाद विराम, निजंत्र विमंत्र नितंत्र विकाम । प्रसीद० ॥ २ ॥
निरोष वितोष विमोष निघोष, विबोध विशोध विरोध निदोष ॥ प्रसीद० ॥ ३ ॥
निगन्थ विबंध विशब्द विरूप, विगेह विदेह विमोह विकूप ॥ प्रसीद. ॥ ४ ॥
निसर्ग विकर्ग विवित्त विचित्त, निरेख विलेख विमेष विचित प्रसीद. ॥ ५ ॥
विमाय निकाय विदंभ विलोभ । नितर्प विमर्प विदर्भ विशोभ । प्रसीद. ॥
निसाध्य विराध्य विनाध्य विशुद्ध विशोक विलोक, वितंद्र विबुद्ध ॥ प्रसीद. ।
विवाल निगाल निकाल विमाल, विशाल विमाल विजाल विताल, ॥ प्रसीद. ॥
श्री संघ मांगल्य विधान पूर्ति, विशालवक्षस्थल दिव्य मूर्तिः
श्री शांतिनाथो चित चंद्रकीर्तिः. ददातुवः सर्व सुखासमूर्तिः ॥ अर्घं ॥
कल्याणं विजयं भद्रं चिन्तितार्थं मनोरथाः
शांतिनाथ प्रसादेन, सर्वे अर्थाः भवन्तु नः ॥ ॥ ईत्याशिर्वादः ॥

❀ अथ श्री कलिकुण्ड (पार्श्वनाथ) पूजा ❀



ह्रींकारं ब्रह्मरूद्धं स्वर पर कलितं, वज्र रेखाष्ट भिन्नं
वज्रस्याग्रंतराले प्रणवमनुपमा नाहतं संसृणीच ।
वर्णान्ताद्यान्सपिंडान् हभमरघभ्कसख्रान्वेष्टयेतद्वदन्ति
वज्राणां यंत्र मेतत् पर कृतमशुभं दुष्ट विद्याविनाशम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् अत्र एहि एहि, संवौषट् । आह्वाननम् ॥

पिण्ड स्थापापनोदं हमरघम्क सखान् द्वांतियुक्तादिदस्युः
शाकिन्यो यान्ति नाशं वरलक्ष्यहसैर्फेनयुक्तै र्महोघ्ना ।
यन्त्र श्री खंड लिप्तो शुचिवस्ते कांस्यपात्रे सुमंत्रैः
लेखिन्या दर्भ जाता निखिल जन हितं तस्य सौख्यं विमर्दि ॥२।

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम् ।

सिद्धं विशुद्धं महिमा निवेषं, दुष्टारिमारि ग्रह दोष नाशं ।
सर्वेषु योगेषु परं प्रधानं, संस्थापये श्री कलिकुण्ड यंत्रम् ३॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव
वषट् , । सन्निधापनम् ॥ कलिकुण्ड यन्त्रो परि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(कलिकुण्ड यन्त्र स्थापनम्)

❀ श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ स्तवनम् ❀

प्रणम्य देवेन्द्र नुतं जिनेन्द्रं सर्वज्ञ मज्ञं प्रतिबोध सुज्ञम्
स्तोष्ये सदाऽहं कलिकुण्ड यंत्रं सर्वाङ्ग विघ्नौघ विनाश दक्षम् ।१।
नित्यं स्मरन्तोऽपिहि एपि भक्तया शक्तया स्तुवन्तोऽपि जपत्सुमंत्रम् ॥

पूजां प्रकुर्वन्हृदयेदधानं सर्वेप्सितं यच्छतु मंत्र राजं ॥ २ ॥
गृहाङ्गणे कल्प लता प्रसून चिन्तामणि चिन्तित वस्तु दाने ।
गावश्च तुल्या किल कामधेनो यस्यास्ति भक्ति कलि कुंड यन्त्रे । ३ ॥
नमामि नित्यं कलि कुण्ड यन्त्र सदापवित्रं कृत रत्न पात्रं ।
रत्नत्रयाराधन मात्र लभ्यं, सुरासुरैर्वंदितमाद्यमिध्यम् ॥ ४ ॥
सिंहेभसर्पाग्नि जलाब्धि चौरा, विपादयो न्यानिसदापविघ्नाः ।
व्याधादयो राज्य भयं नृणा हि, नश्यन्त्यवश्यं कलि कुंड पूजनात् ॥ ५ ॥
प्रदुष्ट बन्धैर्निगडैर्नियन्त्रिते त्रुट्यंति शीघ्रं प्रपन्सुमंत्रं ।
ज्वराति मारा ग्रहणी विकारा, प्रयान्ति नाशं कलि कुण्ड पूजनात् ॥ ६ ॥
वन्ध्यापिनारी बहु पुत्र युक्ता,, संसार सक्ता प्रिय चित्यरक्ता ।
यस्यास्ति चित्ते कलि कुण्ड चिन्ता, नमाम्यहं तं सततं त्रिकालं ॥ ७ ॥
अनर्थ सर्वे प्रति घात दक्षं, सौख्यंयशः शांतिक पौष्टिकाभ्यां ।
नमाम्यहं तं कलिकुण्ड यंत्रं विनिर्गतं यज्जिनराजवक्त्रात् ॥ ८ ॥
स्तवनमिदमनिन्द्यं, देवराजाभिवन्द्यम्, पठति परम भक्तया योनरः सर्वद हि ।
सकल सुखमनन्दं कल्पितं प्राप सर्वं, विनिहित विघ्नौघं यंत्रराज प्रसादात् ॥९॥

॥ इति श्री कलिकुण्ड स्तवन विधानम् ॥

गंगा पगा तीर्थ सुनीर पूरैः शीतैः, सुगन्धे घनसार मिश्रैः ।
दुष्टोपसर्गैक विनाश हेतुं समर्चये श्री कलि कुण्डयन्त्रम् ।' १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलि कुंड दंड स्वामिन् श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय सर्व विघ्न विनाशनाय नवग्रह शान्त्यर्थं जलं यजामहे स्वाहा ॥

श्री चन्दनैर्गंध विलुब्ध भृङ्गैः सर्वोत्तमैर्गंध विशाल युक्तैः । दुष्टोप० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
चन्द्रावदातैः सरलैः सुगन्धैरनिन्द्य पात्रैर्वनशालि पुञ्जैः । दुष्टोप० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥
मंदार जातैर्वकुलादि कुन्दैः सौरभ्य रम्यैः शतपत्र पुष्पैः । दुष्टोप० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥
वाष्पायमानै घृत पूर पूरै र्नानाविधैः पात्रगतैः रसाढ्यैः । दुष्टोप० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
विश्व प्रकाशैः कनकावदातै र्दीपैश्च कर्पूर मयैर्विशालैः । दुष्टोप० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
कर्पूर कृष्णा गुरू चन्दनाद्यै र्धूपैः सुगन्धैर्वर द्रव्य युक्तैः ॥ दुष्टोप० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
खर्जूर राजादन नालिकेरै पूगैः फलैः मोक्ष फलाभिलाषैः ॥ दुष्टोप० ॥ फलं ॥ ७ ॥

जलगंधाक्षत पुष्पैर्नैवेद्य दीप धूप फल निकरैः ।
श्री कलि कुण्डाय वरं ददामि कुसुमांजलि विमलां ॥ अर्घ्यं । ९ ॥

जाप्यं कुर्याद् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन्श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बलवीर्य पराक्रमाय सर्व विघ्न विनाशनाय नमः आत्म विद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंद्धि छिंद्धि भिंद्धि भिंद्धि स्फां स्फीं स्फुं स्फूं स्फैं स्फौं स्फः हूं फट् स्वाहा ।

एभि र्मंत्रैः जाप्यं कुर्यादर्घं चापिसमुद्धरेत ॥ उक्त मंत्र के नव जाप्य देकर अर्घ चढ़ावे ।

❀ जयमाला ❀

उर सम्मत्त निहु सण हो, भवियण जिणवर समरणे ।
णासिय पाउ असेस लहू, तमजम दिवार णिग्गरणे ॥ १ ॥

(राग–विराग सनातन०)

मुद्गर अंजण पुव्वय काउ, दिसाकर तासण मेह णिणाउ ।
सुदुप्प विविंजण देउ करिंद, मणम्मि भणंतां देउ जिणंद ॥ २ ॥

पमत्त समि ह्रिय दितु मम्र्ह महानल लोल लोला विह जीह ।
सरोसण दे उप कम्म मयंदु, मणम्मि० .... ॥ ३ ॥

तमाल महीरूह भंपइ सीस, दिणेसर सणिणय लोयण भीस ।
हवेई यसूण पयासुर इंदु, मणम्मि० .... ॥ ४ ॥

विअंभिय वेलण हिंगण वेल, जलोभदुव जीव पयासिय रोल ।
अथाहु विणोप्पय मित सुरेन्द मणम्मि० .... ॥ ५ ॥

फुडंति फोडायण रुद्धय यंति, विलोय खयंकर शायक यति ।
विले विणु डंकई कूर फणंदु, मणम्मि. .... ॥ ६ ॥

दुसंचर तीरण पुव्वय दुग्गि; असंख महीरूह भीसह मग्गि ।
कहेप्पणु लग्गई तक्कर विदु, मणम्मि, .. ॥ ७ ॥

घिराण वि सक्कई तिव्व जलंति, जगत्त उजालण णायक यति ।
ससोम हवेई सही जम चंद, मणम्मि. .. ॥ ८ ॥

गोमिलिय वंधय सज्जण चक्खु, अगोयवयार पणासिय दुक्खु ।

विहडई शृंखल बिन्दु सुरेन्दु, मणम्मि,··· ॥ ९ ॥

मणोहर इन्दिय सोमय चारू भयंदर सूल सिलेमम सारू ।

पणासिय रोउत हाजर बिंदु, मणम्मि.···· ॥ १० ॥

दुलंघण ए विणु पासह बूह, गामारि वि मक्कई सत्त समूह ।

किंवाण हवेई अलं अरविंदु मणम्मि.··· ॥ ११ ॥

घत्ता—वर खगेंदु भायंतहा, गारूडिया किटि विसुनीह ।

भवियण णयणाणंद जिणसमरंता उवसग्ग तह ॥ १२ ॥ महार्घ्यम् ॥

सर्पत्सर्पेषु दर्प, स्फुट तरल तरोत्तार फुत्कार वेला,

संघट्टोत्पत्ति वाताहत शठ कमठोद्भुत जीमूत जातः ।

खेलत्स्वर्गापवर्गात्तरणि तरल सल्लोल डिंडिर पिंडः,

व्याजा श्री पार्श्वनाथो जयविजय यशो राज हंसो वताद्वः ॥

इत्याशीर्वादः ॥

दधे मूर्ध्नाहताशेषः नाहुता सर्व देवता ।

मयाक्रमाद्विसर्ज्जेत निर्गच्छामि जिनालये । इति विसर्जन मंत्रः ॥

शांति वृद्धि जयं सौख्य, मैश्वर्यारोग्य मिच्छता ।

कल्याणं तुष्टि तुष्टिंच संतुतेऽर्हत्प्रसादतः ॥

❀ श्री ऋषि मंडल पूजा ❀

प्रणम्य श्री जिनाधीशं, समस्त लब्धि संयुतं ।
ऋषि मंडल यंत्रस्य, वक्ष्ये पूजादिमल्पशः ॥

ये जित्वा निज कर्म कर्कश रिपून्, कैवल्यमाभाजिरे ,
दिव्येन ध्वनिनावबोधमखिलं चक्रम्यमाणं जगत् ।
प्राप्ता निर्वृतिमक्षयामवितरा,- मंताविगामादिगा ,
वक्ष्ये तान् वृषभादिकान् जिनवरान् वीरावसानाहं ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवाः अत्रावतर अवतर संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानान्तस्तीर्थंकर परम देवाः अत्रतिष्ट तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवाः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
सन्निधापनम् ॥ यंत्र स्थापनं ॥

कर्पूरपंकज पराग सुगंध शीतै,- राकाशशांक विमलैः सलिलैर्जलौघैः ।
सत्पात्रतामुपगतैर्मधुरैर्लघिष्टै-र्द्विद्वादश प्रमजिनाङ्घ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्धमानांन्तास्तीर्थंकर परम देवेभ्यो जलम् ॥१॥

काश्मीरपूरघनसारगतोद्भवै, र्बाह्यान्तरंगपरितापहरैर्पवित्रैः ।
श्रीचन्दनोत्कटरसैः सुरसै सुभक्तया द्विद्वादश० ॥ चन्दनं ॥

माधुर्य गन्धं निवहान्वित दिव्यदेहै कुन्देन्दुसागरककोज्वलचारुशोभैः ॥
शाल्यचतैः शुभगपात्रगतैरखंडै द्विद्वादश० ॥ अक्षतं ॥

मंदार कुन्द कमलान्वित पारिजातैः, जाति कदंब भसलातिथिसत्प्रसूनैः ।
गंधागतभ्रमरजात रवप्रशस्तैः द्विद्वादश० ॥ पुष्पं ॥

नैवेद्य मंडक सुमोदक खज्जलाद्यैः सत्पोलिका वटक व्यंजन पंच भक्ष्यैः ।
सच्छालिभक्तघृतयुक्तवरैर्विशुद्धैं, द्विद्वा० ॥ चरू ॥

दीपव्रजैरमलकीनकलार सारैं, निर्धूमता मुपगतैः सरमलैर्ज्वलद्भिः ।
पीतद्युति प्रचय निर्जित जात रूपैं, द्विद्वा० ॥ दीपम् ॥

कृष्णागुरू प्रमुखसार सुगंधद्रव्यै प्रोद्भुतमूर्तिभिरलं वरधूप जालैः ।
धूमव्रज प्रमुदितां दितिनंदनौघैः द्विद्वा० धूपं० ॥

नारिंग पूगकदली फल नारीकेल, सन्मातुलिंग क्रमुक प्रमुखैर्फलौघैः ।
शाखा सुपाकमधिगम्य विरक्त चित्ते, द्विद्वादश० ॥ फलम् ॥

जल गंधाक्षतैः पुष्पैश्चरूभिर्दीपधूपकैः,
फलैरर्थं विधायासु श्री जिभ्यो ददे मुदा ॥ अर्घं ।

ॐ ह्राँ ह्रिं ह्रुँ ह्रूँ ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रँः असि आउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रींनमः अस्य मंत्रस्य शताष्ट वारं जाप्यं कुर्यात् ॥

(उक्त मंत्र के १०८ जाप्य देकर अर्घ चढावे)

❀ जयमाला ❀

पणमवि जिण देवं, सुरकिय सेवं, णासिय जम्म जरा मरणं ॥
सिव सुह कयरायं, गय मय रायं णिय भत्ति जुतिए थुणमि ॥

जय आईणाह कम्मारिवाह, जय अजिय जिणेसर मोह दाह ।
जय संभव गय पयराज डंभ, जय अहिणंदण जिण परम बंभ ॥

जय सुमई कुमई गय देव देव, जय पुहुमप्पय सुर विहियसेव ।
जय जय सुपास मणिहर सुभाए, जय चन्दप्पह जीयचंद हास ॥

जय पुप्फ यंत जीय पुप्फयंत, जय सीयल मीयल जिय पियंत ।
जय सेय देव कय सव्व सेव जय वासुपूज्ज सुरकियतीसेव ॥

जय विमल जिनेसर विमलणाण, जय जिण अणंत गय परमठाण ।
जय धम्म धम्म देसण समत्थ, जयमाति सांति गय गंथ सत्थ ॥

जय कुंथु सामि गय कम्मपंक, जय जय अर सामी समिय संक ।
जय मल्ली सामीगय सत्तभंग, जय जय मुणिसुव्वय जिय अणग ॥

जय णमि जिणणिर सिय सव्व संग, जय णेमि मुक्कराई य रंग ।
जय पास देव फणि नई पयिट्ठ । जय वड्ढमाण गुण गण गरिट्ठ ॥

घत्ता—इयथुणमि जिणेसर, महि परमेसर णासियकम्म कलंकभर ।
सुरपई बहु सामिय भव भयं भामिय, उत्तारि जे अठथुवई ॥ अर्घं ॥

निशेषामर शेखरार्चितपदः, दुन्दौल्ल सत्सन्नखः ।
भ्रात प्रोम्द्त कांति मंहति हतः, प्रव्यक्त भक्तया सव ॥
निर्वाणेश महोतमांग मुकुट, प्रस्फूर्ति ममद्भक्तरा ।
ऋद्धि वृद्धि मनारतं जिनवराः, कुर्वन्तु वः सर्वदा ॥ इत्याशिर्वादः ॥

श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा

सम्मेदाचल तीर्थ है, सब तीर्थों का राज ।
जहँ तैं शिवपुर को गये विंशति श्री जिनराज ।
आह्वानन विधि सौ करूँ, करूँ स्थापना सार
सन्निधि करण क्रियाकरी, मैं उतरूं भव पार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र अत्र अवतर २ संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री सन्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

क्षीराम्बुधि सारं, पयसभकारं, मिश्रित हेम भृंगार भरं ।
जल धारा दीजे, अशुभ हणीजे, कर्ममलामल धौत करं ।
पूजो गिरि धामं, शिखर सुठामं, वीस जिनेश्वर पद कमलं ।
जहं वम्म विराजै, महिमा छाजै पार्श्व जिनेश्वर सौख्य करं ॥१॥ जलम् ॥

कर्पूर सुगारं, जग उद्धारं, मिश्रित घसिये प्रेमकरी ।
हेमादिक चित्रं जड़ित विचित्रं, चन्दन चरचों भाव धारी । पूजो० ॥ चन्दनम् ॥

धवलाक्षत राशि, कमल सुवासी, तंदुल पूज्य सु अग्रधरं ।
शशि किरण समानं, कीजे ज्ञानं, अक्षय पद जिम सौख्य करं । पू० ॥ अक्षतं ॥

चम्पक द्रुय जातं, कमल विख्यातं, केतकी कुन्द मंदार चयं ।
शुभ मोगर लीजे, काम दमीजे, पद पूजीजे बीस जिनं । पूजो० ॥ पुष्पम् ॥

घेवर बहु पूरी, साकर चूरी, खज्जक लाडु सुंवाली करी ।
शुभव्यंजन लीजे, थाल भरीजे, अग्र उतारे भाव धरी । पूजोगि० । नैवेद्यं ।

रत्नादिक दीपं, सहज स्वरूपं, कर्पूरामल ज्योति करं,
वर कंचन पात्रं, जडित विचित्रं, भावे उतारो दीप वरं ॥ पूजोगि० ॥ दीपम् ॥

कृष्ण गुरू चन्दन, तगर सुगंध, अगरादिक बहुधूप चयं,
दशदिशी शुभवासं, कर्मविनाशं, श्री जिन आगे धूप करं ॥ पूजोगि० । धूपम् ॥

द्राक्षादिक सारं, कदली भारं, श्रीफल पूग जम्बीर फलं,
फणसादिक लीजे, थाल भरीजे, शीर फल लीजे भविक अलं । पूजोगि० ॥ फलम् ॥

जल आदिक श्रीफल, अर्घ समुज्जल, आरती गही करी ज्ञान करं,
जिन चरण उतारो, तीर्थ जुहारो, लक्ष्मी सेन शुभ भाव करं । पूजोगि० ॥ अर्घ्यम् ॥

❀ जयमाला ❀

समेद शीखर सिद्धा जिन वीसं, वन्दौं भवियण भाव धरीशं ।
शिखर वंध जिन पयडि विशालं, घंटा भेरी ध्वजा गुण मालं ॥ १ ॥

वन उन्नत जहां मधुक विराजे, पार्श्व जिनेश्वर महिमा छाजे ।
उत्तम वन मधि वृक्ष विशालं, कदली स्तंभावली सुरसालं ॥ शीखर० २ ॥

जय दुंदुभि नित मंगल नादं, सुनतां उपजे परमाल्हादं ।
परवत पर्यांङ समुन्नत सोहे, देखत भविजन के मन मोहे ॥ शिखर० ३ ॥

करत है रचा चेत्र सुपालं, सीता नाला सजल विशालं ।
चैत्य अनूपम विशति छाजे, मुक्ति गये वीसों जिन राजे ॥ शिखर० ४ ॥

अवर न तीरथ शिखर समानं, देवेन्द्रादि सु करत प्रणामं ।
जे भवि प्राणी यात्रा करहि अनुक्रमतैंते शिवतिय वरहि ॥ शिखर० ॥ ५ ॥

घत्ता— यह शुभ जयमाला, भाव रसाला, जे पठति भवि भावधरि ।
गुरू सकल सुकीर्ति, पट्ट सोहे मूर्ति लक्ष्मीसेन शुभ भाव धरि ॥ ६ ॥

पूर्णार्घ्यम् ॥



अथ षोडशकारण भावना पूजा

ऐन्द्रं पदं प्राप्य परं प्रमोदं धन्यात्मतामात्मनि मन्य मानः
दृग्शुद्धि मुख्यानि जिनेन्द्र लक्ष्म्या, महाम्यहं षोडश कारणानि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणानि अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः ।
ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणानि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत, वषट् ॥

सुवर्ण भृङ्गार विनिर्गताभिः पानीयधाराभिरिमाभिरुच्चैः ।
दृक शुद्धि मुख्यानि जिनेन्द्र लक्ष्म्या महाम्यहं षोडश कारणानि ॥ जलं ॥ १ ॥
श्री खण्ड पिण्डोभद्व चन्दनेन, कर्पूर पूरैः सुरभीकृतेन । दृक्शु . ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
स्थूलैरखण्डैरमलैः सुगन्धैः शाल्यक्षतैः सर्व जगन्नमस्यैः । दृक्शु. ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥
गुञ्ज दद्विरेफैः शतपत्र जाती सत्केतकी चम्पक मुख्य पुष्पैः । दृक्शु. ॥ पुष्पम ॥ ४ ॥
नवीन पक्वान्न विशेष सारै र्नानाप्रकारै श्चरूभिर्वरिष्टैः । दृक्शु. ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
तेजो मयोल्लास शिखैः प्रदीपैः दीपप्रभैर्ध्वस्त तमो वितानैः ॥ दृक्शु. ॥ दीपम् । ६ ॥
कर्पूर कृष्णागुरू चूर्णरूपै धूपै हुताशाहुत दिव्य गन्धैः ॥ दृक्शु ॥ धूपम् । ७ ॥
सन्नारिकेल क्रमुकाम्रबीजैः पूगादिभिश्चारूफलैः रसाढ्यैः ॥ दृक्शु ॥ फलम् ॥ ८ ॥
पानीय चन्दन रसाक्षत पुष्प भोज्य, सद्दीपधूपफलकल्पितमर्घपात्रं ।
अर्हंतहेत्वमल षोडश कारणानि पूजा विधौ विमल मंगलमातनोमि ॥ अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

यहायदोप वाशास्युराक्रयर्य ते तदातदा । मोक्ष सौख्यस्य कर्त्तृणि कारणान्यपि षोडश ॥

॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

❀ अथ प्रत्येकार्घ्य ❀

असत्य सहिता हिंसा मिथ्यात्वं चन दृश्यते । अष्टाङ्ग यत्र संयुक्तम दर्शनं तद्विशुद्धये ॥ १ ॥

कवित्त–दर्शन शुद्ध न होवत जां लगि, तां लगि जीव मिथ्यात्वी कहावे ।
काल अनंतफिरे भवमें, महा दुःखनको कहीं पारन पावे ।
दोष पच्चीस रहित गुणाम्बुधि सम्यक दर्शन शुद्ध अराधे ।
ज्ञान कहेनर सोही बड़ो जो मिथ्यात्व तजि जिन मारग साधे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयै अर्घ्यम् ॥

दर्शन ज्ञान चारित्र तपसां यत्र गौरवम् मनो वाक्काय सशुद्धया सा ख्याता विनय स्थितिः ॥ २ ॥

देव तथा गुरूराय तथा तप संयम शील व्रतादिक धारी ।
पापके हारक कामके मारक शल्य निवारक कर्म निवारी ।
धर्म के धारक पापके भेदक पंच प्रकार संसार के तारी
ज्ञान कहे विनयो सुख कारक भावधरी मन राखो विचारी ॥ २ ॥

ॐ ह्री विनय सम्पन्नतायै अर्घम् ॥ २ ॥

अनेकशील सम्पूर्ण व्रत पंचक संयुतम् । पंच विंशति क्रियायत्र तच्छील व्रतमुच्यते ॥ ३ ॥

शील सदा सुख कारक है, अतिचार विवर्जित निर्मल कीजे,
दानव देव करें तप सेव विपाद न मूल पिशाच पमीजे ।
शील बडो जगमें हथियार जु शील को ओपमा काहे की दीजे
ज्ञान कहे नहीं शील बराबर तातैं सदादृढ शील धरीजे ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं शील व्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ॥ ३ ॥

काले पाठस्तवो ध्यानं शास्त्रे चिन्ता गुरौनुतिः । यत्रोपदेशना लोके शास्त्रज्ञानोपयोगता ॥ ४ ॥

ज्ञानसदा जिनराज को भाषित, आलस छोड़ि पढे जु पढावे ।
द्वादश दोऊ अणेकइ भेद सु नाम मति श्रुत पंचम पावे ।
चारह वेर निरन्तर भाषित ज्ञान अभिक्षण शुद्ध कहावे,
ज्ञान कहे श्रुत भेद अनेकजु लोक अलोक प्रत्यक्ष दिखावे ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय अर्घ्यम् ॥ ४ ॥

पुत्र मित्र कलत्रेभ्य संसार विषयार्थतः विरक्तिर्जायते यत्र स संवेगो बुधैः स्मृतः ॥ ५ ॥

मात न तात न पुत्र कलत्र न संपत्ति सज्जन यह सब खोटो,
मंदिर सुन्दर काय सखा सब कोई कहे हम अन्तर मोटो ।
भावहु भावधरी मन भेदन नांहि संवेग पदारथ छोटो ।
ज्ञान कहे शिव साधन को जैसे साह को काम करेजु बनोटो ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं संवेगाय अर्घ्यम् ॥ ५ ॥

स्वस्य मध्यमोत्कृष्ट पात्रेभ्यो दीयते भृशम् शक्तया चतुर्विधं दानं साख्याता दान संस्थितिः ॥ ६ ॥

पात्र चतुर्विध देख अनूपम दान चतुर्विध भावसों दीजे ।
शक्ति समान अभ्यागत को बहु आदर सों प्रणिपत्य करीजे ।
देत तजें नर दान सु पावहि तासों अनेकन कारण सीजे ॥
बोलत ज्ञान देहु शुभदान जु भोग सु भूमि महासुख लीजे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागाय अर्घ्यम् ॥ ६ ॥

तपो द्वादश भेदं हि क्रियते मोक्ष लिप्सया ।
शक्तितो भक्तितो यत्र भवोत्सा तपसः स्थिति ॥ ७ ॥

कर्म कठोर गिरावन को निज शक्ति समान उपोषण कीजे ।
बारह भेद तपोतप सुन्दर पाप तिलांजलि काहे न दीजे ॥
भाव भरी तप घोर करी नर जन्म सदा फल काहे न लीजे ।
ज्ञान कहे नर जे तपते तप ताके अनेकन पातक छीजे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे अर्घ्यम् ॥ ७ ॥

सर्वोपसर्ग रोगादिष्ट वियोगा दनिष्ट संयोगात्, न भयं यत्र प्रविशति साधु समाधिः सविज्ञेय ॥८॥

साधु समाधि करो भवि भावक पुण्य बढे उपजे अवभाजे,
साधु की संगति धर्म को कारण भक्ति करै परमारथ भावे ।
साधु समाधि करे भव छूटत कीर्ति छटात्रय लोक में गाजे ।
ज्ञान कहे जग साधु बड़ो गिरि शृंग गुफा विच जाय विराजे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं साधु समाधये अर्घ्यम् ॥ ८ ॥

कुष्टोदर व्यथा शूलैर्वात पित्त शिरोतिभिः ।
कास श्वास ज्वरा रोगैः पीडिता ये मुनीश्वराः ॥
तेषा भैषज्यमाहारं शुश्रूषापथ्यमादरात् । यत्रैतानि प्रवर्तन्ते वैयावृत्त्यं तदुच्यते ॥ ९ ॥

कर्म के योग विथा उपजे मुनि पुंगव को तस भैषज्ञ कीजे,
पित्त कफानल तास भगन्दर तापको शूल महागद छीजे ।
भोजन साथ बनाय के औषध पथ्य कुपथ्य विचार के दीजे
ज्ञान कहे नित एसी वैयावृत्ति जेहिंकरें तस देव भी पूजें ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं वैयावृतिकरणाय अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

मनसा कर्मणा वाचा जिन नामाक्षर द्वयं । सदैव स्मर्यते यत्र सार्हमद्भक्तिः प्रकीर्तिता ॥ १० ॥
देवसदा अरहन्त भजो जिन दोष अठारह किया अतिदूरा ।

पाप पखाल भये अति निर्मल कर्म कठोर किये अति चूरा ।

दिव्य अनन्त चतुष्टय सोभित घोर मिथ्यात्व निवारण शूरा,

ज्ञान कहे जिन राज आराधो निरन्तर जे गुण मन्दिर पूरा । १० ॥

ॐ ह्रीं अर्हंभक्तये अर्घ्यम् ॥ १० ॥

निर्ग्रंथ भुक्तितो भुक्ति स्तस्य द्वारावलोकनम् तद्भोज्या लभते वस्तु रसत्यागोपवासता ॥

तत्पाद वन्दना पूजा प्रणामो विनयो नतिः

एतानि यत्र जायन्ते गुरु भक्तिर्मतेऽसा ॥ ११ ॥

देवत हैं उपदेश अनेक सु आप सदा परमारथ धारी,

देश विदेश विहार करैं दश धर्म धरैं भव पार उतारी ।

एसे आचार्य को भावधरी भजि जे शिव चाहत कर्म निवारी,

ज्ञान कहे जिन भक्ति कीनों नर देखतहों मनमांही विचारी ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं आचार्य भक्तये अर्घ्यम् ॥ ११ ॥

भवस्मृतिरनेकान्त लोकालोक प्रकाशिका । प्रोक्ता यत्रार्हता वाणी वर्ण्यते सा बहुश्रुतिः ॥ १२ ॥

आगम छन्द पुराण पढ़ावत साहित्य तर्क वितर्क बखाणे ।

काव्य कथा नव नाटक बूझत ज्योतिष वैद्यक शास्त्र प्रमाणे।

एसे बहुश्रुत साधु मुनीश्वर जो मनमें दोउ भाव जु आणे,

ज्ञान कहे तस पाय नमूं श्रुत पारग ये मन गर्व न आणे ॥१२॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्तयेऽर्घ्यम् ॥ १२ ॥

षट् द्रव्य पन्च कायत्वं सप्त तत्वं नवार्थता ।

कर्म प्रकृति विच्छेदो यत्र प्रोक्तः स आगमः ॥ १३ ॥

द्वादश अंग उपांग सदा गम ताकि निरन्तर भक्ति करावे ।

वेद अनूपम चार कहेतस अर्थ भले मन मांहि ठरावे ।

पढो बहुभाव लिखो निज अक्तर भक्ति करावहु पूज रचावे ।

ज्ञान कहे जिन आगम भक्ति करो सद्बुद्धि बहु शुभ पावे ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्तयेऽर्घ्यम् ॥ १३ ॥

प्रति क्रमस्तनूत्सर्गः समता वन्दना स्तुतिः ।

स्वाध्यायः पठ्यते यत्र तदावश्यक मुच्यते ॥ १४ ॥

भाव धरे समता सब जीवन स्तोत्र पढे मनतैं सुखकारी ।

कायोत्सर्ग करे मन प्रीतसों वन्दन देव तणी भवहारी ॥

ध्यान धरि मद चूर करी दोउ बेर करे पडिकम्मथ भारी ।

ज्ञान कहे मुनि सो भगवंत जु दर्शन ज्ञान चरित्र उधारी ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणये अर्घ्यम् ॥ १४ ॥

जिन स्नानं श्रुताख्यानं गीत वाद्यं च नर्तनम् ।
यत्र प्रवर्तते पूजा सा सन्मार्ग प्रभावना ॥ १५ ॥

श्री जिन पूजा रचै परमारथ आगम नित्य महोत्सव ठानै :
गावत गीत बजावत ढोल मृदंग के नाद सुथान बखानै ।
संघ प्रतिष्ठा रचै जल जातरा सद्गुरु को साहमों कर आनै,
ज्ञान कहे जिनमार्ग प्रभावन भाग्यविशेष सुजानहि जानै ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावनायै अर्घ्यम् ॥ १५ ॥

चारित्र गुण युक्तानां मुनीनां शील धारिणां
गौरवं क्रियते यत्र तद्वात्सल्यं च कथ्यते ॥ १६ ॥

गौरव भाव धरि मन में मुनि पुंगव को नित वत्सल कीजे,
शील के धारक भव्य के तारक तासौं निरन्तर स्नेह धरीजे ।
धेनु यथा निज बालक को अपने निय छूटन और पसीजे ॥
ज्ञान कहे भवि लोक सुनो जिन वत्सल भाव धरै अघ छीजे ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्वाय अर्घ्यम् ॥ १६ ॥

कर्तव्यानि सदंगानि केवली श्रुत केवली, समीपे तीर्थकृन्नाम भव्या बध्नंति भावतः ॥ १७ ॥

सुन्दर षोडश कारण भावन निर्मल चित सुधार के धारे ।
कर्म अनेक हरे अति दुर्द्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारे ।

दुख दारिद्र्य विपत्ति हरे भव सागर को पर पार उतारे
ज्ञान कहे यह षोडश कारण कर्म निवारण सिद्ध सुठारे ।

इत्युच्चार्य षोडश कारण यंत्रोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

निम्न मन्त्रो का जाप्य कर के अर्घ चढ़ावे ।

१ ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धये नमः ॥
२ ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नतायै नमः ॥
३ ॐ ह्रीं शील व्रतेष्वनतिचाराय नमः ॥
४ ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगाय नमः ॥
५ ॐ ह्रीं संवेगाय नमः ॥
६ ॐ ह्रीं शक्ति तस्त्यागाय नमः ॥
७ ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे नमः ॥
८ ॐ ह्रीं साधुसमाधये नमः ॥
९ ॐ ह्रीं वैयावृत्याय नमः ॥
१० ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तये नमः ॥
११ ॐ ह्रीं आचार्य भक्तये नमः ॥
१२ ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्तये नमः ॥
१३ ॐ ह्रीं प्रवचन भक्तये नमः ॥
१४ ॐ ह्रीं आवश्यका परिहाण्यै नमः ।
१५ ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावनायै नमः ॥
१६ ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्वाय नमः ॥

एभि मंत्रै र्जाप्यंकुर्यादर्घ्यं चापि समुद्धरेत् ॥

❀ जयमाला ❀

भव भमण णिवारण, सोलहकारण, पयडमि गुण गण सायरहम् ।
पण विवि तित्थंकर, असुह खयंकर, केवलणाण दिवायरहम् ॥ १ ॥

॥ पद्धरी छन्द ॥

दिढ धरहु पढम दंसण विसुद्धि, मण वयण काय विरइयति सुद्धि
मा छंडहु विणउ चउ पयार जो मुत्ति वरंगण हियहि हार ॥ २ ॥
अणु दिणु परि पालउ सीयल भेउ, जो हुत्ति हरइ संसार हेउ ।
णाणोपयोग जो काल गमइ, तसु तणिय कित्ति भुवणयहि भमइ ॥ ३ ॥
संवेउ चाउ जे अणुसरंति, वेएण भवण्णउ ते तरंति ।
जे चउविह देय सुपत्तदाण सो पावइ अणुकम अचलठाण ॥ ४ ॥
जे तव तवंति बारह पयार ते सग्ग सुरिंदिह विविह सार ।
जो साहु समाधि धरंति थक्कु, सो हवइण काल सुहंधुवक्कु ॥ ५ ॥
जो जाणइ वैयावच्चकरण, सो होइ सव्व दोसाण हरण ।
जो चिंतइ मण अरिहंत देव, तसु विसय अणंताक्खवण खेव ॥ ६ ॥
पठवयण सरिस गुरू जेण मंति, चउगइ संसारण ते भमंति ।
बहु सुयह भत्ति जे णर करंति, अप्पउ रयणत्तय ते धरंति ॥ ७ ॥

जे छह आवस्सई चित्त देय, सो सिद्ध पंथ सहत्थ लेय ।
जेमग्ग पहावण आइरंति ते अहमिद्दंसण संभवंवि ॥ ८ ॥
जे पवयण कज्ज समत्थ हति तह कम्म जिणंदह खवण भंति ।
जे वच्छ लच्छ कारण वहंति ते तित्थयरत्तउ पुह लहंति ॥ ९ ॥
यत्ता–इह सोलहकारण कम्म णिवारण जे धरंति वयसील धरा ।
ते दिवि अमेरसुर पहुमि णरेसुर सिद्धवरंगण हियहि हरा ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुध्यादि षोडश कारणेभ्यो पूर्णार्घ्यम् ॥

एताः षोडश भावना यतिवराः कुर्वंति ये निर्मला,
स्ते वै तीर्थकरस्य नाम पदवीमायुर्लभंते कुलं ।
वित्तं कांचन पर्वतेषु विधिना स्नानार्चनं देवतां
राज्यं सौख्यमनेकधा वर तपो मोक्षं च सौख्यास्पदं ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

❀ अथ दश लक्षण धर्म पूजा ❀

भवाम्भोधि निमग्नाना जन्तूनां तारण क्षमम् ।
उत्तमादि क्षमाद्यन्तं यजे धर्म समूहकम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलाक्षणिक धर्म अत्रावतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिक धर्म अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलाक्षणिक धर्म अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(दश लक्षण यंत्रं स्थापयेत्)

चञ्चत्काञ्चन भृङ्गार नालि निर्गम सज्जलैः

उत्तमादि क्षमाद्यन्तं, यजे धर्म समूहकम् ॥ १ ॥ जलम् ॥

चन्दनैश्चंद्रवर्णाढ्यै र्मलयाचल संभवैः ॥ उत्तमादि० ॥ चन्दनम् ॥

शालेयैः सान्द्रकैः शुद्धैः सकलैः सरलैः शुभैः ॥ उत्तमादि० ॥ अक्षतम् ॥

मंदार मालतो पुष्पैः पारिजातैः सुवर्णकैः उत्तमादि० ॥ पुष्पम् ॥

नैवेद्यैः परमाहारैः स्वर्ण भाजन मध्यगैः ॥ उत्तमादि० ॥ नैवेद्यम् ॥

उद्योतित दिशाचक्रै र्दीपैः सद्धर्म पात्रगैः ॥ उत्तमादि० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

धूपैर्धूपितदिक्चक्रै र्दशांगैर्नर दुर्लभैः ॥ उत्तमादि० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

आम्रादि फल संघातैर्नासा नेत्र सुखाकरैः ॥ उत्तमादि० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

तोयैर्गंधाक्षतैः पुष्पैर्दीपधूप फलादिभिः ॥ उत्तमादि० अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥

येन केनापि दुष्टेन पीडितेनापिकुत्रचित् ,

क्षमा त्याज्या न भव्येन, स्वर्ग मोक्षाभिलाषिणा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमाधर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

घत्ता— उत्तम खम मद्दउ, अज्जउ सच्चउ, पुण सउच्च संजम सुतऊ ।
चाउवि आकिंचणु, भव भय वंचणु, बंभ चेरु धम्मजु अखऊ ॥ १ ॥

उत्तम खम तिल्लोयह सारी, उत्तम खम जम्मो वहितारी ।
उत्तम खम रयणत्तयधारी, उत्तम खम दुग्गई दुह हारी । २ ।

उत्तम खम गुण गण सहयारी, उत्तम खम मुणिविंद पयारी ।
उत्तम खम बुहयण चिंतामणि, उत्तम खम संपज्जइ थिरमणि ॥ ३ ॥

उत्तम खम मह णिज्ज सयल जणु, उत्तम खम मिच्छत्त विहंडणु ।
जह असमत्थह दोसु खमिज्जइ, जहिं असमत्थह णवि रूसिज्जइ ॥ ४ ॥

जहि आकोसण वयण सहिज्जइ, जहि पर दोसण जण भासिज्जइ ।
जह चेयण गुण चित्त धरिज्जइ तहिं उत्तम खम जिणे कहिज्जइ ॥ ५ ॥

घत्ता— उत्तम खम जुया, सुरखग णूया, केवलणाण लहंवि थिरू ।
हुयसिद्ध णिरंजण भव दुह भंजणु, अगणिय रिसि पुंगमजि चिरू ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

पंच जिनेन्द्र धरूं मनमें जिन नाम लिये सब पातक भाजै,
शारद मात प्रणाम करूं, जाके हत्थ कमण्डल पोथी विराजै ।

गौतम पाय नमूं मन शुद्धसौं, अंग उपांग बखाण हि गाजै ।
सद्गुरू को उपदेश सुरायो हम, धर्म सदा दशलक्षण छाजै ॥ १ ॥
केवल एक क्षमा बिनही, तप संयम शील अकारथ जाणौ ।
पाक सुपाक बण्यो सुथरो जैसे लोण विहीन अनाज को खाणौ ।
देव जिनेन्द्र कहे थुरतैं जगमें जण तारण मोक्ष पियाणौ ।
ज्ञान कहे नर अन्तर सूझत सार क्षमा दशलक्षण राणौ ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥

मृदुत्वं सर्व भूतेषु कार्यं जीवेन सर्वदा,
काठिन्यं त्यज्यते नित्यं धर्म बुद्धिं विजानता ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगायार्घ्यम् ॥

घत्ताः—मद्दव भव मद्दणु, माणणिकंदणु दय धम्मजु मूलहु विमलु ।
सव्वह हियारउ, गुण गण सारउ, तिसं उचऊ संजम सयलु ॥ १ ॥
मद्दव माण कसाय विहंडणु, मद्दउ पंचेंदिय मण दंडणु ।
मद्दउ धम्मइ करुणा वल्ली, पसरइ चित्त महीरूह वल्ली ॥ २ ॥
मद्दउ जिणवर भत्ति पयासइ, मद्दउ कुमइ पसरु णिरणासइ ।
मद्दवेण बहु विणाय पवट्टइ मद्दवेण जण वइरी हट्टइ ॥ ३ ॥

मद्दवेण परिणाम विसुद्धि, मद्दवेण विहु लोयह सिद्धी :
मद्दवेण दुई विह तव सोहइ, मद्दवेण तीजो णर मोहइ ॥ ४ ॥

मद्दउ जिण सासण जाणिज्जइ, अप्पा पर सरूव भासिज्जइ ।
मद्दउ दोस असेस णिवारउ, मद्दउ जणण समुद्दह तारउ ॥ ५ ॥

आर्या–सम्मदंसण अंगु, मद्दउ परिणाम जु मुणहु ।
इय परियाण विचित्तं मद्दउधम्म अमल थुणहु ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

मार्दव भाव न आवत जौं लग तौं लग धर्म कहा उपजावे,
भाव कठोर रहे घट भीतर नूतन पाप संयोग बढावे ।
आरत रौद्र वसैं उमके मन पापतैं निश्चय दुर्गति पावे,
ज्ञान कहे मृदुभाव को धारके, फेरि संसार कबहुं नहीं आवे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं ॥ २ ॥

आर्यत्वं क्रियते सम्यक् दुष्ट बुद्धिश्च त्यज्यते ,
पाप चिन्ता न कर्तव्या श्रावकैर्धर्म चिन्तकैः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

घत्ता:– धम्महवरलक्खणु, अज्जउथिरमणु, दुरिय विहंडणु सुह जणणु ,

तं इत्थुजि किज्जइ, तं पालिज्जइ, तंणि सुणिज्जइ खय जणणु ॥ १ ॥

जाणि सुणिजय चित्त चिंतज्जइ, तारिसु अण्णहु पुण भासिज्जइ ।

किज्जइ पुण तारिसु सुह संचणु; तं अज्जव गुण मुणहु अवंचणु ॥ २ ॥

माया सल्ल मणहु णीसारहु, अज्जउ धम्मपवित्त वियारहु ।

वउ तउ माया वियउ णिरत्थउ, अज्जउ सिवपुर पंथ सउत्थउ ॥ ३ ॥

जत्थ कुटिल परिणाम चइज्जइ, तहि अज्जउ धम्मजु संपज्जइ ।

दंसण णाण सरूव अखंडो, परम अतिंदिय सुक्ख करंडो ॥ ४ ॥

अप्पे अप्पाउ भवह तरंडो, एरिसु चेयस भाव पयंडो ।

सो पुण अज्जउ धम्मे लब्भइ अज्जवेण वैरिय मण खुब्भइ ॥ ५ ॥

घत्ता-अज्जउ परमप्पउ, गय संकप्पउ, चिम्मितु सासय अभयपऊ ।

तं णिरुजाइज्जइ, संसउहिज्जइ, पाविज्जइ णिहिअचल पऊ ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

आर्जव भाव धरै मनमें जिससे भव ठार के मोक्ष सिधारै ।

डूबत है भव सागर में तस हाथ गही पर पार उतारै ॥

संपति देइ निवाज खडो करे, आर्जव कर्म को मान विगारै ।

ज्ञान कहै सोइ मूढ़ बड़ो भव मानव पायके आर्जव छारै ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ ३ ॥

असत्यं सर्वथा त्याज्यं, दुष्ट वाक्यं च सर्वदा ।
पर निन्दा न कर्तव्या भव्येनापिच सर्वदा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

घत्ता–दय धम्म हु कारण, दोस णिवारण, इह भव पर भव सुक्खयरू ।
सच्चुजि वयणुल्लउ, भुवणि अतुल्लउ, बोलिज्जइ वीसास यरू ॥ १ ॥

सच्चुजि सव्वह धम्म पहाणु, सच्चुजि महियल गरुव विहाणु ।
सच्चुजि संसार समुद सेउ, सच्चुजि भव्वह मण सुक्ख हेउ ॥ २ ॥
सच्चेणजि सोहइ मणुवजम्मु, सच्चेण पवित्तउ पुण्ण कम्मु ।
सच्चेण सयल गुण गण सहंति, सच्चेण तियस सेवा वहंति ॥ ३ ॥
सच्चेण अणुव्व महव्वयाइ, सच्चेण विणासिय आवयाइ ।
हिय मिय भासिज्जइ णिच्च भास, णवि भासिज्जइ पर दुह पयास ॥ ४ ॥
पर बाहायर भासहु ण भव्व, सच्चुणि छंडउ विगय गव्व ।
सच्चु जि परमप्पा अत्थि एक्कु, सो भावहु भव तम दलण अक्कु ॥ ५ ॥
रूंधिज्जइ मुणिणा वयण गुत्ति, जंखण किंडइ संसार अत्ति ।
पुण सच्चेण पावइ सग्गसुक्खं, धम्मेण लहइ कम्मक्खय मोक्खं । ६ ॥

आर्या—सच्चुजि धम्म फलेण केवल णाण वहेइ थणु ।
तं पालहु भो भव्व, मणहुण अलियउ इह वयणु ॥ ७ ॥

(भापा सवैया)

सांच नहीं घट भीतर सो नर क्यों नर की गिनती में गिनाये ।
'राध वसु जग देखत डूबत दुर्गति पावत बोहर आये ।
झूठ बसै जिसके मुखमें नरते जगमें नरकै हि समाये,
ज्ञान कहै जग सत्य वड़ो षट् दर्शन में जिनराज कहाये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ ४ ॥

बाह्याभ्यंतरैश्चापि मनोवाक्काय शुद्धिभिः शुचित्वेन सदा भाव्यं पाप भीतैः सु श्रावकैः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगायार्घ्यम् ॥

घत्ताः— सच्चुजि धम्मंगो, तं जि अभंगो, भिण्णंगो उवओग्गमई ।
जर मरण विणासणु, तिजय पयासणु काइज्जइ अहिणिसुजि थुई ॥ १ ॥

धम्म सउच्च होइमण सुद्धिय, धम्म सउच्च वयणधण गिद्धिय ।
धम्म सउच्च लोह वज्जंतउ, धम्म सउच्च सुतव पहि जंतउ ॥ २ ॥

धम्म सउच्च बंभ वय धारणु, धम्म सउच्च मयट्ठणिवारणु ।
धम्म सउच्च जिणायम भणणे, धम्म सउच्च सुगुण अणु मणणे ॥३॥

धम्म सउच्च सल्ल कयचाए, धम्म सउच्चुजि णिम्मलभाए ।

धम्म सउच्च कसाय अहावे, धम्म सउच्च ण लिप्पइ पावे ॥ ४ ॥

अहवा जिणवर पूज विहाणे, णिम्मल फासुय जल कयएहाणे ।

तं पि सउच्च गिहत्थउ भासइ णवि मुणिवरह कहिउ लोयासिउ ॥ ५ ॥

घत्ताः—भव मुणिवि अणिच्चउ, धम्म सउच्चउ पालिज्जइ एयग्गमणि ।

सिव मग्ग सहाओ सिव पयदाओ, अणुस चिंतहिं किणि खणि ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

शौच करो जिन पूजन को मनशुद्ध रहै परमारथ केरो ।

इन्द्रिय पांच रहैं अपने वश कर्म कषाय को पाड़त एरो ॥

मंत्र को स्नान करैं मुनि पुंगव, पावत नांहिं संसार को फेरो ।

ज्ञान कहै जग शौच बड़ो, परमारथ सुमरन ज्ञान वढ़ेरो ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ ५ ॥

संयमं द्विविधं लोके, कथितं मुनि पुंगवैः ।

पालनीयं पुनश्चिते, भव्य जीवेन सर्वदा ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

घत्ताः—संजम जणि दुल्लहु, तं पाविल्लहु, जो छंडइ पुण मूढ मई ।

सो भमै भवावलि, जरमरणावलि किम पावइ सुइ पुण सुगई ॥ १ ॥

संजम पंचेंदिय दंडणेण, संजम नि कसाय विहडणेण ।
संजम दुद्धर तव धारणेण, संजम रस चाय वियारणेण ॥ २ ॥

संजम उववास नियंमणेण, संजम मणु पसरहु थंभणेण ।
संजम गुरू काय कलेसणेण, संजम परिगह गिह चायणेण ॥ ३ ॥

सजम तस थावर रक्खणेण, संजम तिणि जोयणियत्तणेण ।
सजम सु तत्थ परिरक्खणेण, संजम बहु गमण चयंतणेण ॥ ४ ॥

संजम अणुकंप कुणंतणेण, संजम परमत्थ वियारणेण ।
संजम पोसइ दंसणाहु अत्थु, संजम तिसहूणिरू मोक्ख पत्थु ॥ ५ ॥

संजम विणु णर भव सयल सुण्णु, संजम विणु दुग्गई जिउपवण्णु ।
संजम विण वडियम इत्थ जाउ, संजम विण विहली अत्थि आउ ॥६॥

घत्ता:—इह भव पर भवणे संजम सरणो, होज्जउ जिण णाहे भणिओ ।
दुग्गई सर सोसण, खरकिरणोवम, जेण भवारि विसम हणिओ ॥ ७ ॥

भाषा (सवैया)

संयम दोय कहे जिन आगम, संयम से शिव मारग लहिये ।
पाप गले मन संयम सौंधरि, कर्म कठोर कषाय को दहिये ॥

संयम तैं भव पार तिरै नर, संयम मुक्ति सखा जग कहिये ।
ज्ञान कहे यह संयम में त्रय कर्ण लगाय कहो कि न रहिये ॥ ६ ॥

द्वादशं द्विविधं लोके, बाह्याभ्यंतर भेदतः । स्वयं शक्ति प्रमाणेन क्रियतेधर्म वेदिभिः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय अर्घ्यम् ।

घत्ता—णर भव पावे प्पिणु, तच्चमुणेप्पिणु, खंडवि पंचेंदिय समणु ।
णिव्वेउवि मंडिवि, संगइ छंडिवि, तव किज्जइ जाये विवणु ॥ १ ॥

तं तउ जहि परिगह छंडिज्जइ, तं तउ जहि मयणुजि खंडिज्जइ ।
तं तउ जहि णग्गत्तणु दीसइ, तं तउ जहि गिरिकंदर णिवसइ ॥ २ ॥
तं तउ जहि उवसग्ग सहिज्जइ, तं तउ जहि रायाइ जिणिज्जइ ।
तं तउ जहि भिक्खइ भुंजिज्जइ, सावइ गेह काल णिव सिज्जइ ॥ ३ ॥
तं तउ जत्थ समिदि परि पालणु, तं तउ गुत्ति त्तयह णिहालणु ।
तं तउ जहि अप्पा पर बुज्झिउ, तं तउ जहि भव माणुजि उज्झिउ ॥४ ॥
तं तउ जहि ससरूव मुणिज्जइ, तं तउ जहि कम्मह गण खिज्जइ ।
तं तउ जहि सुर भत्ति पयासहिं, पवयणत्थ भवि यणह पभासहि ॥ ५ ॥

जेण तवे केवल उपवज्जइ, सासय सुक्ख णिच्च सपज्जइ ।

घत्ता—बारह विहु तउवरू, दुग्गइ परिहरू, तं पुजिज्जइ थिर मणिणा ।

मच्छर मय छंडिवि, करणइ दंडिवि, तं पिधरिज्जइ गौरविणा ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

दुद्धर कर्म गिरीन्द्र गिरावण, वज्र समान महा तप एसो ।
बारह भेद भणंत जिणेसुर पाप पखालन पानीय जैसो ॥
दुःख विहंडण सुख समर्पण, पंच विइन्द्रिय रक्षण तैसो ।
ज्ञान कहे तपस्या बिन जीव जु मोक्ष पदारथ पावेगो कैसो ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ ७ ॥

चतुर्विधाय संघाय, दानं देयं चतुर्विधम् । दातव्यं सर्वथा सद्भिश्चिंतकैः पारलौकिकैः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

घत्ता—चउविह धम्मंगो, करहु अभंगो, णियसत्तिइ भत्तिय जणहु ।
पचहु सुपवित्तह तव गुण जुत्तह परगइ संवलु तं मुणहु ॥ १ ॥

चाए आवागमणउ हट्टइ, चाए णिम्मल किति पवित्तइ ।
चाए वयरिय पणमिइ पाये, चाए भोग भूमि सुह जाए ॥ २ ॥
चाउ विहिज्जइ णिच्च जि विणए, सुयवयणे भासेप्पिणु पणए
अभयदाण दिज्जइ पहिलारउ, जिमि णासइ परभव दुह यारउ ॥ ३ ॥
सत्थ दाण वीजो पुण किज्जइ, णिम्मल णाण जेण पाविज्जइ ।

ओसह दिज्जइ रोय विणासणु, रुइ विण पित्थइ त्राहि पूनासणु ॥ ४ ॥

आहारे घण रिद्धि पविट्टइ, चउविहु चाउ जि एहु पविट्टइ ।

अहवा दुट्ठ वियप्पह चाए, चाउ जि एहु मुणहु समवाए ॥ ५ ॥

आर्या–दुहियहिं दिज्जइ दाण, किज्जइ माणु जि गुणियणहि ।

दय भाविय अभंग, दंसण चिंतिज्जइ मणहं ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

दान बड़ो जगमें नर दान तैं मानको पावत है जग मानव,

भूप दयाल भये सबकूं अरि मित्र भये अरू सेवत दानव ।

दान तैं कीर्ति बढै जग भीतर दान समान न और कहावे ।

ज्ञान कहै भव पार उता न दान चतुर्विध सार कहावे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥

चतुर्विंशति संख्यातो, यो परिग्रह ईरितः ।

तस्य संख्या प्रकर्तव्या तृष्णा रहित चेतसा । ६ ।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यम् ।

घत्ताः–आकिंचणु भावहु, अप्पा ज्झावहु देह भिरण उज्झाण मऊ ।

निरुवम गयवण्णउ, सुह संपण्णउ, परम अतींदिय विगय भउ ॥ १ ॥

आकिंचणु चउसंगहणिविति, आकिचणु चउ सुज्झाणसत्ति ।
आकिचणु चउ विय लियमभत्ति, आकिंचणु रयणत्तय पवित्त ॥ २ ॥

आकिंचणु आउ चि एहिचित्त, पसरंतउ इंदियवणि विचित्त ॥
आकिंचणु देह हणेह चित्त, आकिंचणु जं भव सुइ विरत्त ॥ ३ ॥

तिणमत्त परिग्गह जत्थणत्थि; मणिराउ विहिज्जइ तव अवत्थि ।
अप्पा पर जत्थ वियारसत्ति, पयडिज्जइ जहि परमेट्ठि भत्ति ॥ ४ ॥

जह छंडिज्जइ संकप्प दुट्ठ भोयण वंछिज्जइ जह अणिट्ठ ।
आकिंचण धम्म जि एम होइ तं ज्झाइज्जइ णरु इत्थ लोई ॥ ५ ॥

घताः–ए हुज्जि पहावे, लद्ध सहावे, तित्थेसर सिव नयरि गया ।
ते पुणरिसि सारा, मयण वियारा, वंद णिज्ज एतेण सया ॥ ६ ॥

॥ भाषा सवैया ॥

आलस अंगतैं दूर करि कर, नाम आकिंचन अंग धरावो ।
आल पंपाल तजौ घटतैं मन शुद्ध करी समता धर आवो ॥

जप तीर्थ करी फल इच्छित होत समूल भये फल किंचित पावो ।
ज्ञान कहै नर को सुख दायक, शुद्ध मनैं परमारथ ध्यावो ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय महार्ध्यम् ॥ ९ ॥

नवधा सर्वदा पाल्यं, शीलं संतोष धारिभिः ।
मेदा मेदेन संयुक्तं सद् गुरुणां प्रसादतः ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यम् ।

घताः–बंभव्वउ दुद्धरु, धारिज्जइवरु, केडिज्जइ विसयासणिरु ।
तिय सुक्खयरत्तो, मणकरिमत्तो, तं जि भव्व रक्खेहु थिरू ॥ १ ॥

चित्त भूमि मयणु जि उपवज्जह तेणजु पीडउ करइ अकज्जह ।
तियह सरीरइ खिदह सेवइ, णिय परणारि ण मुढउ वेवइ ॥ २ ॥

णिवडइ णिरय महादुह भुंजइ, जो हीणुजि बंभव्वउ भंजइ ।
इय जाणे विणु मण वयकाए बंभचेरू पालहु अणुराए ॥ ३ ॥

णव पयार सत्थिय सुहयारउ बंभव्वे विणु चउ तउ णिअ सारउ ।
बंभव्वे विणु काय किलेसइ विहल सयल भासिय जिणेसइ । ४ ॥

बाहिर फरसेंदिय सुह रक्खउ, परमबंभ अभिंतर पिक्खउ ।
एण उवाए लब्भइ सिवहरू, इम रइधू बहु भणइ विणय यरू ॥ ५ ॥

घत्ता–जिण णाह महिज्जइ, मुणि यण विज्जइ, दहलक्खण पालीइ थिरू ।
भो खेम सियासुय, भव्व विणय जुय, होलि तम्मयहु करहु थिरू ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

शील सदा नरको सुख दायक शील समान बड़ो नहीं कोई ।
शील फलै अति शीतल पावक जानकी को जग देखत होइ ।
शाह सुदर्शन शूलि सिंहासन शील फलै भव साधत दोई ।
ज्ञान कहै नर सोई विचच्छण जो नर पालत शील समोई ॥१० ॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥ १० ॥

(भाषा सवैया)

सार च्मा अरू मार्दव आर्जव सत्य सदा जग शौच सहाई ।
संयम सार तयो तप भेदसु दान अकिंचन धर्म कहाई ।
ब्रह्म बड़ो भव तारण को दश लच्चण है सबको सुख दाई ।
ज्ञान कहे परमारथ सौं न करे तिसको जिनराज दुहाई ॥ ११ ॥

(पुष्पांजलि च्पित्)

एभिर्मंत्रैर्जाप्यं कुर्याद्

ॐ ह्रीं उत्तम च्मा धर्मांगाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय नमः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः ॥ १० ॥

(अर्घं समुद्धरेत्)

❁ अथ जय माला ❁

इय काऊण णिज्जरं जे हणंति भव पिंजरं । नीरोयं अजरामरं ते लहंति सुक्खं परं ॥ १ ॥

जेण मोक्ख फल तं पाविज्जइ, सो धम्मंगो एहहु णिज्जइ ।

खम खमायलु तुंगय देहउ, मद्दउ पल्लउ अज्जउ सेहउ ॥ २ ॥

सच्च सउच्च मूल संजम दलु, दुविह महा तव णव कुसुमाउलु ।

चउविह चाउय साहिय परमलु पीणिय भव्वलोय छप्पइयलु ॥ ३ ॥

दिय संदोह सइकल कलयलु, सुरणर वर खेयर सुह सयफलु ।

दीणा णाह दीह सम णिग्गहु सुद्ध सोम तणु मित्त परिग्गहु ॥ ४ ॥

वंभचेरू छायइ सुहासिउ, राय हंस नियरेहि समासिउ ।

एहउ धम्म रुक्ख लाखिज्जइ जीव दया वयणहि राखिज्जइ ॥ ५ ॥

झाणट्ठाण भल्लारउ किज्जइ, मिच्छामई पवेस ण दिज्जइ ।

सील सलिल धारहि सिंचिज्जइ, एम पयत्त ण वड्ढारिज्जइ ॥ ६ ॥

घता— कोहानल चुक्कऊ, होउ गुरुक्कउ, जाइ रिसिदिय सिट्ठगई ।

जगताइ सुहंकरू धम्म, महातरू, देइ फलाइ सुमिट्ठमई ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो पूर्णार्घ्यम् ॥

यो धर्मं दशधा करोति पुरूषः, श्रीवाकृतोपस्तुतं,
सर्वज्ञध्वनि संभवं त्रिकरुण, व्यापार शुद्धयानिशं ।
भव्यानां जयमालया विमलया, पुष्पांजलिं दापये,
नित्य सश्रिय मातनोति सकलं स्वर्गापवर्ग स्थितिः ॥ १ ॥

इत्याशीर्वाद. ॥

अथ पंच मेरू पूजा (बड़ी)

श्रीमन्नाभेय देवं जिनवरममलं विश्व विद्या प्रधानं,
कामेभोत्तंग कुंभस्थल दलन परं सर्व सम्पन्निदानम् ।
नत्वा श्री मेरु पूर्वं जिनवर सगृहा संति शून्याष्टमेय,
स्तेषां पूजा विधानं प्रविवद सुतरां स्थापयामि प्रमोदात् ॥ १ ॥

सुदर्शनाख्यः प्रथमश्च मेरु द्वीपे स्थितं जम्बूपदे पवित्रे,
लक्षैकसद्योजन तुंग वर्यश्चतुर्वनैः षोडशभिश्च चैत्य ॥ २ ॥

द्वीपेद्वितीये विजया चलाख्यो मेरू च पूर्वापर सन्निविष्टो ।
चतुर्युतासीति सहस्रतुंगैस्तावद्वनैश्चैत्य युतैर्विभाति ॥ ३ ॥

द्वौ मन्दिरौ मंदिर विद्युद्दादि मालीति संज्ञौ किल पुष्कराद्धे ।
द्वीपे तृतीये खलु तावदुच्चै, स्तावत्प्रमाणैर्वन चैत्यगेहे ॥ ४ ॥

मर्त्याण्यशीति संख्यानि, चैत्यान्युच्चैस्तराण्यलं ।
संति स्वर्ण मथान्युच्चै स्तोरणाध्वज राजितं ॥ ५ ॥

प्रत्येकं चैत्य गेहेषु सर्वज्ञ प्रतिमा वराः ।
अष्टोत्तर शतं तत्र नाना माणिक्य भासुरा ॥ ६ ॥

पंचा चाप शतोत्सेधाः सवशङ्क समर्चिता ।
पुष्पांजलि विधौ स्थाप्या पूजास्ताः शर्म हे तवे ॥ ७ ॥

(इत्युच्चार्य पंच मेरु स्थापनार्थं पुष्पांजलि क्षिपेत् ।)

सुदर्शनाह्वो विजयाचलाख्यो श्रीमदरो विद्यु त एव माली
एषां गिरिणां किल पूर्व दिक्षुः सस्थापये चैत्य जिनेन्द्र बिम्बान् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं पंच मेरूस्थ पूर्व दिशि विंशति चैत्या लयान्यत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् ॥

स्वधु नि वर वारिभिः सुख कारिभि मल हारिभिः ।
केशरेन्दु सुधारिभिः उदर दारिभि रस सारिभिः ।
पंच मेरु जिनालयान् हरि दिग्विभान्हरि वत्प्रभान्
पूजयेऽहमकृत्रिमान्गुण भूषणान्गत दूषणान् ॥ जलं । १ ॥

सुन्दरैर्हरिचन्दनैरलिनन्दनैरभिनंदनैः कुंकुमागुरु मंडनैरघ खंडनैर्गत दंडनैः । पंचमे. ॥ चन्दनम् ॥

जैन वास्य सुमंजुलैः शशिभोज्वलैर्वर तदुलैः

हेम पात्र समाश्रितैः कज वासितैरधिवासितैः ॥ पंचमे. । अक्षतम् ॥ ३ ॥

पारिजात महोत्पलैः कनकोत्पलैर्गति कोमलैः ।

सिंदुवार सुचम्पकैः स्फुट नीपकैरिव दिव्यकैः । पंचमे. ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

हेम भाजन संस्थितै रधिकाश्रितैर्घृत पाचितैः ।

दिव्य पोली नवोदनैः सुखनोदनै रभिमोदनैः ॥ पंचमे. ॥ नैवेद्यम् । ५ ॥

तामसासुर नाशकै, रविनाशकै परि भासकैः

द्योतिताऽखिल दिङ्मुखै र्मणि दीपकै गुणदीपकै ॥ पंचमे, ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

मेचका गुरू संभवै गुरू धूपकै र्बहु धूपकै

गंध लुब्ध शिली मुखैर्गत दिङ्मुखैर्हत कल्मषै. ॥ पंचमे. ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

नालिकेर सदाफलै र्बहुधामलै र्वन सत्फलैः

बीजपूर सु जृंभलै रति पेशलै बहु कोमलैः ॥ पंचमे. ॥ फलम् ॥ ८ ॥

पाथो गंधाक्षतोघैः शतदल निचयैः आर नैवेद्य दीपैः

धूपैरामोदयुक्तैः रुचिर तरू फलै दर्भ दूर्वावितानैः ।

मेरूना पूर्व भागे जिनवर निलयान् विंशतीत्येव संख्यान्

नत्वा स्तुत्वा त्रिसंध्यं सुविमल मनसा संयजे चन्द्रकीर्तिः ॥ अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

॥ जय माला ॥

जम्बू घातकी पुष्करार्द्ध विषये, शक्रादि सं सेविते,
भीमन्नन्दन पाण्डुकादि सहिते, संतप्त हेम प्रभे ।
नाना रत्न विचित्र वर्ण निचिते रम्याणि चैत्यानि वै,
तत्रस्थं जिनराज बिम्ब निकरं संस्तूयते भावत ॥ १ ॥

किन्नर नाग अमर गण महितं, प्रातिहार्य वसुशोभा सहितं ।
पूर्व दिशि संस्थित जिनराजं, संस्तवेमि शिव सौख्य समाजं ॥ २ ॥

संगीताकुल कृत बहु मानं, महा तुम्बर रचित सु वितान। पूर्व दि० ॥ ३ ॥
नृत्य महोत्सव विविधप्रकारं, वाद घोष सप्त स्वर सारं ॥ पूर्व दि० ॥ ४ ॥
भविक जीव वांछित दातारं, ईन्द्रादिक सुर कृत जयकारं ॥ पूर्व दि० ॥ ५ ॥
भव पाथो निधि प्रापीत तीरं, किल्बिष पंक विशोधन नीरं ॥ पूर्व दि० ॥ ६ ॥

(इन्द्र वज्रा छन्द)
अकृत्रिमं मेरू महिम्न संस्थ, प्राच्येव दिग्संस्थित मत्तयंच
सर्वज्ञ बिम्बं प्रकरं भजामि श्रीभूषण ज्ञान पयोधिवंद्यं ॥ ७ ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ द्वितीय जयमाला ॥

घत्ता—थुणमइ जिणदेवं, सुरकृत सेवं, पंच मेरू जिणधाम वरं ।
पूरव दिग सारं, जिण आगारं, पूजयामि तव सचि भरं ॥ १ ॥

सुदर्शनं विजया चल मेरू, मन्दिर विद्युन्माली महीरू ।
पूर्वदिशि विंशति आगारं, अमर खयर अर्चित मनहारं ॥ २ ॥

भद्रसाल नन्दन वन चंगं, सौमन पांडुक चार अभंगं ॥ पूर्व दि० ॥ ३ ॥
प्रति वन चउ उत्तम जिन गेहं, भवियण वन्दो पूजो तेहं ॥ पूर्व दि० ॥ ४ ॥
अष्टोत्तर शत प्रतिमा चंगं, प्रति चैत्ये वन्दौं मन रंगं ॥ पूर्व दिं० ॥ ५ ॥
पन्च शतक वर धनुष उतंगं रत्न विनिर्मित तनु शुभरंगं ॥ पूर्व दि० ॥ ६ ॥
सात कुम्भ निर्मित जिन गेहं रत्नालकृत तोरण तेहं ॥ पूर्व दि० ॥ ७ ॥
रत्न पुजपरि धूप सुकुंभं, केतु पंक्ति सुर निमित शोभं ॥ पूर्व दि० ॥ ८ ॥
हेमालंकृत भुवनमुदारं, जड़ित रत्न मुक्ताफल सारं ॥ पूर्व दि० ॥ ९ ॥
ताल कसाल झल्लरिय फेरी, दुंदुभि ढोल निशानन भेरी ॥ पूर्व दि० ॥ १० ॥
पूजा अष्ट विधि सुखकारं गीत नाद नृत रचित उदारं ॥ पूर्व दि० ॥ ११ ॥
वासवेश नित चर्चित चरणं, नाग नरेश्वर गत पद शरणम् ॥ पूर्व दि० ॥ १२ ॥
जय जय जिनवर जगदाधारं जनमन मोहन भवदधितारं ॥ पूर्व दि० ॥ १३ ॥

घत्ता:— श्री पूर्व दिगेशं, जिनवर ईशं, संभजामि भव भय हरणम् ॥
नरवर नुत चरणं, मुनि जन शरणं, कर जोडी गोविन्द कहियम् ॥

महार्घ्यम् ॥

॥ अथ दक्षिण दिशि पूजा ॥

(वसन्त तिलका वृत्त)

श्री मत्सुदर्शन इमौ विजया चलाख्यौ, श्री मन्दरश्च सुतडित्पद पूर्व माली,
एषां हि दक्षिण दिशासु महा गिरिणां, सस्थापये विमल चैत्य जिनेन्द्र बिम्बान् ॥

ॐ ह्रीं पन्च मेरू दक्षिण दिशि विशति चैत्यालयानि अत्रागतरागतर संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

श्री मत्सुरेन्द्र तटनीवर गधनीरैः पाथोज केसर पराग पिशांगधारैः
श्री पंच मेरूवर दक्षिण दिग्विभाग चैत्यालयान् जिनवरां प्रतिमान्यजेऽहम् ॥ जलं ॥
काश्मीर जन्म घनसार परागमिश्रैः श्री चन्दनै र्दशदिगाहृत चचराकैः ॥ श्रीपंच. ॥ चन्दनम् ॥
उन्निद्र कैरव सुधाकर चन्द्र रश्मि, प्रोत्फुल्ल कुंद धवलैः सरलाक्षतोघैः । श्रीपंच, । अक्षतम्
श्रीमत्सहस्रदल कुंद कदम्बजाति मंदार कैरव मनोहर पारिजातैः ॥ श्रीपंच ॥ पुष्पम् ॥
नानारस प्रचुर शाक विराजितेन, नव्योदनेन घृत सूप मनोहरेण । श्रीपंच ॥ नैवेद्यम् ॥
दुर्भेद्य तामसमहेभ हरीश्वरेण माणीय दीप निवहेन महोज्वलेन ॥ श्रीपंच, ॥ दीपम् ॥
निर्धूम वह्निनिहितागुरु संभवेन सौरभ्यधूप निचयेननशः प्रियेन । श्रीपच । धूपम् ॥
रंभाफलामल मनोहर नालिकेर जंबीर पूग सहकार सदा फलौघैः । श्रीपंच. ॥ फलम् ॥
जलैः परम पावनैः, सुरभिगंध पुष्पाक्षतै, प्रदीपचरु धूपकैः सरस चोच रंभाफलैः
सुमेरु यमदिग्गतान् स्वयुग संख्य चैत्यालयान्, यजामि भव भंजकान्, सकलचंद्रकीर्ति प्रदान् ॥अर्घ्यं

❀ जय माला ❀

सारे सारंग वर्षे, खचर गणकृता स्थान रम्ये त्रिचित्रे,
सन्मेरो दक्षिणस्यां दिशि जिनवर सद्गेह बिम्बप्रजानां ।
कृत्वा शुद्धात्मचित्तं, सुरपतिरनिशं, सर्व पूजोपचार,
पूजामष्टप्रकारा, रचयति सततं, संस्तवे श्री जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥

कर्म महागिरि वज्र समान सुमोह हरं, मोह महान्ध निवारण भानु रूचि प्रकरं ।
सुन्दर श्री जिन पद्कज मव्यय सौख्यकरं, जन्म जराभय नाशन मंचति पापहरं ॥ २ ॥
दुरित महावन दावनिभं कल्पित वस्तु समर्पण कल्पतरू सदृशं ॥ सुन्दर. ॥ ३ ॥
छत्र त्रय शोभा प्रवृतं पांडुर चामर पंक्ति विराजित कांतिधरं । सुन्दर. ॥ ४ ॥
सुरगण सेवित चरण युगं, दुर्धर दुष्कृत पंक विशोषण सहस करं । सुन्दर. ॥ ५ ॥
निर्जित भव्य जनौघ मदं, चिंतित दायक मत विवर्जित धर्म प्रद । सुन्दर. ॥ ६ ॥

नरामरेन्द्रै स्तुतपाद पंकजं, श्री भूषणाद्यै मुनिभिः प्रवंदितं ।
श्रीज्ञान पाथो निधि सौख्य दायकं संपूजयतिस्म पुरंदराः वरं ॥ ७ । अर्घ्यम् ।

॥ द्वितीय जयमाला ॥

घत्ता=तिपयाइण दंति, विणउ करंति, भत्तिय जिण चउवीसयहं ।
विजई रयणांजलि, दुक्ख जलांजलि, भाचिये णिहय रसहः ॥ १ ॥

भिर मंतागिहि रिसह जिणु जायहि अजिय जिणंदु ।

जिणं दहपय कमले इय कुसुमांजलि होय मणोहर मे लहिए ।
गिरि कैलासे लाइ पहावई जिम रलिए ॥ २ ॥

संभर जिणु सेवं तियहि, अहिणदण दवणेहि ॥ जिणंदह, ॥ ३ ॥
सुमइ भंडार ' अमुर तरु हि, पउमप्पहु पउमेहि । जिणदह० ॥ ४ ॥
मदारिहि सुपास जिणु, चंदप्पह चंपेहि । जिणंदह० ॥ ५ ॥
वियल्लिय हुल्लिहिं सुविहि जिणु सीयल सीय कुसुमेहि ॥ जिणंदह. ॥ ६ ॥
जिण सेयांस असोहियहि, वासुपुज्ज विमलेहि ॥ जिणंदह ॥ ७ ।
निमल भडारउ कं इयहि, सु६ अंवेहि अणंतु ॥ जिणंदह० ॥ ८ ॥
वहुमच कुंदहि धम्म जिणु ; रत्तोप्पल शांति जिणदु । जिणंदह. ॥ ९ ॥
कुजय हुल्लिहि कुंथु जिणु अर जिण पारिय हुल्लि ॥ जिणदह. ॥ १० ॥
मल्लय हुल्लिय मल्लीजिणु, सुव्वयकचणहुल्लि ॥ जणंदह० ॥ ११ ॥
ए.म जिणवरणेवल्लिय छि तगरहिणेमि जिणंदु ॥ जिणंदह० ॥ १२ ॥
पाडल हुल्लि पास जिण, वड्ढमाण कमलेहि ॥ जिणंदह० ॥ १३ ॥
पोमिउ अज्जउ अठ लई अविणि अवर चियार ॥ जिणंदह० ॥ १४ ॥
इय रयणांजलि विणय सहू जोणीणाह हुदेई ॥ जिणंदह० ॥ १५ ॥

गुरु पय पुज्जहुतिणि लहई जिमनयडउमंसार ॥ जिणंदह० ॥ १६ ॥
भादव शुक्ल जा पंचमि ए पंचइ दिवस करेहि ॥ जिणंदह० ॥ १७ ॥
अरजे जिणु अमर सहु, सो जिउशिवपुर जाया ॥ जिणंदह० ॥ १८ ॥
इय कुसुमांजलि सयल जिणु मुनिवर अक्खइ एह । जिणंदह० ॥ १९ ॥

घत्ता-सुरनर वज्जाहर, होंति मणोहर, पुष्पांजलि विधि जेकरई ।
तंसगी सुरेसुर पुहवि नरेसर मोक्ख महापुरि संचरई ॥

महार्घ्यम ॥

॥ अथ पश्चिम दिशि पूजा ॥

आद्यो मेरू जिनवर मतोदर्शनांतः स पूर्वो,
मेरूश्चान्यो विजय उदितः संस्मृतोऽन्योऽचलारव्यः ।
तूर्योमेरूर्निविड सुतरूर्मंदरोमाली नाभा ।
ह्येतेषांवैजलपतिदिशि स्थापये चैत्य विम्बान् ॥

ॐ ह्रीं पंच मेरू पश्चिम दिशि त्रिंशति चैत्यालयानि अत्रावतरावतर संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

सुधा समान शीतलैस्त्रिमार्गगा सरो जलैः मुनीश चित्त निर्मलैः सुधांशुधूलिपेशलैः ।
सुपंचमेरूवारुनी दिगाश्रितान् जिनालयान् यजामि तीर्थनायकान् स्मरेभ कुंभसिंहकान् । जलम्

अपूर्व चन्द्र केसरैर्हिमांशु पाद शीतलै,

महामनोज्ञ चन्दनैः द्विरेफराजिनन्दनैः । सुपंचने० ॥ चन्दनम् ॥

अखंड कोटि तंदुलैरनेक शालि संभवैः

हिमांशु पाद पाण्डुरैः सुवर्ण पात्ररोपितैः । सुपंच. ॥ अक्षतम् ॥

सरोज जाती चम्पकैः प्रफुल्ल मल्लि मालया ।

जपाप्रसून शालया भ्रमद्विरेफ मालया ॥ सुपंच. ॥ पुष्पम् ॥

नवीन भव्य पायसान्न शर्करारसोत्तमैः

विचित्रशाक नव्य गव्य सूप भक्त सुंदरैः । सुपंच. ॥ नैवेद्यम् ॥

ससार भाजन स्थितै रनर्घ रत्न दीपकैः

स्फुरन्म यूख राजितै विपार्णतामसोत्करै । सु पंचमे. ॥ दीपम् ॥

सुपर्व दारु यक्षधूप काकतुंड संभवैः

प्रधूपधूम संचयैरनंत लुब्ध षट्पदैः ॥ सु पंच. । धूपम् ॥

सदा फलाम्र माधवी लुरिंग पूग दाड़िमै ।

सुनालिकेर बीजपूर कर्कटी कपित्थकैः ॥ सुपंच. ॥ फलम् ॥

अंभो गंधै रक्षतैः पुष्प हव्यै, दीपैर्धूपै श्रीफलैश्चन्द्र कीर्तिन् ॥

वारुण्याशा संस्थिताञ्जैन बिम्बान् पंचाना श्री मंदराणां यजेहं ॥ अर्घम् ॥



॥ जयमाला ॥

श्रीमन्ना कि किरीट कोटि किरणैरुद्भाषित सर्वदा,
श्रीमन्मन्दर पर्वते चिरतरं शक्रैः कृताराधनम् ।
त्रैलोक्योदर जीव सौख्य जनकं धर्माब्धि चंड प्रभं,
वन्देतं जिन पुंगवं प्रतिदिनं देवाद्रि मूर्ध्नि स्थितम् ॥ १ ॥

प्रातिहार्य गण नायक जय जय, अजरामर पद दायक जय जय ।
पाप तिमिर भर भंजन जय जय, विद्याधर गण रंजन जय जय ॥ २ ॥
जनन पयो निधि तारण जय जय, कर्म कलंक निवारण जय जय ।
सुर समाज पद वंदित जय जय, दूषण निखिल निकंदित जय जय ॥ ३ ॥
किल्विष सुभट विखंडन जय जय, त्रिभुवन मंदिर मंडन जय जय ।
मुक्ति रमणी वशी करण सु जय जय, सकल दोष परिहरण सु जय जय ॥ ४ ॥
अशरण शरण कृपाधर जय जय, भविक जीव गण सुखकर जय जय ।
गज मद वृंद निकन्दन जय जय, गणधर मुनिजन वन्दन जय जय ॥ ५ ॥

घत्ता—जय दोष विहंडन, त्रिभुवन मंडन, निखिल जीव शीव सुख करण ।
श्री भूषण वन्दित, पाप निकंदित, ब्रह्म ज्ञान भव भव शरणः ॥ अर्घम् ॥

॥ द्वितीय जयमाला ॥

आर्या–अठम जिण थुण महं दलियं जिण मयण माणहि ।

समरे सरसति पायं चये चइय क्रित्रिमा क्रित्तीः ॥

पंच मेरुह अस्सी भवनं, गयदत वीस आधार । भविषण भाव धरि ।

रत्नालंकृत हेम जिनालय जिय धरे, पूजू अष्ट प्रकार कपूरे दीपकरे ॥ १ ॥

त्रीस भुवन कुल पर्वत ही, अस्सी गिरी चखार ॥ भवि० । २ ॥

सिचोरसु विजयारध ही, कुरुद्रुमेहश होई ॥ भवि० ॥ ३ ॥

इक्ष्वाकार कुंडल गिरिए, मानुषोत्तर च्यार च्यार ॥ भवि० ॥ ४ ॥

रुचिके गिरि चऊ जिन भवना, नन्दीश्वर बावन्न । भवि० ॥ ५ ॥

मध्य लोक ए भवन कह्या, चउसे अट्ठावन्न ॥ भवि० ॥ ६ ॥

लाख चौसठ असुर तणाए, चौरासी नागेन्द्र ॥ भवि० ॥ ७ ॥

सुपण लाख छिहोंत्तर ए छिहोंत्तर दीप कुमार ॥ भवि० ॥ ८ ॥

लाख छिहोंत्तर स्तनीत कह्या, उदधि छहोंत्तर लाख ॥ भवि० ॥ ९ ॥

विद्युत्कुमर लाख छिहोंत्तर ए, दिग्सुराछहोंत्तर लाख ॥ भवि० ॥ १० ॥

दीप कुंवर लाख छिहोंत्तर ए छन्युवात कुमार ॥ भवि० ॥ ११ ॥

सात कोड़ी लाख छिहोंत्तर ए अकृत्रिम आगार ॥ भवि० ॥ १२ ॥

सौधर्मे लाख बत्रीस कह्या, अट्ठावीस ईशान ॥ भवि० ॥ १३ ॥
सनत कुमर लक्ष बारह कह्या, आठ लाख माहेन्द्र ॥ भवि० ॥ १४ ॥
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर पुजिइये, चैत्यालय लक्ष चार ॥ भवि० ॥ १५ ॥
लांतव अरु कापिष्ठे कह्या, सहस्र पचास उदार ॥ भवि० ॥ १६ ॥
शुक्र महा शुक्र चैत्यालय ए, पूजूं सहस्र च्यालीस । भवि० ॥ १७ ॥
षट् सहस्र सतार जुए, जिन आगार अकृत्य ॥ भवि० ॥ १८ ॥
आनत प्राणत आरुणए,, अच्युत गिरि सतसात ॥ भवि० ॥ १९ ॥
एकादश शत आगलाए, अधः ग्रैवेयक उद्धार ॥ भवि० ॥ २० ॥
मध्य ग्रैवेयक जिन भवना, सात अधिक शतएक ॥ भवि० ॥ २१ ॥
उर्ध्व ग्रैवेयक जिन जाणिये, एकाणु अगार ॥ भवि० ॥ २२ ॥
नव नवोत्तर नव भवना, पंच पचोत्तर पंच ॥ भवि० ॥ २३ ॥
व्यंतर अरु ज्योतिष पटले, जाणो आगार असंख्य । भवि० ॥ २४ ॥
सहस्र कोटि जे जिनप्रतिमा, अकृत्रिम अरचेहिं । भवि. ॥ २५ ॥
अष्टापद सम्मेदाचलए, पावापुरी महावीर । भवि. ॥ २६ ॥
वासु पूज्य चम्पापुरीच, चरचों चन्दन भंग । भवि० ॥ २७ ॥
ऊर्जयंत गिरि अरचा करोए, पूजो नेमि जिणद । भवि. ॥ २८ ॥
शत्रुञ्जय शीखर सोहामणोए, अरचो अष्ट प्रकार । भवि. ॥ २९ ॥

मांगी तुंगी गिरि सिद्ध हुवा, गजपंथे मुनिराय । भवि. ॥ ३० ॥
मुक्ता गिरि पावागिरिए, तारंगो तारक होय । भवि. ॥ ३१ ॥
चन्दन चरचों चूलगिरिए, रेवा तट ऋषिराय । भवि. ॥ ३२ ॥
अंतरीक्ष प्रभु पूजिइए, प्रणमुं लोढण पास । भवि. ॥ ३३ ॥
सूर्यपुरे चन्द्रनाथ जिन, प्रणमुं पुजूं पाय । भवि. ॥ ३४ ॥
इन्द्र भूषण अरचा करिए, हरषे गोविन्द गाय ॥ भवि० ॥ ३५ ॥

महार्घ्यम् ॥

इति पश्चिम दिशि पूजा सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ उत्तर दिशि पूजा ॥

पर सुदर्शन मेरु रिहोदितः, सुविजयाचल मंदिर मालिनः ।
धनद दिक्षु सुमेरू महीभृतां जिन पतिन् सकलान्विनिवेशयत् ॥

ॐ ह्रीं उत्तर दिशि त्रिशति जिन चैत्यालयस्थ जिन प्रतिमा समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ॥

हिम पर्वत संभव पद्म महानद सुन्दर शीतल नीर भरैः ।
मकरंद महाभर भारित सारस, केसर रंजित गौर तरै ॥

शुभ मन्दिर पंचक ध्यानद् दिग्गत हाटक विंशति चैत्यगृहान् ।
प्रयजामि मनोहर गान सुमंगल नृत्य महोत्सव वाद्यवरान् ॥ जलम्

घनसार सु कुंकुम मिश्रीत शीतल नंदन चन्दन पंक भरैः ।
वर गंध समाश्रित षट् पद् संतति मंजुल गुंजन रम्य तरैः ॥ शुभ. चन्दनं॥

मचकुन्द कलाधर फेन समुज्वल निर्मल कोमल तन्दुलकैः ।
मणि भूषितं भासुर कांचन बन्धुर भाजन रोपित सौम्य तरैः ॥ शुभमं० ॥ अक्षतं ॥

नव कैरव केतक चम्पक पंकज कुन्द कदम्बक मल्लि सुमैः ।
स्फुट केसर रक्तकनव्यल विगक, मेचक बालक मूल दलैः ॥ शुभमं० ॥ पुष्पम् ॥

वर मोदक मडक खज्जक पूपक सूपक व्यंजन हव्य रसैः ।
घृत दुग्ध महेक्षुति मिश्रित पायस तिक्तक शाक सुखाद्य रसैः ॥ शुभमं० नैवेद्यम् ॥

दश दिग्गत लोचन बाधक तामस संचय भेदन सूर्य करैः ।
परितेजित रत्न कदम्बक शोभित दीर्घशिखाधर दीप वरैः ॥ शुभमं० दीपम् ॥

अपधूप धनंजय मुक्त सुगन्धि महागुरु निर्गत धूप चयैः ।
निज सौरभ लुब्ध मधुव्रत निर्मित सुन्दर निष्कण चारु तरैः ॥ शुभमं० ॥धूपम्

सहकार लता फल दाड़िमचिर्भट पक्व कपित्थक पूग दलैः ।
कदली फल जम्भल चोच सदा फल गोस्त निकोमल निम्बु फलैः । शुभ० फलम्

विमल कमल धारा, गंध शाल्य चतोघैः
विविध कुसुम हव्यैर्दीप धूपैः फलोघै. ॥
अखिल परममेरू दिविस्थवान् चैत्य विम्बान्,
परचर इह सु श्री भूपणाश्चंद्रकीर्तिन् । अर्घ्यम् ॥

❀ अथ जयमाला ❀

आनंदामृत संरूपं, चिदानंदं सदोदयं ।
नरामरेन्द्र संसेव्यं, सर्वज्ञं संस्तुवे मुदा ॥ १ ॥

शक्र गणैः कृत पूजन मष्ट विधंसुतरं, गर्भ कलङ्क विमुक्त मनूपम सौख्य करं ।
श्री जिन विम्ब, गणं प्रयजे, चिर पाप हरं, धर्म सुर द्रुम वर्धन पुष्कर वारि धरं ॥२ ॥

केवल लोचन दर्शित सुन्दर मुक्ति पथं, पंचमगत्युपसर्पण सत्वर धर्म रथ ॥ श्रीजिन० ३ ॥

दुर्गतिदुःख तमोभर भंजन भानु भरं, जन्म जरांतक वर्जित किल्विष पंक हरं ॥ श्रीजिन० ४ ॥

शुद्ध नयाश्रित तत्व प्रकाशन सूरतरं, जन्म पयो निधि शोषण कुंभ भवं प्रवरं ॥ श्री जिन०५ ॥

श्री आदि विवर्जित मूर्ति मखंडित लक्ष्मी करं, अन्तविवर्जित रूपमनंत सुबोध धरं ॥ श्रीजिन० ६ ॥

विधाय पूजां जिन नायकस्य, शक्रोति भक्तया गिरिराज मूर्ध्नि ।
श्री भूपणं मुक्ति पद प्रदेयात् सुखाधिकं ज्ञान पयोधि धम्यम् ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ अथ द्वितीय जयमाला ॥

सुरनर पति वंद्यं, नाग नागेन्द्र वंद्यं,
सकल भविक सेव्यं, नर्तिकं नर्तिकीभिः ।
जनन जलधि पोतं, पापतापापहारं,
जिन वर वर चैत्यं, स्तौमिकर्मारि हान्यैः ॥

वन्दौं नाग भुवन जिन दाख, कोड़ी वि सात बहत्तर लाख ।
व्यंतर ज्योतिष के जिन गेह, असंख्य भवियण वन्दौं तेह ॥ १ ॥
लाख चौरासी सत्ताणु सहस, तेविसह वन्दौं स्वर्ग निवास ।
मेरू सुदर्शन मध्यह लोक, विजया चल दोये गत शोक ॥ २ ॥
मेरू चतुर्थह मंदिर नाम, विद्युन्माली छे जिन धाम ।
पंचह मेरू असी जिन गेह भवियण वन्दौं पूजौं तेह ॥ ३ ॥
षट् कुल जिनवर गेह छत्तीस, विजयारध सत्तर सुईश ॥
सहस्र कूट वन्दौं जिन देव, सीता सीतोदा करूं कंठ सेव ॥ ४ ॥
अष्टापद वन्दौं जिनतार, आदि जिनेश्वर गय भव पार
वीश जिनेश्वर पूजो संत, सम्मेदाचल मुक्ति लहंत ॥ ५ ॥
वासूपूज्य चम्पापुरी देव, वर्धमान पावापुरी सेव
गिरनारी छे नेमि जिनंद, पूजौं भवियण परमानंद ॥ ६ ॥

पाण्डु पुत्र मुनि अट्ठद कोडि, शत्रुंजय वन्दौं कर जोडी।
हस्तिनागपुर कुरू वंशी जिनंद, शांति कुंथु अर सेवें फणिन्द ॥ ७ ॥
वाणारसी जिन पार्श्व सुपार्श्व, जे वंदे नाशे भव त्रास ।
नाग नरामर चर्चित पाद, लोढ़ण पार्श्व हरे त्रिखवाद ॥ ८ ॥
वंशस्थल गिरी जिनवर धाम, आगल देव धारा सन ठाम ॥
तेह नयर वन्दौं वर्धमान, अम्बापुरी चिंतामणि भाण ॥ ९ ॥
मुक्ता गिरि मुनि मुक्ति निवास. तुंगीश्वर पूरे मन आश ।
वन्दौं गज पन्था गिरिराय, बावन गज विंध्याचल ठाय ॥ १० ॥
कुलपाक वन्दौं माणिक देव, गोम्मट स्वामी करू नित सेव ।
नव निधि वन्दौं देहि शिव वास, सेल गांव कमेठश्वर पास। ११ ॥
अम्बापुरी श्री मल्लि जिनेश, पैठण सुखद मुनि सुव्रतेश ।
एरण्ड वेली नेमीश्वर देव, त्रिभुवन तिलक खंडव पुर सेव ॥ १२ ॥
अंतरीक्ष वन्दौं जिन पास, श्रीपुर नयर पूरे मन आश ।
होला गिरि वन्दौं शंख जिनेश, तारंगे पूजौं मुनि ईश ॥ १३ ॥
सुवुगढ़ जिन बिम्ब मनोहार, आदि नाथ पालैं भवपार ॥
वड़ावली पूजो अभी झरा पास, धुलेव नयर ऋषभजिन भाष । १४ ॥
पूजौं माण्डव गढ़ महावीर, उज्जयनि अवंति धीर ।
मालव मण्डन मनसी पास; धरणेंद्र पद्मावती सेवें जास ॥ १५ ।

श्रवणाचल अढ़ी कोड़ी मुनीश, बड़गामपूजौं गौतम गणीश ।
जम्बु स्वामी मथुरा पुर थान, सेठ सुदर्शन पाटली पुत्र जान ॥ १६ ॥
ग्वालियर गढ़ वन्दौं जिनराय, बावनगज पुर छे सुख काय ।
बाठरड़े वन्दौं जिनदेव, अखिन्धो पार्श्व करे सुर सेव ॥ १७ ॥
जाम नयर जय सहित आदीश, वर्धमान सारंग पुर ईश ।
रावण पास अचलपुर राय, पूज्यपाद मुनि प्रणमित पाय ॥ १८ ॥
डूँगरपुर वन्दौं मल्लीनाथ, सागवाड़े आदि भव पाथ ।
वासु पूज्य बांसवाड़े ग्राम, खांधु नयर शीतल जपौं नाम ॥ १९ ॥
वन्दौं जलधिमांही जयवंत, काशगीउ बाहुबली संत ।
नन्दीश्वर जिन गेह बावन्न, कुण्डल गिरिवन्दौं जिनधन्न ॥ २० ॥
पूरब पश्चिम जिनवर गेह, उत्तर दक्षिण वन्दौं तेह ।
वीस जिनेश्वर क्षेत्र विदेह वन्दौं भवियण शाश्वत तेह ॥ २१ ॥
चन्द्र नक्षत्र सु भानु विमान, ताराग्रह वन्दौं जिन भान ।
त्रिभुवन मांहीं जिनवर सार, वंदत भवियण लहे भवपार । २२ ॥

घत्ता—जय जिनवर स्वामी, पदशिर नामि, करजोड़ी मनभाव धरी ।
जय सागर वंदित, पाप निकंदित, रत्न भूषण गुरू नमस्करी ॥ २३ ॥

इति जय माला पूर्णार्घ्यम् ॥

❀ समुच्चयाष्टकम् ❀

निर्मलेन पवित्रेण, वारिणा मल हारिणा, ।
पंच मेरुस्थ बिम्बानां, कर्माभ्यां पूजये मुदा ॥ जलम् ॥

मलया चल जातेन, चन्दनेन सुगन्धिना ॥ पंचमे० ॥ चन्दनम् ॥
धवलाक्षत पुंजेन, खड वर्जित शोभिना ॥ पंचमे० ॥ अक्षतम् ॥
जाति चम्पक पुष्पेण, केतकादिघनेन च ॥ पंचमे० ॥ पुष्पम् ॥
घृत पाचीत पक्वान्नैः शाल्योदनेन श्रीमतः ॥ पंचमे० ॥ नैवेद्यम् ॥
तमोन्नरवि नाशाय, रत्न दीपेन द्योतिना ॥ पंचमे० ॥ दीपम् ॥
सुगन्धी धूप धूम्रेण नक प्रियेण सतां सदा ॥ पंचमे० ॥ धूपम् ॥
श्री फलाम्र कपित्थादि, फलेन फलदायकान् ॥ पंचमे० ॥ फलम् ॥
तोयादि वसु द्रव्येण शिव सौख्य विधायकान् ॥ पंचमे० ॥ अर्घम् ॥

॥ जयमाला ॥

जम्बू द्वीप वरे सुदर्शन इति, द्वीपे तथा धातकी,
खंडे श्री विजया चलौ निगदितौ श्री पुष्करार्द्धे द्वये ।
द्वीपे मन्दर विद्युदादि पदतौ मालाह्वयो मन्दरौ,
तेषु श्रीजिन मन्दराणि सततं सन्त्येव सत्र्याय: ॥ १ ॥

भद्रशाल विपिनाश्रय मिष्टं, दिक्तुजतसृपु जिन संदिष्टं ।
पंचसु मेरू जिनालय बारं, भव्य जनाय जिताघनिवारं ॥ २ ॥

एकीकृत्य सु विंशति संख्य, केवलनेत्र विलोकित संख्यं ॥ पंचसु० ॥ ३ ॥
नन्दन वेश्व पिता दर्वा सेयं, सौमन शेष्व पितादश गेयं । पंचसु० ॥ ४ ॥
पाण्डुकाख्म गहनेष्ववधेयं, ह्येवमशीति जिनालयमेवं ॥ पंचसु० ॥ ५ ॥
रत्न विनिर्मित बहु सोपानं, सोचित समतल कोमल मानं ॥ पंचसु० ॥ ६ ॥
दुर्गत्रय नाना विधि चित्रं, खात त्रय जल विम्बित चित्रं ॥ पंचसु० ॥ ७ ॥
कांचन मय दृढ़ भिति विशालं, नाना स्तंभ विचित्र विशालं । पंचसु० ॥ ८ ॥
कांचन कुंभ विराजित शृंगं, बहुधा वृक्ष विकुंजित शृंगं । पंचसु० ॥ ९ ॥
अंतरीक्षरि चूम्बित भागं, किन्नर तुम्बर गीत सुरागं । पंचसु० ॥ १० ॥
भव्यान्तर्गत मानस्थंभं, गोपुर मंडित मानस्थंभं । पंचसु० ॥ ११ ॥
वृक्षा शोक विराजित मध्यं, कल्पवृक्ष कुसुमोच्चय सध्यं । पंचसु० ॥ १२ ॥
मेदुरनाद चतुर्विधनाद्यं, वीणावेणु मृदंग खाद्यं । पंचसु० ॥ १३ ॥
डिडिम झर्झर ताल कंसालं, मद्रतार ख मूर्छितमालं । पंचसु० ॥ १४ ॥
सुर ललना ललिता ख नृत्यं, हाव भाव रस विभ्रम कृत्यं । पंचसु० ॥ १५ ॥
नवरस नाटक लीला खेलं, परिहित नवा नव कोमल चेलं । पंचसु० ॥ १६ ॥
नंद नंद जय जय बहुराणं, पुष्पसु वृष्टि गत परिमाणं । पंचसु० ॥ १७ ॥

अभिनव बहुवर निर्मल दीपम् काला गुरू भव घट वरधूपं । पंचसु. ॥ १८ ॥
निर्मल वर्तुल मौक्तिक मालं, दशविध नाना केतन मालं । पंचसु. ॥ १६ ॥
कोमल निष्कण किंकणी नादं, भव्य मुख निर्गत साधुवादं । पंचसु. ॥ २० ॥
चित्र विचित्रित तोरण जालं, विविध रत्नांचित वंदनमालं । पंचसु. ॥ २१ ॥
सुरभि समुज्जल चामर वार, चैत्यवृक्ष बहुधा सुखकारं । पंचसु ॥ २२ ॥
अष्टोत्तर शत हाटक कुंभं, वावत्परिमित दर्पण लभं ॥ पंचसु. ॥ २३ ॥
पीठोपविष्ट जिनवर देवं, सकल लोक विरली कृतमोहं ॥ पंचसु. ॥ २४ ॥
भामण्डल मडित जिन देहं; भविक लोक विरली कृतमोहं । पंचसु. ॥ २५ ॥
योगीश्वर सुविहित तनुयोगं, तदुपदेश वीतनुकृत भोगं । पंचसु. ॥ २६ ॥
पुष्पांजलि विद्यागत शक्रं, तदनुज्ञांगत वरसु चक्रं ॥ पंचसु. । २७ ॥
भाद्रव शुक्ल तर पंचम पक्षे, समर्मारब्ध चतुर्विध रसे । पंचसु ॥ २८ ।
त्रिसंध्यं विहित सकल सपर्यं, सोत्र सु जाप्याचित परिवर्य । पंचसु. ॥ २६ ॥

काष्ठा संघ पुरंदराद्रि महितान् श्री मेरू चैत्यालयान्
अर्हद् दूबिम्ब विराजितान् बहुतरान् श्री भूषणालंकृतान् ॥
तीर्थं भोवर चन्दनाक्षत शुभैः नैवेद्य दीपैर्वरै.
धूपैःपक्व फलैर्महामि महतः श्री चन्द्रकीर्तिन्सदा ॥ ३० ॥

अर्घम् ॥

॥ अथ द्वितीय जयमाला ॥

श्रीमद् वृषभ तीर्थेशो, जिनेन्द्रोऽजित नाम भाक्
संभवो भव संहारी, शर्म कार्योभिनंदनः ॥ १ ॥

सुमतिः सुमतीशानो, श्रीमान्पद्म प्रभः प्रभुः ।
सुपार्श्वो भगवान्पूज्यश्चन्द्रप्रभजिनेश्वरः ॥ २ ॥

पुष्पदतो लसत्कुन्द दन्तः शीतल तीर्थराट् ।
श्रेयान् श्रेयो विधाताच, वासुपूज्यो वृषार्चितः ॥ ३ ॥

विमलो मल संहर्ता, तीर्थेशोऽनंत दायकः ।
धर्मो धर्म विदां मान्यः शांतिः षोड़श तीर्थराट् ॥ ४ ॥

कुंथु कुंठित दुर्मार्गो, भगवानर संज्ञकः ।
मल्लिकाम महामल्लो, विश्वजिन्मुनिसुव्रत. ॥ ५ ॥

नमि नम्र सुराधीशो, नेमीर्मदन मर्दनः ।
पार्श्व पद्मेन्द्रसंपूज्यो, महावीरोन्त्य तीर्थकृत ॥ ६ ॥

एतेऽवसर्पिणी जाताश्चतुर्विंशति तीर्थपाः ।
श्री ह्री तुष्टि महाकीर्ति तुष्टिदाः सन्तु शाश्वतम् ॥ ७ ॥

॥ महार्घ्यम् ॥

सकल मेरु जिनालय वासिनो, गगन वेदपडाष्टमितार्जनाः ।
ददतु शर्म निरंतरमव्ययं, सकल भव्य जनेभ्य इहार्चिताः ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

(इति पुष्पाञ्जलि विधानम)

॥ पन्च मेरु उत्थापन विधि ॥

(यह विधि खास नर गुजरात प्रान्त में प्रचलित है)

भाद्रपद शुक्ला नवमी के दिन पूजनादि क्रिया हो जाने के पश्चात् निम्न विधि पूर्वक मेरु उत्थापन करे। सर्व प्रथम निम्न पाठ पढ़ते हुये नीचे से लगाकर ऊपर तक एक एक मेरु को हाथ लगावे (स्पर्श कर आशीर्वाद ले)

१ पन्च मेरु २ ढ़ाई द्वीप ३ एक सौ सित्तर क्षेत्र ४ अस्सी चैत्यालय
५ पद्मावती माता कहती हैं, शासन देवी सुनती हैं यहां करे सो वहां पावे वहा करे सो यहां पावे।

सलिल चन्दन पुष्प शुभाक्षतैश्चरु सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः ।
धवल मंगल गान रवाकुलै· जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥
ॐ ह्री सुदर्शन मेरुस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अर्घ्यम् ॥

ऊपर का श्लोक पढ़ कर अर्घ्य चढ़ावे एवं आरती उतार कर निम्न आशीर्वाद पढ़े ।

पांचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करुं प्रणाम ।
महासुख होय, महा सुख होय, देखे नाथ परसुख होय ॥ १ ॥

पुष्पांजलि क्षेपणकर नमस्कार करे एवं नीचे के मेरू की प्रतिमाजी को उत्थापन कर वेदी पर विराजमान करे । इसी प्रकार ऊपर के मेरू की भी अलग २ विधिकर (अर्घ चढ़ाना, आरती उतारना, आशीर्वाद व नमस्कार करके) पांचों मेरु की प्रतिमाजी उत्थापन करे ।

जम्बू धातकि पुष्कराद्ध वसुधा, क्षेत्र त्रये ये भवा
श्चन्द्राम्भोज शिखण्डि कण्ठ कनक प्रावृड्घनाभाजिनः ।
सम्यग्ज्ञान चरित्र लक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेंधाना
भूतानागत वर्तमान समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत ।

ऊपर का श्लोक पढकर पुष्पांजलि क्षेपण करे पश्चात् मेरुजी उत्थापन कर यथेष्ट स्थान में रखदे ।

॥ इति मेरू उत्थापन विधि ॥

❀ पुष्पाञ्जलि पूजा ❀

आदौ दर्शन यो मेरू विजयोप्यचल स्थितः ॥
चतुर्थो मंदिरोनाम; विद्युन्माली सु पंचमः ॥

ॐ ह्रीं पंच मेरूस्थ प्रतिमाभ्यो अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरूस्थ प्रतिमाभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा, प्रतिष्ठापनं ॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुस्थ प्रतिमाभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् । संन्निधापनं ॥

पुष्पांजलि यंत्र स्थापनम् ॥

स्थानान्सुनर्घ्य प्रतिपति योग्यान्, सद्भाव सन्मान जलादिभिश्च ।
पुष्पाञ्जलिर्भाद्रपदादि मासे, समर्चयत्पंच दिनानि भक्त्या ॥ ६ ॥ जलं ॥
श्रीखंड कर्पूर सु कुंकुमाद्यैः, गंधैः सुगन्धी कृत दिग्विभागै ।

पुष्पांजलि भाद्र० ॥ चन्दनम् ॥

शाल्यक्षतै रक्षत दीर्घगात्रैः, सुनिर्मलैश्चंद्रकरावदातैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ अक्षतं ॥
अंभोज नीलोत्पल पारिजातैः कदंब कुंदादि वर प्रसूनैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ पुष्पं ॥
नैवेद्य कैः कांचन रत्न पात्रैः न्यस्तै रुदस्तै हरिणासुहस्तैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ नैवेद्यम् ॥
दीपोत्करै र्ध्वस्त तमोभिघातैरुद्योदिता शेष पदार्थ जातैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ दीपम् ॥
तरुत्थ कृष्णागुरु चंदनाद्यैः संचूर्ण जैरुत्तम धूप वर्गैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ धूपम् ॥
लंविग नारिंग कपित्थपूगैः श्रीमोचचोचादिफलैःपवित्रैः ॥ पुष्पांजलि० । फलम् ॥
श्रीखंड कर्पूर सुगंध वार्भिः, फलैश्च पुष्पाक्षत धूपनाद्यै ॥
पुष्पांजलि भाद्रपदादिमासे, समर्चयेत्पंच दिनानि भक्त्या ॥ अर्घं ॥

॥ जयमाला ॥

घत्ता—पणविवि सुपसण्णउ, कंचण वण्णउ, रिसिह णाह णिज्जिय मयणु ।
जगि धम्म पयासणु, कम्मविणासणु, असुरा सुर नर थुय वलणु ॥ १ ॥

वास्तुछंद–चउणीकायहं चउणीकायहं मिलिय सुर वरहिं ।

कैलास पव्वय सिहरे, भरहे आसिजे जिण पयट्ठिय ।

वरगीय मंगल रवे कणरहि, णुवणु पुज्जउ कंठिय ॥

पोमा वैजा विरु कहिय पब्भावई सुरसयण ।

मा कुसुमांजलि लेवि करि, जिण चौवीसह दिएण ॥

सु दिमि दिमि मद्दल करड कंसाल, सुतिविलिय भल्लरी भेरी रसालं ।

सुगेय विलंबण देई सुरसत्ती, सुणच्चहिं किण्णर सुरणर पत्ती ॥ १ ॥

जलंमि सुचंदण अक्खय सारु, सु फुल्ल चरुमिय दीवय फारु ।

सुगंधय धूव विचित्त फलोहं, पुष्पांजलि णिम्मल दिएण ससोहं ॥ २ ॥

रिसिसर केवल णाण पयासु, सु पुज्जहु संताणिहि दुहणासु ।

अणोवम जाई हि अजिउ जिणंदु, सेवंतिहि संभव देव अणंदु ॥ ३ ॥

पयच्छ अहिणंदणु दवणेहिं, णिवालिय सुमइ हि पूज रएहीं ।

पफुल्लहि पउप्पहु पउमेहिं, सुपास सुहंकरु वरढरोहिं ॥ ४ ॥

णिरंजणु सासय थाण णिवासु, सु चम्पय चंदप्पहु ससिभासु

सुवियलहि सुविहि जिणंदु अवाहु सुपरिमण पाडल सीयल णाहु ॥ ५ ॥

सेयंसु सुहंकरू वर मंदारि, सु पुज्जहु वासु पुज्ज कचणारि ।

सु किंचिहि णिम्मलू विमलू कयंबि, अणंतु असोयहि णिरु णिकयंबि ॥ ६ ॥

सु कुज्जय कुल्लहिं वम्मु अलेउ, रतुप्पलि संति जिणेसरु देउ ।
नगत्त मुकुंथु सुप्तज्जइ कुंदि, जिणेसरु जासु वणहि अरु वंदि ॥ ७ ॥
वहुग्निहि मल्लिहिं मल्लि चयारि, सु वउलहि मुणिसुव्वय तिउरारि ।
सु मुज्जल आपीचत्त णमि पायः करजलि सोमि जिणह मुणाय ॥ ८ ॥
फणा मणि मडिउ पास जिणंदु, चडावहि वहुविहि वर मचकुंदु ।
जुदेवह दुल्लहु वर कणवीरु, सु लेवि जिणेसरु पुज्जहु वीरु ॥ ९ ॥
जि ईच्छहि सासय सुक्खु अतुल्लु, ति इणि परि जिणह चडावहि फुल्लु ।
जी भावण विंतर जोइसी कप्पि, पुष्पांजलि ताह जिणेसर अप्पि ॥ १० ॥
जे मेरू हि असिय जिणेसर संति, ति वद्मी विस जिजेगमदति ।
कुल गिरि तीस अकिट्टिम देव, वखारह असीयहं कियसुर सेवं ॥ ११ ॥
वियठिहि सत्तरि मउ जिणगेह कुरुदुमि जिणंदह गयभवणेह ।
जे कुंजल पवयण जिण चचारि, रुजय गिरि चारि जिणेह चयारि ॥ १२ ॥
चयारि निईगा रव जगचंद, मणोतरि तेतिय जाणि जिणंद ।
जे संठीय णंदीसरी वावण्ण, ति सासु सुहु महु देउ पसण्ण ॥ १३ ॥
अठाइयद्विवहिं विहिमि समुद्द, पण्णारस कम्मय भूमि जिणंद ।
अकित्तिम कित्तिम जे जिण गेहु, पुष्पांजलि ताहं जिणेसर देहु ॥ १४ ॥
णमुंसइ माघ मुणिसर चंदु अभरमणि माघब णंदि मुणिन्दु ।
अकित्तिम कित्तिम जे सुवकीत्ति, ति पणविहु विमल पयासि विभत्ति ॥ १५ ॥

जिणेसरु वसु मंगल संयसारू, ति ईसर मुत्ति रमणि गलि हारु ।
जिणेसर जे पुष्पांजलि देई, सो सासय सुक्खु अणंतु लहेई ॥ १६ ॥

घत्ता—सुरनर विज्जाहर, होंति मणोहर; पुष्पांजलि विहि जे करहिं ।
ते सग्गि सुरेसर, पुहवि णरेसर, मोक्ख महा पुरि संचरहि ॥ १७ ॥ पूर्णार्घ्यम् ।

॥ इति पुष्पांजलि पूजा समाप्तम् ॥

❀ अथ अष्टाह्निका पूजा ❀

द्वीपेऽपि नन्दीश्वर संज्ञके हि, गिरीन्द्रवर्जा जिन मुख्य संस्थान् ।
जिनेन्द्र गेहान् मणि हेम मूर्ति, द्विपन्च सख्या सहितान्नमामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर दीपे द्विपन्चाशज्जिनालस्थ प्रतिमा समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

कर्पूर पूर परि पूरित भूरि नीर, धाराभिराभिरभित श्रम हारिणीभिः ॥
नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना, मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥ जलम् ॥
हृद् घ्राण तर्पण परैः परि तर्प सर्वै, गन्धैः सुचन्दन रसैर्घन कुङ्कुमाद्यैः ॥ नन्दीश्व ॥ चन्दनम् ॥
उन्निन्द्र चन्द्र विलसत्किरणावदातैः, सत्कुन्दकोरकमिभैः कलमाक्षतोधैः । नन्दीश्व ॥ अक्षतं ॥
मंदार चारु हरिचन्दन पारिजात संतान भूरुह भवैः कुसुमैर्विचित्रैः ॥ नन्दीश्व ॥ पुष्पम् ॥
सिद्धै विशुद्ध नव कांचन भाजनस्थैः पीयूषमिष्ट ललितैश्चरुभिर्विचित्रैः ॥ नन्दीश्व ॥ नैवेद्यम् ॥

ध्वस्तांधकारनिकरैः कनकावदातै दीपैः प्रदीपित समस्त दिगन्तरालैः ॥ नन्दीश्व ॥ दीपम् ॥

धूपै रमन्दतर सौरभ वाल गुंजद्, भृंगाकुलैरगुरु चन्दन चन्द्रमिश्रैः ॥ नन्दीश्व ॥ धूपम् ॥

कम्राम्रदाडिम मनोहर मातुलिंग, जाती फल प्रभृति सौरभ सत्फलाद्यैः ॥ नदीश्व ॥ फलम् ॥

द्वीपे नन्दीश्वरेस्मिन् विविधमणिगणा क्रान्तकान्ताङ्ग कान्ति ।
प्राग्भारप्रास्त चन्द्रद्युतिकर निकर, ध्वस्त मिथ्यान्धकारम् ॥

चैत्यं चैत्यालयांश्चोज्वल कुसुम फलाद्यैरनिन्द्य प्रभावै ।
भक्त्यायेभ्यर्चयन्वि स्फुटमसम सुखां ते लभन्ते विमुक्तिम् ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

आर्या–कम्पिल्ला णयरी मन्डणस्स विमलस्स विमलणाणस्स ।
आरत्तियवर समये, णच्चति अमर रमणीओ ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥

अमर रमणीउ णच्चंति जिणमंदिरं, विविह वर ताल तेरहिं संगमपुरं ।
जड़िय बहु रयण चामीयरं पत्तयं, जोइयं सुन्दरं जिणव आरत्तियं ॥ २ ॥

रुण झडंकारणे वरघचल णुठिया, मोतिया दामचच्छच्छले संठिया ।
गीय गायंति णच्चंति जिणमंदिर, जोइयं सुन्दरं जिणव आरत्तियं ॥ ३ ॥

केस भरि कुसुम पय सरस ढोलंतिया, वयण छणइंद सम कंतविय संतिया ।
कमलदल णयण जिण वयण पेखंतिया, जोइयं सुन्दरं जिणाय आरत्तियं ॥ ४ ॥

इंद धरिणिन्द जक्खेन्द वोहंतिया, मिलिव सुर असुर घण रासि खेलंतिया ।
केवि सिय चमर जिण बिम्ब ढोलंतिया, जोइयं सुंदरं जिणाय आरत्तियं ॥ ५ ॥

गाथा—णंदी सुरम्मि दीवे बावण्ण जिणालयेसु पडिमाणं
अट्ठाहि वर पव्वे इन्दो आरत्तियं कुणई ॥ ६ ॥

छंद—इंद आरत्तियं कुणइ जिण मंदिरं, रयण मणि किरण कमले हि वर सुन्दरं ।
गीय गायंति णच्चंति वर णाडियं, तूर वज्जंति णाणा विहप्पाडियं ॥ ७ ॥

गाथा—एक्केक्कम्मि य जिणहरे चउ चउ सोलह वावीओ ।
जोयण लक्ख पमाणं, अट्ठम णंदीसुरं दीवे ॥ ८ ॥

छंद—अट्ठमं दीव णंदीसुरं भासुरं, चेत्य चैत्यालये वंदि अमरासुरं ।
देव देवीउ जह धम्म संतोसिया, पंचमं गीय गायंति रस पोसिया ॥ ९ ॥

गाथा—दिव्वेहिं खीर णीरेहि गंधड्ढाइहिं कुसुममालाहि ।
सव्वसुर लोय सहिया पुज्जा आरंभए इंदो ॥ १० ॥

छन्द—इंद सोहम्मि सग्गाव वज्जोसयं, आयउ सज्जि एरावयं वर गयं ।
सव्व दव्वेहिं भव्वेहिं पूजा करा मिलिव पडि नक्खया तस्स तिहु देसया ॥ ११ ॥

गाथा—कंसाल ताल तिवली, झल्लर भर भेरि वेणु विणाओ ।

वज्जंति भाव महिया, भव्वेहि णाउज्जिया सव्वे ॥ १२ ॥

छन्द—सव्व दव्वेहिं भव्वेहिं कर ताड़ियं, सद्दए संझिगण झिगण खिद्धाडयं ।

झिगिनिजं झिगिनिजं वज्जये झल्लरी, णच्चये इंद इंदायणी सुंदरी ॥ १३ ॥

णयण कज्जल सलायामयं दिण्णयं, हेम हीरालयं कुंडलं कंकणं ।

झमझण झंझं तंपि ये णेवरं, जिणव आरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १४ ॥

दिट्ठिणामग्गि अंगुलिय दावंतिया, खिणहिं खिय खणहिं जिण विम्ब जोइत्तिया ।

णारि णच्चति गायंति कोइल सुरं, जिणधआरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १५ ॥

रुणु झुणं कारणे वरन कर कंकण, णाइ जंपंति जिणणाहवे बहुगुणं ।

जुवइ णच्चंति सुमरंति ण उ णिय घरं, जिणध आरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १६ ॥

कंठ कदलोह मणिहार झुल्लंतऊ, जिणइ थुइ थुई सोणार संतुट्ठउ ।

विविह कोऊहल रयहि णारी णरं, जिणध आरत्तिय जोइयं सुंदरं ॥ १७ ॥

घत्ताः—आरत्तिय जोवइ, कम्मइ धोवइ, सग्गापग्ग हलहु लहइ ।

जं जं मण भावइ त सुह पावइ, दीणु वि माणुण माणुणइ ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे, द्विपचाशज्जिनालयेभ्यो अर्घं ॥

यावंति जिन चैत्यानि, विद्यंते भुवन त्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिः परीत्य नमाम्यहं ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

॥ श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजा ॥

मालिनीच्छंदः–श्रीमतीर्थाधीश सत्पाद पद्मौ, नत्वा पूजामष्टमस्याष्टधाहं ।
वक्ष्ये भक्त्या द्वीप नंदीश्वरस्य द्वापंचाशच्छैल चैत्यानि तस्य ॥ १ ॥

पंचखाब्ध्वष्ठ हत्या, सरसेऽयंक प्रमाणकैः, योजनैर्विस्तृतो द्वीपो, भाति नंदीश्वरोऽष्टमः ॥ २ ॥
पंचमाष्ट तु सप्ताद्धि, हत्याशीतिमितैरलं, तन्नाम्ना वेष्ठितोऽब्धिना, योजनैर्विस्तृतो नवैः ॥ ३ ॥
तच्चतुर्दिक्षु चत्वारोंजनाख्योमत्यगोत्तमः, षोडशैतैश्चतुर्दिक्षु दीर्घिकास्तस्य सुष्मिता ॥ ४ ॥
दधिमुखाभिधाशैला, दीर्घिकामध्यसंस्थिता ; षोडशा रेजिरे नित्यं, सागरे कलशा इव ॥ ५ ॥
तद्वापी कोणयोः संस्था, द्वौ द्वौ हि वापिका प्रति, द्वात्रिंशद्रतिकृच्छैलास्ते सर्वेवन राजिताः ॥ ६ ॥
तत्रैकैकं समाख्यातं, चैत्य स्वर्ण मय जिनैः भाणाश्च योजनोतुंगं तदर्घं पूर्व पश्चिमं ॥ ७ ॥
शतैक योजनायामं, दक्षिणोत्तर भागयोः द्वापंचाशत्सु चैत्यानि, द्वापंचाशतयोरपि ॥ ८ ॥
एवं मणि मयैश्चूर्णैं सप्त द्वीप युताष्टकं । लिखित्वा द्वीपमुत्तुंगं पूजयंताहृदन्वितं ॥ ९ ॥

॥ एतत्पठित्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

❀ पूर्व दिशि स्थित चैत्यालयपूजा ❀

नन्दीश्वरे हरि दिशि स्थित कज्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरि स्थित चैत्य पंक्तिः
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणोरु शुक्लाष्टमी प्रभृति तो दिवसाष्ट कांतम् ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे पूर्व दिशि संस्थि तांजनगिर्यादि पर्वत वर्त्यकृत्रिम त्रयोदश चैत्यालयानि अत्र अवतर अवतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

रेवा कलिन्द तनया सुर सिंधु सिप्रा, नीरैः सुगधतर वस्तुयुतैर्यजेऽहम् ।
नन्दीश्वरे हरि दिशि स्थित कज्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरि स्थित चैत्य गेहान् ॥ जलम् ॥
काश्मीरजागुरु सिताभ्ररसाभिमिश्रैः, संलेपयामि मलयोद्भवचन्दनैश्च ॥ नंदीश्व० ॥ चन्दनं ।
कुन्देन्दुहार हार हिम मौक्तिक तुल्य वर्णैं, गांगेय पात्र निहितैः कलशैर्यजामि ॥ नंदीश्व० ॥ अक्षतं ।
पुष्पांध यौध परिपीत पराग सारै, मंदार कुंदकलिकाभिरलं करोमि । नंदीश्व० पुष्पम् ॥
शाल्योदनैरतितरां घृत सूप मिश्रैः सद् व्यंजनः रसभरैः परि तर्पयामि ॥ नंदीश्व० ॥ नैवेद्यम् ॥
स्वीय प्रभा परितिरस्कृतमर्घपादैः, प्रद्योतयामिमणि दीप चयै र्विचित्रैः ॥ नदीश्व० ॥ दीपम् ॥
श्रीकाक तुंड मणि गुरू यक्षधूपैः, संधूपयाम्यशुभ कर्म विनाशनाय ॥ नंदीश्व० ॥ धूपम् ।
नारंग चोच कदली क्रमुकाम्र बीजैः, द्राक्षाफलैः प्रतिदिनं सफली करोमि ॥ नंदीश्व० ॥ फलम् ॥

नंदीश्वर द्वीप पूर्वे, जिनवर निलयाभ्यंतरे श्री जिनेन्द्रान् ।
भक्त्या देवेन्द्र वर्यैस्त्रिविध परिणतैरंजनाद्याचलेपु ॥

द्रव्यैरष्टाभिरेभिः गुण गण निलयान्पूजयत्यादराद्यैः

ते भुक्त्वा स्वर्ग सौख्यं पर पद मनघं संश्रयाति क्रमेण ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

सुर नर फणि मूर्द्धा शेव मौलिद्ध तेजो, मणि निकर विभावाः चालितांद्रांबुजाता ।

जिन पति विधुवर्या यत्र तिष्ठंति चैतन्निवसति जयमालां संकरिष्ये रसालां । १ ॥

दक्षिणे चोत्तरे योजनानां शति, विस्तुति विंद्यते सुन्दरं येऽष्टकम् ।

अंजनाद्रौ स्थितान् वह्नि चन्द्रौ यमान्द्वीप पूर्वान्भजे सर्व चैत्यालयान् ॥ २ ॥

परिचमे यो ना नांव पूर्वेशके, ह्यस्ति पंचाशदा व्यासएषां सदा । अंजना. ॥ ३

उन्नता योजनै शोण सप्त प्रमै, तोरणैः गोपुरैः केतुभि र्लक्षिता ॥ अंजना. ॥ ४ ॥

रत्न भामंडल स्तेज सारांशिभिः जैन बिम्बा वरा यत्र सभात्यलम् ॥ अंजना. ॥ ५ ॥

आत पत्र त्रयैः पूर्व चन्द्रोपमैः, यत्र तैः रेजिरे रम्य मुक्ता फलैः ॥ अंजना. ॥ ६ ॥

नील शोभ भृताशोक वृक्षेण ते, पृष्ठ भागस्थिते नैव यत्रा बभुः ॥ अंजना. ॥ ७ ॥

हेम सिंहासनं रत्नमालाश्रितं, संश्रिता यत्रते सार शोभां दधुः ॥ अंजना ॥ ८ ॥

क्षीर सिंधुच्छलद् वीचि मालोपमै, र्भात्यलं यत्र ते वीजिताश्चामरैः ॥ अंजना ॥ ९ ॥

कृत्वां रनाचलाद्रिस्थ, चैत्यानां जय मालिकां, ।

तेभ्यः सर्वज्ञ युक्तानां दत्तार्घं प्राथयेत्शिवं ॥ १० ॥ पूर्णार्घम् ॥

॥ अथ दक्षिण दिशिस्थित चैत्यालय पूजा ॥

नन्दीश्वरे यम दिशि स्थित कज्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरि स्थित चैत्य पंक्तिः ।
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणौरु, शुकलाष्टमी प्रभृति तो दिवसाष्टकान्तम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि सस्थितांजनगिर्यादि त्रयोदश पर्वत वर्त्यकृत्रिम चैत्यालय स्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अमृत जलधि तोयैः केशराब्जादि मिश्रै, मुनिवर गुरु चेतः शीतलै कुंभसंस्थैः ।
अमित कुधर मुख्यागनोन्दु संख्याग संस्था, लयगत जिन बिम्बान्द्वीपयाम्यान्यजामि ॥ जलं ॥
प्रकृति सुरभिदेहान् छिन्नसंसार मोहान्, मलय विपिन जातैश्चन्दनैः कुंकुमाद्यैः ॥ असित. ॥ चन्दनं ॥
हिमकर दधिहाराकारधाराखण्डै, विमल कनक पात्रन्यस्त शालीय पुंजैः ॥ असित० ॥ अक्षतं ॥
कमल कुमुद दाम्ना चंपकानेक धाम्ना सुमति प्रवर भूम्ना मालती संमहिम्ना । असित० ॥ पुष्पं ॥
दशदिशि गत गन्धै निस्सरद्बाष्प जालै, वितत सुरभिसर्पे पायसे शर्कराद्यैः ॥ असित० ॥ नैवेद्यम् ॥
जिनपति शुभबोधोद्भासकैः रत्नदीपै, निहित तिमिर वृन्दैरञ्जसाक्रांत दिक्कैः ॥ असित० ॥ दीपम् ॥
अगुरु सुरभिकाष्ठ च्छेद संजात धूपै, विपुल दहन संगाद्धूम जालं वहद्भिः ॥ असित० ॥ धूपम् ॥
हृदय नयन नासा प्रीतिदै काम्रगंधै, क्रमुक पनस मोचा चोच सन्मातुलिंगै ॥ असित० ॥ फलम् ॥

(इन्द्रवज्रा)

श्री द्वीप नन्दीश्वरयाम्य काष्ठा, शीतादिवह्निद्रुग चैत्यमाला ।
तोयादिभिः शारद चन्द्र कीर्ति, संपूजयंत्वादरतो जनौघाः ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

(शार्दूल विक्रिड़ित छन्द)

विस्तीर्णा शत योजनैं स्थिर तरास्तद्दक्षिणे चोत्तरे । पूर्वे पश्चिम भाग एव ममलं व्यासं तदर्धं श्रिता ॥
उच्चाः योजन पंचसत्यभिरभोजादि विचित्रान्विता ।
स्तान्सेवे किल संति यत्र सुभगाः सर्वज्ञ चैत्यालयाः ॥ १ ॥

(विद्युन्माला)

अष्टौत्तरसत भृंगारौघं, गांगेय यमनघ मणि संघं ।
नन्दीश्वर यम दिशि नगराजं, सेवे धृत जिन वसति समाजं ॥ २ ॥
तत वितत शुपिरघनयुत तालं, पूव स्थान्वित सर्व विशालं ॥ नन्दीश्व० ॥ ३ ॥
उत्तम मणि नव्य कनक कुंभं, पूर्वं गुणान्वित कृत वै शौभ ॥ नन्दीश्व० ॥ ४ ॥
वातान्दोलित केतु व्रातं, दर्शन मात्र विदर्शित सांतं ॥ नन्दीश्व० ॥ ५ ॥
कुंभसु शोभा भर सु प्रतीकं, मोहित किन्नर देवानीकं ॥ नन्दीश्व० ॥ ६ ॥
कांचन दंड सुशोभित छत्रं, तेजो निर्जित कैरव मित्रं ॥ नन्दीश्व० ॥ ७ ॥
अनघरत्न युत दर्पण स्तूपं, बिम्बित देव नरोरग रुपं ॥ नन्दीश्व० ॥ ८ ॥
ललना विजित सु चामर मालं गंगा वीचि समुज्वल वालं ॥ नन्दीश्व० ॥ ९ ॥
भृंगारा द्यष्टभिर्द्रव्यैरष्टोत्तर शतै युताः । एभिश्चैत्यालयानर्घ्यैर्हतामर्चये मुदा ॥
॥ अर्घम् ।

॥ पश्चिम दिशि पूजा ॥

(वसत तिलका वृत्तम्)

नन्दीश्वरे वरुण दिग्गत कज्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरिस्थित चैत्य पंक्तिः
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणोरु शुक्लाष्टमो प्रभृति सद्दिवसाष्ट कान्तम् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिम दिशिस्थितांजन गिर्यादि त्रयोदश चैत्यालयस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(इन्द्रवज्रा)

सुरापगा तीर्थः जलैः सुगन्धैः, काश्मीर कर्पूर पराग मिश्रै ।
प्रतीच्य शुभ्रा दिशि खेन्दु सख्या, गस्थालयस्थान् जिन पार्श्ववार्यैः ॥ जलम् ॥
सुगंधीकाश्मीर रसौघ पीतैं, श्री चन्दनैराहूत पट्पदौघैः । प्रतीच्य० ॥ चन्दनं ॥
तुषार हारेन्दु निभैरखंडैः, सत्तंदुलैर्न्यक्कृत मौक्ति कौघैः ॥ प्रतीच्य० ॥ अक्षतम् ॥
मंदार कुन्दाब्ज कदंब पुष्पै रोलंब राजीकृन्मौक्तिकौघैः ॥ प्रतीच्य० ॥ पुष्पम् ॥
गांगेय पात्रे निहितैरनिंद्यैः, पक्वान्न शाल्योदन सूप शाकैः ॥ प्रतीच्य० ॥ नैवेद्यम् ॥
जगत्त्रयध्वान्त विनाश दक्षैः, दीपैर्लसत् कांचन पात्रसंस्थैः ॥ प्रतीच्य० ॥ दीपम् ॥
सुगंधि काला गुरु धूप गंधै र्व्यामोदिताशाखिल खेचरास्यैः प्रतीच्य० ॥ धूपम् ॥
रसाल मोचामल मातुलिंगै जंबीर राजदन नालिकेरैः प्रतीच्य० ॥ फलम् ॥

तत्पाश्चात्यांजनमुखनगाग्नीन्दु संख्यालयस्थान् । देवाधीशान्सलिल कुसुमैः, पूजयित्वा प्रमोदात् ॥
स्वस्थो भूत्वा जिनवर पुरो ध्यानमंगी करोति, भव्यो योसौ भव निधि तटं याति सच्चन्द्रकीर्ति ॥

॥ अर्घम् ॥

॥ जयमाला ॥

(इन्द्र वज्रा)

तत्पश्चिमाशांजन मुख्यशैल, श्चैत्यस्थितान्शुद्ध सुवर्ण वर्णान् ॥
स्तुवे जिनेन्द्रान् जयमालयाहं, संसार पाथो निधिपारमाप्तान् ॥ १ ॥

निज दृष्टि विलोकित लोक हितं, विचरे हरि शंकर काम तुतं ।
सुतदं जन मुख्य जिनेश गृह, स्थितवंत मनंत जिनेन्द्र महं ॥ २ ।

सकलामल बोध सुसंगधरं, भविनां भव पाप विनाश करं । सुतदं० ॥ ३ ॥
सुख सागर मग्नमनंत सुखं, प्रणमामि मनोहर मुक्ति नखं ॥ सुतदं० ॥ ४ ॥
निरहंकृतमंत विकास करंः बहुवीर्यधरं तमकौघ हरं । सुतदं० ॥ ५ ॥
हत मोह तमोभर मान बलं, सुतपोवन धौत कु कर्म जलं । सुतदं० ॥ ६ ॥
शरदोज्वल दत्त पवित्र मुखं, विरति द्रुम पल्लव रक्त नखं । सुतदं० ॥ ७ ॥
सदयं सदयं सनयं सनयं. परमं परमं पर हंसमयं सुतदं० ॥ ८ ॥
पदपंकज संनुत देव नरं, वर योग कदंबक लब्धिकरं । सुतदं० ॥ ९ ॥

श्लोक–नन्दीश्वरापराशास्तां–जनाद्रिस्थ सु वेश्मसु ।
स्थितान्सर्वान् जिनाधीशान्, पूर्णार्घै. पूजयाम्यहं ॥ १० ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

❀ उत्तर दिशि पूजा ❀

(वसत तिलका)

तस्योत्तरांजन नगादि शिखीन्दु संख्या, शैलस्थ चैत्य भवनानि मनोहराणि ॥
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणोरु, शुक्लाष्टमी प्रभृति सद्दिवसाष्टकान्तम् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे उत्तर दिशि संस्थितांजन गिर्यादि त्रयोदशपर्वतस्थत्यकृत्रिम चैत्यालय स्थापनार्थं पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

(विद्युन्माला छन्द)

निर्जर गगा वरतर तोयै, गंध विमिश्रैः कलिमल हान्यैः ।
श्री तदुदीच्यां जन मुख वह्नि, ग्लौमित शैला लय जिनमर्चे ॥ १ ॥ जलम् ॥
केशर माला सुरभी रसोघै, श्चन्दन पंकै मधुकर रागै. ॥ श्रीतदु. ॥ चन्दनम् ॥
तंदुल पुंजैर्हिमकर रोचि मौक्तिक तुल्यैः परिमल सारैः ॥ श्रीतदु॰ ॥ अक्षतम् ॥
चम्पक माला शत दल कुन्दैः चेतक जाती कुवलय सारै ॥ श्रीतदु॰ ॥ पुष्पं ॥
पायस शाल्योदन नव सर्पं, मोदक हव्यैर्मखिमय मिष्ठैः ॥ श्रीतदु॰ ॥ नैवेद्यम् ॥

दीपकलापै र्विधुरस जातै, स्तामस भेदैः रवि कर तुल्यैः ॥ श्रीतदु० ॥ दीपम् ॥

धूप कलापैरगुरुसमुच्चै, र्धूम वितानै र्जलधर नीलैः ॥ श्रीतदु० ॥ धूपम् ॥

दाड़िम राजादन फलसारैराम्रकपित्थैः शिव पदसिद्ध्यैः । श्रीतदु० ॥ फलम् ॥

(इन्द्र वज्रा)

नन्दीश्वरेदिक् स्थितकज्जलाद्री, खीन्दु प्रभागास्थित चैत्य संस्थान् ।
यजाम्यनर्घ्यान् जलचन्दनाद्यैः, सर्वज्ञ वर्यान् शरदिन्दुकीर्तिन् ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

आर्या—नन्दीश्वराष्टमद्वीपांजन प्रमुख त्रयोदश नगेषु सुवर्ण मया कृत्रिम त्रयोदश चत्यालयाः ।
संति तत्रार्हत्प्रति मानां, जयमाला पूजा विधिं वक्ष्ये ॥ १ ॥
पन्चम सागर श्रीतल वारा, स्नान विधिं विदधुः सहदारा ।
फाल्गुण मास पुरन्दर वर्या, उत्तर शैल जिनात्र सु पर्या ॥ २ ॥
लिप्तसु चन्दन चन्द्र रसौघा, रेजुर र्हत कर्म मलौघा ॥ फाल्गुण ॥ ३ ॥
न्यस्त मनोहर तंदुल मंजा, रेजुरिवाचत मौक्तिक पुंजाः ॥ फाल्गुन ॥ ४ ॥
ढौकित पन्कज चम्पक माला रेजुर रंजित गीत रसाला ॥ फाल्गुण, ॥ ५ ॥
स्वादित मोदक पायस भक्ता मेंनिर आत्म सु पुण्यमरक्ता· फाल्गुण. । ६ ॥

द्योतित रत्न कदम्बक दीपाः, रंजुर रंवर नाक महीपाः ॥ फाल्गुण. ॥ ७ ॥
धूपित पेशल गंध सुरुपाः रेजुरहव घृत मोहन रुपा. ॥ फाल्गुण. ॥ ८ ॥
अर्पित चोच रसाल कदंबाः रेजुरर्हत करमल दंभाः ॥ फाल्गुण. ॥ ९ ॥

(वसत तिलका)

नन्दीश्वरोत्तर गतांजन मुख्य शैल, वह्नीन्दु मान शिखर स्थित चैत्य संस्था ।
वेदाभ्र वेद कुमिता प्रतिमा जिनानां संपूजयामि जलनाक्षत चन्दनाद्यैः ॥

॥ महार्घ्यम ॥

॥ समुच्चयाष्टक ॥

विमल कांचन कुंभ विनिस्सरत्प्रचुर कुंकुम पिंजर वारिणा ।
रस हिमांशु रसेषु मितांश्चतान्, जिनवरान्दिव साष्टक पूजयेत् ॥ जलम् ॥
शुभ हरिन्मणि संश्रित कुंकुमैः, रस तरै रवि नाल गतारुणैः ॥ रसहि० ॥ चन्दनम् ॥
कनक पात्र गतोज्वल तन्दुलै, विधुकरै रिव नैपत्र सगतैः ॥ रसहि० ॥ अक्षतम् ।
सलिल जन्य कदम्बक चपकै, भ्रमर धोरिणि पीतपरागकैः ॥ रसहि० ॥ पुष्पम् ॥
हरि हविः सम पायस संचयैः, घृत वरेक्षु रसैः रसनेष्टकैः ॥ रसहि० ॥ नैवेद्यम् ॥
निविड पाप तमो भर नाशकै, मुनि विबोध समै मणि दीपकैः ॥ रसहि. ॥ दीपम् ॥
त्रिदिव मार्ग गतैरगुरुद्भवैः सुरभी धूम भरै भ्रमर प्रियैः ॥ रसहि० ॥ धूपम् ॥
क्रमुक दाड़िम चोच लतोद्भवैः रस विशेष युतै मधुरैर्फलैः ॥ रसहि० ॥ फलम् ॥

द्वापंचाशच्चैत्य गेहीय सर्वान्शुभ्राषाढे कार्तिके फाल्गुनाख्ये ।
स्वष्टाह्नं वै पूजयन्त्यष्टधा ये, भव्यास्ते वै मुक्ति भाजः भवंति ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

घत्ता–सकल सुह कारणु, दुग्गइ वारणु, पुज्जहु णंदीसर दीवं ।
आसाढह मासउ, कातिय मासउ फागुण अट्ठमी जिण सेवं ॥ १ ॥

(मणुयणाइन्द की चाल)

सुहम कप्पादिया, मिलवि सवि सुंदरा, चालिया अट्ठमं दीव णंदीसुरा ।
छित्त संरत्तिआ सव्व भत्ति भरा, देव देवी जुआ जोइसा वितरा ॥ २ ॥
इन्द एरावयं चढ़िय सोहाघणं, घंट स किंकिणि चामरा ढोलणं ।
कुन्थ संभार सिन्दूर संलेपणं, णच्चए आच्छरा देव देवी गणं ॥ ३ ॥
वज्जए ताल कंसाल वर मद्दला, गज्जए ढोल नीसाण वीणा दला ।
भेरी संताड़िया संख कोलाहला, सद्दए सोहिआ काहला भूंगला ॥ ४ ॥
काविवि वज्जए वंससिरि मंडला, काविवि गायए गीत रागा कुला ।
काविवि णच्चए धरीय एकाउला। काविवि ढ्ढावए रम्म मुत्ताहला ॥ ५ ॥
हार चंदामला जिण गुणा सीयला, बोलए कामिणि करिष मण णिम्मला ।

पंचमं गायए रागसुर किएणरा णारया तुंबरा हाह हूहु वरा ॥ ६ ॥

तित्थ वारि वरं पंम संवासियं, णिम्मलं सीयलं पाव परिणासियं ।
धोवए कोमलं जिण पय जु अलं, दीव णंदीसरे ते सुरा सीयलं ॥ ७ ॥

गंध संकम्मियं भमर मुयंगमं, भूरि कप्पूर संवासियं संगमं ।
चच्चए चंदणं जिण पयजु अलं, मग्गए ते सुरा तुम्ह गुण पेसलं ॥ ८ ॥

अक्खुआ उज्जला हार मुत्तोपमा, खंड संवज्जिया पंच मेरोपमा ।
पुंन संढोकया जिणवर अग्गए, अक्खयं ठाणयं ते सुरा मग्गए ॥ ९ ॥

मोगरा चंपआ रम्म गंधालया कुंद मंदारया पोम्म संमालया ।
जाई जूई मयानीय निमालया पुज्जए तच्छिया तेह दिवालया ॥ १० ॥

खज्ज संजूरया कूर सप्पियरा पायसा पावना गोरसा सक्करा ।
त्रिय संपाविया फेणया घेअरा दीव णंदी सुरेतेठवे वावरा ॥ ११ ॥

भूरि कप्पूर वट्टिय उज्जालणं, फार अन्धार स फडणे कारणं ।
संठिया दीवया रयण मप्भायणं द्योतए ते जिणं कम्म संचूरणं ॥ १२ ॥

धूव सिल्हारसं अगर संघस्सणं, पूरमा कम्सियं भिंग सिंधोरणं ।
दुठ्ठ कम्मह विंदेघणं जालणं, धूवए जिणवरं दिव्व पूजालणं ॥ १३ ॥

नालिकेराम्ब्रया पूग बीजोरया, चीभड़ा खिरणी मूल कुम्हंड्या ।
गोत्थनी दाडिमा तिंदुका केलया, दीव णंदीसरे पुज्जए एलया ॥ १४ ॥

अथ उच्चारये भावये भावना हत्थ संजोड़िया णामयां ते जिणा ।

दीव णंदीसरे वेहरा वावणा, मग्गए सासयं ठाण सोहामणा ॥ १५ ॥

यत्ता–इह णंदीसर भावऊ, पुज्ज सुहावऊ अट्ठमिदिणाइ पुन्निमापयणं ।

सिरिभूसण भिस्सउ, रविसम दिस्सउ, चन्द कीत्ति सोहावयणं ॥ १६ ॥

महार्घ्यम् ॥

नन्दीश्वरेष्टमेद्वीपे, सर्वेऽर्हंतस्त्रिधार्चिताः । पुनातु त्रिजगत्सर्वं शांतिधारा त्रयेण वै ॥

(इति शांति धारा त्रयं दद्यात्)

नाना हाव विलास विभ्रमवरान् दारासु रम्यांगजान् ।

दुर्वारान्मदनेन्दुरान्गजरवीन्, वारान्मनोरंहसः ।

कीर्ति कांति मनेकधामरलस च्छत्रांकितां सद्रमा ।

मेतत्पूजन तत्पराः शुभजनां संप्राप्नुवंतु ध्रुवं ॥

इत्याशीर्वादः ॥

अस्ति श्री काष्ठ संघो यतिजन कलितो गच्छ नन्दी तटाख्यो,

विद्या पूर्वे गणान्तेऽजनिशत गुरवो रामसेनश्चतस्मिन् ,

तद्वंशेरेजिरेवै मुनिजन सहिता सूरयो विश्व सेनाः ,

विद्याभूषाख्य सूरिर्जिनमति रभवच्चात्पदांभोधिचन्द्रः ॥ १ ॥

तत्पट्टोदय भूधरैकतरणि, पंचेन्द्रियारणिः । श्री श्रीभूषण सूरिराट् विनयते सर्वज्ञ विद्या चणः ॥
तच्छिष्यो जिन पाद पद्म मधुपः श्री चन्द्रकीति र्वरः । तेनाचार्य वरेण निर्मितमिदं नन्दीश्वर स्याचेनं ॥२॥

॥ श्री रत्नत्रय पूजा विधान ॥

श्रीमन्तं सन्मतिं नत्वा, श्रीमतः सुगुरुनपि । श्रीमदागमतः श्रीपद्धत्ये रत्नत्रयार्चनम् ॥ १ ॥
अनंतानंत संसार, कर्म सम्बन्ध विच्छिदे । नमस्तस्मै नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने ॥ २ ॥

ध्रौव्योत्पादव्ययानेक, तत्त्व संदर्शनक्षिपे ॥ नमस्तस्मै० ॥ ३ ॥
संसारार्णवमग्नानां, यः समुद्धर्तुमीश्वरः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ४ ॥
लोकालोक प्रकाशात्मा, यश्चैतन्य मयो महः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ५ ॥
येन ध्यानाग्निना दग्धं, कर्म दत्तमलत्वणं ॥ नमस्त स्मै० ॥ ६ ॥
येनात्मात्मनि विज्ञातः, परं परमिदं वपुः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ७ ॥
य एव परमं ज्योतिः, परं ब्रह्म मयः पुमान् ॥ नमस्तस्मै० ॥ ८ ॥
सर्वानंदमयो नित्यं, सर्वसत्व हितंकरः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ९ ॥

इत्याद्यनेकधा स्तोत्रैः स्तुत्वा सज्जिन पुंगवम् । कुर्वे दृग्बोधचारित्रार्चनं सक्षेपतोऽधुना ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् संन्निधिकरणम् ।

संसार दुःख ज्वलनावगूढ, प्ररुढ संतापमलोप शांत्यै ।
सद्दर्शनज्ञान चरित्र पंक्तेर्जलस्यधारां पुरतो ददामि ॥ जलं ॥ १ ॥
रत्नत्रयं भूषित भव्य लोक,-मशोकमन्तर्गत भावगम्यं ।
काश्मीरकर्पूरसुचन्दनाद्यैः, सुगन्धिगन्धैरहमर्चयामि ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
आर्या छन्दः—अक्षतमक्षत पुञ्जैः, शालेयैः शुद्ध गन्धिभिः शुद्धैः ।
दर्शन बोध चरित्र त्रितयं तत्संयजे भक्तया ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
उद्गताछन्दः—विकसित कुंद कुसुम शत पत्र सु जात समूह शोभया,
घन कर्पूर नीर शुभ चन्दन, चर्चित चारु गंधया ।
अलिकुल रणित कलित मधुर ध्वनि, श्याम समूह रसालया ।
सुकलितशातनौमि रत्नत्रय, मत्र पवित्र मालया ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
इन्द्रवज्रा—प्रसिद्ध सद्द्रव्यमनन्य लभ्यं, वचो गुरुणामिव साधुसिद्धं ।
सद्दृष्टि सद्बोध चरित्र रत्न, त्रयाय नैवेद्य महं ददामि ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
दीपैः सुकर्पूर पराग भृंगैरंगद्भिरंगद्युति दीप्यमानैः ।
सद्दृष्टि सद्बोध चरित्र रत्न, त्रयं त्रयातापिकरं यजामि ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
आर्याछन्दः-धूपैः कालागुरुभि विंशुद्ध संशुद्ध कर्म संधूपैः ।
दर्शन बोध चरित्र त्रितयं संधूपयामि सं शुद्धयै धूपं ॥ ७ ॥
इन्द्रवज्रा-पूगैरनर्घैर्वर नारिकेलैः, नारंग जम्बीर कपित्थ पुञ्जैः ।
रत्नत्रयं तर्पित भव्य लोकं, शक्यावलोकं तदहं यजामि ॥ फलं ॥ ८ ॥

आर्या छंद–जल गंधाक्षत पुष्पैश्चरु दीपैर्धूप सत्फलैः सर्वै ।
दर्शन बोध चरित्र, त्रितय त्रेधा यजामहे भक्त्या ॥ अर्घ्यं ॥

मोहाद्रि संकट तटी विकट प्रपात, संपादिने सकल सत्त्व हित कराय
रत्नत्रयाय शुभ हेति सम प्रभाय, पुष्पांजलि प्रविमलां ह्यवतारयामि ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

❁ अथ सम्यग्दर्शन पूजा ❁

परस्याभिमुखी श्रद्धा, शुद्ध चैतन्य रूपतः । दर्शनं व्यवहारेण, निश्चयेनात्मन. पुनः । १ ॥

द्रुतविलम्बितच्छन्दः=यदधिगम्य नरः शिव संपदा, मधिपदं प्रतिपद्य विरेजिरे ।
तदिह मानसतामरसेलसद्विशतु दर्शनमष्ट विधं मम ॥ २ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांगसम्यग्दर्शनात्रावतरावतर स्वाहा ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

अनंतानंत संसार सागरोत्तार कारणम् तीर्थंतीर्थकृतामत्र, स्थापयामि सुदर्शनम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांगसम्यग्दर्शन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॥ प्रतिष्ठापनं ॥

अष्टाङ्गैरष्टधापूत–मष्टैक गुण संयुत । मदाष्टकैर्विनिर्मुक्तं, दर्शनं सन्निधापये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः. अष्टांगसम्यग्दर्श। अत्र ममसन्निहितं भव भव वषट् । सन्निधिकरणम् ॥
दर्शन यत्र स्थापनम् ॥

शरदिन्दु समाकार , सारया जल धारया । सम्यग्दर्शनमष्टांगं , संयजे संयमावहम् ॥ जलं ॥ १ ॥

चारु चन्दन काश्मीर, कर्पूरादि विलेपनैः । सम्यग० ॥ चंदनं ॥ २ ॥
अखंडैः खंडिता नेक,–दुरितैः शालितंदुलैः । सम्यग० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
शत पत्र शतानेक, चारू चम्पक राजिभिः । सम्यग० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य, सन्नाज्यैः पुष्टि कारिभिः । सम्यग० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
चञ्चत्काञ्चन संकाशै दीपैः सदीप्ति हेतुभिः ॥ सम्यग० ॥ दीपं ॥ ६ ॥
कृष्णागुरुमहाद्रव्य, धूपैः संधूपिताशुभैः ॥ सम्यग० ॥ धूपं ॥ ७ ॥
पूग नारिङ्ग जम्बीर, मातुलिङ्ग फलोत्करैः । सम्यग० ॥ फलं ॥ ८ ॥
जलगंधाक्षतानेकः पुष्पनैवेद्य दीपकैः ॥ सम्यग० ॥ अर्घ ॥ ॥ ९ ॥

॥ इन्द्र वज्रा ॥

यस्य प्रभावाज्जगतांत्रयेऽपि, पूज्या भवंतीह घना जनौघा ॥
सुदुर्लभायामर पूजिताय निः शंकिताङ्गाय नमोस्तु तस्मै ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं निः शङ्किताङ्गाय इदं जलं गंधं पुष्पं, अक्षतं चरू दीपंधूपं फलं समर्पयामि स्वाहा ॥

सुदर्शनं येन विना प्रयुक्तं, मन्तःफलं नैव भवेज्जनानां ।
सुदुर्लभायामर पूजिताय; निः कांक्षिताङ्गाय नमोस्तु तस्मै ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं नि कांक्षिताङ्गाय जलाद्यर्घ ।

यदंगतः संयम वृक्ष सेकी, तस्मात्फलं संलभते शरीरी ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, निर्निन्दतांगाय नमोऽस्तु तस्मै ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सितांगाय जलाद्यर्घं ॥

यदुज्झित चारु चरित्र मेतत् सिद्ध्यैभवेन्नैव मुनीश्वराणां ।
सुदुर्लभायाश्वर पूजिताय, निमूढतांगाय नमोऽस्तु तस्मै ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अमूढदृष्ट्यङ्गाय जलाद्यर्घम् ॥

सुरेन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्रवृन्दै-र्वंद्यंपदं यद्वशतो लभन्ते ।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, निगूढतांगाय नमोऽस्तु तस्मै ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं उपगूहनांगाय जलाद्यर्घं ॥

भवन्ति वृद्धा गुण वृद्धि सिद्धा, येनानु वृद्धा जगति प्रसिद्धाः ।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, सुस्थापनांगाय नमोऽस्तु तस्मै ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं स्थितिकरणांगाय जलाद्यर्घं ॥

सुरत्नवद्दुर्लभतामुपेतं, भव्याघनौ यत्प्रतिभासमानं ।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, वात्सल्यतांगाय नमोऽस्तु तस्मै ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं वात्सल्यांगाय जलाद्यर्घं ॥

प्रबंधभूयिष्ठमलञ्चकार यच्छासने शासित भव्य लोकः ।
सुदुर्लभायामर पूजिताय प्रभावनांगाय नमोऽस्तु तस्मै ८ ॥

ॐ ह्रीं प्रभाव नांगाय जलाद्यर्घम् ॥

॥ समुच्चयाष्टक ॥

सौरभ्याहत सद्गंग, सारया जल धारया ।
निःशंकिताद्किान्यस्य, सदंगानि यजामहे ॥

ॐ ह्रीं निःशंकिताद्यष्टांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥
चारु चन्दन काश्मीर कर्पूरादि विलेपनैः ॥ निःशंकि० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥
अक्षतैरक्षतानंत सुख दान विधायकैः ॥ निःशंकि० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
जाति कुन्दादिराजीव, चम्पकानेक पल्लवैः ॥ निःशंकि० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
खाद्यैराद्य पदैः स्वाद्यैः सन्नाज्यैः सुकृतैरिव ॥ निशंकि० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
दशाग्रैः प्रस्फुरद्रूपैर्दीपैः पुण्य जनैरिव ॥ निःशंकि० ॥ दीपं ॥ ६ ॥
धूपैः संधूपितानेक कर्मभिः धूपदायिनां ॥ निशंकि० ॥ धूपं ॥ ७ ॥
नारिकेलाम्रपूगादि फलैः पुण्य फलैरिव ॥ निशंकि० ॥ फलं ॥ ८ ॥

(आर्या) जल गंध कुसुम मिश्रां, फल तन्दुल कमल कलित ललिताढ्यं ।
सम्यक्त्वाय सुभव्यां, भव्याः कुसुमांजलिं ददतु ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

(पुष्पांजलिंक्षिपेत्)

जाप्य ९ कुर्यात् ॥ ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं निःशंकितांगायनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं निःकांक्षितांगाय नमः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सितांगाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं निर्मोढ्वाय नमः ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं उपगूहनाय नमः ॥ ६ । ॐ ह्रीं स्थितिकरणाय नमः ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं वात्सल्याय नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं प्रभावनांगाय नमः ॥ ९ ॥

एभिर्मंत्रैर्जाप्यं कुर्यादर्घं चापि समुद्धरेत् ॥

॥ जयमाला ॥

स्रग्धराछन्दः=तत्वानां निश्चयो यस्तदिह निगदितं दर्शनं शुद्ध बुद्धै,
स्तस्मादानष्टकर्माष्टकघनतिमिरो जायते ज्ञान सूरः ।
ज्ञानात्सिद्धि प्रसिद्धि भुवि वचनमिदं शाश्वतं सिद्धि सौख्यं ।
चचच्चन्द्रांशु शुद्धं तदहमिहमहे दर्शनं पूजयामि ॥ १ ॥

जय सम्यग्दर्शनदर्शिताश, कमलार्चितहतघनकर्मपाश ।
जयनिःशंकित निश्चित सुतत्व, शतपत्र शतार्चित मुदितसत्व ॥ १ ॥

जय निःकांक्षित वर्जित विकार कुन्दार्चितकृतसंसारपार ।
जय निर्विचिकित्सित भाव भंग, कुमुद प्रसून पूजित सुसंग ॥२॥

जय निर्मूढांग महाप्ररूढ, शुभ चम्पक चर्चित चारू रूढ़ ।
जय २ उपगूहन परम पक्ष, वर मल्लिकार्च्चदर्शित सुलक्ष ॥ ३ ॥

जय २ सुस्थिर सुस्थितीकरण, जातीकुसुमार्चित दुखः हरण ।
वात्सल्यमल्ल जय २ विशाल, केतकदल पूजित दलित काल ॥ ४ ॥

प्रतिभावनांग जय २ वरेण, जय वसुविध कुसुमार्चितसुरेण ॥

(घत्ता) इति दर्शनवर्गं, भावनिसर्गं, दर्शनमिष्टमनिष्ट हरं ।
सुमनः सत्पुञ्जं, शर्म निकुञ्जं, भव्य जनाय ददातु वरं ॥

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शनाय महार्घं ॥

पंचाति चारमति मतं प्रपूतं, पन्चप्रदं पंचम बोधहेतुं ।
सद्दर्शनं रत्नमनर्घ्यमर्घ्यं. भक्तया सुरत्नैरहमर्चयामि ॥ रत्नाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

मुक्ताः श्रेणिगताविभाति नितरां, यत्प्रस्फुरत्तेजसा,
येनालंकृत विग्रहं गृहमुचं सिद्धयंगनाऽऽमुञ्चति ॥

यत्संसार महार्णवे भवभृतां दुष्प्राप्यामपृच्छतः,
तत्सम्यक्त सुरत्नमर्चितधियां, देयादनिघं पदं ॥ रत्नांजलिं देयात् ॥

मालिनीछंदः—अतुल सुख निधानं, सर्वकल्याण बीजं, जनन जलधिपोतं, भव्यसत्वैक पात्रम्
दुरिततरू कुठारं, पुण्यतीर्थं प्रधानं, पिवतुजिन विपक्षं, दर्शनाख्यं सुधाम्बु ।

इत्याशीर्वाद

॥ अथ सम्यग्ज्ञान पूजा ॥

प्रणम्य श्री जिनाधीश,-मधीशं सर्वसम्पदां । सम्यग्ज्ञान महारत्नपूजां वक्ष्ये विधानतः ॥ १ ॥
श्रीजिनेन्द्रस्यसद्बिम्ब,-मुत्तरेण महाधियः । पुस्तक स्थापनीयं चेत्तस्यैवादर्शमध्यमम् ॥ २ ॥
कल्पनातिगता बुद्धिः परभाव विभापिका । ज्ञानंनिश्चयतो ज्ञेयं, तदन्यद्व्यवहारतः ॥
ज्ञानाचारोऽष्टधापुंसां, पवित्री करण क्षमः । प्रभावेन तु पूजायै समागच्छतु निर्मलः

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांग सम्यग्ज्ञानाचार अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ आह्वाननं ॥

सम्यग्ज्ञान प्रभापूत, कर्म कक्ष क्षयानल । पूजा क्षणेतु गृह्णातु, स्थित्वा पूजामनिन्दिताम् ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांग सम्यग्ज्ञानाचार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॥ प्रतिष्ठापनं ॥

अचिन्त्यमाहात्म्यमचिन्त्य वैभवं, भवार्णवोत्तीर्ण विसारि सर्वत ।
प्रबोध चारित्रमिहान्तरान्तरं निरंतरं तिष्ठतु सन्निधौमम ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांग सम्यग्ज्ञानाचार अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधिकरणं ॥

शरदिन्दु समाकार सारया जल धारया । बोधतत्व समाचारं, सयजे संयजाम्यहम् ॥ जलं ॥ १ ॥
कर्पूर नीर काश्मीर मिश्रसच्चन्दनैर्घनैः । बोधतत्व० । चन्दनं ॥ २ ॥
अखण्डैः खंडितानेक-दुरितैः शालि तन्दुलैः । बोधतत्व० । अक्षतं ॥ ३ ॥
शतपत्रशतानेक चारु चम्पक राजिभिः । बोधतत्व० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

न्य.यैरिव जिनेन्द्रस्य सान्नायैः शुद्धिकारिभिः । बोधतत्व० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

चञ्चत्काञ्चन संकाशैः दीपैः सद्दीप्ति हेतुभिः ; बोधतत्व० ॥ दीपं ॥ ६ ॥

कृष्णागुरू महाद्रव्य, धूपैः संधूपिताशुभैः । बोधतत्व० ॥ धूपं ॥ ७ ॥

पूग नारिंग जम्बीर मातुलिंगफलोत्करैः । बोधतत्व० ॥ फलं ॥ ८ ॥

वसततिलकाच्छंदः—मोहाद्रि संकट तटी विकट प्रपात, सम्पादिने सकलसत्व हितंकराय ।

बोधाय शक्र शुभ हेतु समप्रभाय पुष्पाञ्जलिंप्रविमलांह्यवतारयामि ॥ अर्घ ॥

सुव्यञ्जनैर्व्यंजित व्यंगभाव, प्रभावना भावित भाव वृद्ध्यै

सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोधतत्वाय नमोस्तु तस्मै ॥

ॐ ह्रीं व्यञ्जन व्यजिताय इदं जलं गंधं पुष्पं अक्षतं नैवेद्यं दीपंधूपं फलमित्याद्यर्घं ॥ १ ॥

पदार्थ सम्बंधमुपेत्यनीतः समग्रतामग्रपदप्रदायि । सुदुर्ल० ॥

ॐ ह्रीं अर्थ समग्राय इदं जलं गंध मित्याद्यर्घं ॥ २ ॥

शब्दार्थ श्रद्धान विधानमान, द्वयेन बन्धं सुनिबंधमेति । सुदुर्ल० ॥

ॐ ह्रीं तदुभय समग्राय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं । ३ ॥

पवित्रकालाध्ययन प्रभाव प्रदर्शितानेक कला कलापं । सुदुर्लभा० ॥

ॐ ह्रीं कालाध्ययन पवित्राय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ४ ॥

॥१४॥

समृद्ध शुद्धोपधि शुद्धमिद्धं, सुभारमंतः स्फुरदङ्गरङ्गम् ॥ सुदुर्ल० ॥

ॐ ह्रीं उपाध्ययनोपक्षिताय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ५ ॥

विनीत चेतो वितनोतिनीति प्रणीतमानन्त्यमनन्तरूपम् ॥ सुदुर्लभा० ॥

ॐ ह्रीं विनय लब्ध प्रभावनांगाय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ६ ॥

अपन्हुते निन्हुति वो गुरुणां गुरु प्रभावोपचितान्धकारं ॥ सुदुर्ल० ॥

ॐ ह्रीं गुर्वध्ययनानप ह्नव समृद्धाय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ७ ॥

अनेकधामान्यवितानवृद्धं प्रभावितानंतगुणं गुणानां । सुदुर्ल० ॥

ॐ ह्रीं बहुमानोन्मुद्रिताय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ८ ॥

सौरभ्याहृतसद्भृंग, सारया जल धारया ।

व्यञ्जनाद्यमलाङ्गानि संयजे जन्म विच्छिदे ॥ जलं ॥ १ ॥

चारू चन्दन काश्मीर कर्पूरादि विलेपनैः ॥ व्यंजना० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षतैरक्षतानंत सुखदान विधायकैः ॥ व्यञ्जना० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

जाती कुन्दादि राजीव चम्पकानेक पल्लवैः । व्यञ्जना० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

खाद्यैराद्य पदैः स्वाद्यैः सन्नाज्यैः सुकृतैरिव ॥ व्यंजना० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दशाग्रैः प्रस्फुरद्रूपैर्दीपैः पुण्य जनैरिव ॥ व्यंजना० ॥ दीपम् ॥ ६ ।

धूपैः संधूपितानेक कर्मभिर्धूपदायिनां व्यञ्जना० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

नालिकेराम्रपूगादि फलैः पुण्य फलैरिव ॥ व्यंजना० ॥ फलं ॥ ८ ॥

जलगंधाक्षतानेक पुष्प नैवेद्य शालिना ॥ व्यंजना० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

मोहाद्रि संकट तटी विकट प्रपात, संपादिने सकल सत्वहितंकराय ।

बोधाय शक्र शुभ हेति समप्रभाय पुष्पांजलि प्रविमलां ह्यवतारयामि ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥ जाप्य ९ कुर्यात् ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः । १ । ॐ ह्रीं व्यंजन व्यंजिताय नमः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं अर्थसमग्राय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं तदुभयसमग्राय नमः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं कालाध्ययन पवित्राय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं उपाध्ययनोपहिताय नमः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं विनय लब्ध प्रभावनांगाय नमः ॥७॥ ॐ ह्रीं गुर्वाद्यनपह्नव समृद्धाय नमः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं बहुमानोन्मुद्रिताय नम ॥ ९ ॥ एभिर्मंत्रैर्जाप्यं कुर्यात्, अर्घं चापि समुद्धरेत् ॥

॥ जयमाला ॥

स्रग्धराच्छन्दः-व्योम्नीव व्यक्त रूपं, विगत घन मल, भाति नक्षत्र मेकं,

जीवाजीवादि तत्वं स्थगित गत मलं, यस्य दृग्गोचरस्थम् ।

तत्वज्ञैः प्रार्थ्यते यत्प्रविपुलमतिभिर्मोक्षसौख्याय जज्ञे

तद्भव्याम्भोज भानुं ललित गुण मणिं बोधमभ्यर्चयामि ॥ १ ॥

घन मोह तमः पटलापहरं, यम संयम संगम भार भरं ।

भुवि भव्य पयोज विकासमहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं ॥ २ ॥

कृत दुष्कृत कौशिक चार हरं, भृतभूरि भवार्णव शोष करं । भुवि० ॥ ३ ॥
निखिलामल वस्तु विकास पदं, हत दुर्धर दुर्जय काण्ड पदं ॥ भुवि० ॥ ४ ॥
कलिकल्मष कर्दम शोष करंहृदयादव सर्पित कर्म जलं ॥ भुवि० ॥ ५ ॥
जडता तम हारक सूर्य समं, सुमनोभव संग विभंगसमं ॥ भुवि० ॥ ६ ॥
हृदयामललोचन लक्षमितं, निजभासुर भानु सहस्र युतं ॥ भुवि० ॥ ७ ॥
अलि कज्जल नील तमाल तमं, प्रति मद्धिक भाव निशापगमं ॥ भुवि० ॥ ८ ॥
निज मण्डल मण्डित लोक मुखं, नत सत्व समर्पित सर्वसुखं ॥ भुविम० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग ज्ञानाचाराय इदं जलंगधं पुष्पं अक्षतं चरू दीप धूपं फलं यजामहे स्वाहा ॥

स्तुत्वेति बहुधास्तोत्रै र्बहुमक्ति परायणः नाना भव्यैः समंधीमानर्घ्यं चापिसमुद्धरेत् ॥
संसार पाथो निधि शोष कारि, प्रबंध भूयिष्ठमनंत रूपं ।
सज्ज्ञान रत्न बहु रत्न भृंगैः रत्नैः शुभैरर्चितमर्चयामि ॥ रत्नाञ्जलि ॥

चिन्तामूल महादृढस्तदमल स्थूलस्थल स्कंधमा, नंगोपांग सदागमैक विसरच्छाखोपशाखान्वित ।
एकानेक विधावधि प्रभृतिभिः सत्पत्र पुष्पैर्वरै, र्दैयाद्बोधतरु शिवः शिवसुखं न्यासे वितोऽनेकशः
मालिनीच्छंदः—दुरिततिमिर हंसं, मोक्षल सरोजं मदन भुजग मंत्रं चित्त मातग सिंहं ।
व्यसन घनसमीरं, विश्व तत्वैक दीपं, विषय शफर जालं ज्ञानमाराधरत्वं ।

॥ इत्याशीर्वाद ॥

॥ सम्यक् चारित्र पूजा ॥

देवश्रुत गुरुन्नत्वा कृत्वाशुद्धिमथात्मनः । सम्यकचारित्र रत्नस्य वक्ष्ये संक्षेपलोचनम् ॥ १ ॥
सम्यक् रत्नत्रयस्याय, पुस्तकं चोत्तरेणतु गणेश पादुका युग्मं, स्नपयित्वामहोत्सवे ॥ २ ॥
गौर्यं चारित्रमाख्यातं यत्सावद्य निवर्तनं । आनंद सान्द्रमानात्मा पवित्रं परमार्थतः ॥ ३ ॥
त्रयोदश विधानेक भव्यलोकैक पावनं । चारित्राचारकमैत कमलं विमलं शिवः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यक चारित्राचार अत्रावतरावतर संवौषट् ।
स्थापनोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् । आह्वाननं ॥

विपर कर्म महाकुल पर्वत, प्रकट कूट विभञ्जन सत्तपः ।
य इह तिष्ठतु जन्म भयान्तकत्रिमल हारि चारित्र महामहः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । प्रतिष्ठापनं ।

सकल भव्य पयोज विकास कृत् प्रकटिताखिल भाव विभावकः ।
प्रबल मोह निशाचर चारहच्चरण भानुरुदेतु मनोम्बरे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

॥ चारित्र यंत्र स्थापनम् ॥

शरदिन्दु समाकार सारया जलधारया ।

सच्चारित्र समाचारं संयजे संयजावहम् ॥ जलं ॥ १ ॥

कर्पूर नीर काश्मीर मिश्रसच्चन्दनैर्घनैः ॥ सच्चारित्र० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

अखंडैः खण्डितानेक दुरितैः शालि तंदुलैः ॥ सच्चारित्र० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

शतपत्र शतानेक चारु चम्पक राजिभिः । सच्चारित्र० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य, सन्नाद्यैः पुष्टि कारिभिः । सच्चारित्र० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥

चञ्चत्कांचन संकाशैर्दीपैः संदीप्ति हेतुभिः ॥ सच्चारित्र० ॥ दीपं ॥ ६ ॥

कृष्णागुरु महाद्रव्यैः धूपैः संधूपिताशुभैः । सच्चारित्र० ॥ धूपं ॥ ७ ॥

पूग नारिंग जम्बीर मातुलिंग फलोत्करैः ॥ सच्चारित्र ॥ फलं ॥ ८ ॥

कर्माणि हि महारोगा नश्यन्ति यत्प्रयोगतः । सच्चारित्र० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

प्राणातिपातविरति, रुपं सर्वत्र तत्वत । पूजयामि समीचीनं, चारित्राचार मर्चितं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अहिंसा पूर्णं महाव्रतायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

असत्य विरतिप्राप्त परभागमनेकधा ॥ पूजया० ॥ ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रतायार्घ्यं० ॥

चैर्याद्यावृत्त वृत्तात्मा, सर्वथा सुमनीषिणाम् ॥ पूजया० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रतायार्घ्यं ।

ग्राम्य धर्म त्रिनिर्मुक्तं यद्वंद्यं त्रिदशैरपि ॥ पूजया० । ४ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रतायार्घ्यं ॥

सर्व ग्रंथ विनिर्मुक्तमनेकग्रंथ संयुतं । पूजया० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रतायार्घ्यं ॥

सौरभ्याहृत सद्भृंग, सारया जलधारया ।

अहिंसाव्रत पूर्वाखि तदंगानियजामहे ॥ जलं ॥

चारू चन्दन काश्मीर कर्पूरादि विलेपनैः । अहिंसा० ॥ चन्दनं ॥

अक्षतैरक्षतानंत सुखदान विधायकैः ॥ अहिंसा० ॥ अक्षतं ॥

जाती कुन्दादि राजीव , चम्पकानेक पल्लवैः । अहिंसा० ॥ पुष्पं ॥

न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य, सन्नाज्यैः शुद्धिकारिभिः ॥ अहिंसा० ॥ नैवेद्यं ॥

चञ्चत्काञ्चनसंकाशै दीपैः सदिप्तिहेतुभिः ॥ अहिंसा० ॥ दीपं ॥

धूपैः सन्धूपितानेक कर्मभिः धूपदायिनां ॥ अहिंसा० ॥ धूपं ॥

नारि केलादिभिः पूगैः फलैः पुण्य फलैरिव ॥ अहिंसा० ॥ फलं ॥

कर्माणि हि महारोगा नश्यन्ति यत्प्रयोगतः ।

सुचारित्रौषधायास्मैददामि कुसुमाञ्जलिम् ॥ अर्घं ॥

अधृष्यं सर्व लोकानां यन्मनस्तन्नियामकं

पूजयामि समीचीनं चारित्राचारमर्चितं ॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तये इदं जलं गंधमित्यार्घ्यं ॥

यद्वागव्यापारजानेक दोष संगविवर्जितं । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं वाग्गुप्तये इदं जलं गंधमित्यार्घ्यं ॥ .

शरीराश्रवसंचार परिहारविनिर्मलं ॥

ॐ ह्रीं काय गुप्तये इदं जलं गंधमित्यार्घ्यं ॥

ईर्यासमिति संशुद्धमतिचार विवर्जितं ॥ पूजयामि० ॥

ॐ ह्रीं ईर्या समितये अर्घं ॥

चतुर्विध महाभाषा शुद्ध संयम संगतं ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं भाषा समितये अर्घं ।

एषणाशुद्धि संशुद्ध, यत्प्रवृद्धं त्रिभागतः ॥ पूजया० ।

ॐ ह्रीं एषणा समितये अर्घं ॥

यस्मिनादान निक्षेपौ स्यातां संयम वृद्धये ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपण समितये अर्घं ॥

व्युत्सर्गेण विशुद्धं यत्कर्म व्युत्सर्ग कारणं ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठापनासमितये अर्घं ॥

सौरभ्यहृतसद्भृंग सारया जलधारया ।

मनोगुप्ति, प्रपूर्वाणि तदंगानि यजामहे ॥ जलं ॥

चारु चन्दन कश्मीर कर्पूरादि विलेपनैः ॥ मनोगु ॥ चन्दनं ॥

अक्षतैरक्षतानंत सुखद न विधायकैः ॥ मनोगु० ॥ अक्षतं ॥

जाती कुन्दादि राजीव चम्पकानेक पल्लवैः ॥ मनोगु० ॥ पुष्पं ॥

खाद्यैराद्य पदैः स्वाद्यैः सन्नाज्यैः सुकृतैरिव ॥ मनोगु० ॥ नैवेद्यं ॥

दशाग्रैः प्रस्फुरद्रूपैर्दीपै पुण्य जनैरिव ॥ मनोगु० ॥ दीपं ॥

धूपैः संधूपितानेक कर्मभिः सुख कारिभिः ॥ मनोगु० ॥ धूपं ॥

नालिकेराम्रपूगादि फलैः पुण्य फलैरिव ॥ मनोगु० ॥ फलं ॥

कर्माणि हि महारोगा नश्यन्ति यत्प्रयोगतः ।
सच्चारित्रौषधायास्मै ददामि कुसुमाञ्जलिम् ॥ अर्घं ॥

(जाप्य १३ कुर्यात्)

ॐ ह्रीं अहिंसा पूर्व त्रयोदश विधि सम्यक्चारित्राचाराय नमः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं असत्यविरत महाव्रताय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं चौर्यविरत महाव्रताय नमः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मैथुनविरत महाव्रताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परिग्रहविरत महाव्रताय नमः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तये नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं वाग्गुप्तये नमः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं काय गुप्तये नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं ईर्या समितये नमः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं भाषा समितये नमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं एषणा समितये नमः ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समितये नमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं प्रतिष्ठापना समितये नमः ॥ १३ ॥

॥ एभिर्मंत्रै र्जाप्य कुर्यात् ॥ अर्घं चापि समुद्धरेत ॥

॥ जयमाला ॥

स्रग्धराच्छंदः-नद्धे पोद्धे पद्मृतिन्यरुणदशिकृतानेकघोरोपसर्गे,

यस्मिन्रागोपि नस्यान्मलयजकुसुमं, दीयते भक्ति भाजा ॥

स्वर्णे जीर्णे तृणेवा, भवतिसमतुला, पुण्य पापाश्रवेऽपि ।

सम्यक्चारित्रमेतत्तदहमिहमहे, पूजयाम्यादरेण ॥ १ ॥

स्वात्मानं योगिनो यस्माल्लभंते शुद्ध चेतसः ।

नमः समस्त माराय चारित्रायामलत्विषे ॥ २ ॥

यानि कानि तु सौख्यानि जायन्ते तानितद्वशात् ॥ नमः सम० ॥ ३ ॥

दौर्गतानि तु दुःखानि यद्दते लभते नरः ॥ नमः सम० ॥ ४ ॥

लोकालोक त्रिभागात्मा यतः प्राप्नोति केवलं ॥ नमः सम० ॥ ५ ॥

यच्छ्रद्धानान्नृणां जन्म सफलं सफलं भवेत् ॥ नमः सम० ॥ ६ ॥

लक्ष्मी लोचन लक्ष्याङ्गं यत्करोति नरं वरं ॥ नमः सम० ॥ ७ ॥

चक्रिणां तीर्थ कर्त्तृणां येनयाति पदं नरः ॥ नमः सम० ॥ ८ ॥

मुक्त्वायन्नापर किञ्चित् योगिनो योग जन्म कृत ॥ नमः सम० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राचाराय महार्घं ॥

विधायेत्थं मना पूजां चारित्रस्य विशुद्ध धीः ।
करोमि पूर्ववत्सर्वं मर्घ्यादिक्रमनिर्न्दितम् ॥ १ ॥
स्तुत्वेति बहुधा स्तोत्रै र्बहु भक्ति परायणः ।
नानाश्चर्यैः समं लोके करोत्यानद नाटनम् ॥ २ ॥
अलंकृतायेन सदाश्रयंति सत्साधवः सिद्धि वधूवरत्वम् ।
मालामुपक्षिप्य सुरत्न पूतां, चारित्र रत्नं परिपूजयामि ।३॥

॥ रत्नांजलि. ॥

अन्तर्लीन मलीमस प्रसरजिन्लीलोल्ल सत्केवलं,
लोकालोकविलोकन, क्रमगुण, ग्रामैक शुद्धिं नयत् ॥
येनालंकृत विग्रहाः, क्षणमपि; क्षीणा नरानिर्मला ।
नैर्मल्यं प्रतिपद्य शाश्वत तमं, वन्दे० चरित्रं च तत् । ४ ॥
ततोऽपि गुरुणा दत्ता-माशिषं शिरसा सुधीः ।
गृह्णाति व्रतनिमुक्तोः मुक्तये व्रत कारकः ॥ ५ ॥
अनंतानन्त संसार कर्म विच्छित्ति कारकम्
देयाद्वः संपदः श्रीमच्चरणं शरणं नृणाम् ॥ ६ ॥

॥ मालिनी ॥

विरम विरम संगान्मुञ्च मुञ्च प्रपञ्चं, विसृजमोहं विद्धिविद्धि स्वतत्वं ।

कलय कलय शून्यं पश्य पश्य स्वरूपं । कुरु कुरु पुरुपार्थं निर्वृ ता नन्द हेतोः ॥ ७ ॥

इत्याशीर्वादः ॥

❀ जयमाला ❀

घत्ता–रयणत्तय सारउ, भव्व पियारउ, सयलह जीवह दुरियहरो ।
मुणियण गण महियउ, गुण गण सहियउ, मिच्छमोह मयणास करो ॥ १ ॥

पणवीस दोस वज्जिउ पवितु, अट्ठयार रहिउ वसुगुण त्रिजुत्त ।
अट्ठंगई णिम्मल विप्फुरंति, जो तिरहं देवत्तण विलिति ॥ २ ॥

णारइयवि तित्थयरा हवंति देव वि ए इन्दिय पउ लहंति ।
जे मिच्छत्तय सम्मत्त हीण, दालिद्दय णासिय ते धणीण ॥ ३ ॥

मइ सुय अवही मणपज्जणाण, केवलु वि कहिज्जइ मदूवणाण ।
अण्णाणे तिण्णइ भणई जोइ, कुच्छिय मिच्छत्त जई न होइ ॥ ४ ॥

वोभुव णिम्मल पवणुवि असंग, परि अजिउ विकणयर मुत्ति संग
लोया लोहाविजयउ णियोइ वहु भेयह जउ चारित्त होइ ॥ ५ ॥

पंचाइ महव्वय समिदि पंच, गुत्तणउ तिणि पय जिय अवंच ।
पुण पचायार तिभेय जुत्त, मुणि धम्म कहहि देविन्द वुत्त ॥ ६ ॥

घत्ता–जिहि तिण्णि णिवार चिरू, गहणमुणे मुइ, अंधउ आलस्सउपंगुलवि ।
जिणवर भासिय, तिण्ण तरइ विणु, मुत्तिण भण्णइ गणपइ वि ॥ महार्घ्यं ॥

इन्द्रवज्रा—दुरंत संसार वने विषण्णे, वम्भ्रम्यते येन विना जनोयं ।

भवाम्बुधौ तद्भुवि नामरत्नं, रत्नत्रयं नौमिपरं पवित्रं ॥ १ ।

अलक्ष्य लक्ष्य प्रतिबंधभेदी, योगीश्वरो यद्वशगः क्षणेन ॥ भवाम्बु० ॥ २ ॥

अनेक पर्याय गतेरभावाद्यस्मादनंतं लभते शरीरी ॥ भवाम्बु० ॥ ३ ॥

जनोभवेद्ये नजितान्तरंगं, स्वर्गापवर्गामलसौख्यखानि । भवाम्बु० ॥ ४ ॥

तं नारकं दुःखमसह्यमस्मादुपासकानां विलयं प्रयाति । भवाम्बु० ॥ ५ ॥

प्रभावतो यस्य पृथग्जनौघाः; स्वर्गाधिपत्यं क्षणतो लभंते । भवाम्बु० ॥ ६ ॥

हत्वा विघ्नानि सर्वाणि यानि कानिपुरा कृतैः ।

सम्यग्रत्न त्रयं पूतं, मंगलं वितनोतु वः ॥ ७ ॥

नरामर कृतानेकैरुपसर्ग निवारकैः । सम्यग्रत्न० ॥ ८ ॥

विपत्संपति नाशाय संपत्संपत्ति करणम् ॥ सम्यग्रत्न० ९ ॥

तुष्टि पुष्टि करं नित्यं, सर्व रोगापहारकं ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १० ॥

यद्दारिद्र्य महावल्ली दहनैक दवानलं ॥ सम्यग्रत्न० ॥ ११ ॥

संकल्पि कल्पितानेक दान कल्प द्रुमोपमं ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १२ ॥

यद्भाः शुद्धि सामान्यं, दुर्लभं द्रव्य कोटिभिः ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १३ ॥

मंगलानां हि सर्वेषां, यदेवामल मंगलं, ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १४ ॥

दुर्भिक्षादि महादोष, निवारणं परापरं, कुर्वन्तु जगतः शांतिं, जिनश्रुत मुनीश्वराः ॥ १५ ॥

सम्यक्त्वं पूजकानां हि प्रयच्छंत्यनघं पदं । कुर्वंतु० ॥ १६ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण विघ्ना नश्यंति मूलतः । कुर्वन्तु० ॥ १७ ॥

पदार्थान्नमतेप्राणी यत्प्रासादैः प्रसीदतः । कुर्वन्तु० ॥ १८ ॥

दृष्टाः पृष्टाः स्मृताः संतो येनंतसुखदायकाः । कुर्वन्तु० ॥ १९ ॥

येषामाराधका नित्यं, नजेयास्त्रिदशैरपि । कुर्वन्तु० ॥ २० ॥

सिद्धा बुद्धा विशुद्धा ये प्रसिद्धा जगतां त्रये । कुर्वंतु० ॥ २१ ॥

नानागुण महारत्ना-लंकृता निरलंकृताः ।

कुर्वन्तु जगतः शांतिं जिन श्रुत मुनीश्वराः ॥ २२ ॥

विसर्जन मत्र ॥

❀ सप्त ऋषि पूजा ❀

श्रीमद्गणेन्द्र हिमवन्मुख निर्गताया, मुनि प्रस्सरिति चारू विनिर्गतायां,

स्नातानेक विधि धर्म तरंगिकायां, योगीश्वराननघरत्नधरान्समर्चे ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण योगीन्द्र स्थापनार्थं सुमनाञ्जलि क्षिपेत् ।

॥ श्री दक्षिण योगीन्द्र पूजन प्रतिज्ञा ।

त्रिपथगा यमुनानघनर्मदा, प्रभृति पुण्य जलाशयजैर्जलैः ।

सुजन चित मधुव्रत रंजित, गुरू पदाम्बुज युग्ममहंयजे । जलम् ॥

सुरभिताखिल दिङ्मुख नंदन प्रभव चंदन सौरभहारिभिः ।

परिमलोत्कट कुंकुम चंदनैश्चरणयोर्गुरु पूजनमारभे ॥ चन्दनम् ॥

विगत खंडमुखैर्धवल प्रभैः कमलबीजमयैर्विभुषाक्षतैः ।

अति नवैरिव पुण्यलवैर्भजे, पुरूवरांघ्रि सरोजयुगं शुभम् ॥ अक्षतं ॥

विकमनोत्तमवासविलंभितैरविकृतैश्च मरालि निसेवितैः

शुचितरैः कुसुमैरहमादरात्–परिचरामि पदे परमं गुरोः ॥ पुष्पम् ॥

पूरट मंडन भाजनगैः शिवै, श्वरूवरैर्घृतपूर सुपूरितैः ।

अमृतजैरिव पिंड चयैर्यजे, मुनिवर क्रम पंकजमुत्तमम् ॥ नैवेद्य ॥

महित सुप्रभयोत्प्रभतारका–वलिकयेव सुदीपक मालया ।

अरूण गगनरवांशुसमुज्ज्वलं, परिचरेम्बुज पाद युगं गुरोः ॥ दीपन् ॥

अविरलैरप धूपकृशानुजै, गगनजैर्वर धूप समुच्चयैः ।

अगुरूजैर्हरिचंदन गंधिभिर्यतिपते पदवारिजमर्चये ॥ धूपम् ॥

नयन भृंग महोत्सव कारिभि परिणतैः सुधयैव विनिर्मितैः

मधुर चित्ररसैर्विविधैफलैः कृतमनो विनयं जयमर्चये ॥ फलम् ॥

विद्या सागर पार दर्शन वराः ; काष्ठान्वयोद्योतिनः ।

स्वानंदं परमंगताः कृततपो–ध्यानाः कृपाम्भोघनाः ॥

येच प्राक्तनकर्म दाव दहने मेयामहेन्द्राभिधं

कीर्तिंगामनुकंपयंतु गुरवः, पुष्पाञ्जलिः प्रार्थिता ॥ अर्घं ॥

इति दक्षिणयोगीन्द्र पूजा ॥

॥ अथ वाम योगीन्द्रार्चनम् ॥

योगार्यमोदय बलेन निहत्य दूरं. मोहान्धकारमखिलं नयनानुरोधं ॥

यैः संयतैः सकल वस्तुमयो हि लोको, दृष्टस्तदघ्रियजनं वरमत्रकुर्वे ॥

ॐ ह्रीं वाम योगीन्द्र स्थापनार्थं पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

॥ श्री वाम योगीन्द्र पूजन प्रतिज्ञा ॥

परम गंधमनोहर श्री करेत्याद्यष्ट कं देयं ॥ इति वाम योगीन्द्रपूजा ॥

प्रथमः सुर मन्युश्च, भीमन्युर्हि द्वितीयक. ॥

अन्यः श्री निचयोनामा, तुरीयः सर्व सुन्दरः ॥

पंचमो जयवान् ज्ञेयः षष्ठोविजय लालसः

सप्तमो जय मित्राख्यः सर्वे चारित्र सुन्दराः ।

चारणर्द्धि समरुढाः वसुवुर्ये मुनीश्वराः ॥

स्थापयित्वा प्रपूज्येहं, तान्मुदा शांति हेतवे ।

इत्युच्चार्य लिखितनां सप्तर्षिणामुपरि कुंकुमाक्षतानि विकिरेत् ॥

(उक्त श्लोक पढ़कर सप्त ऋषि की स्थापना के लिये पुष्प तथा अक्षत क्षेपण करे)

॥ अथ प्रत्येक पूजा ॥

श्री सत्सुचारित्र विभूषितंयं, तपोनुभावाचत व्योममानं ।
आद्यं मुनिनां भव संख्यकानां, समाह्वयेत्त सुरमन्यु संज्ञं ॥

ॐ ह्रीं सुरमन्युषे अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनं ।
अत्र मम सन्निहितोभव २ वषट् सन्निधिकरणम् ॥

ॐ ह्रीं सुरमन्यु ऋषये जलम् । गंधं, इत्यादि सर्वत्र प्रयोज्यं ॥

इस प्रकार ॐ ह्रीं इत्यादि मन्त्र पढ़कर अलग २ आठों द्रव्य चढ़ावे । एवं आगे भी इसी प्रकार सातों ऋषियों की अलग २ स्थापना कर के मन्त्र पढ़ कर आठों द्रव्य चढ़ावे ।

नैकव्रतो यस्य बभूव लोको, निरामय सत्यतपोधनस्य ।
श्रीमन्यु रित्याख्य तया द्वितीयं, तमाह्वये शांति करं नराणाम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये अत्रावतरवतर इत्यादिना स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये जलं इत्यादि ।

ध्यानाग्निदग्धाऽशुभकर्मकक्षं, निः संगवृत्तं बहुशील पात्रं ॥
प्राज्ञं बुधानां सुखदं प्रजाया, आरोग्यये श्रीनिचयं तृतीयं ॥

ॐ ह्रीं श्री निचय ऋषये आत्रावतरावतरेत्यादिना स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्री निचय ऋषये जलामित्याद्यष्टकं देयं ॥

अनेकधा संयम तोयसेकैस्तपो नगो यस्य सुधर्मशास्त्र ।
आपैः फलैः संकलितस्तुरीयं, संस्थापये सुन्दरमादि सर्वम् ॥

ॐ ह्रीं सर्व सुन्दर ऋषये अत्रावतरा वतेरत्यादि ।
ॐ ह्रीं सर्व सुन्दर ऋषये जलमित्याद्यष्टकं देयं ॥

वचो यदीयं वहु भव्यसंघ, प्रमोदयामासजिनेशमार्गे
अपि गणेशागमनेत्र निष्ठ, सः पंचमःसंजयवान ऋषिणाम्

ॐ ह्रीं जयवान् ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादि
ॐ ह्रीं जयवान् ऋषये जलमित्याद्यष्टक देयं ।

मेघागमे यो मथुरा नगर्यां, न्यग्रोधमूलेसह परमुनीन्द्रैः ।
संस्थाप्य रम्याम्बर चारणर्द्धिं संस्थाये वैनयलालसं तं ॥

ॐ ह्रीं विनयलालस ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादि० ॥
ॐ ह्रीं विनयलालस ऋषये जलम् । इत्यादि अष्टकं देयं ।

यन्नामतो माथुरसर्व लोको, विमुच्य रोगान् बहु दुःख देयान् ।
सुखी हृषीक बहुधा प्रपद्ये, त्वमेव शान्त्यै जयमित्र संज्ञं ॥

ॐ ह्रीं जयमित्र ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादि ॥
ॐ ह्रीं जयमित्र ऋषये जलम् इत्याद्यष्टकं ॥

❀ समुच्चयाष्टकम् ❀

अंभोभिरंभो जयरागमिश्रै, शेते वसुग्रैर्यहनिलसमानैः

अमर्त्य मंथादि मुनीश्वराणाम् प्रक्षालयामो वरपादयुग्मम् ॥

ॐ ह्रीं सप्तर्षिभ्यो जलम् यजामहे स्वाहा ।

सुचन्दनैश्चन्द्रगतैश्चशीतैः ऋषीश्वराणां वचनानुगीतैः ॥ अमर्त्यं मं० ॥ चन्दनम् ॥

अक्षाक्षतै निंस्तुष धौतरम्यैः, नालाक्षि सौदूगत्यकरैश्चदीर्घैः ॥ अमर्त्यं० ॥ अक्षतम् ॥

तपः प्रभावाजितकाम त्यक्तैर्गतानुमोदैरिव पादलग्नैः ॥ अमर्त्यं० ॥ पुष्पम् ॥

त्यक्तं यतीशैरिवसर्पिपूर पूरःस्थितं भाति रसैः समृद्धम् । अमर्त्यं० ॥ नैवेद्यम् ॥

तपः प्रदीप्यैव विनिर्जितायै, प्रदीपिका सेवितुमागतांस्तान् । अमर्त्यं० ॥ दीपं ॥

वैराग्य भावेन निवेषितायै, मुनीश्वरैस्तानपिधूप धूम्नान् । अमर्त्यं० ॥ धूपम् ॥

आसादितारंग मुमोच मोचै रन्यैनूनै र्वहुभेद युक्तैः । अमर्त्यं० ॥ फलम् ॥

सद्वृत्तामलरत्न भूषण भृतां सत्संयतानां वराम्

इज्या सज्जल चन्दनाक्षत चयैः पुष्पान्न संदीपकैः ।

धूपैर्दिव्यफलैसु भक्ति मनसो, ये कुर्वते तेनराः ।

सर्वोपद्रव व्याधिभेद रहिता. यान्त्येवसौख्यं परम् ॥ अर्घं ॥

ॐ ह्रीं सुरमन्यु ऋषये नमः । ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये नमः । ॐ ह्रीं श्री निचय ऋषये नमः ।

ॐ ह्रीं सर्वसुन्दर ऋषये नमः। ॐ ह्रीं जयवान् ऋषये नमः। ॐ ह्रीं विनयलालस ऋषये नमः।
ॐ ह्रीं जयमित्र ऋषये नमः॥ एभि मंत्रै जाप्यं कुर्यादर्घंचापि समुद्धरेत् ॥

(इस प्रकार ७ जाप्य देकर अर्घ चढ़ावे)

॥ जयमाला ॥

ऋषिनिकर महं सारं, नाकेश्वर सकल सौख्य दातारं ।
ईज्यपति गुण हारं, निर्मलध्यानाग्नि दहति संसारं ॥ १ ॥
अयमनिराश, जित चित्तदोषगतकर्मपाश ।
जय जयनिष्काम, संयत सुरमन्यु सुसौख्य धाम । २ ॥

भावित सुभाव, निर्नाशित पीन समेश्वरराव । श्री मन्युदेव, जयविहित दविश्वरस्वचर सेव । ३ ॥
श्रीनिचयनोसि, सुखदातानिर्मलगततमांसि । नष्टानिवेही, जय बोधिसतो मे देवदेही ॥ ४ ॥
निखिलैर्नतोसिः लोकैर्भक्त्या जय तव तपांसि । जनतापहानि, सर्वादिसुन्दर सौख्यदानी ॥ ५ ॥
चारित्रनीर, विध्यापितकामानल सुधीर । जयवान ऋषीश, जयमोह नाग विषनाग विष ॥ ६ ॥
दुर्गोपसर्ग, दूरीकृत तर्पितभव्यवर्ग । तत्वार्थ भाव, वैनयलालस जय निरभिलाप ॥ ७ ॥
ज्ञानौघ गेह वरचारणर्द्धिभूषित स्वदेह । नष्टोरूरोग, जय जय जयमित्र सुत्यक्त भोग ॥ ८ ॥

घत्ता—इति जयमाला, भक्ति विशाला, येपठंति भवियणनराः ।
ते सविसुखसक्ता, गुण गण रक्ता, यातिसुख बहु विघ्नहराः ॥ महार्घं ॥

येषां संग समुद्य मुद् गतमहग्रातात्चसंपूर्णितो. बंधो भूरि नरादि कालनिचिते सुत्कर्मणां क्लेशदे । तेभ्यो भव्यजना तपोधन चराः सप्तर्षि संज्ञाभृतो । नित्यं पुत्र कलत्र धान्य धनदा कुर्वंतु वोमंगलं ॥

इत्याषिर्वाद ॥

॥ श्री अनंत व्रत पूजन विधान ॥

प्रणिपत्य महावीरं, वक्ष्ये पूजा विधानकम् ।
अनंत व्रततत्वस्या,–नंत सौख्यस्य सिद्धये ॥ १ ॥
चतुर्दशं तीर्थंकरेषुवंद्यं, समाह्वयाम्यत्र जिनेन्द्रवर्यं ।
अनंतनाथं जित मोह मारं, चतुष्टयानंत विभूषितांगं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री रिषभ नाथ तीर्थंकर अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री रिषभ नाथ तीर्थंकर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री रिषभ नाथ तीर्थंकर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(ऊपर का श्लोक पढ़ कर इसी प्रकार चौदहों पुजाओं में अलग २ भगवान की स्थापना करे)

॥ अनंत यंत्र स्थापित करे ॥

देव सिन्धु यमुनादि संज्जलैः सुरभिवस्तु मिश्रितैः ।
पावनैरमृतसौख्यदायकम् तीर्थ नाथ वृषभं यजाम्यहं ॥ जलम् ॥

गंधलुब्ध मधुपैः सु चन्दनैः, कुंकुमाद्य घनसार मिश्रितैः ।
जन्म मृत्यु भव ताप हारकैस्तीर्थनाथ वृषभं यजाम्यहं ॥ चन्दनम् ॥

कुंद चन्द्र कर हार शुभ्रकैः, स्तन्दुलैः सुरभि शालि संभवैः ।
देव मानव मुनीन्द्र सेवितम्–तीर्थनाथ ………… ॥ अक्षतम् ॥

मालती कमल कुंद केतकी, पाटला बकुल चम्पकोद्गमैः ।
काम कुंजर निशात तोयतैस्तीर्थनाथ ………… ॥ पुष्पम् ॥

पायसाज्य घृत पक्व पूरिका, घेवरोदन सुशाकशाकान्वितैः ।
पावनैश्चरुभिरिष्ट सिद्धये, तीर्थनाथ ………… ॥ नैवेद्यम् ॥

मोहतामस हरैः शिखोज्ज्वलै–श्चंद्रवर्ति घृत तैल निर्मितैः ।
दीपकैः विमल केवलीश्वरम् तीर्थनाथ ………… ॥ दीपम् ॥

कर्म काष्ठ दहने हुताशनं, चंदनागुरुसुधूपधूम्रकैः ।
गंध व्याप्त दश दिक्प्रदेशकैः तीर्थ नाथ ………… ॥ धूपम् ॥

मोच चोच कदली सुमाधवी पूगचिर्भट सुचूतसत्फलैः ।
नासिका नयन चित्त तोषदैः, तीर्थ नाथ ………… ॥ फलम् ॥

पानीय चन्दनवरोद्गम तन्दुलौघैः, नैवेद्य दीप शुभ धूप फलार्घ पादैः ॥
सं पूजयामि वृषभं जित मोह मल्लं, श्री नाभिराज तनुजं जयकीर्ति धारम् ॥ अर्घं ॥

❀ जयमाला ❀

रिषभ जिनेन्द्रं गतभवतन्द्रं, सुर नर पूजित पद कमलम् ।
भवजलतारं सुख निस्तारं, मनः सुसिद्धयै गुण विमलम् ॥ १ ॥

शुचि पाप तमो भव बाल दिनं, भुवनत्रय पूजित पाद जिनं ।
वृषभं प्रणमामि जिनेन्द्रवरं, शिव सौख्य सुधारस पान करं ॥ २ ॥
शतपंचक चापसु दीर्घ तनुं, शुभ लक्षण हाटक वर्ण तनुं । वृषभंप्र, ॥ ३ ॥
नृप नाभि कुलाम्बर चन्द्रनिभं, मरू कुक्षि समुद्भव रत्न विभं । वृषभं ॥ ४ ॥
धन देव विनिर्मित कोष्ठसभं, जिनकांति विनिर्जित तिग्म विभं । वृषभ, । ५ ॥
शत शक्र समर्चित पाद कजं, रण भूमिनिपातितमानसजं । वृषभं० ॥ ६ ॥
वचनामृत तर्पित भव्य जनं, गगनांगण दुंदुभिनाद घनं । वृषभं. ॥ ७ ॥
निज दर्शनजीव कुवैरी हरं, शत योजन सौम्य सुभिक्षकरं । वृषभं. ॥ ८ ॥
अतिमायितमानव देव भरं, भुवनातिग संस्थित मुक्तिवरं । वृषभं. ॥ ९ ॥

घत्ता–जय वृषभ जिनेन्द्रं ध्वनिघन केन्द्रं, जन्म जरान्तक भय हरणं ॥
त्रिभुवनमणि भूषं, गतधन दूषं: जयकीर्ति विद्धि हि शरणम् ॥ १० ॥

॥ श्री अजित नाथ पूजा ॥

त्रिपथगामृत सागर वारिणा, सुरभिवस्तुसु शीतल कारिणा ।

जनन मृत्यु जराभय हारिणा, परियजे ऽजितनाथमहं श्रियै: ॥ जलम् ॥

प्रचुर कुंकुम पंक विमिश्रितै, मलय पर्वत संभव चन्दनैः ।

विविधताप हरै भुवनाधिपं, परियजे०… … ॥ चन्दनम् ॥

सुरभि शालिज तंदुल पुंजवैः कुमुद, वल्लमहार हिमोज्ज्वलैः

कनक पात्रगतैर्कमलाधिपं, परियजे०… … ॥ अक्षतम् ॥

विकसिताब्जसुकैरवमल्लिका, वकुल चंपक मोगर पुष्पकैः ।

मधुर गंधसमाहृतषट्पदैः परियजे०…… ॥ पुष्पम् ॥

कटक घेवर मोदक पूरिकाः बहुल पायस गव्य वरोदनैः ।

नयनचित्तहरैर्मधुरैर्नवैः परियजे०…… । नैवेद्यम् ॥

शशि दिवाकर धामसमानकैः, परमकांति तिरस्कृततामसैः ।

सुघनसारविनिर्मित दीपकैः परियजे० … … ॥ दीपम् ॥

अगुरू चूर्ण सु चनदन धूपकैः विगतधूमसु पावक संगतैः ॥

सजल नीरद पंक्ति समानकै, परियजे०…… ॥ धूपम् ॥

क्रमुक जंभल निम्बुक चोचकैं, प्रमुख कानन मध्य समुद्भवैः ॥

सुरभिपक्व फलैनयन प्रियैः परियजे० …… ॥ फलं ॥

विमल सलिल धारा, गंधपुष्पाक्षतोघैः,

विविध चरूभिरुद्यदीप धूपैः फलोघैः ।

अजित जिनवरेंद्रं पूजयाम्यर्घ्यदानैः
सकल विमल बोधं श्री ‹ याद्यंत कीर्तिः ॥ ९ ॥ अर्घं ॥

॥ जयमाला ॥

विगत मल कलंकं, विष्टपेशं विशंकं,
धृतं चरण सुभारं, प्राप्त संसार पारं ।
हत मदन मदेभं, स्वीकृतापेन्द्र शोभं,
विनमित सुरनाथं, कीर्तये लोक नाथं ॥ १ ॥

केवल नयन विलोकित लोकं, ध्वस्त पापरिपु जनित कुशोकं ।
अजित विजित कर्मारि समूहं, वन्दे सुनुतसु सुर नर व्यूहं ॥ २ ॥
ध्यानानल भस्मी कृत कामं, शरणागत केवल विश्रामं ॥ अजितवि० ॥ ३ ॥
प्रशम बाण हतकर्म कठारं, निजमत निर्जित परमत घोरं ॥ अजित० ॥ ४ ॥
श्री जितशत्रु महीपतिनुजं, विजयादेवी मोहित मनुजं ॥ अजित० ॥ ५ ॥
गगनान्दोलित चामर वृन्दं, शिरसि धृतच्छत्र त्रयबंधं । अजित० ॥ ६ ॥
रत्न त्रय संयम शुभचित्तं, मुक्ति वधूरस लिप्त सुचित्तं । अजित. ॥ ७ ॥
सूर्य कोटि भामण्डल भासं, दयाकलानिधिविमलाकाशं । अजित. ॥ ८ ॥
वचनामृत तर्पित गुण तानं, मानस्तंभ दलित परमानं, । अजित. ॥ ९ ॥

आयुः सप्तति पूर्व मु लक्षं, संस्तुत साकेतापुर रक्षं ॥ अजित. ॥ १० ॥

मालिनी=अजित जिनवरयोन्मुक्ति कांतावरस्य

विरचित जयमालां, भावपुष्पै विंशालां ।

पठति विमल भक्त्यायो जनः शुद्ध चेत्ताः,

स भवति भवमुक्तः श्री जयाद्यंत कीर्तिः ॥ पूर्णार्घम् ॥

॥ श्री शंभवनाथ पूजा ॥

ांगा क्षीराब्धितोयैर्मुनि वचन समैर्धर्मतापाप नोदैः ।

सद्यः तृष्णा प्रहारैः कलिमल हरणैः शुद्ध कर्पूर गोरैः ॥

ीगर्भोज्जन्मदीक्षा, समवसृति सभा केवला लोककाले ।

सेव्यं देवेन्द्र वृन्दैः जिनपतिममलं संभवं पूजयामि ॥ जलम् ॥ १ ॥

न्तः पापापनोदैर्मलयवन भवै,श्चन्दनैः केशराढ्यैः ।

गंधाकृष्टेभ कुंभस्थल गत मधुपै, घ्राणपेयैर्नराणाम् ॥ श्रीगर्भो० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

ुंभन्मुक्ताफलाभैर्हिमशशिकिरणोद्भासुरैः शुभ्रवर्णैः ।

प्रोद्यत्कुन्दावदातैः शकलविरहितैर्गंधशालेयपुंजैः ॥ श्रीगर्भो० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

न्दारैः पारिजातैर्बकुल कुवलयैश्चम्पकैश्चारुगंधैः ।

संतानैः पाटलाद्यैर्विकासित कुसुमैः सिन्धुवारैरनिन्द्यैः ॥ श्रीगर्भो० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नव्यै गंव्यैः पवित्रैश्चरूभिरतितरां व्यंजनैर्गंधवद्भिः ।
नित्यं वाष्पायमानै, र्घनरस निचितैः सूपशाल्योदनाद्यैः । श्रीगर्भो. ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ।

कर्पूर व्रात गतैः किसुरवि किरणैः केवलज्ञान तुल्यैः
दीपैर्ध्वस्तान्धकारै कनक मणिमयैः पात्रमध्याधिरूढैः ॥ श्रीगर्भो० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

धूम्रै कृष्णागुरूत्थैः सुरपति कमलं शीघ्रमाकृष्टुकामै–
र्भ्राम्यद् भृंगार नीघैरिव पवन वशात् प्रोच्छ्रूचै र्व्योममार्गैः ॥ श्रीगर्भो. ॥ धूपम् ॥

मोचा चोचाम्रराजादन पनसलं सन्माधवी मातुलिंगैः ॥
जम्भीराक्षोट पूगादिकफल निवहैर्मुक्ति कान्ता कुचाभैः ॥ श्री गर्भो० ॥ फलम् ॥

पाथोगन्ध प्रसूनाक्षत शुभचरूभिर्दीपधूपैर्फलोघैः ।
दूरीभूतोग्रबन्धं विविधरिपुजयोत्कीर्तये रत्नभूषं ॥ श्री गर्भो० ॥ अर्घं ॥

❀ जयमाला ❀

चतुस्त्रिंशदतिशयै, रष्ट प्रातिहार्यकैः ॥
भूषितं संभवंस्तौमि धृतानंतचतुष्टयम् ॥ १ ॥

निखिलामर पूजितपादकजं, व्रतकेशरि संहत कामगजं ।
प्रणमामि भवोदधिनीरतरं, जिन संभवमंहः पुन्जहरं ॥ १ ॥
भवदुःख दवानल मेघ जलं, हतमोह महारिपु दुष्ट बलं । प्रणमामि• ॥ २ ॥

अच्छाय निमेष सुदेहधरं, भृत शुद्ध सुसंयम भारवरं ॥ प्रणमामि० ॥ ३ ॥

नख केश विवर्धन संरहितं, विविधर्द्धिविभूषण संमहितं ॥ प्रणमामि० ॥ ४ ॥

सकलामय वर्जित संवपुशं, कनकोज्वलतूर्यशतं धनुषं ॥ प्रणमामि० ॥ ५ ॥

सुशतोत्तर पन्च गणेश नुतं, सुर मानव चर्चित कीर्ति युतं ॥ प्रणमामि० ॥ ६ ॥

वचनामृततोषित भव्य जनं, फल पुष्प सुपल्लव नम्र वनं ॥ प्रणमामि० ॥ ७ ॥

भुवने कुमताख्यतमस्तरणं, विगताश्रय देह भृतां शरणं ॥ प्रणमामि० ॥ ८ ॥

मालिनीछंद—परमगुण निधानं, कर्म वल्ली कुठारं, ।

त्रिभुवनपति सेव्यं सर्व लोकप्रदीपम् ।

दुरित तिमिर भानुं संभवं मंदबोहं ,

मनसि विगत सेव्यं, श्री जयाद्यंत कीर्ति ॥ ९ ॥ पूर्णार्घं ॥

॥ श्री अभिनंदननाथ पूजा ॥

त्रिविध जन्म जरान्तक शांतये, त्रिविधया मलया जल धारया ॥

शिशिरसीकर जालहतां हसा, समभिनंदन पाद युगं यजे ॥ जलं ॥ १ ॥

अतिहिमैर्हरि चन्दन घर्षजै: पटलितैर्वरगंधसुचन्दनैः ।

असुर दारुचयेके विभावसुं समभि० ... ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

विलसदक्षत धाम लतांकुर प्रकर बीजमयैः सितभाक्षतैः
रुचिकरै र्भव दारूणता हरैः समभि०······ ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
रतिमिवारचयद्भिरलिव्रजै-र्मधुर गुञ्जित कैरवतान्वितैः
बकुल चंपक मोगर पंकजैः समभि०······ ॥ पुष्पं० ॥ ४ ॥
वितुषशालिज भक्त मयैर्नवै, श्चरुभिराचित पाचित संस्तुतैः।
बहुविधैर्विमलैर्घृत पायसैः, समभि०······ ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
मणिगणैः प्रभयाजिततारकैः रविसुरालयजैस्तिमिरापहैः।
परिसर प्रसृत प्रभदीपकैः, समभि०······ ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
सुरपतेः श्रियमात्रजितु जनादवनितोऽम्बर मध्यगजैरिव
विततधूम्रभिषेणसुधूपकैः समभिपंदन०······ ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
अमृतजैरिव रक्ष रसायनै सुभतमैर्वर मोद विधायकैः
फलवरैर्फलवत्फल लब्धये, समभिनं०······ ॥ फलं ॥ ८ ॥
सलिल चन्दन पुष्प सुतंदुलै-श्चरु सुदीप सुधूपफलोच्चयैः।
प्रवरभक्ति चयोपहृतैर्मुदा, समभि०······ ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

❀ जयमाला ❀

आर्याछंद–अभिनंदनमघहार, भुवन त्रय वन्द्य सौख्य दातारम्।
नौम्युज्वल गुण धारं, ध्यानानल दग्ध संसारम् ॥

विबंध निसंध विरोप विदोप, विकाय विमाय वितोप विशोप ।
सुरोरग नेत्रमदाकृतसेव, जयाभिसुनंदन तीर्थ सुदेव ॥ १ ॥
विरोग विभोग वियोग विदेह, विपुत्र विशत्रु विद्दह विगेह ॥ सुरोरग. ॥ २ ॥
विमंत्र वियत्र वितत्र विगंध, विरोध विशोध विबोध विरंध्र ॥ सुरोरग० ॥ ३ ॥
विनेत्र विमित्र विशत्रु विदार, विमृत्यु विभृत्य विनृत्य विभार ॥ सुरोरग० ॥ ४ ॥
विचित्त विवित्त विपस्त्य विमोह विशंस विदंश विवंश ॥ सुरोरग० ॥ ५ ॥
विभास विपास विदास विलोक, विक्लेश विदेश विवेश विशोक ॥ सुरोरग० । ६ ॥
विदान विमान विपान विगीत, विधर्म विकर्म विशर्म विभीत ॥ सुरोरग० ॥ ७ ॥

घत्ता—अभिनंदन जिनवर, मुक्ति वधूवर, नाशित कर्म कलंक भर ॥
जयकीर्ति सुखाकर, धर्मदयाधर, जय जय भवजल नीरतर ॥ ८ ॥ महार्घं ॥

❀ श्री सुमति नाथ पूजा ❀

सुरवास समुद्भूतेरतोयैः कर्पूर वासितैः ।
हेमभृंगार नालस्थैः सुमतिं प्रार्चयाम्यहं ॥ जलम् ॥ १ ॥
सुगन्धद्रव्यसम्मिश्रै, श्चन्दनैर्मलयोद्भवैः ।
मृगाक्षवास घृष्टैश्च, सुमति.............. ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
अक्षतैः शालि संभूतै रूज्ज्वलैश्चन्द्र संनिभैः ।
कुशाग्राक्षालितसारैः, सुमति.......... ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

केतकी पारिजातैश्च: चम्पकैश्चोम रंजुकैः, ।

मन्द कुन्दोद्भवैः पुष्पैः सुमति·········· ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नानाविधैश्च पक्वान्नै, गद्यम्तन घृतोद्भवैः

विशिष्टैर्मोदकैर्वर्यैः, सुमति ········ ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

हेमपात्रगत स्थानैः, दीपैर्दीप्तिप्रभासरैः

विपुलः लोक कैर्दीपैः; सुमति ······ ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

कृष्णागुरु मयै रम्यैः धूपैर्वासितदिङ् मुखैः

धूम्रमाला विलासाढ्यैः, सुमतिं ··· ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

नारिकेलादि नारंगैः, कपित्थैर्बीजपूरकैः ।

क्रमुकाम्र फलैर्भव्यैः सुमति··· ····· ॥ फलम् ॥ ८ ॥

नीरैश्चन्दन संयुतैः सुकुसुमैः, शाल्यक्षतैरक्षतैः ।

नानाज्यादि सुपक्व गंधसहितैः नैवेद्यसार व्रजैः ।

भास्वद्दीपसुधूपसंयुत फलै,रर्चयेनित्यशः,

एतैर्वै वांछित प्राप्नुवतिसततं, जयकीर्ति चन्द्रोपितम् ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

राज्यंराज्य गजादिः कामकमला, गेहं तुरङ्गान्वितम् ।

यः श्रीमानमिरूप वस्तु निचितं, त्यक्त्वाश्रितो सर्वतः ॥

श्रामण्यं समवाप केवल मयं, ज्योतिः परं प्राप्तवान,

भद्रंनो सुमति प्रयच्छतुतरां तीर्थेश्वरः सोऽधुना ॥ १ ॥

गुण गण भूषितज्ञान करंडं, संसाराम्बुधितरणतरंडं ।

वन्दे प्रशमित कुनय समूहं, सुमतिंप्रदलित कर्म समूहं ॥ २ ॥

गर्भाधानेहरिशत सेव्यं, दिक्कुमारिकृतमातृनिषेवं । वन्दे प्रश० ॥ ३ ॥

मेरुशिखरकृतजनुरभिषेकं, रोधः प्रसरित कीर्ति निषेकं । वन्दे० ॥ ४ ॥

त्रिभुवन जन नयनोत्पल चन्द्रं, ध्यानाध्ययनविनिर्जित तन्द्रं ॥ वन्दे० ॥ ५ ॥

रुधिर दुग्धचित चर्मसुपात्रं व्यंजन लक्षण लक्षित गात्रं ॥ वन्दे० ॥ ६ ॥

वज्र वृषभ नाराच शरीरं, समचतुरस्राकार गंभीरं ॥ वन्दे० ॥ ७ ॥

मलवर्जित समभाव स्वरूपं, निस्वेदं ज्ञानामृत कूपं ॥ वन्दे० ॥ ८ ॥

षट् चत्वारिंशद्गुण गौरं, कौसलपुर परिपूरित पौरं ॥ वन्दे० ॥ ९ ॥

दुर्धर योग चरित्रसुधरणं, कृतसम्मेदाचल शिववरणम् ॥ वन्दे० ॥ १० ॥

मालिनीच्छंद--अनुपम सुखकर्ता, दुःख संत प्रहर्ता,

प्रहत जनन कालः, स्फोटित ध्वान्त जालः ।

स जयतु जिन नाथः पंचमः प्राज्ञितात्मा,

सकल विमल मूर्ति, श्री जयाद्यं त कीर्ति ॥ महार्घं ॥ १ ॥

॥ श्री पद्म प्रभ पूजा ॥

विलिम्प पति वाहिनी, प्रभृतितीर्थ रम्योदकैः,
सुरेन्द्र वचनोपमैः भुवनसार संवासितैः
अमेयमहिमाकरं विकच पद्म भासां निधिं
महामिगुर सेवितं जिनवरेन्द्र पद्मप्रभं ॥ जलम् ॥ १ ॥

प्रभूत मलयोद्भवै सरस केशरालि श्रितैः
मिलिन्द निकरोद्भवत्सरस रम्य झंकारकैः ॥ अमेय० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

तुषार हेम नुकाम सिखरी शुकोज्वलै,
सुगंधवन शालिजैः सुहिमुषित बीजाङ्कुरैः ॥ अमेय० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

कदम्ब कुब मल्लिका बकुल कुंद नीलोत्पलै,
मेरु कुसुमोत्करैर्विकच सिन्धु वाराम्बुजै ॥ अमेय० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

निराज्य परिपाचितै,र्वटक सूप शाल्योदनै
क्षुधामयनिवारकैर्विमल हेम पात्रस्थितैः ॥ अमेय० ॥ नैवेद्यं ॥ ॥ ५ ॥

दिगंत तिमिरापहै मिहिर कोटि राशी प्रभैः
प्रबोधनिकरैरिव स्फुरित दीप रत्नैः रत्नै ॥ अमेय० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

मिलिन्द सुख कारणैरगुरु संगधूपोद्भवै
स्वभ्रगुरुधूपकैर्निचित सर्व काष्टाम्बरैः ॥ अमेय० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

रसाल फल कंदली क्रमुक चोचराजादनैः
महामधुर माधवी फल सु चित्तपूर्णदितैः ॥ अमेय० ॥ फलम ॥ ८ ॥

पयः सुरभिपुष्पकैश्चरुभिरक्षतै दीपकै
फलंतुलधूपकै र्यति कीर्ति संकीर्तितम् ॥ अमेय० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

घत्ता—जयवीर दयाकर, गुणरत्नाकर, सुखकर निर्मलशीलधरं ।
जिनकमलदिवाकर, कलिमल हरजिन, पद्मप्रभ शिव नारी वरं ॥ १ ॥

अजरामर केवलं लब्धिवर, शिवसौख्य सुधारस पानकरं ।
प्रणमामि भवोदधिपारकरं, जिनपद्मन विभासुर नादवरं ॥ २ ॥

पमसंयम भावकमारधरं, शतयोजनसौम्य सुभिक्षकरं; ॥ प्रणमामि० ॥ ३ ॥
कलि कल्मष पंक सुशोचकर, भवनार्जितगद्यसुवर्णधरं ॥ प्रणमामि० ॥ ४ ॥
निज भासुर भानु सहस्र रुचि, कृतदुर्धर काम कलत्र शुचिं ॥ प्रणमामि. ॥ ५ ॥
अभिमान महोरुह तोदकरं, गुणरत्न नदीपतिसारतरं ॥ प्रणमामि० ॥ ६ ॥
सविवेक गृहं हत मृत्युमदं, कुमतान्धतमोपहध्यानपद ॥ प्रणमामि० ॥ ७ ॥
कमलांकितसुन्दर देहधरं, कमलापति सेवित बोधभरं ॥ प्रणमामि० ॥ ८ ॥
हरि शकरधातृ सुदर्प हरं, हरितापसंयम लब्धिवर ॥ प्रणमामि० ॥ ९ ॥

शार्दूल विक्रिड़ितछंद—विद्यासागर पार दर्शन परः काष्ठान्वयो द्योतकः,

स्वात्मानद पयोधिमध्य विलसत्कल्लोलकेली करः ।

भास्वद्दिव्य पयोज कांति कलित पद्मप्रभः सत्प्रभ

जीयाद्रत्नमुनीश दीक्षित जयोत्कीर्तिस्तुतः संततम् ॥ महार्घं ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथ पूजा ॥

श्री क्षीरसागर सुरम्य तरग जातैः भृंगार सारमुख निर्जित चारुतोयै ।

देवेन्द्र चन्द्र नुत पाद पयोजयुग्म, तीर्थंकरं जिनसुपार्श्व मवंयजामि ॥ जलंम् ॥

सदगंधद्रव्यपरिपूरित चन्दनौघैः, सत्कुंकुमाभघनसार विमिश्रितागै ॥ देवेन्द्र, ॥ चन्दनम् ॥

क्षीरोद वारिज समुज्वल फेन कल्पैरिन्दु प्रभा निकर निर्मल तंदुलोघैः ॥ देवेन्द्र ॥ अक्षतम् ॥

मंदार चम्पक पयोज कदम्ब जातैः वृन्दारक प्रथित वृक्ष विशेष पुष्पैः ॥ देवेन्द्र ॥ पुष्पम् ॥

आज्य प्रपक्व घन चारुतरोद्यमोज्यैः, सदघेवरादिभिरनीक विधानयुक्तैः ॥ देवेन्द्र० ॥ नैवेद्यम् ॥

दीपैः सुहंसततिदीप्त्यभिधाम तुल्यैः अष्टापद प्रभृतिनिर्मितभाजनस्थै, । देवेन्द्र० ॥ दीपम् ॥

श्रीमद्गिरीन्द्र मलयोद्भवचारुधूपैः, गंधोरुभिर्हयभि समाहृत षट् पदोघै ॥ देवेन्द्र ॥ धूपम् ॥

द्राक्षा फल प्रमुखदाड़िम मातुलिंगैः, कम्राम्रपूग कदली फल नारिकेलैः ॥ देवेन्द्र० । फलम् ॥

वार्गंधपुष्प शुभ तन्दुल भोज्यदीपै., धूपैर्फलावलिभिरेव जयाद्यकीर्तिः ॥ देवेन्द्र० अर्घं ॥



❀ जयमाला ❀

जिनेन्द्रं शंकरं स्तौमि, सुपार्श्वं नाम धारकम् ।
सुतरां सेवितं पार्श्वं, यत्पदं शिव सौख्यदम् ॥ १ ॥

त्रिभुवन पतिनुत चरण सरोजः ब्रह्मचर्यजित सबल मनोजं ।
वन्दे स्वस्तिक लांछन देहं, केवलज्ञान सुधारस गेहं ॥ १ ॥
नील वर्ण सुन्दर शुभकायं, निर्जित मोह महाभटमायं । वन्दे० ॥ २ ॥
परम निरंजन कृतपदवासं, दिनकर कोटि तिरस्कृत भासं । वन्दे० ॥ ३ ॥
द्वादश गण धर्मामृत पोषं, दिव्यध्वनि योजन शुभ घोषं ॥ वन्दे० ॥ ४ ॥
लेश्याध्यानसु शुक्ल सुधरणं, भव भीतानां निर्भय शरणं ॥ वन्दे० ॥ ५ ॥
अष्टादश दोषैश्चाविमुक्तं, संख्यातीत गुणैः संयुक्तम् ॥ वन्दे० ॥ ६ ॥

मालिनीछंद—अखिल गुण निधानं, मंयतानां प्रधानं, दुरिततिमिरहंसं, मोह माया प्रणाशं ।
जगति जगति सारं मुक्ति नार्यंग हारं, जिनवर वर नाथं श्रीसुपार्श्वं नमामि । महार्घं

॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजा (८) ॥

स्वर्ग सिन्धु दारिणा, सुधाम गौर धारिणा
मुक्ति सौख्य कारिणा, जयोपमृत्यु हारिणा ।

निर्जराहि मर्त्यनाथ, सेवितांघ्रिमष्टम चन्द्रभास मर्चयामि तीर्थनाथ मीश्वरं ॥ जलम् ॥ १ ॥

शीतलेन चन्दनेन, केशरेणवासिना,
गंध लुब्ध षट् पदेन, पाप ताप हारिणा । निर्जरा० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

पुण्यशालि बीजकै, रिशाम्रहारपाण्डुरैः
वन्यशालि संभवैरखण्ड कोटि तन्दुलैः । निर्जरा० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

सिन्धु वार कर्णिका, पुण्डरीक मल्लिका ।
पारिजात केतकी, कदम्ब कुन्द चम्पकैः । निर्जरा० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नव्य गव्य सार तूप भक्त सक्त पायसैः
व्यञ्जनाढ्य पूरिका सुमोद कादिभिर्वरैः ॥ निर्जरा० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपकैः सुरत्नजात, निर्मितैः शिखोज्वलैः,
वातघात वर्जितैः सुपात्रमध्यसंस्थितैः । निर्जरा० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

व्योम भाग मंगतैरनघं धूप धूम्रकैः
नीरदालि सन्निभै कुकर्म मर्म दाहकैः । निर्जरा० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

कम्रकाम्र नारिकेल बीजपूर कर्कटी
गोस्तनी कपित्थ पुंगराज्यदय दाड़िमैः । निर्जरा० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

नीर गंधपुष्पकाक्षतादि हव्य दीपकै ।
धूप धूम्र सत्फलैः जयाद्य कीर्ति सेवितम् । निर्जरा० । अर्घं । ९ ॥

॥ जयमाला ॥

चन्द्रप्रभ जिन जय, हतसंभृतिमय, जन्म जरादि विपत्तिहरं ।
वन्दे शशिदेवं, विगतसंदेहं, सर्व जीव करुणा निकरम् ॥ १ ॥
जग चन्द्रप्रभ चंद्रांशु वर्ण, जय चन्द्रपुरी सुपवित्र करण ।
जय वज्र वृषभ नाराच काय, जय क्षीर रुधिर वर्जित अपाय ॥ २ ॥
आदिम संस्थान निःस्वेद खेद, मल वर्जित तर्जित पुरुष वेद ।
जय जय स्वरूप शुभ लक्षणांग, अप्रमित वीर्य प्रिय वचनरंग ॥ ३ ॥
अतिशय दस राजित सहज गात्र, जय घाति कर्म रिपु विजय पात्र
जय देव निर्जिता विशयशेष, वसुप्रातिहार्य भूषित सुदेश ॥ ४ ॥
सदनन्तचतुष्टय धरणवीर, जय सहस्र नाम सागर गंभीर ॥
जय समंतभद्र सुख करणरूप, वाराणसि प्रणमित सकल भूप ॥ ५ ॥
घत्ता–अष्टम तीर्थंकर, पाप तिमिर हर, चन्द्रप्रभ शशि कान्तिधरं ॥
जय रत्नसु भूषण, भुवन विदूषण, जयकीर्ये जय लक्षकरं । महार्घं ॥

॥ श्री पुष्पदन्तनाथ पूजा ॥ ६ ॥

दुग्धाम्बुधि प्रमुख तीर्थ समुद्भवैश्च, तोयैः सुशीतल वरैः परिपिंजराभैः ॥
गीर्वाण सार नरनाथ मुनीन्द्र सेव्यं, श्री पुष्पदंत जिननाथ महं यजामि । जलम् ॥ १ ॥

श्री चन्द्र नैर्मलवभूधर संभवैश्च, काश्मीर चन्द्र मिलितैरलि भ्ङ्कृतैर्वै ॥ गीर्वाण० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

श्री राजभोगवन शालि समग्र जातै, श्री तन्दुलैरमृतफेन हिमाम्बु वर्णैः । गीर्वाण० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

संतान चम्पक नमेरू कदम्ब पुष्पैः सौरभ्यरागमिलितालिकदम्बकैश्च ॥ गीर्वाण० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

शाल्योदन प्रचुर गव्ययुतूप शाकै,-रन्यून घेवर युतैश्च हविर्विचित्रैः । गीर्वाण० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपोत्करैस्तिमिर राशि विनाशदक्षैः सत्स्वर्ण पात्र सुगतैर्मणि भासुरांगैः ॥ गीर्वाण० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

कृष्णागुरु प्रमुखशुद्ध सुगंध द्रव्यैः धूपैर्विदीपित दिगंतर शुभ्रदेशैः । गीर्वाण० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीनारिकेल पनसाम्र सुबीज पूरैः, राजादनादि कदली फल दाड़िमैश्च ॥ गीर्वाण० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

पानीय गंध कुसुमाक्षत पक्व हव्यैः दीपैश्च धूप फलकै जयकीर्ति सेव्यं । गीर्वाण० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

घत्ता–श्री सुविधि जिनेन्द्रम् परमानंदं, सेवित सुरनर वर निकरं ।

वन्देऽहं गुणाढं, त्रिभुवनराजं, दर्शनज्ञान चरित्र धरम् ॥ १ ॥

जगन्नाथ सेव्यं, जगद्वंद्य पादं; जगन्मित्र मान्यं, हताशेष सादं ।

यजे भावशुद्धयान्वहं पुष्पदंतं, शुभैरष्ट द्रव्यैः शशिज्योति कान्तं ॥ २ ॥

विमोहं विशोकं विरोगं विदेहं, विमायं विकायं विलोभं विलेहं ॥

महाधीर वीरं, महाबुद्धिरूपं, महाज्ञान भानुं नरेन्द्रादि भूपम् ॥ ३ ॥

महाशीलधारं भवाब्लब्धपारं, महानन्य हारं महाकर्म कारं ॥

महामेरु शिखरे कृतस्नानमानं, परंदेव देवैं स्तुतध्यान मानं ॥ ४ ॥

समानंद रूपं सदानंत वीर्यं, सदानंत सात्व्यं सदानंत धैर्यं ।

सदा सिद्धि ग्राहं सदाकर्म दाहं, सदा मोह भानुं सदा कामराहुं ॥ ५ ॥

घत्ता—जय सुविधि स्वामिन् शिवपदगामिन् हरिहर चर्चित पदकमल

जयकीर्ति सु जयकर, कलिमल चयहर, चीर नीरसम कीर्तिधर ॥ महार्घं ॥

॥ श्री शीतल नाथ पूजा ॥ १० ॥

अमर सिन्धु समुद्भव सज्जलैः, सुघनसार पराग विमिश्रितैः ।

परम पंचम बोध निधानकं, दशम तीर्थकरं परिपूजये ॥ जलम् ॥ १ ॥

मलय भूधर संभव चन्दनैः, सरस केशर चन्द्र सुगन्धितैः । परम. ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

शशिकरामृतफेनसमानकैः, सुरभिशालि समुद्भव तण्डुलै ॥ परम. ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

परिमलाहृत षट् पद पंक्तिभिः वकुल चम्पक मोगर पुष्पकैः । परम. ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

प्रबल पायस गव्य सितान्वितैः, सुरभिभाजन मध्यसमाश्रितैः ॥ परम ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

सघनसार समुज्वलदीपकैः, परितिरस्कृत दिग्गज तामसैः ॥ परम० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

अनल साहुतं धूपसु पावकैः, गगनमार्गगतैरलिझंकृतै ॥ परम० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

फलसु चोच रसाल सुनिम्बुकैः, प्रमुख दाड़िम पक्व फलैर्वरैः ॥ परम. ॥ फलम् ॥ ८ ।

शालिनीच्छन्दः—नीरामोदैः, पुष्पकैस्तं दुलोघैः हव्यैर्दीपैः सत्फलैः धूप धूम्रैः ।
पूज्यं श्रीमच्छीतलंपूजयामि मोहाघ्निं श्री जयाद्य वकीर्तिः । अर्घं ॥ ९ ॥

❀ जयमाला ❀

आर्याछन्द— बितनोतुसुख समूहं, शीतलनाथस्तीर्थंकृतां दशमः ।
वांछित फलच दध्यात् भव्यानांतीर्ण भव-सिन्धु । १ ॥

शीतलनाथं श्रीपति वंद्यं, वन्देऽहीन्द्रनरेन्द्र विनन्द्यम् ।
नवति चापमित रम्य शरीरं, हेमरूचं गुण वृद्धि करीरं ॥ २ ॥

श्रीदृढ़ भूपति देहसुभूतं, मातृसुनन्दोदर परिसूतं ।
एक लक्ष पूर्वायुः सहितं, सम्मेदाचलमुक्ति सुमहितं ॥ ३ ॥

एकाशीशतगणपति राजं, त्रिशत्क्रोशसभाविभ्राजं ॥

घत्ता—जय शीतल नाथः, चातकपाथः, भवजल तारण वर तरणं ।
जय भव भय भंजन, जनतारंजन, जय कीर्तें निश्चल शरणं ॥ महार्घं ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथ पूजा ॥ ११ ॥

रथोद्धताच्छन्दः—स्वधुनी प्रमुख तीर्थ सज्जलै,– मिश्रितै सुरभिवस्तु शीतलै ।
पावनैरमृतसौख्य दायकम् श्रेयसः पदयुगं यजाम्यहं ॥ जलं ॥ १ ॥

चन्दनैर्मलय भूरुहोद्भवैः केशराढ्य घनसार मिश्रितैः ।
काम कुंजर महा मृगेश्वरं श्रेयस ······ ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

हार कुन्द कलिका समुज्वलैः, पेशलेश कलशालितंदुलैः
क्षीरसागर गभीरमीश्वरं, श्रेयस ····· ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

मल्लिकानल निकुन्द केतकी, पारिजात नव मोगरादिभिः
वांछितार्थ फल लब्धिहेतवे, श्रेयस··· ··· । पुष्पम् ॥ ४ ॥

नासिका नयन चित्त तोषदैः, पूरिका घृतवरेन्द्र स्वादुकैः
पावनैश्चरुभिरर्घं संपदे श्रेयसः ····· ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

सूर्यधाममदृशैः शिखोज्वलैः दीपकै सुघनसार मिश्रितैः
देव नाग नर नाथ सेवितं, श्रेयसं पद······ ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

वह्निसार गुरु धूप धूम्रकैः, व्याप्नुवद्भिरनुलं नभोगणं ।
मोहनीय घनवल्लि वारणं, श्रेयसः··········· ॥ धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफलाम्र कदली सुमाधवी, बीजपूर परिपक्वनिम्बुकैः ।
मोक्षरुवफलसिद्धिकारणं, श्रेयस ··· ······· ॥ फलं ॥ ८ ॥

मालिनीच्छंदः—विमल सलिल धारा, गंधपुष्पाक्षतोघैः, शुभचरुवरदीपै धूपयुक्तैर्फलोघैः
सुखकरजिनश्रेयांसं यजे चार्घदानैः त्रिभुवनमणिभूपं, श्रीजयाद्यं त कीर्तिम् ॥ अर्घं ॥ ९ ॥



॥ जयमाला ॥

श्रेयान् दिशतु वः श्रेयो० धर्मामृत पयोनिधिः
एकादशो जिनोध्येयः मुनीन्द्रोध्यान निश्चलः ॥
जय जिन श्रेयान् जिनदेव नमः, जयधीर कृतामर सेव नमः ।
जय सर्व कर्ममल रहित नमः, जय २ त्रिभुवनपति सहित नमः ॥
जय सकल गुणाकर वीर नमः, जयशुक्लध्यानधर धीर नमः ।
जय मदन दवानल मेघ नमः, जयनिराधार जन नाथ नमः ॥
जय गुण गण सेवित पाद नमः, जय जलधर ध्वनिसमनाद नमः ।
जय पुण्यांभोनिधिचन्द्र नमः जय सम्यकचारित धरण नमः ॥
जय कनक कांतिवर काय नमः, जय त्यक्त मोहमद माय नमः ।
घता—श्रेयान् श्रेयोवः, कर्मकलंक दह दृक्ष्वाकुकुल मंडनं ।
जयकीर्ति जयकृत, दुरित तमोहत, पन्चेन्द्रियमन दंडनं ॥ महार्घं ॥

॥ वासू पूज्य जिन पूजा ॥

शालिनी छंद— गंगा रेवा सिन्धु तोयैः, तृष्णा तापघ्नैर्घदानात्तुभार्जं ।
नित्यं दिव्य प्रातिहार्याष्टकाढयं, तीर्थेशं तं वासूपूज्यं यजामि ॥ जलं ॥ १ ॥
श्री खंडैश्च कुंकुमाद्यैरनिंद्यैः, भृंगोद्वृत्तैः कर्बुरैश्चन्द्रकाद्यैः ॥ नित्यं दिव्य० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

मुक्ताकारैस्तन्दुलैः सत्प्रशस्यैः कोटिद्वंदं संश्रिते पेरालांगै ॥ नित्यं दिव्य० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

श्री सतानैर्भूजसत्पारिजातैः, देवद्रूणां गंधवद्भिः प्रसूनैः ॥ नित्यं दिव्य० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

दिव्यामोदैः प्राज्य नैवेद्यवर्यैः दिव्यद्योति गंध नाघ्रायमानैः ॥ नित्यं दिव्य० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥

सन्माणिक्यै र्वन्ध कर्पूर जातैः स्निग्धैर्दीपैर्द्योति ताशाखिलांगै ॥ नित्यं दिव्य० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

गंधोदारैः धूप जालं वहद्भि, व्याप्तैर्धूपै शुद्ध कृष्णागुरुत्थै ॥ नित्यं दिव्यं ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

जंबीराम्रै कम्र नारिंग पूगै, पक्वैर्मिश्रैः श्रीफलै बीज पूरै ॥ नित्यं दिव्य० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

शार्दूलविक्रिडित छंद–वार्गंधोद्गमतंदुलैः शुभ चरु, दीपैश्च धूपै फलै०

रर्घ्यैर्दोष विवर्जितं जिनवर, श्री वासु पूज्यं यजे ।

काष्ठासंघ, सुरत्न भूपगणपदद्वन्देऽलिचक्रोपमं ।

सूरि श्री जयकीर्ति सेवित पदं, श्रद्धादिभक्तया मुदा ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

इन्द्रवज्रा च्छन्दः–श्री वासुपूज्यो विदधातु शांतिम् श्री, संघकस्येह सदा जिनेन्द्रः ।

चम्पापुरी प्राप्त महोदयश्च, पूर्वांगधारी शिशु ब्रह्मचारी ॥ १ ॥

वसुपूज्य कुलाम्बर पूर्ण शशी, रवि वंश विभूषण चित्त वशी ।

वितनोतु सुखं वसुपूज्यसुतः शिव साधक धर्मक्षमादियुत ॥ २ ॥

हरि शंकर सेवित पाद कज शुभचिंतन नाशितः पापरज । वितनोतु० ॥ ३ ॥

धनराज विनिर्मित सत्सुखदः, विफलीकृत काम कषाय मदः, वितनोतु० ॥ ४ ॥
निज केवल बोधित लोकभरः, निज सेवक वांछित सौख्यकरः, वितनोतु० ॥ ५ ॥
धरणी धर पूजित तीर्थ वरः, वरबोध विनाशित मोहभरः । वितनोतु० ॥ ६ ॥

घत्ता—वसुपूज्य जिनेश्वर, वर तीर्थेश्वर, भुवनेश्वर चर्चित चरणं ॥
जयकीर्ति सुखाकर, दुरित तिमिर हर, त्रिभुवन वर मंगल करणं ॥ ७ ॥ महार्घं ॥

❀ विमलनाथ पूजा ❀

सकल तीर्थ समुद्भव वारिभिः, सुरभि शीतल भावविशेषकैः
विविधताप हरैः सुख हेतवे, विमलतीर्थंकरं परि पूजये ॥ जलं ॥ १ ॥
सकल गंध समन्वित चन्दनैः, परम ताप निवारण कारणैः ।
परिमलाहृत षट्पद पंक्तिभिः विमल······ ॥ चन्दनं ॥ २ ॥
अनुपमैरमृताभि समुज्ज्वलैः, सुरभि शालि समुद्भव तंदुलैः ।
उभय पक्ष विखंडित कोटिभिः, विमल०····· ॥ अक्षतं ३ ॥
परिमलोत्कट पुष्प शरैर्वरैः; बकुल चम्पक पाटल मल्लिका ।
कमल मोगर जाति समुद्भवैः, विमल०······ ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
कनक वर्ण घृतैः फल भाजन श्चरुवरैर्वटकाज्य सुपायसैः ।
नयनचित्त सु नासा तोषदैः विमल०····· ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

रवि विमान समान सुनिर्मलैः विमल केवलज्ञान समानकै ।

सुघनसार विनिर्मित वर्तिभि विमल० ···· । दीपम् ॥ ६ ॥

मलय पर्वत जात समुद्भवै रति सुगंध पदार्थ विमिश्रितै ।

गगन मार्ग गतै शुभ धूपकैः विमल० ····· ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

फलभरै भुवि दाडिम मोचकैः, पनस आम्र कपित्थ कलिन्दकैः

परिमलोत्र सुपक्व मनोहरैः विमल० ······· ॥ फलम् ॥ ८ ॥

जलादि सच्चन्दन पुष्पकोघैः सदक्षतैर्हव्य सु दीपधूपैः

फलैर्यजे श्री विमलं जिनेन्द्रं, जयादि कीर्ति प्रणतं महान्तं ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

❀ जयमाला ❀

॥ मालिनीच्छन्दः —विमलतर सुकीर्ति, तैजस व्याप्त मूर्ति । सकलगुणगरिष्ठं, प्राप्तलब्ध्या वरिष्ठं ॥

विमल जिनवरेन्द्रम्, सिद्धयेस्तौम्यतन्द्रं, त्रिभुवन पतिनन्द्यं, भव्यवृन्दाभि वंद्यं ॥१॥

श्री जिन मन्दिरे, भावना संयुतं, नृत्यये अप्सरा हावभावान्वितं ॥

भावनी व्यंतरी, खेचरी, भूचरी, कल्पदेवी सरी, ज्योतिषी किन्नरी ॥ १ ॥

विभ्रमादि विलासैः सदा मंडितैः, कोकिला कंठला सप्त स्वर मंडितैः ।

मादिमा थेई थेई पादसंचारणं, धमपधों धमपधों मादलाधारणं ॥ २ ॥

योगणि योगणि गज्येन्मन्डलं, शब्दये भौं भौं भौं भौं भूंगलं ॥

दुमि दुमि दुमि दुमि दोदलं गज्जये, झूमिकै झूमिकै घूघरी घूमरैः ॥ ३ ॥

रेणुकै रेणुकैः झल्लरी झूमये, तूर वज्जंति णाणा विहप्पाडियं ॥

पीयमी पीयमी वंश विशालये, खीणिपी खीणिपी कंस कंसालये ॥ ४ ॥

द्रुं द्रुमं द्रुं द्रुमं शंख घन शब्दये भौमि भौमि भौमि भौमि भेरी रव शब्दये

भेरवा सु पंच राग मेघ मल्हारये, राग षट्त्रिंश संगीत सद्ध रये ॥ ५ ॥

नीर गंधादिभिः द्रव्यकै श्चारये, गीत नाट्यादिभिः पुष्पकैरर्चये ।

श्री विमल नाथको देव देवीश्वरैः पूजितोऽष्टधा विभु द्रव्यसत्समुत्करैः ॥६॥

घत्ता–निखिल यतिनिसेव्यं, देव देवेन्द्र सेव्यं, विमलगुण समुद्रं, केवलज्ञान चन्द्रं ॥

अमितगुणगणेन्द्रं, मोह कृष्णा दिनेन्द्रं, नमतिभजति नित्यं, श्री जयाद्यंतकीर्तिः ॥ महार्घं ॥

॥ श्री अनंत नाथ पूजा ॥

सुर नदी नद तीर्थ समुद्भवैः कजपराग सुपिंजरितै जलैः ।

स्फुरदशोक धरारूढ संश्रितैः परमनंतजिनेन्द्रमहंयजे ॥ जलं ॥ १ ॥

सुघनसार विमिश्रित चन्दनैः, परिमलागत भृङ्गसमाकुलैः ।

त्रिविध तापहरैः शुभकारकैः परमनंत ...... ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

विशद मौक्तिक संनिभ शालि जैः, मधुर दिव्य वचो मृत वर्षणैः ।

परि निषिक्त सुरादिश दो गणं, परमनंत ..... ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

प्रचुर रत्नपरिष्कृत सत्कणैः, कनक दंड सु किंकणिका युतैः ।

नव कजैश्चमरैः परि वर्जितैः परमनंत.......... ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

वटक मोदक घेवर पायसै श्चरूवरै घृतशर्करयान्वितै

त्रिविधमुक्त विष्टरमाश्रितैः वरमनंत ...... ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तिमिर नाश करै मणिदीपकै, निजमह परिधीकृत चन्द्रकैः ।

कनक कोटि प्रभा वलयांकितैः, परमनंत ...... ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

अगुरू चन्दन धूप भरैर्वरैरदित नदन ताड़ित दुंदुभि ।

ध्वनि घटाहृत देव नरोरगैः परमनंत ...... ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

सुकदली फल चोच रसालकैः, कनक चन्द्रयुतातप वारणैः ।

त्रय विभूपित सुन्दर विग्रहं, परमनंत ...... ॥ फलं ॥ ८ ॥

शालिनी छंद—पाथोगधैः पुष्पकै स्तंदुलोघै र्हव्यैर्दीपैर्धूपकै श्रीफलाद्यैः ।

स्वभूनाथैरर्चितोनंत नाथो, देयान्मोक्ष श्री जयाद्य तकीर्तिः ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

जिस कलश में अनंत रक्खीं हों उसमें "ॐ ह्रीं अर्हं हं सः अनंत केवलिने नमः", इस मत्र के १०८ जाप्य देकर लाल वस्त्र से कलश का मुंह बांधकर कलश मांडने पर विराजमान करके पश्चात् जयमाला पढ़ना चाहिये

॥ जयमाला ॥

शार्दूल विक्रीड़ितच्छंद—यो भोगेऽखिल भूप वंदित पदो, राज्यं परं प्राप्यवान् ।

भक्तिप्रणत सुरेन्द्र सुन्दर शिरः, कोटी प्रभाद्योतकः ॥

पश्चाद्यश्च निरम्बरः किलभवन् तत्याज्य सर्वं मुदा ।
श्रीमत्तीर्थमनंत माशु शिवदं, तं तीर्थनाथं भजे ॥ १ ॥

स्वर्ग विमानात् कृत भू वासं, कृत मथ्यामत पंचक नाशं ।
नौमि चतुर्दशकं जिनदेवं, देवासुरनर कृतपद सेवं ॥ २ ॥
सुरपति वंदित गर्भ कल्याणं, मेरू शिखर कृत जन्म स्नानं ॥ नौमि० ॥ ३ ॥
दीक्षा समये शिविकारुढं, भूचर खेचर पति सु व्यूढं ॥ नौमि० ॥ ४ ॥
ज्ञानावसरे सभा प्रवेशं, धनपति विरचित कोष्ठ निवेश ॥ नौमि० ॥ ५ ॥
मानस्तंभ विदारितमानं, किन्नर युगली कृत वर गानं ॥ नौमि० ॥ ६ ॥
छत्र त्रय लोक त्रय शोभं, दूरीकृत मायामद लोभं ॥ नौमि० ॥ ७ ॥
दिव्यध्वनि नाशित पर मोह, वैर विवर्जित जीव विद्रोहं ॥ नौमि० ॥ ८ ॥
क्रोश चतुष्टय दुख निवारं, लोक त्रय भव सागर तारं ॥ नौमि० ॥ ९ ॥
अशोक तरु दर्शनहतशोक, भामण्डल प्रति बिम्बित लोकं । नौमि० ॥ १० ॥
समेद शिखर मुक्ति श्री वरणं, जयकीर्तेर्जय कारण शरण ॥ नौमि० ॥ ११ ॥

शालिनीच्छन्दः—वितरति भवनाशं, दुष्ट कर्मारिपाशं, जिनवर वर चन्द्रोऽनंत नाथो वितंद्रो ।
त्रिभुवन शुभकीर्तिः, रत्नभूषाप्त मूर्ति, स्वगुणित सुख पूर्तिः श्रीजयाद्यंत कीर्ति ॥

महार्घं ॥

एतेनाग नरामरेन्द्रमुकुटैः सघृष्ट पादाम्बुजा,

नाभेयादि जिनाः प्रशस्त वदनाः प्रांतस्त्वनंताख्यकाः ।

श्री रत्नादि विभूषण प्रतिदिनं, प्रार्थ्ये जयोत्कीर्तिनः ।

भक्तया मंस्तु सदा चतुर्दश जिनाः कुर्वंतुनोमंगलं ॥

इत्याशिर्वादः ॥

अनंत व्रत के जाप्य

(एकादशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं अर्हं हंसः अनंत केवलिने नमः ॥

(द्वादशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं ह्रौं हं सः अमृत वाहने नमः ॥

(त्रयोदशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं अनंत तीर्थंकराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा सर्वशांतिं कुरू २ स्वाहा ।

(चतुर्दशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं अर्हं हंसः अनंत केवली भगवान अनंत दान लाभ भोगोपभोग वीर्याभिवृद्धिं कुरु २ स्वाहा ॥

(अनन्त मोचन मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सर्व कर्म विमुक्ताय अनन्त सुख प्रदाय अनन्त तीर्थंकराय नमः पूर्वानुबन्धित सूत्र मोचनं करोमीति स्वाहा ॥

ऊपर के मन्त्र को पढ़ कर पहले का बन्धा हुआ अनन्त सूत्र छोड़ना चाहिये ।

(अनन्त बन्धन मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं हं सः अनन्त तीर्थंकराय सर्व शांतिं कुरु २ सूत्र बन्धनं करोमीति स्वाहा ।

ऊपर के मन्त्र को पढ़ कर नवीन अनन्त बांधना चाहिये ।

(अनन्त बनाने की विधि)

अनन्त सोना, चांदी अथवा सूत्र की बनानी चाहिये जिसमें १४ गांठे नीचे लिखे अनुसार १९६ गुणों का चिन्तवन करते हुये लगानी चाहिये प्रत्येक गांठ पर क्रम से चौदह २ गुणों का चिन्तवन करे ।

१४ तीर्थंकर १
१४ प्रतिकरण २
१४ कुलंकर ३
१४ अतिशय ४
१४ पूर्व ५
१४ गुणस्थान ६
१४ मार्गणा ७
१४ जीव रक्षा ८
१४ नदी ९
१४ भव्य जीव राशी १०
१४ रत्न ११
१४ स्वर १२
१४ तिथि १३
१४ अन्तराय निवारण १४

॥१६१॥

इस प्रकार १६६ गुणों का चिन्तवन कर १४ गांठ वाली अनंत बना पश्चात् अनंत व्रत का मांडना मांडकर श्री अनंतनाथ तीर्थंकर की प्रतिमाजी विराजमानकरे एवं नवीन अनंत को भी कलश में रखकर कलश को भगवान के समक्ष मांडने पर विराजमान करे । पश्चात् श्री अनंत नाथ भगवान का अभिषेक कर पूजन करें । पूर्णाहुति के बाद अनंत व्रत की कथा पढ़कर मोचन मंत्र द्वारा पूर्व की अनंत छोड़कर बन्धन मंत्र पढ़ते हुवे नवीन अनंत दाहिनी भुजापर धारण करे ।

अनंत बनाते समय पढ़ने के १६६ गुण (मंत्र)

(अनंत व्रत के उद्यापन में इन्हीं १६६ गुणों के अर्घ चढ़ाये जाते हैं)

१ चतुर्दश तीर्थंकर मंत्र

१ ॐ ह्रीं सद्धर्म प्रवर्तकाय ऋषभनाथ तीर्थंकराय नमः ।

२ ,, कर्माष्टक रहिताय अजित जिन देवाय नमः ।

३ ,, शिवंकराय संभव तीर्थंकराय नमः ।

४ ,, लोकाभिनंदकाय अभिनंदन जिनाय नमः ।

५ ,, क्रोधाद्युन्मथकाय सुमति तीर्थंकराय नमः ।

६ ,, पद्मप्रभ तीर्थंकराय नमः ।

७ ,, कन्दर्पोन्मथकाय श्री सुपार्श्व तीर्थंकराय नमः ।
८ ,, श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकराय नमः ।
९ ,, श्री पुष्पदंत तीर्थंकराय नमः ।
१० ,, श्री शीतलनाथ तीर्थंकराय नमः ।
११ ,, श्री श्रेयांस तीर्थंकराय नमः ।
१२ ,, श्री वासुपूज्य तीर्थंकराय नमः ।
१३ ,, श्री विमल नाथ तीर्थंकराय नमः ।
१४ ,, श्री अनत नाथ तीर्थंकराय नमः ।

२ चतुर्दश प्रकीर्णक मंत्र

१५ ॐ ह्रीं सामायिक क्रिया युक्त मुनये नमः
१६ ,, चतुर्विंशति जिन स्तुति प्रतिपादकाय मुनयेनमः ।
१७ ,, त्रिकाल देव वंदना युक्त मुनये नमः ।
१८ ,, प्रतिक्रमण क्रियायुक्त मुनये नमः ।
१९ ,, गुर्वादिक धर्मवृद्धि विनय क्रिया युक्त मुनये नमः ।
२० ,, दीक्षाग्रहण शिक्षादि युक्त मुनये नमः ।
२१ ,, दशवैकालिकोपदेशकाय मुनये नमः ।

२२ ॐ ह्रीं उत्तराध्ययन रत मुनये नमः ।

२३ ,, कल्प व्यवहार युक्त मुनये नम ।

२४ ,, कल्पाकल्प युक्त मुनये नम. ।

२५ ,, महाकल्पोपदेशकाय मुनये नम ।

२६ ,, पुण्डरी कोपदेशकाय मुनये नमः ।

२७ ,, महापुण्डरीकोप देशकाय मुनये नमः ।

२८ ,, अशीति कोपदेशकाय मुनये नमः ।

३ चतुर्दश कुलंकर मंत्र

२९ ॐ ह्रीं प्रतिश्रुति कुलंकराय नमः ।

३० ,, सन्मति कुलंकराय नमः ।

३१ ,, क्षेमंकर कुलंकराय नमः ।

३२ ,, क्षेमंधर कुलंकराय नमः ।

३३ ,, सीमंकर कुलंकराय नमः ।

३४ ,, सीमंधर कुलंकराय नमः ।

३५ ,, विमलवाहन कुलंकराय नमः ।

३६ ,, चक्षुष्मान् कुलंकराय नम ।

३७ ॐ ह्रीं यशस्वान् कुलंकराय नमः ।

३८ ,, अभिचन्द्र कुलंकराय नमः ।

३९ ,, चंद्राभ कुलंकराय नमः ।

४० ,, मरुदेव कुलंकराय नमः ।

४१ ,, प्रसेन जित् कुलंकराय नमः ।

४२ ,, नाभिराय कुलंकराय नमः ।

४ चतुर्दश अतिशय मंत्र

४३ ॐ ह्रीं सर्वार्द्ध मागधी भाषाय भगवते नमः ।

४४ ,, मैत्री युक्ताय भगवते नमः ।

४५ ,, सर्व ऋतु फल पुष्पाद्य पादपाय जिनाय नमः ।

४६ ,, आदर्शतल प्रतिम रत्नमयी युक्ताय भगवते नमः ।

४७ ,, सुगंधित वायु युक्ताय जिनाय नमः ।

४८ ,, सर्व जनानंद युक्ताय जिनाय नमः ।

४९ ,, निर्मल आकाश युक्ताय जिनाय नमः ।

५० ,, दिव्य गंधोदक वृष्टि युक्ताय जिनाय नमः

५१ ,, पदोपरि पद्म रचनाय जिनाय नमः ।

५२ ,, व्रीह्यादि शस्य संपत्ति युक्ताय जिनाय नमः ।

५३ ,, निर्मल गगनातिशय युक्ताय जिनाय नमः ।

५४ ,, अन्यदेवाह्वानन युक्ताय जिनाय नमः ।

५५ ,, धर्म चक्र युक्ताय जिनाय नम ।

५६ ,, अष्ट मंगल द्रव्य युक्ताय जिनाय नमः ।

५. चतुर्दश पूर्व मंत्र

५७ ॐ ह्रीं एक कोटि पद प्रमाणाय उत्पाद पूर्वांगाय नमः ।

५८ ,, षण्णवति लक्ष पद प्रमाणाय अग्रायणी पूर्वाय नमः ।

५९ ,, सप्तति लक्ष पद प्रमाणाय वीर्यानुवाद पूर्वाय नमः ।

६० ,, षष्टी लक्ष पद प्रमाणाय अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६१ ,, एकोन कोटि पद प्रमिताय ज्ञान प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६२ ,, षडधिक कोटि पद प्रमाणाय सत्य प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६३ ,, षड् विंशति कोटि पद प्रमाणाय आत्म प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६४ ,, अशीति लक्षाधिक कोटि पद प्रमाणाय कर्म प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६५ ,, चतुरशीति लक्ष पद प्रमाणाय प्रत्याख्यान पूर्वाय नमः ।

६६ ,, षष्ठी लक्ष द्वि कोटि पद प्रमाण विद्यानुवाद पूर्वाय नम ।

६७ ॐ ह्रीं षड् विंशति कोटी पद प्रमाण कल्याण वाद पूर्वाय नमः ।
६८ ,, त्रयोदश कोटि पद प्रमाण प्राणानुवाद पूर्वाय नमः ।
६९ ,, नव कोटी पद प्रमाण क्रिया विशाल पूर्वाय नमः ।
७० ,, सार्द्ध द्वादश कोटी पद प्रमाण लोक बिन्दु पूर्वाय नमः ।

६ चतुर्दश गुणस्थान मंत्र

७१ ॐ ह्रीं मिथ्यात्व गुणस्थान स्थितानंत भव्य जीव राशये नमः ।
७२ ,, सासादन गुणस्थान वर्ति सम्यग्दृष्टि जीव राशये नमः ।
७३ ,, मिश्र गुणस्थान स्थित भव्य जीव राशये नमः ।
७४ ,, अविरत गुणस्थान स्थित सम्यग्दृष्टि भव्य जीव राशये नमः ।
७५ ,, देशव्रत गुणस्थान स्थित भव्य जीव राशये नमः ।
७६ ,, प्रमत्त गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
७७ ,, अप्रमत्त गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
७८ ,, अपूर्व करण गुणस्थान श्रेणि द्वय मुनिभ्यो नमः ।
७९ ,, अनिवृत्ति करण गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
८० ,, सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
८१ ,, उपशांत कषाय गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
८२ ,, क्षीण कषाय गुणस्थान स्थित मुनिराशये नमः ।

८३ ॐ ह्रीं सयोगकेवली गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।

८४ ,, अयोग केवली गुणस्थान वर्ति मुनिभ्यो नमः ।

७ चतुर्दश मार्गणा मंत्र

८५ ॐ ह्रीं स्वर्गादि गति हेतूपदेशकेभ्यो नमः ।

८६ ,, एकेन्द्रियादि जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

८७ ,, षट्काय जीव रक्षक मुनिभ्यो नमः ।

८८ ,, योग मार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः ।

८९ ,, वेद त्रय रहित मुनिभ्यो नमः ।

९० ,, कषाय विध्वंस केभ्यो नमः

९१ ,, ज्ञानोपयोग युक्त जिनेभ्यो नमः ।

९२ ,, सामायिक संयमोद्धारक मुनिभ्यो नमः

९३ ,, चक्षुरादि दर्शन ज्ञापकेभ्यो नमः ।

९४ ,, षट् लेश्योपदेशकेभ्यो जिनेभ्यो नमः ।

९५ ,, भव्याभव्य मार्गणा प्रकाश केभ्यो नमः ।

९६ ,, सम्यक्तवोपदेश केभ्यो नमः ।

९७ ,, संज्ञा संज्ञि मार्गणा भेद कथ केभ्यो नमः ।

९८ ,, आहारक मार्गणोप देश केभ्यो नमः ।

८ चतुर्दश जीव समास मंत्र

९९ ॐ ह्रीं पर्याप्त पृथ्वीकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
१०० ,, अपर्याप्तक पृथ्वी कायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
१०१ ,, पर्याप्तक अपकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
१०२ ,, अपर्याप्तक अपकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
१०३ ,, पर्याप्तक तैजस कायिक जीवरक्षकेभ्यो नमः ।
१०४ ,, अपर्याप्तक तैजस कायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
१०५ ,, पर्याप्तक वायुकायिक जीव रक्ष केभ्यो नमः ।
१०६ ,, अपर्याप्तक वायु कायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
१०७ ,, पर्याप्तक वनस्पति जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
१०८ ,, अपर्याप्तक वनस्पति जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
१०९ ,, पर्याप्त द्विन्द्रियादि विकल त्रय रक्षकेभ्यो नमः ।
११० ,, अपर्याप्तक द्विन्द्रियादि विकलत्रय रक्षकेभ्यो नमः ।
१११ ,, पर्याप्तक पन्चेन्द्रिय जीव रक्षक मुनिभ्यो नमः ।
११२ ,, अपर्याप्तक पन्चेन्द्रिय जीव रक्षक मुनिभ्यो नमः ।

९ चतुर्दश नदी मंत्र

११३ ॐ ह्रीं जिन बिम्ब समन्वित गंगा नद्यै नमः ।

११४ ,, जिन बिम्ब समन्वित सिन्धु नद्यै नमः ।

११५ ,, जिन बिम्ब समन्वित रोहितायै नमः ।

११६ ,, जिन बिम्ब समन्वित रोहितास्यायै नमः ।

११७ ,, जिन बिम्ब समन्वित हरित् नद्यै नमः ।

११८ ,, जिन बिम्ब समन्वित हरिकांतायै नमः ।

११९ ,, जिन बिम्ब समन्वित सीता नद्यै नमः ।

१२० ,, जिन बिम्ब समन्वित सीतोदा नद्यै नमः ।

१२१ ,, जिन बिम्ब समन्वित नारी नद्यै नमः ।

१२२ ,, जिन बिम्ब समन्वित नरकांता नद्यै नमः ।

१२३ ,, जिन बिम्ब समन्वित सुवर्णकूला नद्यै नमः ।

१२४ ,, जिन बिम्ब समन्वित रुप्य कूलायै नमः ।

१२५ ,, जिन बिम्ब समन्वित रक्ता नद्यै नमः ।

१२६ ,, जिन बिम्ब समन्वित रक्तोदा नद्यै नमः ।



१० चतुर्दश भुवन भव्य जीव मंत्र

१२७ ॐ ह्रीं निगोदस्थ भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१२८ ,, महातमः प्रभोद्भूत भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१२९ ,, तमः प्रभोद्भूत भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३० ,, धूम प्रभोद्भूत भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३१ ,, पंक प्रभाश्रित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३२ ,, वालूका प्रभास्थित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३३ ,, शर्करा प्रभास्थित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३४ ,, रत्न प्रभाश्रित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३५ ,, तिर्यग्लोकस्थित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३६ ,, ज्योतिर्पटलाश्रित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३७ ,, कल्पवासी भव्य देव राशिभ्यो नमः ।

१३८ ,, ग्रैवेयकाश्रित भव्याहमिन्द्रेभ्यो नमः ।

१३९ ,, नवानुदिश विमानस्थाहमिन्द्रेभ्यो नमः ।

१४० ,, विजयादि पंच विमानस्थाहमिन्द्रेभ्यो नमः ।

---

११ चतुर्दश रत्नाधिपति चक्रवर्ति मंत्र

१४१ ॐ ह्रीं सेनापति रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।

१४२ ,, स्थपति रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।

१४३ ,, हर्म्यपति रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।

१४४ ,, द्वीप रत्ने कृतासनेभ्यश्चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥

१४५ ,, विजयार्द्धोपपन्नाश्वाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥

१४६ ,, स्त्री रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥

१४७ ,, पुरोहित रत्न संसेवित चक्रवर्तिभ्यो नम ॥

१४८ ,, चक्र रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥

१४९ ,, चर्म रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नम ॥

१५० ,, मणि रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥

१५१ ,, काकिणी रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।

१५२ ,, छत्ररत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।

१५३ ,, असि रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।

१५४ ,, दंड रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।

—— ——

१२ चतुर्दश स्वर मंत्र

१५५ ॐ ह्रीं अकार स्वर वादिने वृषभाय नमः ।
१५६ ,, आकार स्वर वादिने वृषभाय नमः ।
१५७ ,, इकार स्वर वादिने वृषभाय नमः ।
१५८ ,, ईकार स्वर वक्त्रे वृषभाय नमः ।
१५९ ,, उकार स्वर भेद कथकाय नमः
१६० ,, ऊकार स्वर भेद ज्ञायकेभ्यो नमः ।
१६१ ,, ऋकार स्वरोपदेष्ट्रे वृषभाय नमः ।
१६२ ,, ॠकार स्वरोप देशकाय वृषभाय नमः ।
१६३ ,, लृकार स्वरस्य प्रवक्तार वृषभाय नमः ।
१६४ ,, ॡकार स्वरोच्चारकाय वृषभाय नमः ।
१६५ ,, एकार स्वर देशिने वृषभाय नमः ।
१६६ ,, ऐकार स्वर प्रकाशकाय वृषभाय नमः ।
१६७ ,, ओकार स्वरोपदेश काय वृषभाय नमः ।
१६८ ,, औकार स्वर कथकाय जिनाय नमः ।

१३ चतुर्दश तिथि मंत्र

१६९ ॐ ह्रीं प्रतिपदि स्वरुप निरुपक अष्टादश दोपरहिताय जिनाय नमः ।

१७० ,, द्वितीयांतिथिमाश्रित्य सागारानगार धर्माय नमः ।

१७१ ,, तृतीयां तिथि माश्रित्य दर्शनादि रत्नत्रयाय नमः ।

१७२ ,, चतुर्थी तिथि माश्रित्य प्रथमानुयोगादि वेदेभ्यो नमः ।

१७३ ,, पंचमी तिथिमुद्दिश्य पंच परमेष्ठीभ्यो नमः ।

१७४ ,, षष्ठी तिथि माश्रित्य सर्वज्ञोदित षट् द्रव्येभ्यो नमः ।

१७५ ,, सप्तमी तिथिमुद्दिश्य सामायिकादि सप्त संयमेभ्यो नमः ।

१७६ ,, अष्टमी तिथिमाश्रित्य सिद्धाष्ट गुणेभ्यो नमः ।

१७७ ,, नवमी तिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोक्त नव नयेभ्यो नमः ।

१७८ ,, दशमी तिथिमाश्रित्य दशलाक्षणिक धर्मेभ्यो नमः ।

१७९ ,, एकादशी तिथिमाश्रित्य एकादशांगेभ्यो नमः ।

१८० ,, द्वादशी तिथिमाश्रित्य द्वादश विधतपेभ्यो नमः ।

१८१ ,, त्रयोदशी तिथिमुद्दिश्य त्रयोदश प्रकार चारित्रेभ्यो नमः ।

१८२ ,, चतुर्दशी तिथि माश्रित्य अनंत तीर्थंकराय नमः ।

१४ चतुर्दश मल त्यक्ताहार मुनि मंत्र

१८३ ॐ ह्रीं पूयमलातिरिक्ताहार ग्राहक मुनिभ्यो नमः ।
१८४ ,, अस्र मल रहित आहार ग्राहक मुनिभ्यो नमः ।
१८५ ,, पल मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।
१८६ ,, अस्थि मल रिक्त पिंड विशुद्धये नमः ।
१८७ ,, चर्म मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।
१८८ ,, नख मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।
१८९ ,, कच मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।
१९० ,, मृत विकलत्रिक मल रहित पिंड विशुद्धये नमः ।
१९१ ,, सूरणादि कंदमूल त्यक्त पिण्ड विशुद्धये नमः ।
१९२ ,, यव गोधूमादि बीज मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।
१९३ ,, मूल मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।
१९४ ,, बदर्यादि फल मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।
१९५ ,, तुष कण मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।
१९६ ,, कुंडमल रहित पिंड विशुद्धये नमः ।

॥ इति अनंत निर्माण मन्त्राणि ॥

॥२०५॥

❀ अथ महा भिषेक ❀

अट्ठेव य अट्ठसया, अट्ठ सहस्साइ अट्ठ कोडी ऊ ॥
रक्खंतु मे सरीरं देवासुर पणमिया सिद्धा ॥१॥

आत्मांग प्रत्यग परा मर्शन मन्त्र.

ॐ अर्हन्मुख कमल वासिनी पापांत कारिणी श्रुत ज्वाला सहस्त्रा प्रज्वलिते सरस्वति मम पापं हन हन दह दह क्षाँ क्षीं क्षूं क्षौं क्षं क्षीर धवले अमृत संभवे वं वं हू फट् स्वाहा ॥

अथ शुची करण विधा द्वय मन्त्र.

ॐ नमो वायु कुमाराय सर्व विघ्न विनाशने मही पूतां कुरुष्वाशु सुगन्धी मृदुनात्मना हू फट स्वाहा ।

(इति भूमि सशोधनम्)

ॐ प्रक्षालयामि भूभाग, मग्निमुद्दीपयाम्यहं ॥
पष्ठि नाग सहस्त्राणि, भूतलेस्मिन्चरंति ये ॥
तेषां संबोधनायात्र, तेषामाह्वाननाय च ॥
प्रसिचाम्यमृतेनेमां भूमि सम्मार्ज याम्यहम् ॥ (भूमि संमार्जनं)

ॐ मेघ कुमाराय अं हं सं वं ठं ठ चः फट् स्वाहा, इति भूमि संमार्जनम्,

सौ गन्ध्य संग मधुव्रत झंकृतेन । संवर्ण्यमान मिव गंधमनिद्मा दौ ॥

२०७॥ आरोपयामि विबुधेश्वर वृंद वंद्य, पादार विन्दमभि वंद्य जिनोत्तमानाम् ॥

(देवस्या मनश्च चंदन तिलकं कुर्यात्)

प्रत्युप्त नील कलशोत्पलपद्मराग, निर्यत्करप्रकर बद्ध सुरेन्द्र चाप ॥

जैनाभिषेक समयेऽगुलि पर्व मूले, रत्नांगुली यकमहं विनिवेशयामि ॥

इति मुद्रिका धारणम्

सम्यक पिनद्ध नव निर्मल रत्न पंक्ति, रोचिवृहद्वलय जात बहु प्रकाशं ॥

कल्याण निर्मितमह कटकं जिनेशं, पूजा विधान ललितेस्वकेरकरोमि ॥

कंकण धारणम्

पूर्वं पवित्र तर सूत्रविनिमर्मितंयत्, प्रीतः प्रजापति रकल्प यदंग सांगः ॥

सद्भूषणं जिनमहं निजकंधराय, यज्ञोपवीत मह मेप तदा तनोमि ॥ यज्ञोपवीतं ॥

पुन्नाग चंपक महीरुह किंकरात, जाति प्रसून नव केसर कुंदहृष्टं ॥

देव त्वदीय पद पंकज सत्प्रसादात्, मूर्ध्नि प्रमाणवति शेखर कंदधेऽहम् ॥ शेखरं ॥

ये संतिके विदिह दिव्य कुल प्रसूताः, नागा प्रभूत रत्न दर्प युताव बोधाः ॥

संरक्षणार्थम मृतेन तेषां । प्रक्षा लयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥ भूमिशोधनम् ॥ ॥२०

क्षीरार्नवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः, प्रक्षालितसुर वरैर्य दनंतशारम् ॥

अत्यु द्यमु द्यतमहं जिन पाद पीठं, प्रचालयामिभव संभव ताप हारिः ॥ पीठ प्रचालनं ॥

प्रत्यग्र तार तर मौक्तिक चूर्ण वर्णैं, भृंगार नाल मुखनिर्गत चारु गंधैः ॥

शीतैः सुगांधिभिरतीव जलैर्जिनेन्द्रं, बिंबोत्सवे स्नपनसार समारभेऽहं ॥ मलस्नपनं .

इंद्राग्नि दंडधर नैऋतपाश पाणि, वायूत्तरेण शशिमौलिफणींद्र चंन्द्रम् ॥

आगत्य यूय मिह सानु चराः सचिन्हाः, स्वं स्वं प्रतीच्छतु बलिं जिनयाभिषेके ॥ दिग्पालर्चनम् ॥

पुण्याह मघसुम शांति च मंगलानि, सर्व प्रहृष्ट मनसश्च भवंतु भव्या ॥

पुण्यो दकेनभगवंत मनंत कान्ति, मर्हन्त मुज्वल तनुं परि वर्तयामि ॥ पुष्पा चतोद कावतारणम्

नाथ त्रिलोक महिताय दश प्रकार, धर्माम्बु वृष्टि परिषिक्त जग त्रयाय ॥

अर्धंमहार्घ गुणरत्न महार्ण वाय, तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विश दाक्षतैश्च ॥ पुष्पाक्षतावतारणं ॥

जन्मो त्सवादि समयेषु यदीय कीर्तिं, सेन्द्राः सुराः प्रमद भार नुताः स्तुवंति

तस्या ग्रतो जिनपते परया विशुध्या, पुष्पाञ्जलि मलय जाद्र मुपाक्षिपेहं ॥

॥ पुष्पाञ्जलि श्री खंडा वतारणम् ॥

(अथ अर्हं त्प्रतिमां नेतुं गत्वा पूजां कृत्वा इदंस्तोत्रं पठयमान मानीयते)

आगत्य देव्यैर्जननीं प्रपूज्य, नीत्वा वि भूत्या नगराज मूर्ध्नि ॥
मृगेन्द्र पीठे वर पाण्डु कायां, निवेश्य पूर्वाभिमुखं जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥

चीरोः तोयैरमरोप नीतैः, प्रियंगुसच्चंदन पद्म मिश्रैः ॥
आपूरिता नष्ट सहस्त्र संख्यान्, प्रगृह्य सत्कांचन रत्न् कुंभान् ॥ २ ॥

अतोद्य गीतध्वनि मिन्द्र घोषैः, रवैर्भूरितै नंद जयेति शब्दैः ॥
वि कुर्य शक्र कृत कर्म कांड, प्रकाशयन् भक्तिरयंस्निपेवे ॥ ३ ॥
नीत्वा सुरै यः परया विभूत्या, मेरो विशाले शिखरे विचित्रे ॥
संस्नापितो रत्न मयैश्च कुंभै, सौवर्णकैश्चंदन चर्चितांगैः ॥ ४ ॥
स्वयं भुवं तीर्थकरं प्रधानं, हिरण्य गर्भं पुरुषं पुराणम् ॥
हितावहं नित्य मनन्त कीर्तिं, सयोगिनं ध्यान विशुद्धिगम्यं ॥ ५ ॥
सुदर्शिनं दर्शित सर्व तत्त्वं, लोकेश्वरं शान्त तनुं सुरूपं ॥
ज्ञानात्मकं ज्ञान समस्त तत्वं, निरम्बरं बीत समस्तरागं ॥ ६ ॥
भवार्णवोत्तीर्णमुदार सत्त्वं, सत्यं च कल्याण विभूति युक्तं ॥
आताम्र नेत्रं वरयद्रुम पाणिं, रजोमल स्वेद विमुक्त गात्रं ॥ ७ ॥
पूतं च पुण्यं सुगतं महान्तं, कल्याणकं मंगलमुत्तमं च ॥
तपोनिधि चांति दयोपपन्नं, समाधिनिष्ठं व्रत भूरि धारं ॥ ८ ॥
अनंत धामाचार मिन्द्र जुष्टं, सुराइतानेक सुतारनर्घ्यम् ॥
छत्रेण पूर्णेन्दु निभेन गीतं, अशोक वृक्षेण सुपल्लवेन ॥ ९ ॥
भामंडलेन प्रतिमा प्रभेण, तथागिरा चामर चारु पंक्त्या ॥
विभाति नित्यं सुर पुष्प वृष्टया, तं देव देवं मुनि वृंदवंद्यं ॥ १० ॥
वेदेषु शास्त्रेषु तमेव गीतैः, भूतै सुभाव्यैरिति वर्तमानैः ॥
गुणैस्तुतं देव निकाय मुख्यैः, निरंजनं शाश्वतमव्ययं च ॥ ११ ॥

मंत्रा च्चरारिनंगित वाग्गिमरुच्चैः, सुवर्ण रत्ना चत पुष्पपाणि ।।
जिनेन्द्र चंद्रं परया विभूत्या, संस्नापयामि प्रवरासन स्थम् ।। १२ ।।

।। अथ प्रतिमा स्थापनं ।।

यः पांडुकामलशिलागतमादि देव, संस्नापयन्सुर वराः सुर शैलमूर्द्धिन ।।
कल्याणमीप्सुरहमच्चततोयपुष्पैः, संभावयामि पुर एव तदीय विम्बं ।।

इति प्रतिमा स्थापनम् ।।

ॐ श्वेतवर्ण स्फटिक मणि विनिर्मित सहस्त्र योजन प्रमाणं पंच क्रोश प्रमाण मुखं चीरो दधि जलपूर्ण पूर्वोत्तरस्यां दिशि कलशं स्थापयामि

ॐ ह्रीं अनन्त महा अनन्त गुरु गर्जित नादं नंद नाम प्रथम कलशं स्थापयामि कलशेषु स्थापितेषु सोदकानि सपुष्पाणि साक्षतानि सहिरण्यानि क्षिपामि स्वाहा

ॐ पूर्व दक्षिणस्यां दिशि नील मणि विनिर्मित सहस्त्र योजन प्रमाणं भद्र नाम द्वितीय कलशं स्थापयामि,

पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

ॐ ह्रीं दक्षिण पार्श्वभागां दिशि पीत वर्ण विनिर्मित सहस्त्र योजन प्रमाणं जय नाम तृतीय कलशं स्थापयामि, शेषं पूर्ववत् ।।

ॐ पश्चिमोत्तरस्यां दिशि रक्त मणि विनिर्मित सहस्त्र योजन प्रमाणं विजय नाम चतुर्थ कलशं स्थापयामि, शेषं पूर्ववत् ॥

सत्पल्लवार्चित मुखान् कलधौत रौप्य ॥
ताम्रारकूट घटितान् पयसा सुपूर्णान् ॥
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान् ॥
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकान्ते ॥

कलशेषु स्थापितेषु सोदकानि सपुष्पाणि साक्षतानि क्षिपामि स्वाहा,

चर्चिताश्चन्दनैः पूर्णाः; श्वेत छत्राभिवेष्ठिताः ॥
शोभिताः कलशाः ये च, पुष्प पल्लव धारिणः ॥

एतत्पठित्वा चतुः कोणेषु स्थापित कलशानामुपरि पुष्पाणि क्षिपेत्

दध्युज्ज्वलाक्षत मनोहर पुष्प दीपैः ॥
पात्रार्पितं प्रतिदिशं महतादरेण ॥
त्रैलोक्य मंगल सुखालय कामदाह ॥
मारार्ति कं तव विभोरव तारयामि ॥

मंगलार्तिकावतरणम् ॥

ॐ मघोनः ककुब्भागे, दर्भं निर्भग्न विघ्नकं ॥

भोगैश्वर्या भिवृद्धयर्थं, क्षिपामि क्षिप्र कल्मषं ॥

इति इन्द्र दर्भः ॥

ॐ पूर्वस्यां दिशि कुंडलांशु निचय, व्यालीढ़ गण्ड स्थलन् ॥
शक्रं मूर्धनि बद्ध साधु मुकुटं, सरूढ मैरावतम् ॥
पत्नी बांधवभृत्य वर्ग सहितो, देवं समाह्वानये ॥
पाद्यार्घा चत दीप गंध कुसुमं, दत्तं मया गृहताम् ॥

ॐ पूर्वस्यां दिशि क्षीर जलधि संजात डिण्डीर पिण्ड पाण्डुर शरीर शोभां, गुणनिर्मित चारु चाप सहशोन्नत पृष्ठ वंश पार्श्व वित्तम्भितं, घंटा युगल कराल टंकारं मुखरित दिगन्तरं, सुवर्ण रुचिर नक्षत्र माला विराजित कुंभस्थल नभस्तल तुंग तरूनपुण्णाण मैरावत मभिराज मारुढ़ं, कर कलश कुलिश रश्मि रंजित समस्त भुवनं, नाना विध महामणि रचित शिखर शेखर विन्यास शोभितोत्तमांगं, प्रसाद चित्त महचर सुर परिषदानुयातं पौलोम सहितं, सपरिजनं सपरिवारं इन्द्र देव माह्वानयामहे, स्वाहा ॥ हे इन्द्र आगच्छ २ इन्द्राय स्वाहा ।

इन्द्र महचराय स्वाहा, इन्द्रपरि जनाय स्वाहा, इन्द्रानु चराय स्वाहा, अग्नये स्वाहा, अनन्ताय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐस्वाहा भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वस्व धायै स्वाहा,, इन्द्र देवाय स्वगण परि वृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं चरुं बलिमक्षतं स्वस्तिक यज्ञभागंच भावान्निवेदितं यजामहे प्रतिगृ ह्यतां प्रतिगृ ह्यतामिति स्वाहा

यजामहे प्रविश् सर्वा प्रविश् पितामिति स्वाहा

❀ इन्द्र लोक पाल आह्वानन मंत्रः ❀

यस्यार्थं क्रियते कर्म, सुप्रीतो भव मे सदा ॥
शांतिकं पौष्टिकं चैव, सर्व कार्येषु सिद्धिदः ॥ कुसुमांजलि क्षिपेत् ॥

ॐ संतापापनोदार्थं, प्राणिनां प्रक्षिपाम्यहं ॥
दर्भं हुताशनायां च, सर्वज्ञस्नपनोत्सेव ॥ इति अग्नि दर्भः ॥

ॐ अग्नि पालित पूर्व दक्षिण दिशं, पिंगोग्रनेत्रद्वयं ॥
छागारोहणमत्र सूत्र वलयः न्यग्रोग्रहस्तांगुलिम् ॥
स्वाहा संयुत मुज्वलांगमहसं, संशब्दये संमुदा ॥
देवाधीश महेशदासमुचितं, गृह्णातु दीपादिकं ॥ पाद्यार्घ ॥

ॐ पूर्व दक्षिणस्यां दिशि चल चटुलगुरू पृथुल प्रोथभाभि नवमील नीरज वर्ण तस्करं कार्तस्वर मयमधुर वद्युच्चरिक मालिका, परित कंठ कंदलं महंतं छागमारूढं, ज्वल ज्वलन स्फुलिंगं, पिंगल विलोल लोचन युगलं, मलयज वलक्षाक्ष मालि कोयलक्षित दक्षिणकराग्र. अखंड कमंडल मंडित वाम हस्त प्रकोष्ठं, प्रहृष्ट सुंदर दार परिवार परिगतं, यज्ञोपवीत पवित्र देहं, अग्नि देवमाह्वानयामहे; स्वाहा, हे अग्नि आगच्छ २ आग्नये स्वाहा ॥

तीक्ष्णं दक्षिणाशापं, दर्भ लक्ष्या समीक्षितं ॥
क्षिपाम्यभिषेकारंभे, यमारंभ विधित्सया ॥
इति यम दर्भः ॥

ॐ आसीनं सिति वर्णभाजि महिषे, वैवस्वतं च स्वयं ।

दूरोल्लासित दंड मंडित भुजां, तं दक्षिणस्यां दिशि ॥

उग्रं व्यग्रं परिग्रहं निजनिजैः कर्मण्यथा कारये ॥

गृह्वाच्चेप बलिं बलि जिनयते, स्नानेय मानीयुतः ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ दक्षिणस्यां दिशि अंजन धरणी धर समाना कार निष्ठुर खुर पुटपात निर्दलित कुलाचल शिलातलं, दर्पोद्भट विकट विषाण कोटि विलेखन स्फुटित सुर शैल कटकं, त्रिगुणी कृत भुजंगभूषणं, परिणद्धकंधरं, विषम तम शीलं, महिषमारूढं, प्रचंड भुजदंड, भ्रमित दंडोऽमरित सकल मही मंडल, क्रूर परिवारं, मित्र कलत्रो पेतं, यमलोकपालमाह्वानयामहे स्वाहा, हे यम लोक पाल आगच्छ २ यमाय स्वाहा ॥

ॐ नरा रोहण दिग्भागे । निः शेष क्लेश नाशनं ॥

विदधे दर्भ सारब्ध । जिनेन्द्राभिषवक्रिया म् ॥ इति नैऋत्य दर्भः ॥

ॐ आशां दक्षिण पश्चिमां निज बला, दाक्रम्य लोके स्थितं ॥

नैऋत्यं दृढ मुगदुर प्रहरणं, भीमं कला पूत्तगं ॥

अस्मिन्पुण्यमहोत्सवेऽह. मचिरादामं त्रये सकमा ॥

दादृत्ता सय भाव शेष कलितं, पल्यादि युक्तं चरू ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ दक्षिण पश्चिमायां दिशि धूमधूम्र सटा टोप भासुरोरूवपुषं, अभिनवविशदरोदनानुकारशवजनित समस्त जन कौतुकं, निपुणोप लक्षितं सूक्ष्म सूक्ष्मात्र बुध बुध युगं रक्षण रूढं जरठ कलाप कुसुम सम देह दीप्ति संशयेत, नव जलद पटलं; सकल परिच्छिद समन्वितं, नैरृत्य देवमाह्वानयामहे स्वाहा, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ त्रैलोक्य नाथाय, नमस्कृत्य जिनेशिने ॥
वरुणस्य हरिद्भागे, स्थापयेदर्भमद्भुतम् । वरुण दर्भः ॥

ॐ पद्मिमन्याश्रित दंत दंति मकरा, रूढं भुजंगायुधं ॥
मुक्ताविद्रुमभूषण चवरुणं, काष्ठां प्रतीच्याश्रित ॥
भार्या संयुतमाह्वायामि जगता, मीशस्य पूजा क्षणे ॥
प्रीतः स्वीकुरुतामसा वपिमया, संपावमर्घादिकम् ॥

ॐ पश्चिमायां दिशि संतत जलनि मज्जन जनित पांडुर कपिल वर्णं, उद्ंऽशुंडाग्र पुष्कर निर्गत शीकर सार विन्दु दन्तुरित कुंभ पीठं, कठोर केतकी विशद दंत किरणां कुर तिरस्कृत कपोत मद मलिनभाव, जलकिरणमारूढं; निर्मल मुक्ता फलोपचित्त तार हारि वृक्षः स्थलं, सजव नागराज पाशपात्त प्रारब्धं, शक्र दोर्मद शालि संपन्नं, पत्न्यादि संयुतं वरुण देवं, समाह्वानयामहे । स्वाहा, हे वरुण आगच्छ २ वरुणाय स्वाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ मातरिश्व विदिग्भागे, विश्वविश्वं धरा प्रभो ॥
अभिषेक समारंभे, दर्भं गर्भं प्रकल्पये ॥

वायु दर्भः ॥

ॐ एकस्यामपि पश्चिमोत्तर दिशि, स्थानेसदा सर्वगं ॥
वायुं तुंग कुरंग पृष्ट गमनं, हस्तस्य वृक्षायुधं ॥
देवं संप्रवलच्छ रीर घटने, दारैरुदारैः समं ॥
सम्यक संप्रति बोधयामि भवता, पाद्यादिकं गृह्यतां ॥

ॐ पश्चिमो त्तरस्यांदिशि चलाचल चरणाभि घात स्फुटित धराधर शिखरदेशं,, नव यौवन बल समुद्भूत स्वेदोदबिन्दु प्रसर प्रशमित मार्ग पांशुपद्रवं, निज जव निर्जित मनोवेगं, हरिण मारूढ़ं, सहज गमनारंभ संरंभ, प्रकंपमानं, समस्त देहावयव हस्तप्राप्तं, महीरुह महा युद्ध कृत रिपुबल प्रभंजनं, शशि भाजनंच, वायु देवं समाह्वानयामहे स्वाहा ॥ हे वायु आगच्छ २ वायवे स्वाहा, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ यत्त रीच्तत सत्त्वेत्रे, त्विपामि त्तणविस्तणम् ॥
याग दीत्ताक्तणे त्तेमं, विधित्सुदर्भ मुत्तमम् ॥ यत्त दर्भः ॥

ॐ हंसौ घेन समुह्यमान मनघं, प्रेंस द्धिमानध्वजैः ॥
आरूढ़ं पृथु पुष्पकं धनपतिः, प्रोच्चैरु दीच्यांदिशि ॥
कान्तैरप्सरसां कुलैः परिगतं, शक्त्यायुधं बोधये ॥
गंधं बंधरधीः प्रतीच्छतुतरा, मत्राहतः पूजने ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ उत्तरस्यां दिशि रंभाद्य सरकर चरणाभरण मणिगण झणत्कार श्रवण विहित सुर गण रण रणकं, अनेक विधध्वज पट पवन विदारित; जीमूत पटलं, रसना बंधन प्रबल मुक्तामय, दाम शोभमान हेम दंडोपेतं, पुष्पक विमानमारुढ़ं, अनादर मुक्त शक्ति प्रहारोपार्जित, समर संघट्ट विजय मुकुट संघटित रत्नकिरण, विरचित्ता खंडल चाप प्रपंच धन देव्यादि दिव्य महा पुण्य, परिवारोपेतं, कि कुवेर देवमाह्वानयामहे स्वाहा, हे कुबेर, आगच्छ २, कुवेराय स्वाहा ।। शेषं पूर्ववत ॥

ॐ सर्वस्य शांतये शांतं, नत्वा श्री वृत्त लक्षितं ॥
वर्धमाने समैशानं, विदधे दक्षिणी दिशां ॥ ईशान दर्भः ॥

ॐ ईशान वृष पष्ठगं गणशतै, रावध्य मूर्ध्दांजलिं ॥
हस्तो दस्त कराल शूल भयदं, पूर्वोत्तरस्यां दिशि ॥
नागैराभरणै रलंकृत मलं. काले ह्वयामि स्वकं ॥
पात्रं द्राक्प्रति गृह्यतामिहमहे, पुष्पादि काभ्यर्चनम् ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ पूर्वोत्तरस्यां दिशि दर्पोद्धारित मंदाकिनी पंकज मंडित विशंकट कुटिल विषाण कोटि उत्कृष्ट हाटक घटित कल, कूणित किंकणी सनाथ प्रलवमान गल कंबलोन्नतैः पूर्णकं धरं, धराधर कैलाश धवलिमा लंघयंतं, वृषभमारूढं, भुजंगराज रज्जू संयुतं, केतकी कुसुमदल दाम सुरभि मौलि सरल शुभा युद्धोत्पादित प्रतिकुलवर्ति सर्वांग शूलं दिव्य कुल योषित् अशेष विभूषित समाजन समेतं ईशानदेवं समाह्वानयामहे ॥ स्वाहा
हे ईशान आगच्छ २ ईशानाय स्वाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ प्रज्वाल्य पवित्राग्नि, प्रमिच्याम्य स्टतांजलिं ॥
तृप्त्यैः पष्ठी महाहीनां, सहस्त्राणांच वान्वतां ॥ नाग दर्भः ॥

ॐ तिष्ठन्तं कमठस्य निष्ठुरतरे, पृष्ठे धराशा प्रभुं ॥
नागेन्द्रं फण चक्र वाल मणिभि, ध्वंस्तांधकारोदयं ॥
आरक्त द्विसहस्त्र लोचनमुखं, क्रूरं करोम्यग्रत ॥
एतन्नाम्नैव मनु प्रियेण वहुधा, गधेन संप्रीयतां ॥ पाद्यार्घं ॥

ॐ अधरस्यां दिशि कठिन चक्रा कारोन्नत मध्य पृथु पृष्ठकं कुल सामथाष्ट गुण शरीर सामर्थं, चारु चरण संचरण पराजित पवन रभसं, कूर्मराज पृष्ठमारूढं, शिर सहस्त्र चूड़ामणि मरीचि विडंवितं, शरत्समय विमल नक्षत्र चक्रं: स्थूल स्फूर्त मुक्ताफल हारालंकृत, परीत कंठ कंदलं सपद्मावति परिजनं, भूत धात्री धरणं धरणेन्द्रदेवं, समाहूवानयामहे ॥ स्वाहा ॥
ॐ धरणेन्द्र देव आगच्छ २ , धरणेन्द्राय स्वाहा ॥

ॐ दर्भकांड समादाय, विश्वविघ्नौघखडनम् ॥
क्षिपामि व्रम्हणः स्थाने, भक्त्या वाह्ये महामहे ॥ सोम दर्भः ॥

ॐ ऊर्ध्वायां दिशि सिंह वाहन मुडु व्रातानुजातं स्फुरत् ॥
कांतिं कैरवदाम रम्य वपुषं सोमं, सवित्र्या समम् ॥
अत्युग्र ग्रहमण्डलस्य सकल, व्योमैक चूड़ामणि ॥
पूजास्वा गमये प्रतीच्छतुतरा मे, पोत्रगंधादिकम् ॥ पाद्यार्घं ॥

ॐ ऊर्ध्वायां दिशि कुटिल दंष्ट्रा रूप वाल, चन्दांशु धवलित, दिक्प्रदेशं, खर नरवर कुटिल जर्जरित गर्जद्दे व वृन्दध्वनान्त, घनसदृश सटाटोप भासुरोरू वपुषं, केशरिणमारूढं, निरुपम काय कांति संदिह्यमान, कुमुद स्नजं, तार तारागण परिवार परिगतं, रोहिणी समन्वितं सोम देवं, समाह्वानयामहे, स्वाहा ॥ हे सोम आगच्छ २ सोमाय स्वाहा, शेषं पूर्ववत ॥

❀ इति दश लोक पालाह्वाननम् ❀

ॐ स्थानास नार्घ्यं प्रतिपत्ति योग्यान्, सद्भाव सन्मान जलादिमिश्र ॥

जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमिपूजामिह दिक्पतीनां ॥ जलम् ॥

श्रीखंड कर्पूर सुकुंकुमाद्यैः, गंधैः सुगंधी कृत दिग्विभागैः ॥

जैनाभिषेकेमुपागतानां, करोमिपूजामिह दिक्पतीनां ॥ चंदनं ॥

शाल्यक्षतैः रक्षतदीर्घगात्रैः, सुनिर्मलैश्चंद्र करा वदातैः ॥

जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमिपूजामिह दिक्पतीनां ॥ अक्षतं ॥

अंभोजनीलोत्पलपारि जातैः, कदंब कुंदादि वर प्रसूनैः ॥ जैनाभिषे ॥ पुष्पं ॥

नैवेद्यकैः कांचन रत्न पात्रैः, न्यस्तैरुदस्तै र्हरिणा सुहस्तै ॥ जैनाभि ॥ नैवेद्यं ॥

दीपोत्करैर्ध्वस्त तमोभिघातैः, रुद्योतिता शेष पदार्थ जातैः ॥ जैनाभि ॥ दीपं ॥

तगार कृष्णागुरु चंदनाद्यैः संचूर्ण जैरुत्तम धूपवर्गैः ॥ जैनाभि ॥ धूपम् ॥

लवंग नारिंग कपित्थ पूग, श्रीमोच चोचादि फलैः पवित्रैः ॥ जैनाभि ॥ फलम् ॥

श्री चंदना चत चरु वर दीपमिश्रै, विंकाश पुष्पांजलिनासुभक्त्या ॥
जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमि पूजामिह दिक्पतीनाम् ॥ अर्घं ॥

ॐ संस्थाप्य पीठं शशिखंख शुभ्रं, सपीप देशे जिन पठिकस्य ॥
ग्रहान्न वादित्य मुखानथैतान्, यजामि गंध प्रमवाचतोद्यैः ॥

मध्ये तु भास्करं स्थाप्य, शशिनं पूर्व दक्षिणे ।
दक्षिणे लोहितांगंच, बुधं पूर्वोत्तरेण तु ॥
उत्तरेण गुरुं विंयात्, पूर्वेणैव तु भार्गवं ।
पश्चिमे तु शनिं विधात्, राहुं दक्षिण पश्चिमे ॥
पश्चिमोत्तर के केतुः, स्थाप्या वैः शुक्ल तन्दुलैः ॥ ग्रहपीठ स्थापनं ॥
ॐ पूर्वस्यां दिशि सप्तदंऽकनतु, छेद कुसुम प्रभं ।
पृथ्वी तोष्ट शतं० विहाय गगने, यो यो जनानां व्रजेत् ॥
यद्दृष्ट्वा दुगणं प्रभोन्नततनु, स्यात् श्री भृदव्जा करः ।
कालश्च प्रमितश्च येनभुवने; सूर्या दर्भं ददे ॥ सूर्यं दर्भः ॥
यस्मात्ध्वान्त ममुष्भितं जगदिदं, निर्दोप माभासते ।
यस्योत्संगाभ योगिनामभि चतुः, शंखै संहस्त्रैः क्रमात् ॥
सिहे मोच तुरंगमा चति भूतां, यानैः प्रति स्यन्दनं ।
बिम्बं यस्यतु सप्तमांशसहितं, क्रोशस्य कोशत्रयम् ॥

पल्यं वर्षसहस्त्र युक्तमुदितं, यस्मिन्स्थितं जीवितम् ॥
रक्तैश्चामर वस्तु केतु कुसुमं, छत्रर्ध्वजैराजितम् ॥
आत्मीयायुध वंध वाहन वधू, भृत्यौव पूर्वान्वितै ॥
अस्मिन्पुण्य महोत्सवे जिनपते, मंव्यांबुजानंदनैः ॥
अर्को वंधन पक्वभक्त पयसा, सर्पि गुडा संयुतं ॥
श्री खंडागुरु कुंकुमैः सतुहितै, रेलाव रांगोत्कटैः ॥
पुष्पैर्किंशुक पाटलोत्तम जपा, बन्धूक पद्मादिभिः ॥
तोयैर चत दीप धूप सफलैः, त्वां संयजे भास्करम् ॥

हे सूर्य आगच्छ २ सूर्याय स्वाहा अर्क काष्ठे चीर खांड घृत रक्तध्वजा ॥ सूर्य ग्रहानुचराय स्वाहा: सूर्य महत्तराय स्वाहा, आदित्याय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, भौमाय स्वाहा, बुधाय स्वाहा, बृहस्पतये स्वाहा, शुक्राय स्वाहा: शनैश्चराय स्वाहा, राहवे स्वाहा, केतवे स्वाहा, ॐ स्वाहा, भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, ॐ भुर्भुवः स्वस्वधाय स्वाहा, ॐ सूर्य देवाय स्वगुण परिवृताय इदमर्घं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरूं बलिमक्षतं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रति गृह्यताम् प्रति गृह्यतामिति स्वाहा

यस्यार्थं क्रियते कर्म, सुप्रीतो भव मे सदा ॥
शांतिकं पौष्टिकं चैव, सर्व कार्येषु सिद्धिदः ॥ कुसुमांजलिं क्षिपेत् ।

ॐ आग्नेयां दिशि सप्तचाप वपुष, रौप्याद्रि दीप्त्यान्वितम् ॥
धर्मग्लान समस्त कैरववनं, नाना प्रमोदप्रदं ॥
पल्यं वत्सर लक्ष युक्त मुदित, यस्यायुरा वेदितम् ॥
अष्टाशीति बल ग्रहैः परिवृतं, रात्र्यंगना नायकम् ॥
अष्टाविंशति संख्य धिष्ण्य सहितं, पंचाननाधिष्ठितम् ॥
षट्षष्टाख्य सहस्र नव शतकं, पंचोत्तरा सप्ततिः ॥
कोटा कोटिभिरात ताम्बर तले, तारागणैः सेवितं ॥
उत्पात प्रभवं जिनेश्वर महं, सोमं समाह्वानये ॥ सोम दर्भः ॥

ॐ बिम्ब यस्यतु योजनंतु विततं, क्रोश त्रिभागान्वितं ॥
सार्धात्यष्ट शतेषु योजन वरैः, पृथ्वीतलावास्थितं ॥
यस्योच्चंच चतुःसहस्रमितिभि, यानैः प्रतिस्यन्दनम् ॥
पंचास्येन वृषाश्वकाकृति धरैः, भक्त्याभि योग्यामरैः ॥
अस्मिन्पुण्य जिनाभिषेक समये, भार्यादिभिः संयुतं ॥
शुभ्राभ्रोपम चामराम्बरधरैः, छत्रध्वजालंकृतं ॥
पालाशोत्थसमित्प्रपक्व चरुभि, दध्याज्य क्षीर धृतैः ॥
सद्धूपैः सरलान्वितश्च, सलिलाद्यर्चाभिरिन्दुं यजे ॥

हे सोम आगच्छ २ सोमाय स्वाहा शेषं पूर्ववत् ॥ नैवेद्यं करम्बु पलाश ईंधनश्वेतध्वजा

ॐ दक्षिणस्यांदिशि वस्थि वासं, निर्धूम धूमध्वज देह दीप्ति ॥
उत्पादजं सप्त धनुः प्रमाणं, चक्रं यजे पल्य दलायुर्षतं ॥
उत्तार गोलार्द्ध निभं नयाधं, द्विक्रोशमात्रद्विमहस्त्रसंख्या ॥
सिंहेभ गोश्वा कृतयो भियोग्या, वहन्ति यानं प्रतियस्यबिम्बं ॥ भौमदर्भः ॥

अत्र रक्तध्वजा खदिर ईंधर सहित नैवेद्यं

न्यूयेन दशभि विहाय वसुधा, यो योजनानाम्बरे ॥
पत्नी बांधव भृत्य वाहन सुहृत, शस्त्रायवर्मान्वितं ॥
तोयै र्लोहित चन्दनै सुघृसणै, र्दीपैश्च रक्ताक्षतैः ॥
धूपैर्वं जुरसैलगुग्गुल गुड, स्योयेण कर्पूरजैः ॥

नैवेद्य गुड शर्करा घृत युतैः, शीतोदक प्लावितैः ॥
गंधाढ्यैर्यव सक्तुभिः सुखदिरां, गार प्रजुष्टै र्मनाक ॥
द्राक्षेचाम्बु रसैः रमांक कुसुमै, संसेवनाद्यैर्फलैः ॥
यज्ञेऽस्मिन् परितर्पयामि बहुशः, श्रीलोहितांग्रं ग्रहं ॥
हे मंगल आगच्छ २ मंगलाय स्वाहा शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ यातुधानिं दिशं संस्थितिज्ञ ग्रहं पुस्तकं न्यस्त हस्तं स्मितास्यास्बु जंचारु सूत्र तयालंकृतोरः
स्थलं दर्भोद्भवार्घहस्तोऽहमाह्वानये ॥ बुधदर्भः ॥

ॐ नैऋत्यां दिशि सप्त कार्मुक तनु, भिन्नेन्द्र नील द्युतिः ॥
साष्टाशीति मुताष्ट संख्य शतकै, यस्यार्ध क्रोश प्रभं ॥
ध्यायं दिव्य हरीभ गोश्वनि करैः, भौमोक्त संख्यैः रथै ॥
पल्यार्द्धायुर कल्मषां बहुविधां, वुद्धि सदेयाद्बुधः ॥
नीलैरातप वारणाम्बर लसद्य,ज्ञोपवीतध्वजैः ॥
नीलाम्भोरुह दाम चारु चमरै राराजितः सर्वतः ॥
सत्क्षीरैः स्वर मंजरी भव समीतपक्वैः सशाल्योदनैः ॥
धूपैर्खर्जुर सान्वितै वुधमहं, छागाधिरूढं यजे ॥

हे वुध आगच्छ २ वुधाय स्वाहा शेषं पूर्ववत्

ॐ पश्चिमायां दिशि संस्थितं वाक्पतिसद्ग्रहं पंकजाख्यं वलिचाक्षमालाकरं गंधं शाल्य चत पुष्प धूपप्रियं चार्ध हस्तो महास्मिन्महेशं शब्दये गुरुदर्भः समडि ईंधन नील ध्वज सहितं नैवेद्यम् ॥

ॐ पल्यैकायुधमष्टविंशति, करोत्सेधं सुवर्ण प्रभं ।
धात्रीतोरसवर्जितेनवशते, शत योजनानां दिवि ॥
ज्ञेयं पश्य रथं सुमेरुमभित, स्तोकेन क्रोश प्रभं ।
मुष्टांगैर्हरि हस्ति गोऽश्वनि करै, र्दिव्यै सहस्राष्टकैः ॥
हस्तं न्यस्त सु पुस्तकं बहु मतिं, यज्ञोपवीतां कि तं ॥
पीतैरंशुक पुष्पदाम चमरैः, छत्रध्वजै भूपितं ॥

अश्वत्थोत्थ समित्प्रपक्व चरुभिः, शाल्योदनाद्यै रहम् ॥
पद्मस्थं प्रयजे जिनेश्वरमहं, वाचस्पतिं संग्रहं ॥
हे बृहस्पति आगच्छ २ बृहस्पतये स्वाहा, इति पीपल ईं धन पीत ध्वजसहित नैवेद्यम् ॥ शेष पूर्ववत् ॥

ॐ वायु देवोपिताशा श्रितं, स्फुर द्रोचि ज्वालाचल नागपाशायुधं ॥
दिव्य मंडूक पृष्ठे समाधिष्ठितं, व्याहरामो हमस्मिन्स्मितं सद्ग्रहं ॥ शुक्र दर्भः ।

ॐ वायव्याशा श्रितोयः, शशिविशद तनुः सप्तचाप प्रमाणं ॥
देहोत्सेधोत्तमाला परिकरि प्रकरो, ब्रम्ह सूत्रांकितोरः ॥
सूर्यादेको नवत्यामुपरिगतो, योजनानां जनोयं ॥
दृष्टोयं जीव लोके परिणयन, जिनस्थापनाद्यं करोति ॥
दिव्यं यस्योद्वहन्ति स्फुरदमलरुचि, क्रोशमात्रं विमानं ॥
सिंहेभ्यो चारु मुख्य तुहिन किरण, जश्चाद्ध संख्या प्रमाणं ॥
यस्मिन्पल्यं प्रतिष्ठं शउ युत मरुजै, जीवितं वत्सराणाम ॥
पालाशोत्सेधपक्वैः सघृत गुरु युतैः, संस्थितं तर्पयामः ॥
हे शुक्र आगच्छ २ शुक्राय स्वाहा, खे॰ध्वजईंधन नैवेद्यं, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ उत्तरस्यांदिशि स्फुरन्सेच काग, द्युतिं कृष्ण यज्ञोपवीतादिभिः ॥
भूपितं चात्मदारत्रन्वितं, देव देवाभिषेकेशानिमब्दये ॥ शनिदर्भ ॥

ॐ उदीच्यांदिशि संस्थितोज्जननिभः, पल्यार्द्ध जीवीमतो ॥
मंद सप्तशरामनोन्नत तनु, नेत्राल देशर्चितः ॥

मार्तण्डात्मज योजनो परिगतं, कृष्णाम्बराद्यैर्युतं ॥
यस्य स्पंदन माह्वयंति सततं, क्रोशार्द्ध मात्रं दिवि ॥

दिव्यांगादिवि सार्द्धमर्द्ध मितयः, सिंहेभगोवा जयः ॥
सच्छत्रैः सुशमी समद्धिर्राशतै र्माषैं, स्तिलैस्तंदुलैः ॥

साज्यैरवारु गुडैः शनीश्चर महं, संतर्पयामो वयं ॥
धूपैः सज्जं रसोत्कटैर्गुरु युतैः, सुतेतरा वार्चये ॥

हे शनीश्वर आगच्छ २ शनीश्वराय स्वाहा इति कृष्णाब्जसहितं नैवेद्यम्

पूर्वोत्तरस्यांदिशि चाष्ट विंशति, करोन्नतां दिव्य तनूदपातियः ॥
आजानु बाहुनिज शक्ति वान्स्तभः, सर्वं गृहीत्वात्रिपदा यगोस्तुमे ॥ राहुदर्भं ॥

ॐ किं चिद्धीन जिनोक्त योजनमितं, चन्द्राद्धोगं सदा ॥
दिव्यं यस्य विमान मंजननिभंः कृष्णां करोत्यैदवं ॥

बिम्बं रश्मिभिरूद्धगाभिरमलं, पर्वावसानेष्वपि ॥
श्री मद्राहु महाग्रहं जिनमहे, दूर्वादिभिस्तं यजे ॥

हे राहु आगच्छ २ राहवे स्वाहा शेषं पूर्ववत्

ॐ केतुः स्फुरत्केतु सहस्त्र विग्रहो, रिष्ट ग्रहाख्यो रविमंडलादधः ।
अजेदरिष्टान विमान संस्थितं, जिनाभिषेके वसुदर्भ मादधे ॥ केतु दर्भः ॥

ॐ ईषन्नून तरैकयो जनमितं, धूम्रौथ धूम्रत्विषम् ॥
यस्य स्पंदनमूर्द्ध्वं गासित करै, राच्छादये द्वास्करम् ॥

दर्शान्ते प्रतिपत्तिता बुद्यनि, षण्मासि षण्मासितम् ॥
रिष्टं सप्त धनुस्तनुं ग्रह महं, केतुं च सम्यक् यजे ॥

हे केतु आगच्छ २ केतवे स्वाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

स्थानासनार्घ्य प्रति पत्ति योग्यान्, सद्भावसन्मान जलादिभिश्च
जैनाभिषेके समयेसमेतान्, नवग्रहान्शान्ति करान्यजामि ॥
जलं गंधं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं पुष्पांजलिं क्षिपेत्

क्षीरार्णवो त्तुंग तरंगगौरं, कस्तूरि का मोद विकृष्ट तुंगम् ॥
रजोपनोदाय ददामिधौतं, भक्त्या ग्रहेभ्यो वर वस्त्र मुख्यं वस्त्रम्

॥ अथ क्षेत्र पालार्चनम् ॥

सद्यं नाति सुगन्धेन, स्वच्छेन वहुलेनच ॥
स्नपनं क्षेत्रपालस्य, तैलेन् प्रकरोम्यहम् ॥ तैलाचनम् ॥

शश्वत् सुमौगन्दय सुनिर्मलेन, सद्येन तैलेन गुडान्वितेन ॥

श्री क्षेत्रपालं महुविघ्न शान्त्यै, संस्नोमि सिंदूर कृतानु लेपम् ॥

पानीये घनसारकैः सुमनसै, श्चंद्रा क्षतैरक्षतैः ॥

नैवेद्यैर्वर दीप धूप विविधै, र्नानाविधैः श्री फलैः ॥

संक्लीष्टा समपात नाशनपरैः, क्षेत्राधिपस्याग्रतः ॥

तद्वद्भक्ति पदार विंदमभितः, संचर्चयामोवयम् ॥

॥ इति क्षेत्र पालार्चनं ॥ अर्घं ॥

इन्द्ये लोक पालाः ये, समाहूताः मयाधुना ॥

निजासनेषु ते सर्वे, सम्यक् तिष्ठंतु सादराः ॥ १ ॥

विघ्नान्निहत्य निः शेषान् सहायाः संतु ते मम् ॥

सप्त धान्यैस्तथैतेषां, जले दद्यात् समाहुतिः ॥ २ ॥

सद्यस्तन प्रलघु गोमय पिंडिकाभिः, यत्पारि वर्त्तक मिद क्रियते जिनस्य । तत्स्नेहदृष्टभितमहो नहि लौकिकेन, रक्षादिनाक्रिमपिसाध्यमिहस्तदेवैः ॥

इति गोमय पिंड का वतरणम्

सुस्निग्ध कुंद कलिकोज्वल चारुभक्त, पिंडान खंडगुणमंडित विग्रहर्स्गं अत्यादराज्जिनपतेरय तारयामि, निर्वाण संभवमहासुख लब्धयेऽहम् ॥

इतिभक्त पिंडिका वतारणम्

पूता वनौ पतिक्ष शीतल भूति पिंडैश्चंद्रांशु खंडधवलैः कर कुड्मलस्थै, भास्मार्थमष्टविधकर्म भहेन्धनस्य, लोकेश्वरस्य परिवर्तनमा तनोमि

इति भस्म पिडकावतारणम्

हस्त द्वयाग्र कलितामलतांर्ण जूटः कोटिस्थितेन शिखिना सुख दर्शनेन ॥
निर्दग्ध कर्म रजसो जिननायकस्य, नीराजनं सटिति दूरत एव कुर्वे ॥

इति नीरांजना: वतारणम्

दूरावनम्र सुर नाथ किरीट कोटि, संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांत्रीः ॥
प्रस्वेद तापमल मुक्तमपि प्रकृष्टै, भक्त्या जलैजिनपतिं वहुधाभिषिञ्चे ॥

ॐ जिन पतिमतिरिव सर्वजन जीवनैः,
सज्जन मनोभिरिव स्वच्छ तमैः,
तर्क शास्त्रैरिव बुद्धि वर्द्धनैरनुपचार प्रसादित,
स्वामि सन्मान दानैस्त्रिसंतर्पकैः,
यौवना रंभैरिवमनोहरैः ,
चतुरस्त्र वन्धु जनं संमुतै, रिव सदा क्लादने हेतुभिः,
शशिकिरण प्रकरैरिवातिशीतलैः , नदीनद बापी कूप तड़ागसरोवरादि,

शुचितमः प्रदेश संभूतै ,

शुक्लभिरं भोभरनेभिः ॥

ॐ एतानि जिनांगसंग मंगला निदाघ तप तप्त सकल जगतापापनोदन दक्षानि, जिन चरणाराधनां शक्रस्य, संवर्द्धन कराणि, स्नान सलिलानि जगतः, शांति कुर्वन्तु स्वाहा, ॥

जलस्नपनम् ॥

पुरायै र्वाभिः प्रसर्पत, परिमल सहितै, रक्षतै रक्षतांगै;

पुष्पै पुष्पद्भिरन्त श्चरुभि, शुभवरै, दीपयद्भिः प्रदीपैः ॥

धूपैः सद्द्रव्य नव्यै रूप हत गुणै, संफलैः संफलाढ्यैः ॥

पुष्प जल्योय युक्तै, स्त्रिभुवनमहितं, संयजे देव देवं ॥ अर्घ्यम्

उत्कृष्ट वर्ण नव हेम रसाभिराम, देह प्रभावलय संगम लुप्त दीप्तिं ॥

धारां घृतस्य शुभ गंध गुणानु मेयां, वंदेऽर्हत, सरभ संस्नपनोप युक्तां ॥

ॐ निर्लानि जातरूप रस धारा समुज्वलायाः, उदयगत बाल तरणि किरणारुणारुवा, नवजल धरधीर ध्वनि हेतु समुन्मिरवतरल तांडदंड विडंबन कारिणया, श्रेष्ट मंजिष्ठाः निर्यास वर्ण सुपहसन्त्या, मनः शिलासंग समुत्थित रेणु पिंजरयानि सुख सहकार हरि द्राग्रंथि निष्पंद मनो हरया, सुगंधि कमल मकरंद कणिका रजपुंजपिंरितमिवासन्न देशं, निजद्युति विभवेन, जनयन्त्या मृदुपवन विसर्पमान, परमामोद सुरभि कृत, समस्त ककुभ्भागया, घनसार सौरभभर समुद्वहंत्या

स्निग्ध शुचि विमल घृत धारया, भगवंतमर्हन्तं संस्नाप याम ॥ धर्मं स्निग्धमनोज्ञशाकं विदधातु भगवानिति स्वाहा ॥

★ इति घृतस्नपनम् ॐ पुण्यै बीभिरित्यादिन पुष्पांजलि ★

संपूर्ण शारद शशांक मरीचि जाल, स्यन्दैरिवात्म यशसामि वसुप्रवाहैः ॥
चीरै जिनाः शुचि तरैभिपि च्यमानाः, संपादयंतुमम चित्त समीहितानि

ॐ अथ निष्कथित वलधौत द्रव्य सन्निभेन, सरसमयं प्रसन्न महत्पथ, प्रस्थित राजहंस श्रेणि सदृशेण, चन्द्रविंबाश्रितामृतरस प्रवाहानुकारिणा, स्निग्धोपहसित, सरस्वतिहसितेन, पवनान्दोलित दुग्ध सिंधु प्रवाह लोल कल्लोल लीलां दधानेन, जिन दर्शन कुतूहलेन, रसातल समहायागतस्य शेषस्य शरीरेण, यदीर्घी भूतेन धवलितस्नायच, सर्वमेव जिनायतनं शंख दर्भादि वोत्कीर्ण पुण्य हृदयादिस्नाहनं, बुद्धि नांशु विम्ब मिवोदितं, नीहार गिरि निदूर प्रचालितमिव, देवराज मतंग जदंत मध्यमिव, चन्द्र शिलाइचित मिव प्रकुर्वाणेन, शरदभ्र वृन्देनैव, द्रवीभूतेन, यज्ञोपवीतेन, चीरोदधि सर्व स्वेनेव, शुचिना चीर पूरेण, भगवन्तं अर्हंतं स्नापयामः, निरवधि यशः अस्माकं करोतु भगवानिति स्वाहा ॥

इति दुग्धस्नपनं पुण्यै वीभिरित्यादिना अर्घ्यम्

दुग्धाब्धिवीचि चय संचय फेनराशि, पांडुत्व कांतिमव धीरयतामतीव ॥
दद्दनांगता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा, संपद्यतां सपदि वांछितसिद्धयेनः ॥

ॐ पुंडरीक खंड केतकी प्रसूनदलावदातेन, स्फटिक मणि कुट्ट मन लीनिपतीव, चंद्रातप प्रकारेण, कनक महीधर तट विकट कोटि घटित नक्षत्र चौद विशदेन, कुसुम कुंदा मित सिंदु वार छायो पामितेन, अमृतफेन पिंड इव पांडुरी कृतेन, पारद रस धाराभिरिव धौतेनः परमपिंध्यान संपद्विशे पेणेव, कृतमूर्ति परिग्रेहन जिननाथ यशसेव भुवने मयमानेन, पिंडी भूतेन कास कुसुमविकास कांति कान्तेन, सर्व शुक्लैरिव विहित संविभागेन, कैलाशोपल पट लेनेव, कोमल तामापन्नेन, दध्नः भगवन्तमर्हन्तं स्नापयामि, शुभ शीतल ध्याने नाऽस्माकं संयोजयतु, भगवानिति स्वाहा ॥ दधि स्नपनं ॥

ॐ भक्त्या ललाट तट देश निवेशितोच्चैः ॥
हस्तैः स्तुता. सुर वरा सुर मर्त्य नाथै. ॥
तत्काल पीलित महेक्षु रसस्य धाराः ॥
सद्यः पुनातु जिनबिम्ब गतैव युष्माम् ॥

ॐ सकल मनोभिरुचित स्वादु भावेन; राज। वर्तशिला घर्पिताः कल्याण रेखापि संगेन, विविध सुगन्धि द्रव्य संचय परिमला मोदरिस्कृत ककुब्वलयेन, निरयवादेन, इक्षु रसेन, भगवन्तमर्हन्तं स्नापयामि स्वाहा निर्मलमज्ञानं अस्माकमुत्पादयतु भगवानिति स्वाहा ।

इति इक्षु र स स्नपनम

सुस्वादु ऋष्य गुरु कोमल नारि केल, स्थूल प्रभूत फलनिर्मल वारि पूरैः ॥
संसार सागर समुत्तरणैक सेतु, भूतं जिनेन्द्रमभित' परिषेचयामि, ॥

ॐ निरुपमहत सुमहत जेरत मधुरत रस धूप्त प्रति नवा परिम्लाः, स्निग्धमश्रुतयाच्चगुण ग्राम समग्रता समधिक स्पृह णियानां निखिल भुवन जन निवह नयनसंदो होद्य मानंददा व्यसनिनां, केषांचित्संफुल्ल सेफालि कोल्ल सुल्लोहित क्रांतीनां, अधरित विराग पद्मरागं घट सौष्ठवानां; केषांचित्समुल्लसत्पीत शरीरीष पुष्प भरित द्युतीनां, न्यक्कृत विद्यो द्योतमान मरकत कलश विलासनां, केषांचित्प्रविकासित चंपक प्रसव प्रीति दीप्तीनां; अभिभूत शुभशात कुंभ कुंभि सौभाग्यानां, प्रभूत भूरिवारि गंभीरोद्धर कुहराभ्यन्तरामानां, लक्षणा विरच्यमान परिनिमित रुचिर द्वार, प्रणाल सनाथ सुललित निजाग्रभाग, सरभ सद्गुरोत्पत्ति तत्प्रति नव तर नीर दुर्दिव्यनव्यति कराणां, नारि केलि फलोत्कराणां, कर्तुं जन्माभिषेकं विबुध परि वृढा संगता, यस्य कीर्ति र्लोके कृष्णोऽपि चन्द्रा तपाशिवद रुचा चेति ते, जात शंका ॥

मूर्ध्न्यें बो तुंग भावा त्कनक शिखरिणां, पृष्ठ सौधर्मधामूना ।
दुग्धाब्धिः शंकयै वस्फुरतरमविधुः, पंचमं चार्णवानां ॥
प्रोद्य द्राक्षा मृगांक प्रति नव किरण, श्रेणि संभेद भूरि ।
प्रश्च्योतश्चंद्रकांतोपलविमल जला, सार पूर प्रपन्नैः ॥
प्रालेयांम्मृणाली मलयज कदली, हार कलहार शीतैः ।
रेतैस्तोय प्रवाहैः जग दधिपतिं, तंजिनं स्नापयामः ॥
श्री मज्जैनेन्द्र गात्रक्षिति धरणि पत, न्नि र्जरांभः प्रवाहः ।
श्च्योतत् पयूष राशी द्रव रस विभव, स्फर्द्धि माधुर्य धुर्यः ॥

निश्वामेनां प्रमर्य द्रहल कल फलं, मेदिनीं व्यश्नु वानः ।
स्तादेनः शातयेनः च्चपित जगदघ, चोच तोयौघ एपः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं वं हं सं तं तं वं वं हं हं सं सं तं तं पं प झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रॉं द्रीं द्रावय द्रावय नमोर्हतेभगवते श्रीमते पवित्रतर नालि केर रसेन जिनमभिषिचयामि स्वाहा,

॥ इति नालि केर रसेन स्नपनं ॥

श्री शात कुंभ कलशोद्धृतशुद्ध वर्णैः, सकुंकमाभ मधुराम्ररस प्रवेकैः रागादि वैरिपरि मर्दन लब्ध कीर्ति, श्वेतो कृता समभुवंस्नपयामि वीरं ।

ॐ निरुपम मद कल कल कंठ वचन रचन चातुरि चमत्कार सहकाराणां, आमोद भर भरित दिगंत राल विवर संधानां अनेक शुक पिक कंठ माधुर्य धुरीणां, पंचम कोका कलित ललित श्रुतीनां, विभूति वहुत परिमल पृथुल फलभाराणां, अभिनव धन पटल श्यामल द्वदीतीणां निंदी वीर मधुर झंकार मुखरित शाखाम्टमृगाणां, गगन चुम्बितां दोलित पल्लवानां, निजमहिम विनिर्जित तर्जितरुणां, अमंदभ करंद अवधारित शुद्ध बोधैः भिद्धरसै रिवाखिल सिद्ध कारकैः मरकत मय कपि कार फल संमृत्यै रुत्तप्त सुवर्ण प्रभैरप्यामोद सुभगैः धनद निर्मित पंचाश्चर्यैरिव माणिक्य पुष्पराग प्रवाल विद्युद्दर्शितं रत्नत्रयाश्चर्यैरिव मुदर्शन पर्वताग्र स्थितमहं द्रम्क्ष भिषेकोत्सव मनोहरै रति पवित्र तमाम्र रसैः फल संभूतैः ॐ तुष्टि करैः पुष्टि करै· पक्व पुष्पैर्मधुरैर्मनोहरैः गुरुवचनैरिव गुरुभिश्चाम्ररसै स्नापयामि स्वाहा ॥

आम्र रस स्नपनम् ॥

ॐ संस्नापितस्य घृत दुग्ध दधीक्षुवाहैः ॥
सर्वाभिरौष धिभिरर्हं तमुज्वलाभिः ॥
उद्वर्ति तस्य विदधाम्यभिषेक मेला ॥
कालीय कुंकुम रसोत्कट वारि पूरैः ॥

ॐ बलाति बला सहदेवी, मलयजा जात्य कुंकुम एला लवंग कंकोल नाग केशर महौषधि पृष्ठाः पर्णि शाला पर्णि मुद्गपर्णि माषपर्णि जय विजया अमृता सुगंधा सुरदारा जीवक ऋषभक काकोली चीर काकोली विशदा मोहिनी शता वरी ही बेलि कादि औषधिगण मिश्रितेन इन्द्र हस्तोर्यानिता भरण विमिश्रितेरानित श्रोत्रप्रवाहं पन्च वर्ण लिट्गत शोभा प्राप्त साश्चर्येश्च अनेक देवांगना बिरचित जय जय शब्दात्यन्त कोलाहला गत भव्य जीव कृत श्रद्धानेन, बहु शुभ सुगंध वस्तु निक्षिप्ता जीव जल प्रवाह मंदाकि नी प्रमाणेन, नानाविधदे शोत्पम सर्वौषधि परिमल सुगंधि कृत समस्त चैत्य भवनेन, सर्वौषधिपयः पूरेण सकल विमल केवल ज्ञान दर्शन जिनेश्वरं संस्नापयामि, चतुर्गति क संसार दुःख मस्माकं भगवान् स्फोट यन्त्वामंति स्वाहा ।

॥ सर्वौषधि मंत्र. ॥

ॐ नमो र्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्य गुरवे त्रिदशेश्वर मणि मुकुट मस्तक स्पष्टी कृत विमल रुचिर धर कनक विकृत स्फुट लटह मुकुट किरीट कोटि परिमंडित मरकतेन्द्र नील महा नील चन्द्रकांत सूर्य कान्त पद्मराग पुष्पराग वज्रवैडूर्य प्रभ्रति विविध प्रकारानेक रत्न चूड़ामणि गुणगणो-

दय स्फुरद्गुरु विद्युद्विलास लोल ज्वाला कुल प्रभा कलाप मालालंकृत पाद पंकज दयाल धर्म
तीर्थं कराय धर्म नायकाय श्री मत्सिद्धार्थ राज कुलाम्बरोदिताय विविधानेक निर्मल सम्पूर्ण
लावण्य गुण गणोदयाभिरामाति शय विशेष केवल ज्ञान किरण प्रकाशित सकल जगत्त्रय भव्य
जन प्रति बोधकाय श्री वर्द्धमान दिवा कराय असुर सुर मुनि गण मनुज प्रतिमोह प्रकर्षमति
संशय मूढ़ संकल्पान्ध कारोच्छेदन कराय इहास्यां अवसर्पिण्यां सर्वज्ञानां सर्वदर्शिनां अष्टो
त्तरसहस्र लक्षण व्यंजनविधि सूत्रित जलदमल कमल विलासविसर्द्धि ल रुचिर वर चरणानां
चतुर्विं शति तीर्थं कराणां वृषभ जिनेन्द्रा दीनां वीर जिनाधीश पर्यन्तानां अत्र
बुधोत्पत्ति मतुलया परम भक्त्या देवाश्चतु र्णिकायाम हर्षिगण भवन वासी व्यन्तर
ज्योतिर्गण विधाधर चक्रवर्त्ती बलदेव वासुदेव सिद्ध चारण किन्नर किं पुरुष
महोरग गरुड़ गान्धर्व यक्षराक्षस भूत पिशाच गज गहय महिष वृषभवर तुरंग मकर खकर भत्रमर रुह
करीण वराहाष्टापद प्रुरु व्याघ्र हरिगरुड़ कुक्कुट कुरूर कारंड सारस कलहंस चक्रवाक बलाका पर्वत
रथयान विमान वाहनाधिरूढ़ा वर कनक किंकिणि काना मुकुट मुक्तादाम कलाप मालालंकृत विबुधा
कीर्णविभाग शरदमल पूर्ण चद्रद्युतिहर वर विकृतोद्धृत च्छत्रायुधं चामरमणि ध्वजयताकावर शंख पटह
दुन्दुभिभेरी तालकाहल मृदंग तुर्य वेणु वीणा पल्लव वल्लरी प्रमुखोत्कृष्ट कलकल प्रक्षुभित
समुद्र योपसिंह निनाद सहर्षा तुल घोष कोलाहल समंततोन्य द्युति विभमान् विकृता स्पर्द्ध इव दर्श-
यन्तां विमल रूचिर माणिक्य कनक रजतमय ज्वलदमल ॥ लंकार प्रलंब वर हार कुंडलां-
गद मणि केयूर कटक कटि सूत्र मुकुट धरा रूचिर आपूर्ण नव यौवन मदनोन्मादक विमल
जलावति विमुल गंभीर नाभि प्रजाय मानसिति रूचिर वर रोम राजि विभूपित त्रिवलित रंगतनु

मध्यांजन नील केशर भार कमलायतन यान सकल शशि बदन पीनोन्नत पयोधर बिम्बाधर विपुल जघन श्रृंगार वेषविभूषित स्मित हसित विमल विलास लावण्य हावभाव ललित पृथु शिथिल रसना गुण गण कलादिभिर्दिव्य देवांगनाभिश्चाप्सरोगण सहिताभिः शक्र प्रबोधिताः देवगणाः मत्तभ्रमद्भ्रमर किलकिली मृदु मधुर वचन ललित फुल्ल वल्ली गुल्म द्रुमपतित पुष्प वासिता नेक द्रुम मंडप कानन वनदरी गुहारण्य तल नितम्ब संशोभित मंदर कूटे अनेक रत्नोज्वल कूट कोटि परि मंडितो विधिना सिंहासने संपादपीठो निक्षिप्यतान् जिनेन्द्रास्त्रै लोक्य सहितान् त्रैलोक्योद्योतकरान् देवाधिदेवान् स्नापयाञ्चक्रिरे । यथा कोकनद कुमुद कुवलय कल्हार सौगन्धिक चंपक पुन्नाग वकुल तिलक सहकाराशोक कुरबक कर्णिकारक केतकी कुल्ल शाल तमाल दाड़िम मातुलिंग प्रियंगु नव यूथिकाः वासंतिका जाति मल्लिका माधवी कुंकुम रक्तोत्पल कुटज कोरंट पाटली कुंद मंदार कदंब कदली सिन्दुवार प्रभृति जल स्थल जनानेक पंच वर्ण सुरभि कुसुमोपहार पुष्प वास धूप दीप विचित्र नृत्य गीत दिव्य स्तोत्र मंत्र पवित्र मंगलाभिधानैः क्षीरोदधि सलिल कुसुमपरिपूर्ण मंगल रजत कलशैः एवं कृताभिषेका, इहाप्यनेक गंधोदक परिपूर्ण कलशैरभिषेचनं प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा

इति सर्वौषधि स्नपनम् ।

इष्टैर्मनोरथ शतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्ण कलशै निखिलावसानैः ॥
संसार सागर विलंघन हेतु सेतु, माप्लावये त्रिभुवनैक पतिं जिनेंद्रम् ॥

ॐ जांबूनदरजातादि मय कलश वदन विनिर्गतेन वज्रोपल संघातेनेव द्रव्यतामुपादितेन प्रालेय गिरिशेन द्रवी भूतेन जिनस्नपनाय स्वयमागतेन घनांत हरिण लांछन मरीचि कलापेनेव राशी भूतेन

च्छतया दयाधन मुनिमनोभिरिव निर्मितेन नवी नवीनाकुश छायापहारिणां हारि हरिण तरलतर लोचनप्रभा प्रवाहिणा, परकीय यशः प्रकाश सज्जन गुण विमलेन मुक्ता फलांशु जाला मालाकालयता पीयूषरसेनैव, सर्वेन्द्रियाणां प्राणिन, करेण निर्मल तया लोचनानंदमुत्पादयता सुगंधि कमल संबंधितया घ्राणे न्द्रियाप्यायनमादधत तां समु चित शिशिर तया स्पर्श सुख मुय जनयता गंध जिघ्रासयानुयातु मधुकर झंकारेण श्रवणमानंदयता शुचितया चांतः करणमावर्ज्जतां, रजनी पति ज्योति परि स्पष्ट चंद्र कान्त शिलाइव सम्मिश्रितेन अच्छ स्फटिक छाया शुभ्रेण सलिलेन भगवन्तमर्वन्तं स्नापयामः, सर्वमभिलषित मस्माकं करोतु भगवानिति स्वाहा ।

इति चतुः कलश स्नपनम् ॥

द्रव्यैरनल्प घनसार चतुः समाढ्यै, रामोद वासित समस्त दिगंतरालैः ॥
मिश्री कृतेनपयसां जिन पुंगवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि ॥

ॐ यथा लब्ध सुगंध पदार्थ संयोग सुंदरेण केनचि दुन्निन्द्रारविंद मकरंद रचित चारु चंद्रिकेन, केनचित्पुष्पित कुमुद कुवलय रज कषाया मोदितेन, केनचित्प्रचल दलि कलिध कारी सौगंधिकगंध सम्बन्धेन, अपरैरपि जलजात वसुभिर्बहुल परिमला कारिभिः सुरभि कृतेन, समीर पर्याश्रित लवंग घृताद् तित रस पुष्प निष्पंद संग संजनित हृद्य गंधेन, प्रविक सच्चंपक कुसुम समूह वासितेन, साधुगंधा घ्राणे मुदित मधुकर फुल्लरवि चावालितेन, मृदुपङ्क निमज्जदैरानतदान संक्रान्ति सुरभी कृत मंदाकिनी प्रवाह पराजय कारिणी करि कलशभग्न चंदनानोकुह स्कांध देश विनिश्रित रस धारा विलासेन, कुंकुम कर्पूरादि

संसर्गेण, सुगंधिना बहुविधेन गंधोदकेन, भगवन्तमर्हन्तं स्नापयामः, सुरभित भुवनांत कीर्ति मस्मावां करोतु भगवानिति स्वाहा ।

इति गंधोदक स्नपनम् ॥

❀ अष्टक ❀

सद्गंधतोयः परि पूरितेन, श्री खंड मालादि विभूषितेन ॥
पादाभिषेवं प्रकरोमि भूत्यै, भृंगार नालेन जिनस्य भक्त्या ॥ जलं ॥

काश्मीर पंक हरि चंदन सार सांद्र, कर्पूर पूर रचितेन विलेपनेन ॥
अव्याज सौख्यय तनोः प्रतिमां जिनस्य, संचर्चयामि भव दुःख विनाशनाय ॥चंदनं॥

तत्काल भक्ति समुपार्जित सौख्य बीज, पुण्यात्मरेणु निकरैरिव संगलद्भिः ॥
पुञ्जैः कृतैः प्रतिदिनं कलमाक्षतोघैः, पूजां पुरोविरचयामि जिनाधिपानां ॥अक्षतं॥

अम्भोज कुंद बकुलोत्पल पारि जात, मंदार जाति विदलन्नवमालिकाभिः ॥
देवेन्द्र मौलिविरजी कृतपादपीठं, भक्त्या जिनेश्वर महं परि पूजयामि ॥ पुष्पं ॥

अत्युज्वलं सकल लोचन हारि चारू, नानाविधा कृति निवेद्यमनिं द्यगंधं ॥
वाष्पाय माम मनणीयासिहेम पात्रे, संस्थापितं जिन वराय निवेदयामि ॥नैवेद्य॥

निष्कज्जल स्थिर शिखा कलिकाकलापै,-र्माणिक्यररश्मि शिखराणि विडंबयद्भिः
सर्पिभिरुज्वल विशाल तरावलोके, दीपै जिनेन्द्र भवनानि यजे त्रिसंध्यं ॥ दीपं ॥

कर्पूर चंदन तरुष्क सुरेन्द्र दारू, कृष्णागुरू, प्रभृति चूर्णवि धानसिद्धम् ॥

नासाविकठ मनसां प्रियधूमं वर्ति, धूपं जिनेन्द्र पुरतो वहुधा क्षिपेहं ॥ धूपं ॥

वर्णै नवानि नयनोत्सवमावहंति, यानि प्रियाणि मनसोरस संपदा च ॥

गंधेन सुष्ठु रमयति चयानि नासां, तैस्तैः फलैर्जिनपते विंदधामि पूजा ॥ फलं ॥

एवं यथाविधिमनागपि यः सपर्यामर्हस्तवस्तव पुरस्सर मातनोति ॥

कामं सुरेन्द्रनर नाथ सुखानिभुंक्त्वा, मोक्षांतमप्यभयनंदि पदं सयाति ॥ अर्घं ॥

घत्ता—सिसिव निम्मलु हाजा, सिंघछ प्रभामंडलु पिहब, जस वरु असोने सुर कुसुम वरसिणु,

नर चामर धूप द्वय पंसरू ॥ दुं दुहि पुरे इन हंगणु,

केसरि आसण दिव्य धुणि, अट्ठई पयडइ नाह ।

इइ कुसुमांजलि दिन्नमई, भत्तिय अरहंताह ॥

जेहि दट्ठई अठ कम्माई, परकाल विकलीमलई ॥

अपठहि सुह जणि निम्मल जाहं एकट वहुगुण सहिउ

अछि नाणु सु पसिद्धं, केवलु ताहं शरीर विवज्जियहं ॥

सासय मुख वजुयाहं, राय समुदय दिन्नमई ॥

कुसुमांजलि सिहाय जणीय जणां, मणाणम् ॥

दसब्भाव छत्तीस गुण, परिवार संगहय जलहि पारय ॥

सिद्धंत आगम कुसल । नवययच्छ सब्भावभावय ॥

जिवय संयम नियमधर । पंचायार समुन्नतहं
आयरिय एह कुसुमांजलि मई दीन्न ॥ ११ ॥

जेहिं वसि किउमाण, मायंगु अयंदुट्ठउ कोहजिन ॥
कवडु वसहु दुव्वार नठऊ सम्मतु मणुयिरु करांविहि लोहू ॥
पसरंतु रूधन भनियहं, भववणि भुल्लाहं ॥
मुगदेसय दाहं, दिन्नपचये, पाठ यहं इय कुसुमांजलि ताह ॥ १२ ॥

जियपरिसह मोह परिवित्त, वारस विहित तवजिय कषाय ॥
भयसंग वज्जिय जिय इंदिय विसय, मुह काम कोह नियमणु विसज्जिय
जीव दयावर गुण निलय, विणय समुज्जय चित्त ॥
एह कुसुमांजलि समर यहं, तेह साहुई मई खित्त ॥ १३ ॥

विमल कोमल कमलदल नयणी, कमला लय मुहि कमलहछ
कमल किया सखि, जाविणय संपयधरहं
दुरिय दुरक दोहग नासणि, जाजिण वयण, विणग्गाई सयल पयासई ।
लोहितहिं देवीहिं, सिरि सयही एह, कुसुमांजलि होई ॥ १४ ॥

जाह निम्मणु हियई सम्मतु जेसब्ब उवव हरई
जीव हसन कय निइछइ पर घरणी णिय जणणो

समतिण समाणु पर दव्वु पिछई जेणि सिमोयण वज्जिया
दिंति सुपत्त हंदाणं तहं साचयह सकरोमिहऊ कुसुमांजलि सम्माणु
जेहि मन्निवई धम्म दयामूल णिग्गथ रिसि परमगुरु सुहपयास संतास वज्जिय ।
जेसद्दहयइ देउजिणऊ अट्ठारस दोस वज्जिय ।
जे सामिय वछला चंकि महिय न जाहं, एहसम थुप दिन्नमई कुसुमांजलि भवियाह ॥

❀ अथ शांतिकम् ❀

अथ चतुर्विंशति का पुरतः शतपत्रैस्तंदुलैः श्रीखंडादिभिः शातिं कुर्यात्

ॐ पुण्याहं ३ प्रीयंतां ३ भगवतोर्हतस्त्रैलोक्य वंद्यास्त्रिलोक पूज्यास्त्रिलोकोद्योत कराः ऋषभादयो वर्द्धमानांतश्चतु र्विंशति अर्हन्तः सर्वज्ञः सर्व दर्शिनः सभिन्न नमस्कारा देवाधि देवता ऋषभाजितसंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभ सुपार्श्व चंद्रप्रभ पुष्पदंत शीतल श्रेयांस वासु पूज्य विमलानंत धर्म शांति कुन्थु अरह मल्लि मुनिसु व्रत नमिनेमिनाथ पार्श्वनाथ वर्धमानांताः सशिष्य वर्गाः शान्ति कराः भवन्तु मुनयश्च दृढव्रताः शान्तिं प्रयच्छन्तु, श्री ह्री धृति कीति बुद्धि लक्ष्मी वनदेव्यो विद्या साधन प्रस्थान करणादिषु स्वगृहीत नामानि सर्व कार्य साधनेष्विह चान्यत्र सिद्धाः सिद्धि कराः भवन्तु, सर्व देव रिपु जय दुर्गं कांतार विषमे षु जयन्ति जिनेन्द्र चंद्राः परम मांगल्य भूता। परम कल्याण दायिनो नित्यमाचार्यः साधवश्चातुर्वर्णा श्रमण संघ सहिताः शान्तिः प्रयच्छन्तु ।

अथ दिक्पालानां ग्रहाणां पुरतो वलि विधान वलिभिः कुर्वीत ग्रहा. सूर्य चंद्रांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु सहिताः साष्टाविंशति नक्षत्राः अश्विनी भरणी कृतिका रोहिणी मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तरा षाढ़ा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्र पद उत्तरा भाद्रपद रेवती अभिजित सलोकपाला यम वरूणा कुवेर वासवाद्याः स्कन्द विनायक दक्षिण कोश कोष्टा गारा दीनां आयुर्वर्द्धताम् धर्मो वर्द्धतां पुण्यं वर्द्धतां कुलगोत्रं चाभिवर्धताम्, पुर राष्ट्र ग्राम च र चक्रं तस्कर दुर्भिक्षमारीति कलह वैरी रोगाद्युपद्रव विनाश नाय नित्यमर्हन्तो मंगलं प्रयच्छंतु,

पुनः सदा दान पतीनां श्रावकाणांच भ्रातृ पुत्र मित्र कलत्र स्वजन संबंधी बन्धु वर्ग सहितानां धन धान्यैश्वर्य यशो विभूति कांति मल द्युति कीर्तयो वर्द्धन्तां, सर्वस्मिन् जिनायतन मंडले श्री कीर्त्यैश्वर्य महाभिषेकोत्सवे पूजाभिवर्धये च यतीनांच तत्र निवासिनां रोग शोक व्याधि उपसर्ग दुःख दौर्बल्य पर हनानि विनाशवन्तु । पापानि नश्यंतु घोराणि निघ्नंतु प्रति शत्रवः पराङ्मुखाः संतु देशाश्च निरुपद्रवाः भवंतु सर्व कालमपी सर्व कल्याण संप्राप्तिरस्तु भूयोभूयः श्रेयः प्राप्तिरस्तु सुखं हितैश्वर्यमेवास्तु शिवंच सत्वानां ऋषि ऋषभाद्यः सदादिशंतु स्वाहा ॥ इति शांति मंत्रः पुनरपि जिनाग्रे । ॐ अर्हद्भयो स्वाहा, ॐ सिद्धेभ्यो स्वाहा, ॐ सूरीभ्यो स्वाहा, ॐ पाठकेभ्यो स्वाहा, ॐ सर्व साधुभ्यो स्वाहा, अतीतानागत वर्तमान त्रिकाल गोचरानंत द्रव्य गुण पर्यायात्मक वस्तु परिच्छेदक सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राद्यनेक गुण गणाधार पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

पुनरपि दिक्पालानां ग्रहाणां पुरतः पुण्याहं २ प्रीयंतां २ वृषभादि वर्धमानांताः परम तीर्थंकर देवाः स्वसमय पालिन्यो प्रतिहत चक्रेश्वरी, रोहिणी, प्रज्ञप्ती, वज्र शृंखला, पुरुष दत्ता मनोवेगा कालिका ज्वाला मालिनी जया विजया अपराजिता महामानसी चामुंडा अम्बिका पद्मावती सिद्धायिकाश्चतुर्विंशति शासन देवताः गोमुख यक्ष प्रभृति चतुर्विंशति यक्षाः आदित्य चंद्र मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनिराहु केतु प्रभृत्यष्टाशीति ग्रहाः वासुकी शेषपालक वैकोंटक पद्म कुलीशानंत तक्षक महापद्म जय विजय नागौ देवनाग यक्ष गंधर्व ब्रह्म राक्षस भूत व्यंतर प्रभृतयश्च सर्वयते जिन शासन धर्म पालकाः आर्यार्जिका श्रावक श्राविका यज्ञ क्रिया याजक राजा मंत्री पुरोहित सामंत रक्षक प्रभृति समस्त लोक समूहस्य शांति वृद्धि पुष्टि तुष्टि क्षेम कल्याणैश्वर्य आयुरारोग्य प्रदा भवंतु सर्व सौख्य प्रदा भवंतु देशे राष्ट्रे पुरे च सर्वदा एव चौरासीमारीति दुर्भिक्ष विग्रह विघ्नौघ दुष्ट भूत शाकिनी प्रभृत्य शेषान्निष्टानि विलयं प्रयान्तु राजा विजयी भवतु राजा सुखी भवतु राजा प्रभृति समस्त लोकाः सततं जिन धर्म शीला पूजा दान व्रत शील महा मोहत्राव प्रभृति प्रजाभवतु यत्रस्थिताः भव्य प्राणिनः संसार सागर लीलयोत्तीर्यानुपममं सिद्धि सौख्य मनंत कालमनुभवंति, तदा शेष प्राणीगण शरण भूता जिनशासनं दधिति स्वाहा ।
बलि विधानमंत्र इति शांति करणीया.

आयाताः यूयमेते, प्यमर परिवृता, प्राप्तसन्मान दानाः ॥
स्थाने स्वस्मिन्समाध्वं, प्रमुदितमनसो, लब्धरक्षा धिकाराः ॥
निघ्नंतो विघ्न वर्गान्, परि जन सहितो, योगभूमि समन्तात् ॥

दिक्पाला पालयध्वं, विधिरभि अवणे, वर्ततां वर्धमानः ॥

इति दिक्पाल क्षमा पन मंत्रः ॥

(अथ लवणोत्तारणम्)

रयणाथरितं लेवेति, जंकिवि सिध हितणुछजंति ॥
कंभि सइं भरी सुगन्धऊ, अपरिदि आणी यउ विग्रहं रसहं ॥
जंमझि चंगउंनि जगजिणो सरसंति कर उत्तारहिं व. लूण ॥
उपावदी द्विपाश चंचलीय, फीट्टई लवणि खणिणा ॥
जन्मोत्सवे जिनवरस्य सुमेरु शृंगे ॥
शांतैः सुरै लवण तोय निधेगृहीत्वा ॥
आरभ्यते सकल दोष निवारणार्थ ॥
सुत्तारणं भव हरं लवणस्य सद्यः ॥

(अथ जलोत्तारणम्)

खीर सायरजं जिसु पवित्तु, जांम्रम्मल सुरसरहि जजितु
कंपी असिथरस तुल्ल उत आणीऊ अमराहिव इह छकल सऊ
खित्तभल्लऊ जोतिय लेहि पुंज इहसंति
सुहु करवीरु तिणिवार जिण सामिरहं उतारीह वर नीरू ॥

दुग्धाम्बुधेः सलिल मुल्लसतोरु गंधं ॥ कर्पूर पूर परिपांडुरितं जनस्य ॥
उत्तार्यते निज करेण निवेदयामि ॥ शक्रेण भक्ति भरतो भव शोषणाय ॥
जलोत्तारणम् ॥

क्षेमं सर्व प्रजानां प्रभवतु वलवान्, धार्मिको भूमिपालः ॥
काले कालेच सम्यक् वर्षतु मघवाः, व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौर मारी क्षणमपि जगतां, मास्मभूज्जीव लोके ॥
जैनेन्द्रं धर्म चक्रं प्रभवतु सततं, सर्व सौख्य प्रदायी ॥
प्रथयतु मुदमंतः क्षेममारोग्य मायु,-र्वितरतु शुभ बुद्धिं पाप बुद्धिं धुनोतु
सफलयतु शुभवांछां पूजकानां जनानां, जगदधिपति पूज्यः पूजितोयंजिनेन्द्रः ॥

शिव मस्तु सर्व जगतः, परहित निरतः भवंतु भूतगुणाः ॥
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखो भवंतु लोकाः ॥
मंगलार्थं समाहूताः, विसर्ज्याः किलदेवताः ॥
विसर्जनाख्य मंत्रेण, वित्तीर्य कुसमांजलिः ॥

॥ इति श्री महाभिषेक पाठ समाप्त ॥

❀ अथ चेत्र पाला पूजा ❀

श्रीमज्जिनेन्द्र यज्ञेस्मिन्, चेत्राधिपतये सदा ।
बलिं ददामि सौख्याप्त्यै, दुष्ट विघ्न विनाशिने ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं जय विजय अपराजित मानभद्र चेत्रपालाः अत्र अवतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्रमम सन्निहिताः भव २ वषट् ॥

शुद्धेनाऽति सुगंधेन, स्वच्छेन बहुलेन च ।
स्नपनं चेत्र पालस्य; तैलेन प्रकरोम्यहं ॥ तैल स्नपनं ॥

सिन्दूरैररुणाकारैः पीतवर्णसु संभवैः ।
चर्चनं चेत्र पालस्य, सिन्दूरेण करोम्यहं ॥ सिन्दूरार्चनं ॥

सद्यः पूतैर्महा स्निग्धैः, सुष्ट मिष्ट सुपिण्डकैः, ।
चेत्र पाल मुखे देयं, मोदकं दुःख हानये ॥ मोदक दद्यात् ॥

तिल पिण्डस्य पिंडेन, माषादि बहुलेनच ।
ददामि चेत्र पालाय, विश्व विघ्नौघ शांतये ॥ तिल पिंडस्थापनं ॥

भो चेत्रपाल जिनपः प्रतिमांक भाल,
दंष्ट्रा कराल जिन शासन रक्षपाल ।
तैलादि जन्म गुड चन्दन पुष्प धूपैः
भोगं प्रतिच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले । अर्घम् ॥

दुग्धाम्बुधेः सलिल मुल्लसतोरु गंधं ॥ कर्पूर पूर परिपांडुरितं जनस्य ।
उत्तार्यते निज करेण निवेदयामि ॥ शक्रेण भक्ति भरतो भव शोपणाय ॥
जलोत्तारणम् ॥

क्षेमं सर्व प्रजानां प्रभवतु बलवान्, धार्मिको भूमिपालः ॥
काले कालेच सम्यक् वर्षतु मघवाः, व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौर मारी क्षणमपि जगतां, मास्मभूज्जीव लोके ॥
जैनेन्द्रं धर्म चक्रं प्रभवतु सततं, सर्व सौख्य प्रदायी ॥

प्रथयतु मुदमंतः क्षेममारोग्य मायु,–वितरतु शुभ बुद्धिं पाप बुद्धिं धुनोतु
सफलयतु शुभवांछां पूजकानां जनानां, जगदधिपति पूज्यः पूजितोयंजिनेन्द्रः ॥

शिव मस्तु सर्व जगतः, परहित निरतः भवंतु भूतगुणाः ॥
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥
मंगलार्थं समाहूताः, विसर्ज्याः किलदेवताः ॥
विसर्जनाख्य मंत्रेण, वित्तीर्य कुसुमांजलिः ॥

॥ इति श्री महाभिषेक पाठ समाप्त ॥

❀ अथ चेत्र पाला पूजा ❀

श्रीमज्जिनेन्द्र यज्ञेस्मिन्, चेत्राधिपतये सदा ।
बलिं ददामि सौख्याप्त्यै, दुष्ट विघ्न विनाशिने ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं जय विजय अपराजित मानभद्र चेत्रपालाः अत्र अवतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्रमम सन्निहिताः भव २ वषट् ॥

शुद्धेनाऽति सुगंधेन, स्वच्छेन बहुलेन च ।
स्नपनं चेत्र पालस्य; तैलेन प्रकरोम्यहं ॥ तैल स्नपनं ॥

सिन्दूरैररुणाकारैः पीतवर्णसु संभवैः ।
चर्चनं चेत्र पालस्य, सिन्दूरेण करोम्यहं ॥ सिन्दूरार्चनं ॥

सद्यः पूतैर्महा स्निग्धैः, सुष्ट मिष्ट सुपिण्डकैः, ।
चेत्र पाल मुखे देयं, मोदकं दुःख हानये ॥ मोदक दद्यात् ॥

तिल पिण्डस्थ पिंडेन, माषादि बहुलेनच ।
ददामि चेत्र पालाय, विश्व विघ्नौघ शांतये ॥ तिल पिंडस्थापनं ॥

भो चेत्रपाल जिनपः प्रतिमांक भाल,
दंष्ट्रा कराल जिन शासन रक्षपाल ।
तैलादि जन्म गुड चन्दन पुष्प धूपैः
भोगं प्रतिच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले । अर्घम् ॥

❁ अथाष्टकम् ❁

क्षीर हीर गौर नीरपूर वारि धारया,

मंद कुन्द चन्दनादि सौरभेन सारया ।

भूत प्रेत राक्षसादि कष्ट दुष्ट नाशनं

शांति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥ जलम् ॥

अर्क तर्क वर्जितैरनर्घ्य चन्दन द्रवैः

कुंकुमादि मिश्रितैरनल्प षटपदाश्रितैः ॥ भूतप्रे. ॥ चन्दनम् ॥

औषधेन सिन्धुफेन हारभा समुज्ज्वले—

रक्षतैः सुलक्षणैरजात खंड वर्जितैः ॥ भूत प्रे ॥ अक्षतम् ॥

पारि जात पाटलिंच कुन्द हेम केतकी,

मालती सुचम्पकादि सार पुष्पमालया ॥ भूत प्रे. ॥ पुष्पम् ॥

व्यंजनेन पायसादिभिः समंच षट रसैः ॥

मोदकोदनादिभिः सुवर्ण भाजन स्थितैः ॥ भूत प्रे. नैवेद्यम् ॥

रत्न सोम सर्पिषादि दीपकैः शिखोज्ज्वलैः ।

वात घात ताप कोप कंपरुप वर्जितं । भूत प्रे. ॥ दीपम् ॥

सिल्हिकानितागुरू प्रधूपकैरलिश्रितैः,

वाम मान वर्द्धमान मानिनी ममोहरैः । भूत प्रे. ॥ धूपम् ॥

श्री फलाम्र ककटी सुदाडिमादिभिः फलैः

वर्णा मिष्ट सौरभादि नचुरादि मोदनैः । श्रुत श्रे. ॥ फलम् ॥

जीवनाशिता शुरु[illegible] प्रधानकैः, [illegible] ।

सुवर्ण भाजन स्थितैः [illegible], श्री [illegible] ।

॥ जयमाला ॥

लक्ष्मी[illegible]करं जगत्[illegible]करं, संदीर्ण [illegible] ।

[illegible] आमर [illegible], [illegible] ॥

[illegible] मद [illegible], [illegible] ।

वंदे श्री जिन [illegible], श्री [illegible] ॥ १ ॥

सुरासुर [illegible] पाद, [illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥ २ ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥ ३ ॥

[illegible] ।

सदामत्त कोमल केलि विशाल, सदासु......... ॥ ५ ॥

सुचित्रक कुंजर सागर पार, सुदुर्जन शोषण शत्रु संहार ।
सुकंपित किन्नर भूत रसाल, सदासु......... ॥ ६ ॥

सु वृद्धि समृद्धि सुदायक शूर, सु पुत्रक मित्र कलत्र सुपूर।
सुरंजित नागिनि कामिनि बाल, सदासु......... ॥ ७ ॥

सुकेयूर कुण्डल हार सुवाद, सुशेखर सुस्वर किंकिणी नाद।
भयंकर भीषण भासुर काल, सदासु .... ॥ ८ ॥

सु कामिनी खेलत दिव्य शरीर, सुवाहन हासन मोहन धीर।
सुभाषण रंजित विश्व रसाल, सदासु......... ॥ ९ ॥

सुथापित निर्मल जैन सुवाक्य, निकंदित दुर्मति दुर्मति वाक्य।
प्रकाशित शासन जैन रसाल, सदासु............... १०॥

सुभाषित श्रेय सुभव्य सु हंस, महोदय जैन सरोवर वंश ।
महा सुख सागर केलि विशाल, सदासु .... ॥११॥

असम सुरद सारं तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालं,
सकल सुकृत जटिलं, जिह्वा दीर्घ करालं ।

सुघट विघट वक्रं, शांतिदास प्रशस्यं ।
भजतु भजतु जैनं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ १२ ॥ महार्घ्यम् ॥

॥ अथ भैरवाष्टक स्तोत्रं ॥

यं यं यं यक्षराजं, दश दिशधिगतं, भूमि कम्पाय मानं,
सं सं संहार मूर्ति, शिर मुकुट भटा शेखरं चन्द्र विम्बम् ॥
दं दं दं दीर्घ कायं, विकृतिगत नखं, उर्ध्व रोमं करालम्
पं पं पंपाप नाशं, प्रणमति सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ १ ॥

रं रं रं रक्त वर्णं, कर कुन भटिलं तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालम् ।
घं घं घं हंस घोषं घट घट घटितं घर्घरा राव घोषं ।
कं कं कं काल रूपं, धिग धिग धिगतं ज्वालितं उग्रतेजं,
तं तं तं दिव्य देहं, प्रणमति.................. ॥ २ ॥

लं लं लं लम्ब लम्बं लल लल ललितं दीर्घ जिह्वाकरालम्,
धूं धूं धूं धूम्र वर्णं स्फुट विकट मुखं भास्वरं भीम रूपम् ।
रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिर मय मयं, ताम्र नेत्रं विशालं,
नं नं नं नग्न रूपं प्रणमति.................. ॥ ३ ॥

वं वं वं वायुवेगं, प्रलय परिणतं ब्रह्मरूप स्वरूपं,
खं खं खं खड्ग हस्तं, त्रिभुवन निलयं काल रूपं प्रशस्तं।
चं चं चं चंचलत्वं, चल चल चलितं चालितं भूतवृन्दं ।
मं मं मं माय रूपं प्रणमति सततं ………… ॥ ४ ॥

शं शं शं शंख हस्तं, शशिकर धवलं यक्ष सम्पूर्ण तेजं ।
मं मं मं माय मायं कुल सकुल कुलं, मंत्र मूर्ति सु तत्वम् ।
घं घं घं भूत नाथं किल किलित वचा, गृह्ण गृण्हा लुलत्वं,
अं अं अं अंतरीक्षं प्रणमति सततं ……… ॥ ५ ॥

खं खं खं खंग भेदं विषममृत करं, कालकीलान्धकारम् ।
क्षं क्षं क्षं क्षिप्रवेगं, दह दह दहनं नेत्र संदीप्त मानं ।
हं हूं हुंकार नादं, हरि हरि सहितं एहि एहि प्रचंडं,
मं मं मं सिद्धनाथं प्रणमति ……… ॥ ६ ॥

सं सं सं सिद्ध योगं, सकल गुण मयं देव देव प्रसन्नं,
यं यं यं यक्षनाथं हरि हर वरदं चन्द्र सूर्याग्नि नेत्रं ।
जं ज जं जंख नादं, वस वरुण सुरा सिद्ध गंधर्व नागं,
रूं रूं रूं रुद्र रूपं प्रणमति सततं ……… ॥ ७ ॥

हं हं हं हंस घोषं, हसित कुहकुरा रावरो राज्ञ हंसं ।
यं यं यं यक्ष रूपं सिर कनक महा मद्ध खट्वांग नाशं
रं रं रं रग रंगं, प्रहसित वदनं पीग कस्म स्मशानं, ।
सं सं सं सिद्ध नाथं प्रणमति सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ८ ॥

इत्येवं भाव युक्तं पठतिच नियतं भैरवस्याष्टकं हि,
निर्विघ्नं दुःख नाशं, असुर कृत भयं शाकिनी डाकिनीनां
त्रासोन व्याघ्र सर्प्पं धृति वहसि सदा राज त्रासोपि न स्यात् ।
ज्ञानं प्राप्नोति दूराः ग्रह गण विषमाश्चिंतिता स्वेष्ट सिद्धिः ॥

॥ इति क्षेत्र पाल स्तोत्रम् ॥

❀ अथ पद्मावती देवी पूजा ❀

ॐ ह्रीं शक्ति रूपे भगवती वरदे, देवी आगच्छ पंठे,
पद्मनाभे पद्म नेत्रे सपरिजन युते, एहि एहि सुशक्ते ।
धूपं गंधाष्ट द्रव्यं परमफल प्रदं, भोग वस्त्राद्यनेकं,
भक्तानां देहि सिद्धिं मम सकल भयं देव दूरी करत्वम् ॥ १ ॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीपद्मावती देवी अत्रागच्छ आगच्छ ।
ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री पद्मावती देवी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री पद्मावती देवी अत्र मम सन्निहिता भव २ वषट ।

अमल पद्म द्रहे समुद्भव कनक कुंभ सुधारया ।

रिद पाद समान शीवल कमल वासित वारया ।

नरवरा नृप खेचरा स्तुत विघन कोटि विनाशिनीम्,

पूजयेत्पद्मावतीपद रिद्धि सिद्धि नियासिनीम् ॥ १ ॥ जलम् ॥

हेम कुंकुम मिश्रीतैः मलयाख्य भूधर संभवै,

परम ताप निवार चंदन गंध गंधित दिङ्मुखैः ॥ नरवरा नृ. ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

कुन्द हार तुषार सुन्दर गगन तारक संनिभैः,

सिन्धु फेन समान उज्ज्वल खंड वर्जित तंदुलैः । नरवरा. ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

पद्म जाति मनोज्ञ चंपक मालती मच कुन्दकैः,

कनक केतकी पारिजात सुगंध लुब्ध शिलीमुखैः । नरवरा. ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

पायसान्न वरोदनादिक खज्ज मंडप घेवरैः,

सूप तूप मनोज्ञ मोदक व्यंजनाद्य रसाढ्यकैः । नरवरा० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तिमिर पटल विकार वर्जित कोटि भानु प्रकाशनैः,

घृत मणि मय कनक भाजन प्रगट दीप सुज्योतिकैः । नरवरा० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

काक तुंग गिरीन्द्र संभव निविड जलधर संनिभैः,
अत्र धूप सुदीपकाष्ट मनोज्ञ घ्राण प्रमोदकैः । नरवरा० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

आम्र काम्र जम्बीर फनसह पूग चिर्भट लिम्बुकैः ।
गोस्तनैक कपित्थ दाड़िम पक्व मिष्ट फलोघकैः । नरवरा. ॥ फलम् ॥ ८ ॥

अंबु चन्दन अक्षताब्ज चरूत्कटैर्वर दीपकैः,
धूप पक्व फलोर्घ संचय नैक भूषण संयुतैः ।
श्री लक्ष्मीसेन सुरेन्द्र संस्तुत विनिड खलु तिमिरापहं,
पाद पंकज वंश गोविन्द भणित मस्तक मोददैः ॥ अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै नमः । इस मंत्र के ९ जाप्य देवे ।

❀ जयमाला ❀

श्रीमत्पद्मावतीं वन्दे, नत्वा खेचर नर वर चरणे, ।
जिनशासन उद्धरणे, श्री जिन पार्श्व बिम्ब धरणे ॥ १ ॥

संस्नापय पद्मावती चरणं, सेवक नरवर असरण शरणम् ।
दुःख दावानल दूरी कृत दलनं, संतत जन सुख सम्पति करणम् ॥ २ ॥

संकट विकट कोटि सब नाशे, तुम्ह नामे सुख सम्पति वासे ।
ग्रह एकोन नड़े तुम्ह नामे, विषम व्याधि दुख दूरे वामे ॥ ३ ॥

त निधी थल होवे तुम्ह नामे, वैरी व्याघ्रसिंह दूरे वामे ।
हय-रथ मंगल लहे महमत्ता, तुम्ह नामे नव निधि सम्पदा ।। ४ ।।

ट रोगश्वासादिक नाशे, शाकिणी सर्प न आवे पासे ।
जय जग में अग दम्बादेवी, सेवक तुम्ह चरणाम्बुज सेवी ।। ५ ।।

भुवन में तुम्ह नाम विख्याता, नहीं को जननि तुम्हसमजाना ।
तुम्ह गुण वर्णन लाधे पारं, जय पद्मावती नाम विचारं ।। ६ ।।

गुरु तुम्ह गुण पार न जाणे मूख मानव केम वखाणे ।
पाप फले दुःख दारिद्र आवे, ते तुम्ह दर्शन दूर पलावे ।। ७ ।।

ल्य बुद्धि हुँ कांई न जाणु, कवण गति सति तुम्ह नाम वखाणु ।
तू जिन शासन जन सुखकारी, दुःख दावानल दूरीकृत ।। हारी ।। ८ ।।

स्तक मूर्ति श्री जिन पार्श्व, संतत जन मन पूरण आशा ।
भाग्य फले तुम्ह दर्शन पामी, कहे गोविन्द नमो शिरनामी ।। ९ ।।

ता – इह वर जयमाला, भावविशाला जे पठंति नित भावधारी ।
ते अशुभ प्रणाशे, सुरतरू भासे, मनवांछित फल पूर्णकरी ।। १० ।।

आरोग्यं धन धान्य सम्पदकरी, दारिद्र निर्नाशनी ।
मौली [illegible] जिनेन्द्र बिम्ब धरणी, बालार्कभ्रङ्गासिनी

संक्लिष्टा भय नाशिनी परि रमा, मंमन्य सद्दायिनी
श्रीधरणेन्द्र शचि पराक्रम युते, पद्मावती भारी ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ अथ पद्मावती की आरती ॥

श्री स्याद्वाद् मताब्ज वर्धन करी, भव्याब्जमुद्दीपनी ।
पद्मे पद्म दले निवास यदिते दारिद्र निर्नाशनी ।
मौली पार्श्व जिनेन्द्र बिम्ब धरणी, पद्मावती भारती ।
ते देवी नित पाद पंकज नमी वन्दे मुदा आरती ॥ १ ॥

प्रगट पीठ पद्मावती, परतोपूरण हार
कलियुगमें अतिशयघणों, वांछित फलदातार ॥ २ ॥

अष्टभेद पूजा भली, नित करे नरवर चंग ।
अमर कुमरी धरी आरती, करती मन तणे रंग ॥ ३ ॥

चाल—मणि मुकता फल भरि हेम थालं, घृत करपूरा दीप विशालं ।
अमर कुमरी मन आनंद धरती, पद्मावती प्रति आरती करती ॥ ४ ॥

वस्त्रादिक बहू भूषण धरती, अमिय समान वाणी मुखे झरती । अमर कु० ॥ ५ ॥

ढाल चँवर ऊभी इन्द्राणी, आरती त्रिभुवन शिवसुख दानी । अमर कु० ॥ ६ ॥

धरणराय पद्मावती राणी, पार्श्वनाथ केरी पचाणी । अमर कु० ॥ ७ ॥

सेवकनी संभाल जु करजो, तुष्ट थई ने माता कष्ट जु हरजो । अमर कु० ॥ ८ ॥

अर्घ भरी करूं आरती मनधरी प्रेम अपार
श्री जिनार चरणे नमि करूँ आरती मनहार ॥

❀ पंच परमेष्ठी की जयमाला ❀

मणुय-णाइन्द सुर धरिय छत्त तया, पंचक ल्लाण सुक्खावली पत्ताया ॥
दंसणं णाण झाणं अणंत बलं, तेजिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं ॥ १ ॥

जेहि झाणग्गि वाणेहि अइ थद्धयं, जम्म जर मरण णय रत्तयं दद्धयं ॥
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महा दिंतु सिद्धा वरं णाणयं ॥ २ ॥

पंच हाचार पंचग्गि संसाहया । बार संगाइ सुय जलहिं अवगाहया ॥
मोक्ख लच्छी महंती महं ते सया । सूरिणोदिंतु मोक्खं गया संगया ॥ ३ ॥

घोर संसार मी माडवी काणणे । तिक्ख वियरालणह पाव पंचाणणे ॥
णट्ठमग्गाण जीवाण पह देसया । वंदिमो ते उव ज्झाय अम्हे सया ॥ ४ ॥

उग्ग तव यरण करणेहिं झीणं गया । धम्म वर झाणसुक के झाणं गया ॥
णिब्भरं तवसिरी ये समा लिगया । साहु ओ ते महा मोक्ख यह मग्गया ॥५॥

❀ अथ शांति पाठ ❀

शांति जिनं शशि निर्मल वक्त्रं, शील गुणव्रत संयम पात्रं ।
अष्ट सहस्र सुलक्षण गात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुज नेत्रं ॥ १ ॥

पंचम मीप्सित चक्रधराणां, पूजित मिन्द्र नरेन्द्र गणैश्च
शांति करं गण शांतिमभीप्सु, षोड़श तीर्थ करं प्रणमामि ॥ २ ॥

दिव्य तरुः सुर पुष्प सु वृष्टि दुंदुभिरासन योजन घोषौ ।
आतप वारण चामर युग्मे, यस्य विभाति च मंडल तेजः ॥ ३ ॥

तं जग दर्चित शांति जिनेन्द्रं शांति करं शिरसा प्रणमामि ।
सर्व गणाय तु यच्छतु शांति मह्यपरं परमांच ॥ ४ ॥

येभ्यर्चिता मुकुट कुण्डल हार रत्नैः, शक्रादिभिः सुर गणैः स्तुत पाद पद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवर वंश जगत्प्रदीपा, स्तीर्थंकराः सतत शांति कराः भवंतु ॥५॥

संपूजकानां प्रतिपाल कानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ॥ ६ ॥

अशोक वृक्षः सुर पुष्प वृष्टिः, दिव्य ध्वनिश्चामरमासनंच ।
भामंडलं दुंदुभिरात पत्रं सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥ ७ ॥

क्षेमं सर्व प्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपाल',

काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशम् ।

दुर्भिक्षं चौर मारीम् क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीव लोके,

जैनेन्द्रं धर्म चक्रं प्रभवतु सततं सर्व सौख्य प्रदायि ॥ ८ ॥

प्रध्वस्त घाति कर्माणः केवल ज्ञान भास्कराः ।

कुर्वन्तु जगतः शांति वृषभाद्याः जिनेश्वराः ॥ ९ ॥

अथेष्ट प्रार्थना प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः,

शास्त्राभ्यासो जिन पति नुतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।

सद्वृत्तानां गुण गण कथा दोष वादे च मौनं,

सर्वस्यापि प्रियहितं वचं भावना चात्मतत्त्वे ।

संपद्यंतां मम भव भवे यावदेतेऽपवर्गः ॥१०॥

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पद द्वये लीनम् ।

तिष्ठतु जिनेन्द्र तावत् यावन्निर्वाण सम्प्राप्तिः ॥११॥

अक्खर पयत्थ हीणं, मत्ता हीणं च जं मए भणियं ।

तं खमउ णाण देव दुक्ख खओ मयं दिन्तु ॥१२॥

दुक्ख खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहि लाहोय ।
मम होऊ जगत बंधव, तव जिणवर चरण शरणेण ॥१३॥

❀ श्री ऋषभनाथ की आरती ❀

आज मेरे मन मंगल है, मैं तो भेट्या ऋषभ जिनंद ।
परसत पाप पलाइये, प्रभु पूजो परमानन्द ॥ आज मेरे म. ॥ टेक ॥

पिता धन्य नाभिनन्दजी, धन्य मरू देवी माताजी ।
नगरी अयोध्या धन्य भली, तहां जनम्या त्रिभुवनराया ॥ आज मेरे म. ॥ १ ॥

समव शरण मध्य शोभता, प्रभु चार दिशामुख चार ।
प्रभु विश्वंभर जीव बोधिया हैं तो जीव दया व्रतधार ॥ आज मेरे म. ॥ २ ॥

दोष रहित गुण शोभता, प्रभु अतिशय के अधिकार ।
अष्ट मंगल छवि गोपुरा हांजी मानस्थंभ विशाल । आजमेरे० ॥ ३ ॥

पंच कल्याणक सुरकरे प्रभु आप गये निरवाण ।
हर्ष भयो त्रिभुवनमें जय जयकार बखाण ॥ आजमेरे० ॥ ४ ॥

साढि बार को विनाद सुभानु मेघ घटा गरजंत ।
निरत करे अति अपछरा. रूमझुम नाद ठम कंत ॥ आज मेरे० ॥ ५ ॥

सुरनर तिरयंच नारकी, आरती ले मनभाव
रतन कपूर घृत मेली के सब आरती हरि जिनराय ॥ आज मेरे० ॥ ६ ॥

चक्रवर्ति इन्द्र फणीन्द्रजी सुरनर मुनि सभासार
अम्हेभी जिन प्रभुध्यावहि शोभेसार सरोवर तार ॥ आज मेरे० ॥ ७ ॥

मगल गावे नरनारी, पुत्र कलत्र सभी कोई ।
आनंद घन नव निधि पावहिं, शिव मुगति वधु पति होई ॥ आज मेरे. ॥ ८ ॥

मंगल गायोरे म्हें तो भावसु हुंतो श्री जिन कागुणपामु ।
मुनि शुभचद्र प्रभुविनवे मुजने दीजो सुगति विसराम ॥ आजमेरे० ॥ ९ ॥

॥ अथ विसर्जन पाठ ॥

ज्ञानतो ज्ञानतो वापि, शास्त्रोक्तं न कृतंमया
तत्सर्वं पूर्ण मेवास्तु त्वत्प्रसादा जिनेश्वरः ॥ १ ॥

अह्वाननं न जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर: ॥ २ ॥

मंत्र हीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैवच ।
तत्सर्वं क्षम्यतां. देव रच रच जिनेश्वरः ॥ ३ ॥

आहूता ये पुरा देवाः लब्ध भागायथाक्रमं
ते मयाभ्यर्चिता भक्त्या सर्वेयांतु यथास्थितिम् ॥ ४ ॥

॥ लघु होम (यज्ञ) विधान ॥

वेदी-घर के किसी उत्तम भाग में या मंडप के अग्रभाग में आठ हाथ लम्बी, आठ हाथ चौड़ी, और एक हाथ ऊँची तीन कटनी वाली वेदी बनावे। इस वेदी के ऊपर पश्चिम की ओर तीन कटनी की एक हाथ लम्बी एक हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची एक छोटी वेदी बनाने। इस छोटी वेदीपर श्री जिनेन्द्र देवकी प्रतिमा स्थापन करे एवं दाहिनी तरफ यक्ष तथा बाईं ओर यक्षिणी विराजमान करे। वे: कच्ची ईंट तथा गारे से ही बनवानी चाहिये फिर उसे खड़िया आदि से पोत कर विविध चित्र बना कर रंग देना चाहिये।

नोट-इस विधान में जिसदिशा में भगवान का का मुंह हो वह पूर्व दिश मानी जाती है। तदनुसार अन्य दिशाएं भी समझ लेनी चाहिये। मंडप या स्थान संकीर्ण हो तो ४ हाथ की वेदी से ही काम चला लिया जाय कदाचित वेदी बनाने की असुविधा होतो उतनी ही मीन लींपकर उसपर रंग द्वारा लाइनें करके वेदी की कल्पना करलेना चाहिये। वेदी को चदोवा, चित्र, तोरण, वन्दनवार, पुष्पमाला आदि से सुसज्जित बनादेना चाहिये एवं चारों कोनोंपर कदली स्तंभ (केल के थम्भे) इक्षुदंड भी लगादेना चाहिये।

❀ हवन कुण्ड ❀

उक्त छोटी वेदी के सामने एक हाथ जगह छोड़कर निम्न प्रकार तीन कुण्डों की रचना करनी चाहिये ।

तीर्थंकर कुंड–मध्यभाग में एक अरत्नि चौड़ा, एक अरत्नी ऊँडा चतुष्कोण कुण्ड बनावे जिसे तीर्थंकर कुण्ड कहते हैं कुंड की गहराई आधी तो वेदी के भीतर ऊंडी हो एवं आधी की ऊपर तीन कटनी होवें । "बद्ध मुष्टि करोऽरत्नि" मुट्ठी बांधे हुवे एक हाथ को अरत्नि कहते हैं जो कि आधुनिक नाप के हिसाब से करीब १८ इंच होता है तदनुसार १८ इंच लम्बा चौड़ा एवं १८ इंच ऊँडा कुंड बनावे जिसमें से ९ इंच तो जमीन में ऊंडा हो एवं ९ इंच में क्रमसे ३॥। इंच, ३ इंच तथा २। इंच की ऊंची व उतनी ही चौड़ी इस प्रकार ३ कटनी बनावे बड़े कुण्डों में भी मेखलाओं (कटनियों) की चौड़ाई व ऊँचाई इसी प्रकार प्रथम कटनी की ५ मात्रा द्वितीय मेखला की ४ मात्रा एवं तृतीय मेखला की ३ मात्रा के प्रमाणसे होना चाहिये । इसकी अग्नि को गार्हपत्य कहते हैं । सामान्य केवली कुण्ड–चौकोर कुण्ड के दाहिनी तरफ उसी नापका अर्थात् एक अरत्नि लम्बा एक चौडा व एक अरत्नि ऊँडा त्रिकोण कुंड बनावे इसे सामान्य केवली कुण्ड कहते हैं इसकी तीनों भुजाएँ एक एक अरत्नि लम्बी होवें । इसकी अग्नि को आहवनीय कहते हैं ।

गणधर कुण्ड–चौकोर कुण्ड के उत्तर की ओर गोल कुण्ड बनावे जिसे गणधर कुंड

कहते । जिसका व्यास तथा गहराई एक-एक अरत्नि ही हों तथा मेखला भी उसी प्रमाण से ३ हों । इस कुण्ड की अग्नि दक्षिणाग्नि कहलाती है तीनों कुण्डों के भीतरी भाग की दीवारों को बराबर रखना चाहिये । एवं कुंड को रोली (गुलाल) से रंगदेना चाहिये । यद्यपि तीन कुण्ड बनाने की विधि लिखी है परंतु संक्षेप में करना हो तो एक ही चतुष्कोण कुण्ड बनाकर उसमें सब आहूतियें देनी चाहियें । यदि वैसा भी संभव न हो तो पृथ्वीपर ही रंगावली से चौकोर कुण्ड बना लेना चाहिये ।

❁ स्रुक् और स्रुवा ❁

अग्नि में जिस पात्र से साकल्प (होम द्रव्य) डाला जाता है उसे स्रुवा कहते हैं तथा जिससे घी होमा जाता है उसे स्रुक् कहते हैं। स्रुक् बरगद की लकड़ी का तथा स्रुवा चंदन का बनवाना चाहिये या दोनों पीपल की लकड़ी के बनावे पीपल की लकड़ी भी न मिले, तो पीपल के पत्ते काम में लेवे ।

॥ समिधा ॥

होम में जो लकड़ियां डाली जाती हैं उसे समिधा कहते हैं । आक, ढाक, आम, पीपल, शमी, बरगद, खदिर (खैर,) अपामार्ग आदि की सूखी घुन रहित लकड़ियां तथा रक्तचंदन, सफेद चदन आदि की पतली व सीधी लकड़ियों की समिधा बनानी चाहिये ।

॥ साकल्य ॥

बदाम पिस्ता खजूर मंजा वै नारि केलकः ई ।
दुग्धं प्रचुर सर्पिश्च शर्करा द्राक्षयान्वितम् ।

लवंग कपूर सुमिश्रितानां, चूर्ण सितैलादि सुगंधजातैः ।
युक्तं जिनेन्द्रस्य मते प्रशस्तं, होमार्हकं द्रव्य कदंब कंच ॥

बादाम, पिस्ता, छुहारा, जायफल, नारियल, दूध, घी, दाख, लौंग, कपूर, इलायची, धूप, शक्कर, नैवेद्य आदि वस्तुओं को साकल्य कहते हैं साकल्य यजमान की शक्त्यानुसार और घी सब वस्तुओं से दूना होना चाहिये। हवन सामग्री में धान्य, जव, और तिल ये तीन वस्तुएं भी परम आवश्यक हैं। इनमें थोड़ा घी मिलाकर होमना चाहिये इसके अलावा खीर, मावा, लप्सी तथा और भी भक्ष्य पदार्थ एवं केले दाड़िम, जामफल गन्ना आदि पके फल भी टुकड़े करके साकल्य में मिलाये जाते हैं

॥ होम के भेद ॥

होम तीन प्रकार से किया जाता है। जलहोम, बालुका होम, कुण्डहोम ।

जल होम-धोये हुवे शुद्ध चावलों के पुंज पर मिट्टी या ताम्बे का गोल कुण्डा जोकि उत्तम जल से भरा हो रखकर उसे चंदन, अक्षत, माला, सूत्र आदि से सुशोभित करे उस जल कुण्ड में सात धान्यों से दिक्पालों को तथा ३ धान्यों से नवग्रहों को आहुति देवे। अन्त में नारियल

अथवा किसी पके फल से पूर्णाहुति देवे ।

सात धान्य–चना, उड़द, मूंग, गेहूँ, धान (शालि,) तिल, जौ

तीन धान्य–तिल, धान्य, जौ, ।

॥ बालुका होम ॥

भूमि को गोबर से लींपकर उसपर गन्धोदक का छिड़काव देकर एक हाथ लम्बी व एक हाथ चौड़ी भूमि में नदी की बालू बिछाकर उसपर पीपल आदि की लकड़ियों को शिखर के आकार रखकर उसमें अग्नि प्रज्वलित कर नवग्रह, तिथि देवता, दिक्पाल एवं शेष देवताओं को आहुति देवे ।

कुण्ड होम–वेदीपर कुण्ड बनाकर उनमें समिधा जलाकर साकल्य तथा घी आदि होमना चाहिये ।

होम की आद्य विधि

होम की सब सामग्री यथा स्थान रख कर होम कराने वाला प्रतिमा के सन्मुख मुख कर बैठे । होम की समाप्ति पर्यंत मौन व्रत धारण करे । पश्चात् चांदी पत्र पर सुगंधित द्रव्य से अग्नि मंडल लिखकर बीच के तीर्थंकर कुंड में स्थापित करे ।

❀ अग्नि मंडल ❀

साथ ही हो कुण्ड की कटनियों पर सफेद तथा पंच रंग सूत्र वेष्ठित कर के कुण्ड में शिखराकार समिधा स्थापित करके कुण्ड की कटी पर आठों दिशाओं में दिग्पालों की स्थापना करने के लिये आठ अक्षत और पुष्प के पुंज रखकर उन पर एक एक सुपारी या बादाम रखदेना चाहिये। कुण्ड के चारों किनारों पर चावल के पुंजरखकर एक एक लघु कयाश सुगंधित जल से भर कर उस पर श्रीफल रख कर केशरिया वस्त्र से आवृत कर विराज मान करना चाहिये कुण्ड के चारों किनारों पर दीपक तथा धूपदान भी रखना आवश्यक है। पश्चात् संध्या या सकलीकरणादि कियाकरके निम्न मत्र पढ़कर सामग्री की शुद्धि करे।

ॐ ह्रीं पवित्रतर जलेन शुद्धि करोमि स्वाहा। इस मंत्र से सामग्री का शोधन करे पश्चात् निम्न मंत्र पढ़कर कपूर या डाभ जलाकर कुंड में अग्नि स्थापन करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं दर्भे निक्षिप्य अग्नि सन्धुक्षणं करोमि स्वाहा।

अब नीचे लिखे अनुसार कुण्डों की पूजा कर अग्नि का आह्वानन करे।

श्री तीर्थनाथ परि निवृत्ति पूज्य काले, आगत्य वह्निः सुरपा मुकुटोल्ल सद्भिः।
वह्नि व्रजैर्जिन पदेऽह मुदार भक्त्या, देहुस्तदाग्नि महमर्चयितुं दधामि॥

ॐ ह्रीं प्रथमे चतुरस्रे तीर्थंकर कुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा गणाधिपानां शिव प्राप्ति कालेऽग्नीन्द्रोत्त मांगस्फुरदग्निरेषः

संस्थाप्य पूज्यः सममाहवनीयो, सत्कार्य शांतौ विधिना हुवीशः ।

ॐ ह्री द्वितीये वृत्ते गणधर कुण्डे आहवनीयाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री दक्षिणाग्नि पर केवलि स्व शरीर निर्वाण नुताग्नि देव ।

तिरीट संस्फुर दसौमयापि, संस्थाप्य पूजामिसुकार्य शान्त्यै ॥

ॐ ह्रीं त्रिकोणे सामान्य केवलि कुण्डे दक्षिणाग्नयेऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

इसके बाद निराकुलता से आचार्य मंत्रों का उच्चारण करे एवं यजमान (होम करने वाला) प्रत्येक मंत्र के बाद स्वाहा शब्द का उच्चारण करते हुए होम करे ।

॥ अथ पीठिका मंत्र ॥

ॐ सत्यजाताय नमः ॥ १ ॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥ २ ॥ ॐ परम जाताय नमः ॥ ३ ॥

ॐ अनुपम जाताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ स्व प्रधानाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अचलाय नमः ॥ ६ ॥

ॐ अक्षयाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ अव्याबाधाय नमः ॥८॥ ॐ अनंत ज्ञानाय नमः ॥ ९ ॥

ॐ अनंत दर्शनाय नमः ॥१०॥ ॐ अनंत वीर्याय नमः ॥११॥ ॐ अनंत सुखाय नमः ॥१२॥

ॐ नीरजसे नमः ॥ १३ ॥ ॐ निर्मलाय नमः ॥१४॥ ॐ अछेद्याय नमः ॥ १५ ॥

ॐ अभेद्याय नमः ॥ १६ ॥ ॐ अजराय नमः ॥ १७ ॥ ॐ अमराय नमः ॥ १८ ॥

ॐ अप्रमेयाय नमः ॥ १९ ॥ ॐ अगर्भवासाय नमः ॥२०॥ ॐ अक्षोभ्याय नमः ॥ २१ ॥

ॐ अविलीनाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ परमघनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ परम काष्ठयोग रुपाय नमः ।२४।

ॐ लोकाग्र निवासिने नम ॥२५॥ ॐ परम सिद्धेभ्यो नमः ॥२६॥ ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः ॥२७॥ ॐ केवलि सिद्धेभ्यो नमः ॥२८॥ ॐ अन्त कृत्सिद्धेभ्यो नमः ॥२९॥ ॐ परंपर सिद्धेभ्यो नमः ॥३०॥ ॐ अनादि परमसिद्धेभ्यो नमः ॥३१॥ ॐ अनाद्यनुत मसिद्धेभ्यो नमः ॥ ३२ ॥ ॐ सम्यग्दृष्टे आसन्न भव्य निर्वाण पूजार्हे अग्नीन्द्राय नमः स्वाहा ॥ ३३ ॥

इस प्रकार ३३ आहुतियां देने के पश्चात् निम्न काम्य मंत्र पढ़कर घी की ३ आहुति देवे ।

सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु ॥

फिर नीचे लिखे पांच मंत्रों को पढ़कर तर्पण करे ।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ २ ॥ ,, ह्रीं आचार्य परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥३॥ ,, ह्रीं उपाध्याय परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥४॥ ,, ह्रीं सर्वसाधु परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ५ ॥ (अनान्तरे पंच तर्पणानि)

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर कुण्ड के चारों कोनों में दूध, दही इक्षुरस और सुगंधित जल की धारा देनी चाहिये । धारा थोड़ी २ और पतली ही देना चाहिये जिससे अग्नि न बुझने पावे । इस को पर्युक्षण कहते हैं ।

ॐ ह्रीं अग्नि परिषेचयामि स्वाहा (इति पर्युक्षणं)

इसके अनंतर नीचे लिखे मंत्रों से २३ आहुतियां देवे ।

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा ॥३॥ ,, ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥ ,, ह्रीं सर्व साधुभ्यः स्वाहा ॥५॥ ,, ह्रीं जिन धर्मेभ्यः स्वाहा ।६। , ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा ॥ ७ ॥ ,, ह्रीं जिनालयेभ्यः स्वाहा ॥ ८ ॥ ,, ह्रीं सम्यगदर्शनाय स्वाहा॥९॥ ,, ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा ॥ १० ॥ ,, ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा ॥११॥,, ह्रीं चतुर्विंशति यक्षेभ्यः स्वाहा ॥ १२ ॥ ,, ह्रीं चतुर्विंशति यक्षीभ्यः स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश भवनवासिभ्यः स्वाहा १४

ॐ ह्रीं अष्ट विध व्यन्तरेभ्य स्वाहा ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्विध ज्योति रिन्द्रेभ्य स्वाहा ॥ १६॥ ,, द्वादश विध कल्पवासिभ्यः स्वाहा ॥ १७ ॥ ,, अस्मद् गुरुभ्यः स्वाहा ॥ १८ ॥ ,, अस्मद् विद्या गुरुभ्यः स्वाहा ॥ १९ ॥ ,, स्वाहा ॥ २० ॥ भूः स्वाहा ॥ २१ ॥ भुवः स्वाहा ॥ २२ ॥ स्वः स्वाहा ॥ २३ ॥

इस प्रकार २३ आहुतियां देकर निम्न काम्य मंत्र से घी की ३ आहुतियां देवे ।

सेवा फलं षट् परमस्थानं भवतु । अप मृत्यु विनाशनं भवतु ।

इसके पश्चात् ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिनस्तर्पयामि । इत्यादि पांच मंत्रो से तर्पण करे । और ॐ ह्रीं अग्निं परि सेचयामि इसमंत्र से कुंड के चारों कोनों में दूध दही आदि की धारा देकर पर्युक्षण करे ।

❀ निस्तारक मंत्र ❀

ॐ षट् कर्मणे स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ग्राम पतये स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अनादि श्रोत्रियाय स्वाहा ॥ ३ ॥
,, स्नात काय स्वाहा ॥ ४ ॥ ,, श्रावकाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ,, देवब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ६ ॥
,, सुब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ७ ॥ ,, अनुपमाय स्वाहा ॥ ८ ॥ ,, सम्यग्दृष्टे । सम्यग्दृष्टे ।
निधिपते वैश्रवण ! वैश्रवण ! स्वाहा ॥ ९ ॥

पूर्ववत काम्य मंत्र पढ़कर घी की ३ आहुतियां दे एवं तर्पण मंत्र से ५ बार तर्पण कर पर्युक्षण करे ।

❀ शोड़ष विद्या देवी मंत्र ❀

ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वज्रश्रृंखलायै नमः ॥ ३ ॥
,, वज्रांकुशायै नमः ॥ ४ ॥ ,, जाम्बूनद्यै नमः ॥ ५ ॥ ,, पुरूषदत्तायै नमः ॥ ६ ॥
,, काली देव्यै नमः ॥ ७ ॥ ,, महाकाली देव्यै नमः ॥ ८ ॥ ,, गौरी देव्यै नमः ॥ ९ ॥
,, गांधारी देव्यै नमः ॥ १० ॥ ,, ज्वाला मालिनी देव्यै नमः ॥ ११ ॥ ,, मानवी देव्यै नमः ॥ १२ ॥
,, वैराटी देव्यै नमः ॥ १३ ॥ ,, अच्युतायै नमः ॥ १४ ॥ ,, मानसी देव्यै नमः ॥ १५ ॥
,, महामानसी देव्यै नमः ॥ १६ ॥

पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़कर घी की तीन आहूतियां दे पश्चात् ५ बार तर्पण और पर्युक्षण करे ।

❀ जयादि अष्ट देवी मंत्र ❀

ॐ ह्रीं जयायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विजयायै नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अजितायै नमः ॥ ३ ॥
,, अपराजितायै नमः ॥ ४ ॥ ,, जृंभायै नमः ॥ ५ ॥ ,, मोहायै नमः ॥ ६ ॥
,, स्तंभायै नमः ॥ ७ ॥ ,, स्तंभिन्यै नमः ॥ ८ ॥

पूर्ववत् काम्य मंत्र से घी की ३ आहूतियां देकर तर्पण व पर्युक्षण करे ।

॥ नवग्रह मंत्र ॥

ॐ ह्रीं ह्रः आदित्याय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं ह्रः सोमाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं ह्रः भौमाय नमः ॥ ३ ॥
,, बुधाय नमः ॥ ४ ॥ ,, बृहस्पतये नमः ॥ ५ ॥ ,, शुक्राय नमः ॥ ६ ॥
,, शनिश्चराय नमः ॥ ७ ॥ ,, राहवे नमः ॥ ८ ॥ ,, केतवे नमः ॥ ९ ॥

पश्चात् पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़ कर घी की ३ आहुतियां देवे । एवं ५ तर्पण कर पर्युक्षण करे ।

॥ दश दिक्पाल मंत्र ॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं इन्द्राय स्वाहा ॥१॥ ॐ आँ क्रौं ह्रीं अग्नये स्वाहा ॥२॥ ॐ आँ क्रौं ह्रीं यमाय स्वाहा ॥३॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्याय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुणाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं पवनाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेराय स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशानाय स्वाहा

ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणीन्द्राय स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमाय स्वाहा ॥ १० ॥

इस प्रकार ३२+२३+९+१६+८+९+१० कुल १०८ आहुतियां देकर पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़कर घी की ३ आहुतियां देकर तर्पण व पर्युक्षण करे ।

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़ कर पूर्णाहुति देवे । पूर्णाहुतिका मंत्र आरंभ करते ही अन्तपर्यंत जब तक मंत्र पूरा न हो तब तक अग्नि में घी की धारा करते रहना चाहिये । पूर्णाहुति में पूजन के अष्ट द्रव्य पान तथा श्रीफल या सुपारी अवश्य होना चाहिये ।

॥ पूर्णाहुति मंत्र ॥

ॐ तिथि देवाः पंच दशधा प्रसीदन्तु ।

नव ग्रहदेवाः प्रत्यवायहरा भवन्तु ।

भावनादयो द्वात्रिंशद्देवा इन्द्राः प्रसीदन्तु ।

इन्द्रादयो विश्वे दिक्पाला पालयंतु ।

अग्नीन्द्र मौल्युद्भवाप्यग्निदेवता प्रसन्ना भवतु ।

शेषाः सर्वेपिदेवा एते राजानं विराजयंतु ।

दातारं तर्पयंतु । संघं श्लाघयन्तु ।

वृष्टिं वर्षं यंतु । विघ्न विघात यन्तु ।

मारीं निवारयन्तु ।

ॐ ह्रीं नमोर्हते भगवते पूर्ण ज्वलित ज्ञानाय सम्पूर्ण फलार्घ्यां पूर्णाहुति विदध्महे।

(इति पूर्णाहुति)

पूर्णाहुति देने के बाद हाथ जोड़ कर निम्न शांति प्रार्थना का मंत्र पढे

ॐ दर्पणोद्योत ज्ञान प्रज्वलित सर्वलोक प्रकाशक भगवन्नर्हन् श्रद्धां मेधां प्रज्ञां बुद्धि श्रियं बलं आयुष्यं तेजः आरोग्यं सर्व शांतिं विधेहि स्वाहा पश्चात् शांति धारा देकर भगवान के चरणों में पुष्पांजलि चढ़ाकर चतुर्विंशति तीर्थंकरों का स्तवन कर पंचांग नमस्कार करे तथा अग्नि कुन्ड में से उत्तम भस्म लेकर याजक (आचार्य) स्वयं अपने ललाट पर लगावे और अन्य सबको लगाने देवे। पश्चात् प्रतिमाजी व यंत्रादिको यथास्थान विराजित कर देवों को विसर्जन करे ॥

❀ समाप्त ❀

